

जोने ज्ञापयण पक्ष दुर्गमोक्त्याधी या परलोकाग्रयणी काम कुत्र कर सक्ता है, दुर्मी कारण जगयान् धीत  
 रागा नी दे न पुनः (२) यन्ते शाय्याले) गौतम ऐसा कहक आयुको सय गुणों से घना दिसलाया है ,  
 और नी श्रुतारम क लपुगा से और पुनरुमक उदय से धमकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुप्त  
 और उपाक यगा एा गुनना मित्रज्ञान पर नी देय गुरु धम रूप तत्पर सच्ची प्रथा होना ब्रह्मत दुर्जन  
 २. निपात्त मन्थपर मणी प्रदा होना यही मन्थक है, और सय तो मिथ्याहृष्टियो की नी होता है, यह  
 तय श्रुतारम के सम होजान और पुनरुमं यदन च जीयको मिलते हैं, इस हेतु श्रुतनकर्म का क्षय और  
 नुसार क यदा में पय करना श्रुतप है, श्रुतनकर्मका क्षय और ज्ञान की बढाने के लिये धर्म के संया  
 प और ताः तो यत्न नहीं है, इस हेत धर्म करो २ धर्म ही का संयन करो, जैसा के घरके कार्य सिध्  
 कता में श्रुतक तरह न परिग्रह करत हा कुत्र काठ धर्म के वास्ते नी परिग्रह करते रहो, कारण के धर्मी  
 धर्म गुना करन पाठे पुरुष) की इद्र आदि देयता नी केवल प्रथमा, अनुमोदना और न्तिक करके श्रुप  
 ना नम मरुत करन है, इतनी श्रद्धि पाके नी उन को धर्म का संयन करना दुर्जन है और नी धर्मी को  
 श्रुतन की लपुगा, कलपुद्र, चिनामणि और कामधेनु श्रापसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र  
 पर मजारी और राज्य मिलनाना क्या प्रती चीज है ? धर्म संयन करने वाले का दो घनी का जीना नी  
 मरुत और कायंकारक है, परन्तु धमहीन ( श्रुपांतु पेय, श्रुपेय, कृत्य, श्रुतल्य, गम्य, श्रुगम्य, नक्ष्य

और अन्ध इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि यर्ष जीना भी निष्फल और श्रुकिंचित्कर है, पशुचत्  
 क्षपना छाया पूर्ण कर भरता है, इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण,  
 नवसागर तरन के लिये नौका रूप तीर्थंकरों का कहा जाया केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "वि  
 ना मतलब पराये दुख को दूर करने की इच्छा" है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं,  
 इसलिये दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैनदर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया नि  
 श्रयदया व्यग्रहारदया स्वरूपदया अनुयधदया", जेव विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग  
 रखत हैं परन्तु सर्वज्ञो दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता  
 है, दयाके सर्वाज्ञ उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे मोजन के वास्ते कोई एक पक्षान्त बनाया जाय  
 तो धृत पिष्ट धीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ ए  
 कछा होने से यथाविध स्वादिष्ट पक्षान्त तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा  
 पक्षान्त नहीं होता तैस ही यथाविधि दया पाळीजाय तो यथाविध धर्मोपलब्धि होय, यदापि सर्वदर्शनी  
 में दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् श्रुकिंचित्कर दया) है, जब  
 के उसका स्वरूपही ज्ञाखानुसार यथार्थ नहीं जानसकते हैं तो पालन करना कैसे हो सके, फेरफार झीसा के  
 कोई कहते हैं पशुप्राणघात अर्थात् पशुजन्म से लोछाना दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

गुरी ७ होय प्रचुन दृगित होय व्याधियस्तादि दीप युक्त होय तो छीसे प्राणीको तादृज शरीर से मुक्त कर  
 रगा नी दया ही है, कोइ मूढ़न अथवा सूल प्राणी जो मनुष्यको दुस ठते हैं उनका नाश करना दया है,  
 माइ पाणि पागादिक में प्राणियधरुने से नी पुण्य मानत हैं और कोइ स्युल प्राणिरक्षामात्र को दया कहत  
 है, इन गरद दया का उपयोग अन्यदार्जनी रसते हैं लेकिन यह ज्ञम है, और अकरीत से—आचारधर्म दया  
 पत त्रिपापम और वस्तुधर्म यह पार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मों के दान शील तप और नाश  
 पार शरन है, तय धनयल होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाछा जाय, शरीरयल होय तो  
 तप होय, और मम्यज्ञान होय तो ज्ञाय होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ना  
 यधम का शरन ज्ञानयल है “जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं”, ज्ञानसे जैसी  
 ध्यात्मपम की वृत्ति और नरदृग होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा  
 न, मास अनुपाग का यिगार, सप्तजगो, पण्डित्ययिचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो  
 न है, दार्शनिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्षेत्ररूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दा  
 मो है और नरदृशी तथा जस्त महाराज वैसी अवस्थामें जी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका  
 माशाम्य है, ज्ञानही तो तीक्ष्णता सोही अथवाचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटियर्यपर्यंत दानादि कर  
 ने में नी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होशका है इसीलिपु ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

और क्रियागुरु को पीपल के पान ऐसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्त क्रिया का मूल श्रद्धा नहीं होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए अश्रय यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच चेट--म ति श्रुत अर्थात् मनपर्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमान लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञाननिर्मित दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश्य समुद्देश्य अज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान को प्राप्ति होती है इसे श्रुतात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इसे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल में श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान में महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोंसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इत श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्तना अनु प्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सुप्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है--आक्षेपिणी चिक्षेपिणी निर्वेदिनी और संवेदिनी, जिसे तत्त्वमार्ग में प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिसे मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसकी चिक्षेपिणी, जिसे मोक्ष की अमिलापा होय उसको निर्वेदिनी, जिसे वैराग्य की भावना होय उसकी संवेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उपन्नेहवा विगमेहवा धुर्वहवा", त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशांग

मुगी ७ होय प्रपुन दु गित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्त कर  
 द्या नी द्या ही है, कोई मूढ़न अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख दत हैं उनका नाश करना द्या है,  
 यादें पाल पागादिक में प्राणियध करने से भी पुण्य मानत हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को द्या कहत  
 है, इग गरुद द्या का उपयोग अन्यदर्शनी रखतें हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म द्या  
 धर्म क्रियाधर्म और यन्धुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मों के दान शील तप और ज्ञाव  
 पार धारत्र हैं, जय धनयल होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाला जाय, शरीरखल होय तो  
 तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो ज्ञाव होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ज्ञा  
 धर्म का कारण ज्ञानयल है “जिसे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहतें हैं”, ज्ञानसे जैसी  
 व्याख्या की युधि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा  
 न, पाश सुपाग का यिगर, सप्तनगी, पद्मद्वययिगर, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो  
 त है। दर्शयैमालिक में लिखा है कै—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल केजरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी वा  
 मो है, और नरुदेयी तथा नरत महाराज वैसी अथस्यामें जी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका  
 नाशरम्भ है, ज्ञानभी जो तीक्ष्णता सोही अग्रधधारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटियर्षपर्यंत दानादि कर  
 तेसे भी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानी के एक स्वासोत्खास में नष्ट होजाता है इसीलिये ज्ञानीगुरु को रक्षाकर

# भूमिका ।

—०—

पक्षवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होता है । प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकरणसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिसे सो प्रज्ञापना अर्थात्-समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावास्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावास्थितस्वरूप निरूपण कर्क शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिसे यह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाय स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप", निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावास्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है ।

समवायाङ्ग में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥  
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नहीं, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

की रक्षा करते हैं (उन्को सूत्र कहते हैं) इस फालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान  
 स्यापकारो है इमतिष्ठ इस्को यदि और सरक्षण के हेतु प्रयत्नय यत्न करना चाहिये वर्तमान फालमें जितने  
 ज्ञातृदि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट  
 लोत पुगम रीति की स्वीकार करना जो के पूर्वाधारोंने यह परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं  
 इस्याके प्रणिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इससे अधिक और कीर्ण श्रेष्ठ कार्य नहीं है , यही सब  
 पारल ग्रीन ग्रामुशिशयाद निरासी श्रोत्राय धनपतिसिंह बहादुर ने १५ आगम कृपयके हरेक जने भहार  
 स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके करने को प्रयत्न होय के जिस्से पुन जैनमत युवायस्या की  
 प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रसाकर

नानक बन्दर यती

# भूमिका ।

—०—

पसवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द ससृष्ट शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होता है । प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकरणसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिसे सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करसके हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण कर्क शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिसे वह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थको शिष्य की बुद्धि में आरोपण करते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप “जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप”, निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करसके हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है । समवायाङ्ग में कहे जाए पदार्थों का निरूपण इसमें है इससे समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥ कहे का फिरसे कहना निरर्थक है छीसा नहीं, क्यों कि कहे पदार्थों को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना



को रखा करते हैं (उसको मूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सत्र श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान  
 मयापगारो है इमांश्चिद्विदुः इति और सरक्षण के हेतु अथत्रय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने  
 ज्ञानवृद्धि के उपाय है मय से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट  
 दाता सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं  
 द्वायामे प्रणिष्ट करना हर एक विद्वानोंको देना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सब  
 कारण ज्ञाप श्रामुञ्जिदायाद् नियासी श्रोत्राय धनपतिस्सिह यद्वातुर ने ४५ आगम छपत्रके हरेक जगे भट्टार  
 रत्नापन क्रिये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुनर्जनमत युवावस्था को  
 प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

# भूमिका ।

—०—

पसवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द सस्कृत शब्दको आवेग निर्देश करने से सिद्ध होता है । प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकरणसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिसे सो मज्ञापना अर्थात्-समस्त द्रव्यो जिसे रीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीन आदिक पदार्थ जिसे वह प्रज्ञापना कहाती है । यद्यपि अन्यवर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि में आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाथ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप", निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इससे इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है । समवायाङ्ग में कहे जाए पदार्थो का निरूपण इसमें है इससे समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है कहे का फिरसे कहना निरर्थक है छैसा नहीं, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना ॥

सम्पत्ति प्राप्त शिष्य लोगों के गुरुग्रह के लिये होता है उससे सार्थक है निरर्थक नहीं ।

यह प्रमाण गामक उपाद् भी नय गीय अजीय आविक पदार्थों के ज्ञासन ( कहने ) से ज्ञास्त्र है और मात नो ज्ञास्त्र म युद्धिमान् पुरुषा को प्रयुक्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये गदा ता युध कटम्भारामर्दन को तरह कोई भी इस्में प्रयुक्त न होगा ॥

इसमें प्रमाण दो प्रकार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्मागत श्री मागत होने न दा प्रकार है, तथा द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के गीय दाजाने से कर्मा का प्रभाव हो है 'जैमा के कहा है--यह द्वादशांगी कधी नहीं थी कधी है कधी न हागी तेमा नही ( दिव्नु ) धुय है नित्य है ज्ञास्त्रती है" ॥

परमाण्विहाय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सदाभाव अवश्य होगा, तत्त्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिये अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्मा का अवश्य सद्भाव है ॥

सम्पत्ति का अनन्तर प्रयोजन सत्यानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अप्रयंगमप्राप्ति है "कहा है--के जो दुस्वी गोशों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश के कृपा करते हैं वो योद्धेही काल में मुक्त हो जाते हैं" अर्थ ये कहनेवाले चरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन बिना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है बिनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये औसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकम क विपाक का उदय से होता है " कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मदज्ञाना के देने ही से भोगा जाता है, अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदज्ञानाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है कोई प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षमाप्ति है, श्रोता विद्यद्वित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होके ससार से निकलने की इच्छा से समयमार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम समय मार्ग में प्रवृत्त होने से समय का प्रकर्ष होता है उसे सकल कर्मद्वय और उसे मोक्षमाप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में श्यायक्त और क्रिया में श्यायक्त होने से परमगति की पञ्जवर्ते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अजिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्यन्ध दो प्रकार है उपायोपेय ज्ञावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तथा पहिला नैयायिक के-जैसे कि यचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उम प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार श्रुति कहेंगे, जानना चाहिये ॥

सम्प्रयुक्ति वाले शिष्य लोगो के अनुग्रह के लिये होता है उससे सार्थक है निरर्थक नहीं।  
यह प्रभाव नामक उपाह भी नय गीय अजीय आदिक पदार्थों के ज्ञासन (कहने) से प्राप्त है।

आदि तदा ता युवा कटकजाय। मर्दन की तरह कोई भी इस्में प्रयत्न न होगा  
इस प्रयोग को प्रसार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्री

॥  
निरप क्षाज्ञाने ते कमा का प्रभाव ही है "जैसा के कहा है—यह द्वाव्यागी कधी नहीं थी कधी है कधी  
॥  
॥ हागो तेना नदी (किन्तु) ध्रुव है नित्य है ज्ञास्यती है।

देरिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिये अप्रत्यक्ष से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से  
अनित्य होने से कर्त्ता का अयत्न सत्त्व है ॥

प्रपक्वता का अनन्तर प्रयोजन सत्यानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपर्याप्त है "कहा है—के जो दुस्यो

॥  
पौधों को गर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो योहेही काल में मुक्त हो जाते हैं," अर्थ  
ये कहोनाले अरिहन्त को कया प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन बिना अर्थरूप से करने

का परिश्रम भी व्यर्थ है बिनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये ऐसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है "कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मदज्ञाना के देने ही से भोगा जाता है," अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदज्ञानाध्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होकर ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उसे सकल कर्मद्वय और उसे मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में श्याशक्त और क्रिया में श्याशक्त होने से परमगति की पञ्चयते हैं ॥ इस ग्रन्थ में श्यनिधेय जीव श्यजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्यन्ध दो प्रकार है उपायोपेय ज्ञावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तथा पहिला नैयायिक के-जैसे कि यचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार श्यागे कहेंगे, जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं श्रया नृत है तोन्नी विद्वत् को ज्ञान्ति के लिये श्रादि मध्य श्वीर श्वन्त मे मगल कहाजाता है ॥

यद्यपि शी श्रादि से मङ्गल निर्यय्यं ज्ञाखपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल श्वय्यगृहीतज्ञाख की स्थितिके लिये है, श्वीर जग्तमगल शिव्य प्रविष्यो के ज्ञाख श्वय्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तभीग पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमे जीय श्वजीव श्राश्रय यन्ध सवर निजरा श्वीर मोक्ष का प्ररूपण किया है तद्वा प्रज्ञापना यज्जयक्तव्यता विशेष धरमपरिणाम सज्ञक पाच पदमे जीव श्वजीव की प्रज्ञा पना, प्रयोगपद श्वीर क्रियापद मे श्राश्रय (काय वचन मन कर्मयाग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमे यन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद मे सवर निजरा यन्ध श्वीर मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्यान श्रादि पदमे कहीं क्रिमी कीनी प्रज्ञापना की है, ॥

अथवा इम्म द्रव्य क्षेत्र फाल श्वीर भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थों के संघाय और कोई प्रज्ञाप नीय पदार्थ नहीं है इहो पदार्थों के जानने से तत्त्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके एतने पदाने से अग्रश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकार उसको है जोके मोक्षमार्ग का छभि लापी श्वीर गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवशर भी यही है। इतिशाम् ॥

धनारस जैनप्रमाकर प्रेस नानकचद यती ।

## ॥ विज्ञापनम् ॥

—०००—

स्वाद्योदूयल्लोचनपुष्पाः श्रीबीरदासानिघस्तपुश्रोभुचसिद्धकर्मिन्तपश्चात्सुसुस्तदीयोग्यैः । स्वातःश्रीलक्ष्मणपसिद्धविलयी ज्ञायोतुरीयासती  
तत्त्वश्रीमद्विद्यानामविदिताकुहस्तदीयादन्त ॥ १ ॥ उद्यात्कीर्तनस्वारचमद्विधी लक्ष्मीपतेः सादर श्रीमद्विद्याद्विद्यादुरोचनपति विश्वेगुणयामयी ।  
श्रीलक्ष्मीनागससङ्गुहं समकरोल्लोकोपकृतैर्विरम् टीकावागस्तकसुतमुत्तिविभिः संमुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कत्वापञ्चस्तस्यसेपुबुनस्तावत्स्यश्रीपुस्तका गा  
राक्षेपुचपुस्तकानि सक्तान्त्वापयसादरम् । कुतस्तगमपाठनञ्चपठनं सत्वाचवःश्रावकाः स्थिरेशीजितशासनस्यचपुनविज्ञानचमद्वये ॥ ३ ॥  
नामःपञ्चदशग्रन्थस्यगुरुकः मद्यापमाश्लोपुमा नामापुस्तकपाठनेदयदुतोसेसप्रमादावपि । दुवष्यःखलुवृत्तिवास्तकपुतपाठस्तथाप्राक्तन श्रीमत्पुस्तक  
रामचन्द्रगणिनिर्ज्ञातपुष्पायामया ॥ ४ ॥ उद्योप्यातिपरिश्रमेकनितरी चावशर्मेद्रुते स्वातत्रापिचकिञ्चिदीक्ष्यगतोन्मादादमुद्वयदि । चास्तवा  
श्राप्यमुद्वारमुद्विगिभवेतिवृद्धिः कपादुद्विगो मिष्यादुक्तमस्तुनस्यवचसासम्प्राप्य सकमान् ॥ ५ ॥

—०—

धमारय

जैनप्रजापक

मानकचन्द्र यती



यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे सत्य ग्रथा नूत है तोनी विघ्न की शान्ति के लिये छादि मध्य और अन्त में मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में महल निर्विघ्न ज्ञाखपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अथगृहीतज्ञाख की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रशिष्यों के ज्ञाख अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आश्रय दन्ध सवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तथा प्रज्ञापना यज्ञयक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सक्षक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञा पना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रय (काय दधन मन कर्मयाग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें दन्ध प्रज्ञापना, समुद्रयातपद में सवर निर्जरा दन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, वाकी स्थान आदि पदोंमें कहीं किसी कीसी प्रज्ञापना की है, ॥

अथवा इसम द्रव्य क्षेत्र फाट और भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपठार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञाप नीय पदार्थ नहीं है इहो पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकार उसको है जोके मोक्षमार्ग का अभी लापी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी यही है। इतिग्राम् ॥

यनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकशब्द यती ।

| विषय और प्रश्नादि                                | विषय और प्रश्नादि                           | पत्राक | पत्राक |
|--|---|--------|--------|
| पृथ्वीकाय के जेद                                 | (चतुरिन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्त०)       | २३     | ४६     |
| अध्काय के जेद                                    | पंचेन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तव्यणा चार  | २७     | ४७     |
| तेजस्काय के जेद                                  | गति के जेद से चार प्रकार                    | २८     |        |
| वायुकाय के जेद                                   | नारकी सात जेद                               | २९     |        |
| वनस्पति काय के जेद                               | तिर्यग्योनिऋ त्रिविध जल यल स्रचर, इनके जी   | २९     |        |
| (एकेन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तव्यणा कही)      | जेद मच्छादिक, उनके जी जेद विस्तार से कहे    |        | ४७     |
|  | (तिर्यग्योनिऋ पंचेन्द्रिय ससार समापन्न०)    |        |        |
| द्वीन्द्रिय ससार समापन्न जीव के अनेक जेद         | मनुष्य के जेद दो समूर्च्छिम गर्जज, कहा वह   | ४३     |        |
| (द्वीन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तव्यणा)         | पैदा होते है किस्तरह होते है इत्यादि एकोरुऋ |        |        |
| त्रीन्द्रिय पन्तव्यणा के अनेक जेद उवाइया इत्यादि | आदि जेद, शक यद्यन आदि जेद, आर्य ४           | ४५     |        |
| (त्रीन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्तव्यणा कही)     | इत्यादि                                     |        | ४८     |
| चौरिन्द्री पन्तव्यणा के अनेक जेद अधिय पोसि       | ब्राह्मी लिपि में १८ तरह का लेख्य विधान है  |        | ६२     |
| य इत्यादि  | (मनुष्य पंचेन्द्रिय ससार समापन्न जीव प०)    | ४५     |        |

## नकल खिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादसम्बद्धं विप्रकाशितपरमेश्वरं श्री ५ रायचम  
पतिविहवशादुरसु सविनयनावेदमम् ।

जाने, मैंने तुनाई पाप की ऐसी इच्छा है कि पेंसालियों के नायक  
को पुस्तकें मूल टीका और मापाटीका सहित पाप ५ की कापी काँचें  
और सापु मावकों के पटन पाठन के लिये पाचसी स्थानमें पुस्तकाल  
य स्थापित हो सो यह जति जानदबी बात है परंतु जिन मन्त्रालयों  
को द्रव्य दबे पुस्तक लाने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त ही यदि  
पाप की जाहाना हो तो बेचने के वास्ते पाचसी कापी जैनबुद्धमुसाहटी  
की खोरबे घी बपवा ली जावें यह पुस्तकें मैं बचीनर्मज से प्रकाश

बहुना करे मुद्रणम्, सम्बत् १८९३ । वि० । क्र० । ११

५० जैन मुद्र मुसाहटी

खरर मुरसीदाबाद

कार्यसम्पादन

बचीनर्मज

मुद्रि चैठ

## नकल खिठी २

श्रीविधिविधिविचारवत्परंपु जैनबुद्धमुसाहटी कायसम्पादन  
मन्त्रालयपु प्रतिनिवदमम् ।

जोकि यह पापका द्रव्य देके खरीदनवासे लोगों के, लिये मुसाहटी  
की खोरबे पेंसालियों के नायक की पाचसी पुस्तकें बपवा लन की  
जाहाना के विषय में जाया हो मैं खीकार करता हूँ कि पाप जैनबुद्ध  
मुसाहटी की खरब से जायम की प्रत्यक्ष पाच ५ की पुस्तकें बेचन के  
वास्ते बपवा लेंगे परंतु पाचसी से अपिब कपनकी जाहाना में नहीं  
देवा, यदि खीर कोहें बपवाना चाहें तो उचित है कि पहले मुद्र  
न जाहाना ललेके खीरेकि इन प्रन्वीपर रजस्वरी दुईहें, करे मुद्रणम् ।

सम्बत् १८९३ । वि० । क्र० । १३

५० रायचमपतिविहवशादुर

खरर मुरसीदाबाद

बचीनर्मज

| विषय और प्रश्नावि                                 | पत्राक    | विषय और प्रश्नावि                                 | पत्राक |
|---|-----------|---|--------|
| कहा द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे   | प्रश्न ८५ | धूमप्रभा के नारकी का प्रश्न                       | ११     |
| कहा द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहा   | ८५        | तमापूयित्री के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी का        | १२     |
| कहा चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे   | ८६        | तमनमा नारकी प० अप० स्थान का प्रश्न                | १२     |
| कहा नारकी पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे         | ८७        | पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चन्द्रिय तिर्यञ्च के स्थान  | १३     |
| कहा नारकी वसते हैं                                | ८७        | मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान प्रश्न, उपपात, | १४     |
| कहा रत्नप्रमापूयित्री के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी |           | समुद्घात, स्वस्थान                                |        |
| वसें है और उनके स्थान कहे                         | ८८        | भवनवासि देव प० अप० स्थान का प्रश्न भवन            |        |
| कहा शर्कराप्रमापूयित्री के पर्याप्त अपर्याप्त नार |           | वासि के रहने का स्थान और बहुतसा वर्णन             |        |
| की के स्थान कहे, कहा यह वसें है                   | ८९        | किया है   | १४     |
| यालुकाप्रमाके पञ्चाक्ष अपञ्चाक्ष नारकी के स्थान   |           | असुरकुमार स्थान प्रश्न कहा रहते हैं इत्यादि       |        |
| और वसन का   | ८९        | असुरकुमारी का वर्णन लाकपाल अग्रमहिषी              |        |
| पकप्रमा के नारकी का प्रश्न                        | ९१        | पर्यङ्गा अनीक आदिका वर्णन है                      | १९     |
|   |           | वक्षिण दिशा के असुरकुमारी का अधिकार               | १०२    |

देयता चारप्रकार कहे प्रथमपति जोतिषी ज्ञान

व्यन्तर वैमानिक

नयनपति १० प्रकार असुरकुमार दि

यानव्यन्तर ८ भई किलर कि पुरुषादि

जोतिषी ५ प्रकार चन्द्र सूर्यादि

वैमानिक २ भई सौधमोदि देवलोक गत

और कलपातीत, फिर इनके जेठ कहे

(पर्वोद्वय सवार समापन जीव पक्षत्रगा कही)

॥ जीव पक्षत्रगा कही ॥

॥ पक्षत्रगा नाम प्रथम पद ज्ञा ॥

—०—

॥ २ स्थान नामक पद का प्रारम्भ ॥

कहा यादर पृथ्वीकाय पर्याप्त के स्थान कहे

कहा यादर पृथ्वीकाय पर्याप्त के स्थान कहे

कहा सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्त पर्याप्त के स्थान है

यादर अणुकाय पर्याप्त के स्थान का प्रश्न

यादर अणुकाय पर्याप्त के स्थान का प्र०

यादर तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का अधि०

यादर तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का नि०

सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का प्र०

यादर वायुकाय पर्याप्त के स्थान का निर्णय

यादर वायुकाय पर्याप्त के स्थान का निर्णय

सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्त के स्थान का प्र०

यादर धनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का अधि०

यादर धनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का प्र०

सूक्ष्म धनस्पति पर्याप्त पर्याप्त के स्थान का

| विषय और प्रस्तावि                           | पत्राक | विषय और प्रस्तावि                     | पत्राक |
|---|--------|---------------------------------------|--------|
| ब्रह्मदेव स्थान का अधिकार                   | १२४    | सिद्धी के वर्णन विषय की गाथा कई एक    | १३०    |
| लान्तक देव लोकाधिकार                        | १२५    | (स्थान नामक दूसरा पद पूर्ण)           | १३२    |
| महा शुक्रदेव लोक स्थानाधिकार                | १२५    |                                       | १३७    |
| सहस्रार देवलोक का अधिकार                    | १२६    | ३ पद का प्रारम्भ ऊँच्या है।           |        |
| आनत प्राणत देवलोक का प्रश्न                 | १२६    | दिसिगइइदियकाए यह द्वार निरूपण गाथा २  |        |
| आरण अभ्युत देवलोकाधिकार                     | १२६    | प्रथम दिग्द्वार                       |        |
| अधस्तन भैवेयक विमान का प्रश्न               | १२८    | दिसाणवाएण सद्यथोया जीवा पच्चच्छिमेण   |        |
| मध्यम भैवेयक विमान के विषय का प्रश्न        | १२९    | इत्यादि                               |        |
| उपरिम भैवेयक विमान का निर्णय                | १२९    | सर्वस्तोक पृथिवीकाय दक्षिण सँ इत्यादि | १३८    |
| अनुष्ठोपपातिक प० अ० देवस्थान और यह          |        | सर्वस्तोक अण्काय पश्चिम मे            | १३८    |
| कहा वसे है                                  | १३०    | सर्वस्तोक तेजस्काय दक्षिण उत्तर मे    | १३८    |
| कहा सिद्धों के स्थान और कहा सिद्ध रहते है   |        | सर्वस्तोक वायुकाय पूर्व मे            | १३८    |
| इत्यादि इपत्त्राग्नाराधिकार तथा सिद्धों का, |        |                                       |        |

उत्तर दिशा के असुरकुमारों का अधिकार

नागकुमारों के स्थान रहने का स्थान

दक्षिण के नागकुमारों का अधिकार

उत्तर के नागकुमारों का अधिकार

सुर्यकुमारों के स्थान और रहना कहा है

दक्षिणसुर्यकुमाराधिकार

उत्तरसुर्यकुमाराधिकार

चौथाँ अक्षराण इत्यादि गाथा ७, काला असुर

कुमारा इत्यादि गाथा ४ कही है

यानवन्तर देवों के स्थान और वसने का प्र०

पिशाचदेवाधिकार, रहना उनका

दक्षिणपिशाचाधिकार

उत्तर पिशाचों में विशेष कारण

एव मृतेषां का भी अधिकार जाणना यायत् गधर्व

पर्यन्त कहना इत्यादि

पणपन्ती देवतों के स्थान, रहना इ-

त्यादि अधिकार विस्तार से कहा है

जातिविशेष देवताओं के स्थान, रहना इत्यादि नि०

वैमानिकों के स्थान, रहने का वर्णन विस्तार से

सौरधर्मदेव स्थान, कहा है इत्यादि वर्णन

त्राक्रेत्र का वर्णन विस्तार से

ईशानदेवस्थान कहा है इत्यादि अधिकार

ईशानेन्द्राधिकार विस्तार से

सनत्कुमार देवताओं का अधिकार

सनत्कुमारेन्द्र का अधिकार

आर्य देवस्थानाधिकार

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०७

१०७

१०८

१०९

११२

११३

११४

११४

११४

११५

११७

११९

१२०

१२१

१२२

१२२

१२३

१२३

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|---|--------|---|--------|
| यह सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय अनिन्द्रिय इन में कौन किस्से अल्प अधिक तुल्य और विशेषाधिक होय | १४६    | ॥ तिसरा द्वार समाप्त हुआ ॥<br>॥ चौथा कायद्वार कहते हैं ॥                        | १४८    |
| सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त को में कौन किस्से अल्पादि                              | १४६    | सकाय पृथिवीकाय अस्काय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय अकार्यिको में अरुपादि | १४८    |
| एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि  | १४७    | सकाय पृथिवीकाय अपूर् तेज वायु वनस्पति और त्रसकाय अपर्याप्तक में अल्पादि प्रश्न  | १४९    |
| द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि  |        | सकाय पृथिवीकाय आदि यावत् पर्या० में अल्पादि                                     | १४९    |
| त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अपर्यबहुत्वादि   |        | सकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि   |        |
| चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि   |        | पृथिवीकाय पञ्जात अपञ्जात में अरुपादि  |        |
| पञ्चेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्त का अल्पादि   |        | अस्काय पञ्जात अपञ्जात में अपर्यबहुत्वादि  |        |
| सङ्घट्टिय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस्से अल्पादि प्रश्न                 | १४८    | तेजस्काय पञ्जात अपञ्जात में अरुपादि   |        |
|   |        | वायुकाय पञ्जात अपञ्जात में अरुपादि  |        |
|   |        | वनस्पतिकाय पञ्जात अपञ्जात में अल्पादि   | १४०    |





|   |            |   |            |            |
|---|------------|---|------------|------------|
| <p>॥ पंचम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मनोर्योगी धारयोगी काययोगी शरीर<br/>अयोगी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इ०</p> <p>(पंचम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ सदा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सर्वद खींचे पुरुषपदे नपुसकवेद और अंब<br/>दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न</p> <p>(सदा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव सलेख्य कृष्णलेखी नीललेखी कापोत<br/>लेखी तेजोलेखी पद्मलेखी शुक्ललेखी और अलेखी<br/>इनमें कौन किस्से थोड़ा और घणा इत्यादि</p> <p>(सातमा द्वार हुआ)</p> | <p>१६७</p> | <p>॥ आठवा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यग्मिथ्यादृष्टी<br/>इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि</p> <p>(नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी प्रव<br/>धिज्ञानी मनपर्ययज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन<br/>किस्से थोड़ा इत्यादि</p> <p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से</p> <p>(१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव चक्षुर्वर्षनी अक्षुर्वर्षनी अर्थविदर्षनी</p> | <p>१६९</p> | <p>१६९</p> |
|---|------------|---|------------|------------|

| विषय और प्रश्नावि  | पत्राक  | विषय और प्रश्नावि   | पत्राक   |
|--|---|---|--|
| प्रसकाय पर्याप्त में कौन किस्से योद्धा ह०<br>यह सकाय पृथिवीकाय अस्काय तेजस्काय वा<br>युकाय धनस्पतिकाय और प्रसकाय पर्या० अ<br>पर्याप्त कौन किस्से योद्धा इत्यादि<br>यह सूक्ष्म पृथिवीकाय अ० तेज वायु धनस्पति<br>और निगोद इन में कौन किस्से योद्धा ह०<br>सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवी अ० तेज वायु धनस्पति<br>और निगोद कौन किस्से योद्धा योद्धा इत्यादि<br>सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवीकाय अ० का प्रश्न<br>(तिसरा द्वार पूर्ण)<br>॥ चौथा द्वार कहे है ॥<br>सूक्ष्म पर्याप्त पर्याप्त में कौन किस्से योद्धा<br>सूक्ष्म पृथिवीकाय पर्याप्त अ० पर्याप्त कौन किस्से | १५१<br>१५१<br>१५१<br>१५२<br>१५२<br>१५३<br>१५३ | एव अप्काय प्रश्न निर्णय<br>सूक्ष्म तेजस्काय प्रश्न निर्णय<br>एव वायु धनस्पति निगोद प्रश्न निर्णय<br>यह वादर पृथिवी अ० तेज वायु धनस्पति प्र<br>त्येक शरीर वादर धनस्पति वादर निगोद और<br>वादर प्रसकायिको में कौन किस्से योद्धा ह०<br>वादर पृथिवीकाय अ० अ० अ० पर्याप्त प्रश्न निर्णय<br>वादर पृथिवीकाय अ० अ० पर्याप्त प्रश्न निर्णय<br>वादर पृथिवीकाय अ० अ० अ० प्रश्न<br>सूक्ष्म पृथिवीकाय अ० अ० वादर पृथिवी<br>काय अ० अ० कौन किस्से योद्धा इत्यादि प्रश्न<br>निर्णय | १५३<br>१५३<br>१५३<br>१५४<br>१५४<br>१५५<br>१५७<br>१६० |

(चौथा द्वार पूर्ण)

| विषय और प्रवृत्तादि   | पत्राक | विषय और प्रवृत्तादि  | पत्राक            |
|---|--------|--|-------------------|
| <p>॥ पचम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मनोरयोगी यागयोगी काययोगी श्वोर<br/>अयोगी इनमे कौन किस्से थोड़ा घणा इ०<br/>(पचम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ छठा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सर्वेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद और अवं<br/>दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न<br/>(छठा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव सलेत्रय कृष्णलेशी नीललेशी कापोत<br/>लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी और अलेशी<br/>इनमें कौन किस्से थोड़ा और घणा इत्यादि<br/>(सातमा द्वार हुआ)</p> | १६७    | <p>॥ आठवा द्वार कहते है ॥</p> <p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी<br/>इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि<br/>(नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव आभिमनियोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अत्र<br/>धिज्ञानी मनपर्ययज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन<br/>किसे थोड़ा इत्यादि</p> <p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से<br/>(१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव चक्षुर्वर्शनी अचक्षुर्वर्शनी अत्रधिदर्शनी</p> | १६९<br>१७०<br>१७० |

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                   |
|--|--------|---|--------------------------|
| <p>केवलदर्शनी इनमें कौन किस्से घोड़ा घणा है<br/>(११ द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १२ द्वार कहे है ॥</p> <p>जीव सयत असयत सयतासयत नो सयत नो<br/>असयत नो सयतासयत इनमें कौन किस्से यो<br/>ज्ञा इत्यादि</p> <p>(१२ वा द्वार ज्ञाया)<br/>॥ १३ वा द्वार कहे है ॥</p> <p>यह जीव साकारीपयोगी सूनाकारीपयोगी में<br/>कौन किस्से घोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न<br/>(१३ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १४ वा द्वार कहेते हैं ॥</p> <p>जीव आहारक अनाहारक में कौन किस्से घोड़ा</p> | १७०    | <p>इत्यादि</p> <p>(१४ वां द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १५ वा द्वार कहे है ॥</p> <p>जीव नासक अनासक में कौन किस्से घोड़ा<br/>(१५ वा द्वार कहा)<br/>॥ १६ वा द्वार कहेते हैं ॥</p> <p>जीव परिघ्य अपरिघ्य नो परिघ्य नो अपरिघ्य में<br/>कौन किस्से घोड़ा घणा<br/>(१६ द्वार ज्ञाया)<br/>॥ १७ वा द्वार कहेते हैं ॥</p> <p>जीव पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में<br/>कौन किस्से घोड़े घणे हैं<br/>(१७ द्वार ज्ञाया)</p> | १७१<br>१७१<br>१७१<br>१७२ |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक                   |
|---|--------|--|--------------------------|
| <p>यह सूक्ष्म वादर नोसूक्ष्म नोत्रादरों में कौन थोड़ा<br/> (१८ द्वार ज्ञात्रा)<br/> ॥ १९ वा कहै है ॥</p> <p>यह जीव सज्ञी अज्ञी नो सज्ञी नो अज्ञी में<br/> कौन किस्से थोड़ा इत्यादि<br/> (१९ द्वार ज्ञात्रा)<br/> ॥ २० द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव भवसिद्धिक अमवसिद्धिक नो भवसिद्धिक<br/> नो अमवसिद्धिकी में कौन किस्से थोड़ा इ०<br/> (२० द्वार ज्ञात्रा)<br/> ॥ २१ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्ति</p> | १७२    | <p>काय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अष्टासम ७ मे<br/> कौन किस्से द्रव्यार्थता से थोड़ा घणा इत्यादि<br/> एव प्रदेयार्थतासे भी प्रश्न निर्णय<br/> धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यार्थ प्रदेयार्थ से प्रश्न<br/> (२१ द्वार हुआ)<br/> ॥ २२ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव चरम अचरम में कौन किस्से थोड़ा घणा<br/> इत्यादि</p> | १७३<br>१७३<br>१७४<br>१७७ |
|   | १७३    | <p>(२२ वा द्वार हुआ)<br/> ॥ २३ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव पुद्गल अष्टासमय सर्वद्रव्य सर्वप्रदेय<br/> सर्व पर्याय में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि नि०<br/> (२३ द्वार पूर्ण हुआ)</p>   | १७८                      |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि   | पत्रांक                  |
|---|---------|---|--------------------------|
| <p>कैवल्यदर्शनी इनमें कौन किस्से घोहा घणा है<br/>(११ द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १२ द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव सयत असयत सयतासयत नो सयत नो<br/>असयत नो सयतासयत इनमें कौन किस्से यो<br/>ना इत्यादि</p> <p>(१२ वा द्वार ज्ञाया)<br/>॥ १३ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>यह जीव साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी में<br/>कौन किस्से घोहा घणा इत्यादि प्रश्न<br/>(१३ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १४ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव आहारक अनाहारक में कौन किस्से घोहा</p> | १७०     | <p>(१४ वा द्वार पूर्ण ज्ञाया)<br/>॥ १५ वा द्वार कहै है ॥</p> <p>जीव नासक अनासक में कौन किस्से योना<br/>(१५ वा द्वार कहा)<br/>॥ १६ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव परिच्छिन्न अपरिच्छिन्न नो परित्त नो अपरित्त में<br/>कौन किस्से योना घणा<br/>(१६ द्वार ज्ञाया)<br/>॥ १७ वा द्वार कहते हैं ॥</p> <p>जीव पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में<br/>कौन किस्से घोहे घणे है<br/>(१७ द्वार ज्ञाया)</p> | १७१<br>१७१<br>१७१<br>१७२ |

| विषय और प्रश्नादि                             | पत्राक | विषय और प्रश्नादि                                 | पत्राक |
|---|--------|---|--------|
| ॥ चौथा पद आरम्भ ॥                             |        | पर्या० अपर्या० सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति        | २१२    |
| नारकी को कितने काल की स्थिति                  | २०५    | अपकाय स्थिति प्रश्न                               | २१३    |
| पर्याप्त तथा अपर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति  | २०५    | पर्या० अपर्या० अपकाय की स्थिति                    | २१३    |
| रत्नप्रभादि सात नरक के पर्याप्त अपर्याप्त नार |        | वादर अपकाय तथा पर्या० अपर्या० वादर अप             |        |
| की की स्थिति का प्रश्न                        | २०६    | पकाय की स्थिति                                    | २१४    |
| देवता की कितने काल की स्थिति                  | २०८    | एव वायुकाय वनस्पतिकाय पर्या० अपर्या० की           |        |
| पर्याप्त अपर्याप्त देवता की कितनी स्थिति      | २०९    | सूक्ष्म वादर आदि की स्थिति का प्रश्न              | २१४    |
| एव मयनवासी आदि देवता देवी पर्याप्त अप         |        | द्वीन्द्रिय तथा पर्या० अपर्या० की स्थिति          | २१५    |
| पृथिवीकाय की कितने काल की स्थिति              | २०९    | एव त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्या० अपर्या० स्थिति | २१६    |
| पर्याप्त का की स्थिति का निर्णय               | २१२    | पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक की स्थिति              | २१६    |
| पृथिवीकाय की कितने काल की स्थिति              |        | एव पर्या० अपर्या० पञ्चेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति   | २१७    |
| एव पर्याप्त अपर्याप्त पृथिवीकाय की स्थिति का  | २१२    | समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यच की तथा पर्या० अप    |        |
| प्रश्न  |        | र्या० समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यच की स्थिति     | २१७    |
| सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति का प्रश्न         | २१२    |   |        |



| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                          |
|---|--------|---|---------------------------------|
| ॥ २० वा द्वार कहे है ॥<br>क्षेत्रानुपातसे उरुं लोक आदि में जीवों की सख्या<br>(२० वा द्वार हुआ)<br>॥ २५ वा कहते हैं ॥<br>जीव स्यायुक्कर्म के बधक स्वयधक अपर्याप्त प<br>याप्त सुप्त जागर समोहित स्वसमोहित सातावे<br>दक स्वसातावेदक इन्द्रियोपयोगयुक्त नोइन्द्रियो<br>पयोगयुक्त साकारोपयोगयुक्त अनाकारोपयोग<br>युक्त में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि<br>(२५ वा द्वार कहा)<br>॥ २६ वा द्वार कहे है ॥<br>क्षेत्रानुपात से पुद्गल का त्रैलोक्य में व्यापारि<br>यह परमाणु पुद्गल सख्यातप्रदेशी स्वसख्यातप्रदे | १७८    | श्री अनन्तप्रदेशी स्कन्ध इनमें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ<br>द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से कौन किस्से थोड़ा इत्यादि<br>एक प्रदेशावगाढ सख्यात स्वसख्यात प्रदेशाय<br>गाढ पुद्गलों में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशा<br>र्थसे कौन किस्से थोड़ा घणा<br>एक समयस्थितिक सख्यात स्वसख्यात समय<br>स्थितिक पुद्गल में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्र<br>देशार्थ से तयैव<br>एव एकगुण काले का मात्र<br>(२६ द्वार पूर्ण ऊँचा)<br>सर्व जीव स्वरूप बहुत्व महा द्रुक्<br>॥ तीसरा पद पूर्ण ऊँचा ॥ | १९३<br>१९६<br>१९७<br>१९८<br>१९८ |
|   | १९१    |   |                                 |
|   | १९३    |   |                                 |

| विषय और प्रवृत्तादि  | पत्रांक                                | विषय और प्रवृत्तादि   | पत्रांक   |
|--|--|---|---|
| एव ईशान देव देवी प० अप० आदि की स्थिति<br>सनत्कुमार देवी देव प० अप० आदि स्थिति<br>ब्रह्मदेव देवी से लेके अभ्युत देवलोक के देव<br>ताओ की स्थिति सवित्रोप<br>नव त्रैलोक्यक विमान देव प० अप० स्थिति<br>विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देव प०<br>अप० स्थिति<br>सूर्यार्थसिद्ध देव प० अप० स्थिति<br>(चौथा स्थिति पद पूर्ण हुआ) | २२७<br>२२८<br>२२९<br>२३२<br>२३५<br>२३५ | असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे<br>एव जैसे नारकी तथा असुरकुमार के अनन्त<br>पर्याय कहे तैसे नागकुमार या मत् स्तनितकु-<br>मार को कहना<br>पृथिवीकाय के अनन्ता पर्याय कहे<br>अष्टकाय के अनन्ता पर्याय कहे<br>तेजस्काय के अनन्त पर्याय<br>वायुकाय के अनन्त पर्याय<br>यनस्पतिकाय के अनन्त पर्याय<br>वेरिद्रो के अनन्त पर्याय<br>तेरिद्रो चौरिद्रो तथा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के<br>मनुष्य के अनन्ता पर्याय | २४२<br>२४४<br>२४४<br>२४५<br>२४५<br>२४५<br>२४६<br>२४७<br>२४७ |
| ॥ पाचमा पद आरम्भ ॥<br>कितने भेद पर्यन्त है, जीव अजीवके पर्यन्त<br>नारकी के अनन्ता पर्याय कहे   | २३५<br>२३७                             |   |   |

गन्धर्व्युत्क्रान्तिक पर्वेद्विय तिर्यच तथा पर्या० स्थ  
पर्या० गन्धर्व्युत्क्रान्तिक पर्वेद्विय की स्थिति  
एवं जलधर पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय तिर्यच  
स्थिति  
एव समूर्च्छिम पर्या० स्थपर्या० तथा गर्जयुत्क्रा  
न्तिक पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय जलधर स्थिति  
एव सनेत्र स्थलधर पर्वेद्विय तिर्यच स्थिति  
उरपरिसर्प स्थलधर पर्या० स्थपर्या० पर्वेद्विय  
स्थिति  
समूर्च्छिम पर्या० स्थपर्या० स्थलधर उरपरिसर्प  
पर्वेद्विय  
एव मुजपरि सर्प की स्थिति  
एवं स्थलधर पर्वेद्विय तिर्यच स्थिति

२१७

२१७

२१७

२१८

२१९

२२०

२२०

२२१

एव मनुष्य पञ्जात्त अपञ्जात्त समूर्च्छिम गर्जज  
मानव्यन्तर देवता देवी पर्या० स्थपर्या० स्थिति  
ज्योतिष्क देवता देवी पर्या० स्थपर्या० स्थिति  
चन्द्राग्रिमान मे देवता पर्या० स्थपर्या० स्थिति  
सूर्यविमान मे देवता तथा देवी प० स्थप० स्थिति  
ग्रहविमान मे देवता तथा देवी प० स्थप० स्थिति  
नक्षत्र विमान देव देवी प० स्थप० स्थिति  
तारा विमान देव देवी प० स्थप० स्थिति  
वैमानिक देव देवी प० स्थप० की स्थिति  
सौधर्म देव देवी पर्या० स्थप० परिगृहीत स्थप  
रिगृहीत पर्या० स्थप० एव स्थालाया १२ मे  
स्थिति

२२२

२२२

२२३

२२४

२२४

२२५

२२५

२२६

२२६

२२६

केवलज्ञानी मनुष्य के छानन्ता पर्यन्त कहे  
अजीव पर्यन्त कितने भेदे  
अरूपी अजीव पर्यन्त दशभेदे कहे हैं  
रूपी अजीव पर्याय चार भेदे कहे  
परमाणु पुद्गल पर्यन्त वक्तव्यताधिकार  
द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यन्त वक्तव्यताधिकार  
एक प्रवेद्यावगाढ पुद्गल पर्यन्त प्रश्न  
एक समयस्थितिक पुद्गल पर्यन्त प्रश्नोत्तर  
एकगुण कालक पुद्गल पर्यन्त प्रश्न  
जघन्यावगाह द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यन्त  
जघन्यस्थितिक परमाणुपुद्गल पर्यन्ताधिकार  
जघन्यगुणकाल आदि परमाणुपुद्गल पर्यन्ताधि०  
८ स्पर्श की वक्तव्यता कहना

यक्तव्यताधिकार  
जघन्यगुण कालकादि पंचेद्रिय तिर्यंच पर्यन्त  
जघन्यादि आभिनिवोधिकज्ञानी पंचे० तिर्यंच  
पर्यन्त  
जघन्यावधिज्ञानी पंचेद्रिय तिर्यंच पर्यन्त  
उत्कृष्टावधिज्ञानी इसीतरह से कहना  
अवधिज्ञानी तथा विभगज्ञानी कहना  
जघन्यावगाही मनुष्य के कितने पर्याय कहे  
जघन्यस्थितिक मनुष्य के कितने पर्याय कहे  
जघन्यगुणकालक मनुष्य के पर्याय  
जघन्याभिनिवोधिक ज्ञानी मनुष्य के पर्यन्त  
जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य के पर्यन्त कितने हैं  
जैसे अवधिज्ञानी तैसे मन पर्यन्त ज्ञानी

जघन्य उत्कृष्ट अजघन्यानुत्कृष्ट अवगाहना के  
 नारकी के अनन्ता पर्याय  
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम स्थिति के नारकी के अ-  
 नन्त पर्याय कहे  
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण कालक नारकी के  
 पर्यव वक्तव्यता  
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम आमिनीयोधिक ज्ञानी  
 नारकी की पर्यव वक्तव्यता  
 एवं श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी नारकी के प-  
 र्यव कहना अज्ञान भी कहना  
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम बहुवृत्तानी नारकी के  
 अनन्ता पर्याय कहे  
 एवं अक्षुवर्तनी अवधिदर्शनी को कहना

जघन्य उत्कृष्ट मध्यम अवगाहना के असुरकुमार  
 की अनन्ता पर्याय कहे  
 एवं स्तानितकुमार पर्यन्त कहना  
 जघन्यावगाहना के पूरिषाकाय पर्यवधिकार  
 एवं उत्कृष्ट मध्यमावगाहना के पूरिषी पर्यव  
 जघन्य मध्यम उत्कृष्ट स्थितिक पूरिषी पर्यव  
 जैसे पहले कहे तैसे सर्व आलावा दनस्पतिकाय  
 पर्यन्त सर्व वक्तव्यता कहनी  
 जघन्यावगाहनादि द्वीन्द्रिय पर्याय वक्तव्यता  
 एवं त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्यव वक्तव्यता धिकार  
 जघन्यावगाहनक पठवेन्द्रिय तिस्र पर्यव व-  
 क्तव्यताधिकार  
 जघन्य आदि स्थितिक पठेन्द्रिय तिस्र पर्यव

२५२

२५२

२५२

२५३

२५३

२५३

२५३

२५६

२५७

२५८

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक            | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                   |
|--|-------------------|---|--------------------------|
| सुवार्थसिद्ध विमान देवोपपात विरहकालप्रमाण<br>सिद्धोपपात विरहकालप्रमाण<br>रत्नप्रभा आदि पृथिवी के नारकी का व्यवन काल<br>विरहाधिकार एवं सिद्धी को छोड़ के अनुत्तर वि<br>मान तक व्यग्रन काल विरहाधिकार<br>(२ द्वार हुआ पूर्ण)   | २९१<br>२९१<br>२९१ | क्या सान्तर उपजै के निरन्तर<br>सौधमें आदि देवलोक यात्रात् सिद्ध सान्तर उप<br>जै के निरन्तर, एवं उद्धर्तनाभी सिद्धों को छोड़<br>कर कहनी<br>(३ द्वार हुआ पूर्ण)<br>नारकी एक समय में कितने उपजै, एवं ७ नरक<br>के नारकी कहे, असुरकुमार एक समय में कित<br>ने उपजै, एवं स्तनितकुमार पर्यंत कहना<br>पृथिवीकाय यावद्वनस्पतिकाय एक समय में कि<br>तने उपजै<br>चेरिद्रिय एक समय में कितने उपजै, एवं त्रौद्रिय<br>चतुरिद्रिय समष्टिर्म पंचेद्रिय तिर्यच, गर्भस्थ<br>स्नातिक पंचेद्रिय तिर्यच, सम्मूर्च्छिम मनुष्य | २९२<br>२९३<br>२९३<br>२९४ |
| नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै, मनुष्य<br>सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै<br>देव सान्तर उपजै के निरन्तर, रत्नप्रभा आदि ७<br>पृथिवी के नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर,<br>असुर कुमार सान्तर उपजै के निरन्तर, एवं स्त<br>नितकुमार पर्यन्त कहा, पृथिवीकाय यावद्वन<br>स्पतिकाय द्वीद्रिय यावत्पंचेद्रिय तिर्यच मनुष्य | २९१               |   |                          |

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक     | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक  |
|--|------------|---|---|
| (पाचमा पद पूर्ण हुआ)   |            | ॥ कृष्ण पद आरम्भ ॥<br>नरक गति में कितने काल विरह है उपपातका<br>तिर्यच गति में कितना विरह उपपात में<br>मनुष्य गति, देवगति, और सिद्धिगति में उप<br>एव चतुर्त्तना मी चारों गति में कहना।<br>रक्षप्रमा आदि सात नरक पृथिवी में उपपात<br>असुरकुमार आदि यायस्तनितकुमार पर्यन्त<br>पृथिवी काय उपपात विरहकालाधिकार | २८९<br>२८९<br>२८९<br>२८९<br>२८९<br>२९०<br>२९१ |
| एष अप् तेज वायु धनस्पतिकाय उपपात वि<br>रहकाल   |            |   | २८९   |
| द्वीन्द्रिय उपपात विरहकाल, त्रीन्द्रिय चतुरि<br>न्द्रिय उपपात विरह                                   |            |   | २८९   |
| सम्पृच्छिम् पचेद्विय तिर्यच उपपात विरहकाल<br>गर्मयुत्क्रान्तिक पचेद्विय तिर्यच उपपात विर<br>हकाल     | २८६<br>२८६ |   | २८९<br>२८९                                    |
| सम्पृच्छिम् तथा गर्भज मनस्य उत्पत्ति विरहाकार<br>सौधर्मे आदि १२ देवलोक देवात्पत्ति विरह<br>कालाधिकार | २८६<br>२८७ |   | २८९<br>२९०                                    |
| श्रेयैक जिमान देवोत्पत्ति विरह, तथा विजय<br>यैजयन्त जयन्त अपराजित देवलोक देवोप<br>पात विरहकालाधिकार  | २८७<br>२८८ |   | २९०<br>२९१                                    |

| विषय और प्रश्नादि   | पन्नाक | विषय और प्रश्नादि   | पन्नाक |
|---|--------|---|--------|
| असुरकुमार अनन्तर निकल के कहा जाय कहा उपजै                                 | ३१२    | पृथिवीकाय कितना आयु शेष रहे पर भ्रम आयु बाधै एव यावत् चौरिद्वी  | ३१५    |
| पृथिवीकाय अनन्तर निकल के कहा जाय कहा उपजै                                 | ३१३    | पंचेन्द्रिय तिर्यच कितना आयु शेष रहने से पर भ्रम का आयु बाधै  | ३१५    |
| एव अप् "तेज वायु, मनुष्य वर्ज," यन्स्पति चौरिद्वी तेरिद्वी चौरिद्वी जाणना | ३१३    | एव मनुष्य वानथ्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी कहा तैसे कहना  | ३१७    |
| पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक अनन्तर निकल कहा जाय कहा उपजै                     | ३१३    | कितने प्रकार आयुग्रन्थ कहा, ठ प्रकार कहा नारकी के ठ प्रकार आयु ग्रन्थ कहा एव २४ दण्डक में कहना                  | ३१७    |
| एव जैसे जिनका उपपात कहा तैसे उद्धर्तना नी कहनी                            | ३१३    | जीव जातिनाम निहत्तायु की कितने श्वाकर्म से करे नारकी जातिनाम निहत्तायु की कितने श्वाकर्म से करै एव २४ दण्डक में | ३१७    |
| (६ द्वार पूर्ण छाया)  |        | एव गति स्थिति श्वगाहन प्रवेग अनुभाव नाम   | ३१८    |
| नारकी कितना आयु शेष रहै तय पर भ्रम का आयु बाधै एव २४ दण्डक                | ३१५    |   |        |



| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक                | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक  |
|--|-----------------------|--|---|
| दानव्यन्तर जोतिषी सीधमें छावि यावत् श्वनुस्तर<br>विमान देव एक समय में कितने उपजै<br>सिद्ध एक समय में कितने सीऊँ<br>नारकी एकसमय में कितने बरै इत्यादि जैसे<br>उपपात कहा तैसे बदन चिह्नों की लोह के कहना<br>यावत् श्वनुस्तरोंपपात के देव पर्यंत कहा<br>(५ द्वार पूर्ण हुआ) | २९४<br>२९५<br><br>२९५ | पृथिवीकाय कहा से उपजै इत्यादि वक्तव्यता<br>एव श्वप् तेज वायु वनस्पति काय जो कहा<br>बोरित्री तोरित्री बोरित्री जैसे तेजो वायु कहे<br>तैसे देव वज्र जानना<br>पर्वेद्रिय तिर्येच योनिक कहा से उपजै इत्यादि<br>निर्णय<br>मनुष्य कहा से उपजै,<br>दानव्यन्तर देवता कहा से उपजै<br>एव वैमानिक देव वक्तव्यताधिकार<br>ग्रीवैयक देव, श्वनुस्तर विमान देव एक समय से<br>फितने उपजै<br>(५ मा द्वार पूर्ण हुआ) | ३०४<br>३०७<br>३०७<br>३०७<br>३०८<br>३०९<br>३०९<br>३११<br>३१२ |
| नारकी कहा से उपजै, क्या नारकी से उपजै ति<br>गैब से मनुष्य से देव से उपजै<br>रत्नप्रज्ञा का नारकी कहा से उपजै इत्यादि सात<br>नरक के नारकी का अधिकार<br>असुरकुमार कहा से उपजै इत्यादि यावत् स्त<br>नितकुमार पर्यंत   | २९५<br>३०१<br>३०४     | नारकी श्वनन्तर निकड के कहा जाय कहा उपजै  | ३१२   |

| विषय और प्रस्तावि  | प्रज्ञाक                                      | विषय और प्रस्तावि   | प्रज्ञाक                               |
|--|---|---|--|
| नारकी की १० सज्ञा होती है<br>असुरकुमार को १० सज्ञा होती है एव स्त-<br>नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक<br>पर्यन्त कहा<br>नारकी क्या आहार सज्ञोपयुक्त के भयसज्ञोपयुक्त<br>इत्यादि प्रश्न<br>आहारसज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसज्ञोपयुक्त नारकी<br>का अल्प बहुत्व<br>तियेच क्या आहार यावत्परिग्रह सज्ञोपयुक्त<br>तियेच आहार आदि सज्ञोपयुक्त का अल्पवि<br>मनुष्य क्या आहार स०<br>आहारादि सज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व<br>देयता क्या आहार सज्ञोपयुक्त है के यावत्परि | ३२५<br>३२५<br>३२६<br>३२६<br>३२६<br>३२७<br>३२७ | ग्रह सज्ञोपयुक्त है<br>आहारादि १० सज्ञोपयुक्त देयाल्पबहुत्व वक्तव्यता<br>(आठवा पद समाप्त हुआ)<br>॥ नवा पद कहते हैं ॥<br>कितने प्रकार योनि कहो, तीन प्रकार योनि कहो<br>नारकी के क्या सीतयोनि उल्लपोनि श्रीतोष्योनि<br>असुरकुमार के कौन योनि कहो एव स्तनित-<br>कुमार तक<br>पृथिवीकाय के कौन योनि, एव अप् वायु वन<br>स्पति द्वीन्द्रिय श्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि<br>कहना<br>तेजस्काय के श्रीत योनि नहीं | ३२७<br>३२८<br>३२८<br>३२८<br>३२९<br>३२९ |

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक            | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक                   |
|--|-------------------|--|--------------------------|
| जघन्य १।२।३। उत्कृष्ट ७ आकर्षसे जाति<br>नामनिहत्वायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन<br>किसे घीटा घणा इत्यादि अधिकार<br>॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥                      | ३१९               | पृथिवीकाय वेमात्रा से आनप्राण सास्योत्त्वास<br>जोतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव<br>कितने काल से उदै<br>त्रैवेयक देव यावत्पचानुत्तर देव कितने कालसे<br>आनप्राण सास्योत्त्वास<br>सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से<br>स्वाम्योत्त्वासादि उदै<br>(सातवा उत्त्वास पद हुआ)<br>॥ आठवा पद कहते हैं ॥ | ३२१<br>३२१<br>३२३<br>३२४ |
| नारकी कितने कालसे आनप्राण सास्योत्त्वास उदै<br>असुरकुमार कितने कालसे आनप्राण सास्योत्त्वास<br>—स उदै<br>एव नागकुमार यावत्स्तनितकुमार कितने काल<br>से आनप्राण सास्योत्त्वास उदै | ३२०<br>३२०<br>३२१ | वृत्र आहार आदि सज्ञा कही   | ३२४                      |

| पत्राक |  |                   |                    |  |  |  | पत्राक |
|--------|--|-------------------|--------------------|--|--|--|--------|
|        |  | विषय और प्रश्नादि | (नवा पद पूर्ण कथा) |  |  |  |        |
|        |  | विषय और प्रश्नादि |                    | ॥ १० वा पद कहते हैं ॥                              |  |  | ३३४    |
|        |  |                   |                    | रत्नप्रमादि यावत् ईषत्प्रामाणा पयिषी कही           |  |  | ३३५    |
|        |  |                   |                    | यह रत्नप्रज्ञा पूयिषी नहीं वरमा नहीं अचरमा प्र     |  |  | ३३६    |
|        |  |                   |                    | नहीं वरमाइ नहीं अचरमाइ नहीं इत्यादि यावत् नी       |  |  | ३३७    |
|        |  |                   |                    | देखा नहीं अचरमान्तप्रदेशा इत्यादि यावत् अनुतर      |  |  | ३३८    |
|        |  |                   |                    | चे सातमी पूयिषी, सौधर्मे आदि यावत् पूयिषी, एव लोक, |  |  | ३३९    |
|        |  |                   |                    | विमान एव ईषत्प्रामाणा एव अलोक नी कहना              |  |  | ३४०    |
|        |  |                   |                    | परमाणु पुत्रल क्या वरम अचरम अयक्तव्य वर            |  |  | ३४१    |
|        |  |                   |                    | माइ अचरमाइ इत्यादि जगा २६                          |  |  | ३४२    |

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| पर्वेन्द्रिय त्रियच योनि को कौनसी योनि<br>सम्पूर्ण पर्वेन्द्रिय त्रियच, गर्भव्युत्क्रान्तिक प<br>र्वेन्द्रिय त्रियच योनि यत्कव्यताधिकार<br>मनुष्य को कितने प्रकार योनि कही<br>वानध्यन्तर, जोतिषी, और वैमानिक योनि<br>यत्कव्यता | ३२९    | पृथिवीकाय को क्या सचित्त योनि स्थितियोनि<br>सम्पूर्ण पर्वेन्द्रिय त्रियच और मनुष्य योनि नि<br>गर्भव्युत्क्रान्तिक पर्वेन्द्रिय त्रियच मनुष्य योनि<br>निर्णय | ३३१    |
| यह जीव जीतयोनि उच्चयोनि शीतोष्णयोनि<br>स्थयोनियों में कौन किस्से योग्य घणा इत्यादि<br>निर्णय   | ३३०    | वानध्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे-स्थसुर<br>कुमार को कहा  | ३३२    |
| सचित्त स्थित मिश्र जेद से तीन प्रकार योनि<br>कही   | ३३१    | यह सचित्त स्थित मिश्रयोनिक स्थयोनिको में<br>कौन किस्से योग्य घणा इत्यादि  | ३३२    |
| नारकी के क्या सचित्त स्थित और मिश्र योनि है<br>स्थसुरकुमार योनि प्रश्न एवं स्थानितकुमार पर्यन्त  | ३३१    | समृत विवृत समृतविवृत जेदसे तीन प्रकार यो<br>नि कही  | ३३२    |
|  | ३३१    | नारकी के समृतयोनि कही, एवं यावद्वनस्पति   | ३३२    |

| विषय और प्रस्तावि   | पत्राक | विषय और प्रस्तावि  | पत्राक |
|---|--------|--|--------|
| विषय और प्रस्तावि है ३५८                                  | ३५८    | विषय और प्रस्तावि है ३५९   | ३५९    |
| म और अक्षरम है ३५९  | ३५९    | म और अक्षरम है ३६०   | ३६०    |
| एवं धर्ण गन्ध रस स्पर्श चरम से कदाचित् चर म अक्षरम है ३६१ | ३६१    | ॥ ११ पद कहते हैं ॥ ३६२   | ३६२    |
| (१० चरम पद समाप्त जाय)                                    |        | अथ नूनं मन्ये अथधारिणीति नापा इत्यादि प्रश्न निर्णय ३६३                      | ३६३    |
|   |        | अथ नूनं मन्ये अथ सत्य अथसत्य सत्यमृपा अथधारिणी मापा क्या सत्य अथसत्यमृपा ३६४ | ३६४    |
|   |        | गायो मृगा पञ्चव पक्षिण प्रज्ञापनी यह मापा है मृपा नहीं ३६५                   | ३६५    |
|   |        | याच स्त्री पुरुष नपुसकवाक् प्रज्ञापनी यह मापा ३६६                            | ३६६    |

| विषय और प्रवृत्तादि   | पत्रांक                         | विषय और प्रवृत्तादि   | पत्रांक                         |
|---|---------------------------------|---|---------------------------------|
| एव २। ३। ४। ५। ६। ७। ८ प्रवेष्टी स्कन्धा<br>की वक्तव्यता यावत् सख्यात सख्यात स्युनन्त<br>प्रवेष्टी स्वयं तद्वत् कथा<br>परमाणुस्मयसदृश इत्यादि गाथा ६<br>परिमल्ल स्यादि पाच सस्यानो की वक्तव्यता,<br>परिमल्ल संस्थान क्वा सख्यात स्युसख्यात अन<br>न्त, एवं यावत् श्यायत कहना, परिमल्ल सं<br>ठाण क्वा सख्यातप्रवेष्टी स्युसख्यातप्रवेष्टी स्युनन्त<br>प्रवेष्टी एव यात्रदायत, परिमल्ल सठाण क्वा<br>सख्यातप्रवेष्टीवगाढ स्युसख्यात प्रवेष्टीवगाढ एव<br>श्यायत पर्यन्त, परिमल्ल ० स्युसख्यातप्रवेष्टी क्वा<br>स्युसख्यातप्रवेष्टीवगाढ अनन्तप्रवेष्टीवगाढ एव<br>श्यायत पर्यन्त | ३५७<br>३५७<br>३५७<br>३५७<br>३५८ | जीव गति चरम से क्वा चरम के स्युचरम एव<br>निरन्तर वैमानिक<br>नारकी गति चरम से क्वा चरमा के स्युचरमा एव<br>वैमानिक पर्यन्त<br>नारकी स्थितिचरम से क्वाचित् चरम क्वाचित्<br>स्युचरम एव यावत् वैमानिक<br>नारकी ज्ञचरम से क्वाचित् चरम क्वाचित्<br>स्युचरम, एव वैमानिक पर्यन्त, नारकी जाया<br>चरम से चरम स्युचरम जी एव वैमानिक पर्यन्त,<br>एव एकैन्द्रिय को ठोका के वैमानिक पर्यन्त कहना<br>नारकी श्यानप्राण चरम से चरम के स्युचरम, एव<br>यावत् वैमानिक<br>एव श्याहार चरम, जाय चरम से क्वाचित् चर | ३५६<br>३५६<br>३५७<br>३५७<br>३५८ |

| विषय और प्रस्ताव                  | पत्रांक | विषय और प्रस्ताव | पत्रांक |
|-----------------------------------|---------|------------------|---------|
| मापा द्रव्य की                    | ३७७     | विषय और प्रस्ताव | ३७७     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८२     | विषय और प्रस्ताव | ३८२     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८२     | विषय और प्रस्ताव | ३८२     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८३     | विषय और प्रस्ताव | ३८३     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८४     | विषय और प्रस्ताव | ३८४     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८५     | विषय और प्रस्ताव | ३८५     |
| पुष्पागार यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८६     | विषय और प्रस्ताव | ३८६     |



| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक  | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक   |
|---|---|--|--|
| भाषा कठिन समर्थित इत्यादि गाथा २<br>कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है<br>पर्याप्तिकी भाषा सत्या मृषा से दो भेद है<br>सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार<br>मृषा भाषा मो दश प्रकार कहि है क्रोचनिश्चि<br>सादि भेद से<br>अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृषा असत्यामृषा भेद<br>से दो प्रकार है<br>सत्यामृषा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश<br>भेद है<br>असत्यामृषा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक<br>भेदसे १२ भेद है<br>जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि | ३७१<br>३७२<br>३७२<br>३७२<br>३७३<br>३७३<br>३७४<br>३७४<br>३७४ | नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है<br>एव एकैद्रिय की छोड़कर सर्वदृढक प्रश्नोत्तर कहना<br>चार भाषा की जाति कही<br>जीव क्या सत्य भाषा योलै कि असत्या भाषा<br>योलै इत्यादि<br>नारकी सत्य भी योलै असत्य भी योलै एव असु<br>रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्विन्द्रिय<br>ब्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य<br>नहीं सत्यासत्य असत्यामृषा योलै, पंचेन्द्रिय<br>तिर्येष असत्यामृषा भाषा योलै,<br>जीव जिन द्रव्यों को भाषा पर्जे ग्रहे सो क्या<br>एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाष व्यक्त्यता से | ३७५<br>३७६<br>३७६<br>३७६<br>३७६<br>३७६<br>३७६<br>३७७ |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक     | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक            |
|---|------------|---|-------------------|
| भागान, इत्यादि वक्तव्यता<br>एव कार्मण शरीर भी कहना<br>नारकी को दोनो औदारिक शरीर है यद्य भी<br>मुक्त भी है   | ३९५<br>३९५ | रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर<br>पंचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय<br>में विशेष है   | ४००<br>४०१<br>४०५ |
| एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना<br>असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तनितकु-<br>मार पर्यंत   | ३६९<br>३९७ | मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि<br>(१२ वा शरीर पद पूर्ण ज्ञाया)  |                   |
| पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल<br>से निरूपण  | ३९८        | कितने प्रकार परिणाम, दो जेद जीव परिणाम<br>और अजीव परिणाम  | ४०७               |
| पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष आ<br>रीर भी कहना, अपूकाय तेजस्काय भी कहना,<br>वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव<br>शेष शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा | ३९८        | जीव परिणाम, गति परिणाम आदि जेद से १०<br>प्रकार है<br>गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेद से,<br>इन्द्रिय परिणाम ५ जेद है, कपायपरिणाम ४<br>जेद, लेज्या परिणाम ६ जेद | ४०७<br>४०८        |

## विषय और प्रश्नादि

पत्राक

## विषय और प्रश्नादि

पत्राक

घोसता जीव आराधक है के विराधक है,  
सत्यमासी मृपामापी आदि मापक अमापकजी  
वों में कौन किस्से घोडा घणा इत्यादि यक्त  
व्यताधिकार

३७९

(११ मापा पद पूर्ण हुआ)

॥ १२ वा पद कहते हैं ॥

पाच शरीर कहे औदारिक वैक्रिय आहारक  
तैजस कर्मण  
नारकी को वैक्रिय तैजस कर्मण यह तीन शरीर हैं  
एवं असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहा  
पृथिवीकाय को औदारिक तैजस कर्मण तीन  
शरीर, वायुको लोह औरिन्द्रो पर्यन्त सबकी

३९०

३९०

३९०

यही तीन शरीर है, वायु को ४ शरीर औ  
दारिक वैक्रिय तैजस कर्मण है, पंचेन्द्रिय ति

३९१

यैव को भी चारही शरीर है  
मनुष्य को पाचो शरीर होते हैं, यानव्यन्तर  
जोतिषो वैमानिक को जैसे नारकी को कहा

३९१

औदारिक शरीर यह और मुक्त भेद से दो भेद  
३ शरीर कहना,

३९१

वैक्रिय भी यह मुक्त भेद से दो तरह है, क्षेत्र  
काल से निर्णय

३९२

आहारक भी दो भेद है

३९२

तैजस भी दो भेद है, क्षेत्र से अनत लोक द्रव्य  
से सिद्धों स अमस्तगुण सब जीवों से अनत

| विषय और प्रस्तावि   | पत्राक                          | विषय और प्रस्तावि  | पत्राक                          |
|---|---------------------------------|--|---------------------------------|
| ॥ १४ पद कहते हैं ॥<br>क्रोधादि चार कपाय कहे एव वैमानिक पर्यन्त कहा<br>कतिप्रतिष्ठित क्रोध है एव नैरयिक यायहुमानि फ पर्यन्त<br>कितने तरह से क्रोध होता है ४ तरह कहा वैमा<br>निक पर्यन्त<br>अनन्तानुबन्धी आदि ४ प्रकार क्रोध कहा नार<br>की यायहुमानिक पर्यन्त, एव मान माया लोन<br>सेनी चारो दफ़क कहा<br>आन्नीग नियन्त्रित आदि चार मंदे क्रोध कहा<br>एव मानादिनी<br>जीव चार तरह से श्वाठ कर्म चिर्ने इत्यादि अ | ४१५<br>४१६<br>४१६<br>४१७<br>४१७ | एव वैमानिक पर्यन्त जीव से लगाय १८ दफ़क<br>कहना<br>(१४ वा कपाय पद पूर्ण ज्ञाया)<br>॥ १५ वा पद कहते हैं ॥<br>सठाण बाहस इत्यादि गाया २<br>पाच इन्द्रिप कही<br>श्रोत्रेन्द्रिय कलम्बुका सस्यान सस्थित है<br>चक्षु मसूरचन्द्रसस्यानसस्थित है, नासिका<br>आतमुक्तक सस्यान सस्थित है, जिह्वा तुरे के<br>सस्यान है, स्पर्शनेन्द्रिय नानासस्यान सस्थित है<br>श्रोत्रेन्द्रिय बाहस्य यावत् स्पर्शनेन्द्रिय बाहस्य | ४१७<br>४१९<br>४२०<br>४२०<br>४२० |



विषय और प्रज्ञादि विषय और प्रज्ञादि पत्राक

|   |                                 |   |                          |
|---|---------------------------------|---|--------------------------|
| एव मृदुलघुगुण भी अनन्त है, और इनका अ<br>एव अप् यावत् धनस्पतिकाय विशेष यह के<br>बुद्धिदे ऐसा है, तेजस्काय शूचीकलापसस्यान<br>सस्थित है, वायु पताका सस्यान, धनस्पति<br>नानासस्यान सस्थित है<br>वेरिद्रिय के दो इन्द्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा<br>त्रीन्द्रिय के प्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु<br>स्तोक<br>पर्वेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा<br>धानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु-<br>मार कहा<br>स्पृष्ट शब्द सुने अस्पृष्ट सुने, स्पृष्ट रूप देखे | ४२६<br>४२७<br>४२८<br>४२८<br>४२८ | अस्पृष्ट रूप देखे, स्पृष्ट गन्ध लेवे अस्पृष्ट गन्ध<br>लेवे, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले<br>कहा तैसे कहना<br>एव जैसे स्पृष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेन्द्रिय का विषय<br>अगुल के असस्यात भाग में उत्कृष्ट बारह यो<br>जनसे छिन्ना पुद्गल स्पृष्ट शब्द सुने<br>चक्षु इन्द्रिय का विषय जघन्य अगुल का सस्यात<br>प्राग उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र अस्थिन्ना<br>पुद्गल अस्पृष्ट अग्रविष्ट रूप देखे<br>प्राणेंद्रिय का जघन्य अगुल असस्यात नाग उ<br>त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एव जि<br>ह्वाजी कही, स्पर्शनेन्द्रिय जी इसीतरह है,<br>अनगार जायितात्मा मारणातिक समुद्रात से सम | ४२९<br>४३०<br>४३०<br>४३१ |
|---|---------------------------------|---|--------------------------|

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि                               | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| श्रोत्रेन्द्रिय अगुल के असंख्यात माग पृथु है, बहुत<br>ब्राण मी ऐसे | ४२७    | कलयुकासस्थान है                                 | ४२४    |
| जिह्वा अगुलपृष्क, स्पर्शनेन्द्रिय शरीर प्रमाणमात्र है              | ४२७    | नारकी का स्पर्शनेन्द्रिय कौन सख्यात इत्यादि नि० | ४२४    |
| श्रोत्रेन्द्रिय अनन्तप्रवेद्य, असख्यात प्रवेशाथगाढ                 | ४२७    | असुरकुमार के कितने इन्द्रिय जैसे औदारिक कहा     | ४२५    |
| एवं यायत्स्पर्श  |        | एव स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, पृथिवीकाय को       |        |
| इन श्रोत्र बहुत ब्राण जिह्वा स्पर्शनेन्द्रिय में अ-                | ४२९    | १ स्पर्शनेन्द्रिय है और यह मसूरचद्रसस्थान है,   | ४२५    |
| वगाहनार्थतासे प्रवेशार्थतासे अवगाहनप्रवेशा                         |        | पृथिवीकाय का स्पर्शन अगुल असख्यात भाग           |        |
| यतासे कौन किस्से योना घणा इत्यादि                                  |        | वाहस्यपर्णे, पृथुपर्णे शरीरप्रमाण मात्र कहा,    |        |
| श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता कर्कशगुणगुण कहा, एवं                    | ४२७    | और यह अनन्तप्रवेद्यिक है, पृथिवीकाय स्पर्शन     |        |
| माक्त्स्पर्श, श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता मृदुलधुगुण                |        | यह पृथिवीकाय स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनार्थ प्रवे   | ४२५    |
| कहा एव यावत्स्पर्श   |        | शार्थ से कौन किस्से अस्पादि                     |        |
| नारकी को पक्क इन्दी है, नारकी का श्रोत्रेन्द्रिय                   | ४२२    | पृथिवीकाय स्पर्शन के कितने कर्कशगुणगुण है,      | ४२५    |

|  |     |     |     |
|--|-----|-----|-----|
| उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट किये है, प्रसकाय से कदाचित् स्पष्ट स्पष्ट है, फाल के देश से स्पष्ट किए है जम्बूद्वीप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एव अधर्म और आकाशास्तिकाय से नी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पष्ट किये है, प्रस काय से कदाचित् है एव लयण समुद्र, धातकी स्रक्त आदि नी कहा सो गाथा है लोक किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशाधि गल कहा, अलोक नहीं धर्म अधर्म और आकाशास्तिकाय से किन्तु आकाशास्तिकाय के | १३७ | १३८ | १३८ |
| देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीय प्रदेश अगुरुलघु अन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश से अनन्त नागी न है  | १४० | १४० | १४० |
| ॥ १५ वा पद का १ उद्देश पूर्ण ॥   | १४० | १४० | १४० |
| इन्द्रिय उपचय इत्यादि अर्थ सग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का इन्द्रिय जेद से  | १४० | १४० | १४० |
| नारकी को पाचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एव वैमानिक पर्यन्त सर्व द्रव्य मे कहना जेद यही के जिसको जितनी इन्द्रिय उत्तनाही का उपचय कहना, एव इन्द्रिय की निर्धर्तना नी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त  | १४० | १४० | १४० |



| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक     |
|--|--------|---|------------|
| यहूत के जो घरम निर्जरा पुद्गल सो सुदुम्न है  | ४३१    | आदर्शों (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श   | ४३४        |
| इत्यादि निर्णय<br>तदुत्तर मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को अन्यत्र<br>नानात्व को जाणे देखे नहीं, देयता नी कोइ<br>उन निर्जरा पुद्गलों के अन्यत्र नानात्व को न                                    | ४३२    | को देखे इत्यादि निर्णय<br>एव आदि मणी आदि का नी आलावा कहा<br>सूय गाढा छपेटा आशा कम्बल जितने आकाश<br>को रोक के रहे फैलाया आशा नी उतने ही आ  | ४३५<br>४३६ |
| यह सुदुम्न निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को व्यवगाह के<br>रहते हैं, नारकी उन पुद्गलों को न जाणे न देखे<br>एव पञ्चद्वय तिर्यक् पर्यन्त कहना, मनुष्य उन<br>निर्जरा पुद्गलों को कोई जाणे देखे कोई न जा | ४३३    | काश को रोकै<br>एवं स्थूणा सत्र भी कहा, आकाशपिगल काहे<br>से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पृथिवी<br>काय यावत् प्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मो<br>स्ति काय से स्पृष्ट है परं इसके देय सीर प्रदे<br>शसे नहीं है एव अधर्मास्ति काय से स्पृष्ट है पर | ४३६        |
| नै न देखे इत्यादि अधिकार<br>वाग्व्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी को कहा, वैमा<br>निक जैसे मनुष्य को कहा, वैमानिक दो जेदें   |        |   |            |

विषय और प्रश्नादि पत्राक

|   |  |            |
|---|--|------------|
| <p>उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट नहीं है, प्रसकाय से कदाचित् स्पष्ट स्पष्ट हो कि है, काल के देश से स्पष्ट कि है जम्बूद्वीप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एवं अधर्म और आकाशास्तिकाय से नी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पष्ट कि है, प्रस काय से कदाचित् है एवं लवण समुद्र, धातकी खरू आदि नी कहा सो गाया है</p> | <p>देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अ नन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाय से अनन्त भागी न है</p> | <p>११०</p> |
| <p>॥ १५ वां पद का १ उद्देश्य पूर्ण ॥<br/>इंद्रिय उपचय इत्यादि अर्थ संग्रह गाया २<br/>कितने प्रकार इंद्रियोपचय कहा, ५ तरह का इंद्रिय जेद से</p>  | <p>१३७</p>   | <p>११०</p> |
| <p>नारकी को पाचो इंद्रिय का उपचय कहा, एवं वैमानिक पर्यन्त सर्व द्रव्य मे कहना जेद यही के जिस्को जितनी इंद्रिय उतनाही का उपचय कहना, एवं इंद्रिय की निर्वर्तना नी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त</p>  | <p>१३८</p>   | <p>११०</p> |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक     |
|---|--------|---|------------|
| यहत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सूक्ष्म है  | ४३१    | इत्यादि   | ४३४        |
| तद्वत्स्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को स्थूलत्व नानात्व को जाने देखे नहीं, देखता नी कीहु उन निर्जरा पुद्गलों के स्थूलत्व नानात्व को न देखे न जाने                                  | ४३२    | आदर्शों (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श को देखे के अपने को देखे प्रतिनाग (ठाया) को देखे इत्यादि निर्णय एव अंसि मणी आदि का नी आलावा कहा खूब गाढा छपेटा ऊँचा कम्बल जितने आकाश को रोक के रहे फैलाया ऊँचा नी उतने ही आकाश काज को रोकै | ४३५<br>४३६ |
| यह सूक्ष्म निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को अवगाह के रहते हैं, नारकी उन पुद्गलों को न जाने न देखे एवं पर्बेद्रिय तिर्यक पर्यन्त कहना, मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को कोई जाने देखे कोई न जा | ४३३    | एव स्यूणा सत्र भी कहा, आकाशपिगल काहे से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पाँचवी काय यावत् त्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मा स्ति काय से स्पृष्ट है परं इसके द्वाय और प्रदे नसे नहीं है एव अधर्मास्ति काय से स्पृष्ट है पर        | ४३६        |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक |
|---|--------|--|--------|
| <p>एकैक नारकी के अनता द्रव्येन्द्रिय अतीत है ।<br/>यत् आठ है । पुरस्कृत ८ । १६ । १७ । सख्यात<br/>असख्यात और अनत भी होते हैं<br/>एकैक असुरकुमार के कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत<br/>अनत । यत् ८ । पुरस्कृत ८ । १ । सख्यात<br/>असख्यात अनत । एव स्तनितकुमार तक<br/>एव पृथिवीकाय अष्काय कहा , वनस्पतिकाय<br/>को यत् एक स्पर्श द्रव्येन्द्रिय है , तेजो वायु<br/>भी ऐसे ही है मेद यह के पुरस्कृत १ । १०<br/>है , एव द्वीन्द्रिय भी मेद यह के यत् दो है ,<br/>त्रीन्द्रिय को यत् चार , चौरिन्द्री को यत् ६<br/>है , पंचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य वानध्यन्तर जो<br/>तिथी सौघर्म इंसान देव जैसे असुरकुमार, मेद</p> | ४४७    | <p>ग्रह दो है , एव तेहदीय चौरिदीय में द्विन्द्रिय<br/>बढाय के कहना , चौरिदीय को व्यञ्जनावग्रह<br/>तीन अर्थावग्रह चार है , शेष जैसे नारकी को<br/>कहा तैसे वैमानिक तक<br/>द्रव्य और माव मेद से दो तरह की द्विन्द्रिय है ,<br/>आठ द्रव्येन्द्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीम<br/>स्पर्श ८ , नारकी को आठों है , एव असुर<br/>यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक । पृथिवी<br/>काय द्रव्ये १ स्पर्श यावद्वनस्पति पर्यंत । द्वी<br/>न्द्रिय को द्रव्ये स्पर्श १ जिह्वा २ दो है , ते<br/>रिद्री को दो नाक जीम और स्पर्श १ ४ हैं ।<br/>चौरिद्री को द्रव्ये दो नेत्र दो नाक जीम ५<br/>स्पर्श १ ६ हैं । शेष को जैसे नारकी को कहा</p> | ४४६    |

## विषय और प्रश्नादि

पत्राक

पत्राक

जिस्को जितनी इन्द्रिय है उतने की निर्वर्धना जी कहना, श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्धना का काल स्र सस्यात समय स्रन्तर्मुक्ते जी कहा, एव स्र ज्ञान तक, एव नारकी स वैमानिक पर्यन्त नि वर्तना काल कहा, पाच जेदें इन्द्रिय छव्वि क ही, एव २४ वरुक में जिस्को जितनी हो कहना, इन्द्रियोपयोग काल जी पाच प्रकार है नारकी

स वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना इन श्रोत्र आदि पाचो इन्द्रियों के उपयोग ३ जघन्य उत्कृष्ट स्रजघन्योत्कृष्ट में परस्पर कौन

किसे थोड़ा घणा हस्यादि इन्द्रियावगाहना पाच प्रकार नारकी स वैमानिक पर्यंत जिस्को जितनी इन्द्रिय हो उड़ी की अ

१११

११२

यगाहना कहनी, पाच प्रकार का अपाय २४ वरुक में यथोचित कहा, ईहा पाच प्रकार की

११३

चौधीस दठक में यथोचित कहना, अग्रह व्यजन और अर्थ के भेद स दो प्रकार है, व्यजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्श स चार भेद है, अर्थावग्रह पाच इन्द्रियों का पाच और मन स छ प्रकार होता है उनमें स नार की को २ व्यजन और अर्थ का अवग्रह है

११४

पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनाव ग्रह स्पर्शनेन्द्रिय का एक ही है, अर्थावग्रह भी एक स्पर्शनही का है, एव वनस्पति पर्यंत कहा, एव द्वीन्द्रिय को, जेद यह के व्यञ्जनाव

यदु नही पुरस्कृत कदाचित्, एव सर्वार्थसिद्धि  
देयत्व मे भी कहा,  
एकैक मनुष्य के नारकीपने में, यावत्सर्वेन्द्रिय  
तिर्यच पने मे मनुष्यपन में, वानव्यन्तर जो  
तिष्ठ यावत् श्रेयैक देवपने में, विजयवैजय  
न्तादि देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवपने कितने

द्रव्येन्द्रिय अतीत यद् पुरस्कृत इत्यादि  
वानव्यन्तर जातिपी जैसे नारकी, सौधमंदवभी  
जैसे नारकी सौधमं देव की पचानुत्तर देवपने  
में, सर्वार्थसिद्धदेवत्वमे अतीतादि कहा, अनु

त्तरदेवको नारकीपने मे अतीतादि  
अनुत्तरदेव की सर्वार्थसिद्धदेवत्व मे। सर्वार्थसिद्ध  
देव की नारकीपने मे एव मनुष्यवर्ज सर्व मे

४५१

४५२

४५३

अतीतादि

४५४

नारकी के नारकी पने में कितने द्रव्येन्द्रिय इत्यादि

४५४

(द्वार पूर्ण हुआ)

नारकी को कितने भावेंद्रिय, पाच है, एव ये

मानिक पर्यन्त यथोचित कहना, एकैक नार

-की के कितने अतीत यद् पुरस्कृत इत्यादि

४५७

यत्कव्यता

एकैक नारकी के नारकीपने में कितने भावेंद्रिय

४५८

अतीत

(१५ पद समाप्त हुआ)

॥ १६ वा पद कहते है ॥

पनरह प्रकार प्रयोग कहा ।

४५९

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| <p>इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत है भी नहीं, मी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म छान्तक एक सहस्रार छानतमाणत आरण अथ्यत शैवेयक देव को जैसे नारकी को, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त ८। १६। २४। संख्यात, सर्वायसिद्धदेव को अतीत अनन्त ८। पुरस्कृत ८, नारकी को द्रव्येन्द्रय अनन्त अतीत</p> | ११८    | <p>कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत, एव नारकी के असुरपणों में अतीत यद्यपि पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय कहे एक नारकी को एकेन्द्रिय पने में कितने अतीत यद्यपि पुरस्कृत है, द्वीन्द्रियपने में कितने है, त्रींद्रीय पने में कितने है इत्यादि निर्णय एव चौरिन्द्रिय भी पर पुरस्कृत ६। १२। १८</p>          | ११९    |
| <p>यद्यपि असंख्यात पुरस्कृत अनन्त एव शैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को यद्यपि कदाचित् संख्यात असंख्यात भी है, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त यद्यपि और पुरस्कृत असंख्य है, सर्वायसिद्धदेव को अतीत अनन्त यद्यपि पुरस्कृत संख्यात है, एकेक नारकी के नारकी पणों में</p>                       |        | <p>संख्यात असंख्यात अनन्त है, पंचेदीय तिर्यकपने में जैसे असुरकुमार पने में कहा, एव मनुष्यपने में भी पर पुरस्कृत ८। १६। २४। संख्यात असंख्यात अनन्त है, यानव्यन्तर जीतिषी सौधर्म देव शैवेयकदेवपने में अतीत अनन्त यद्यपि पुरस्कृत कदाचित्, एकेक नारकी को पंचानुत्तर देवपने में अतीत नहीं</p> | १५०    |

## विषय और प्रवृत्तादि

कहा। पाच प्रकारे गतिप्रपात कहा प्रयोगगति।  
 आदि के भेद से। प्रयोगगति १५ भेदें जैसे  
 प्रयोग कहा जैसे यह भी कहनी। जीघो को  
 प्रयोगगति पनरह भेद है। नारकी का ११  
 प्रकार है एव वैमानिक पर्यन्त क्या  
 जीघो को क्या सत्यमनप्रयोगगति यावत् क्या  
 कार्मणश्चरीरकायप्रयोगगति है यावद्वैमानिक  
 पर्यन्त कहा। एव गति भेद वक्तव्यता  
 (१६ वां प्रयोग पद कहा)

॥ १७ वा पद कहते हैं ॥

आहारसमसरीरा यह अर्थ समग्र गाथा

नारकी सर्व समाहार समञ्चरीर समुत्खासनिष्ठास

१८५

हैं इत्यादि

नारकी सर्व समकर्म हैं इति वक्तव्यता। नारकी

१८६

नारकी सर्व समवर्ण हैं इत्यादि जैसे वर्णकहा जैसे

१८७

नारकी सर्व समायु समोपपन्नक है इत्यादि निर्ण

१८८

नारकी सर्व समायु समोपपन्नक है इत्यादि एव स्तनित

१८९

पूयिघीकाय आहार वर्ण कर्म स्थौर लेश्यासे जैसे

१९०

एव चौरिद्रिय, पंचेन्द्रिय त्रियेच जैसे नारकी

१९१



जीवका पनरह प्रकार उपयोग है । नारकी को ग्यारह भेद है । एवं असुरकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय को तीन उपयोग । एवं वनस्पति

पर्यन्त कहा वायुकाय को ५ उपयोग । वेरिन्द्री को चार प्रकार एवं चौरिद्री पर्यन्त पर्वद्वियातिर्यच को तेरह प्रकार है

मनुष्य को पनरह उपयोग । वानव्यन्तर जीति पी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा । जीव का सत्यमनप्रयोगी यावत्का कर्मण शरीर कायप्रयोगी इत्यादि भागे ण कहे नारकी का सत्यमनप्रयोगी इत्यादि । एवं असुरकुमार यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त कहा । पू

१६१

१६२

१६३

थिवीकाय का औदारिकशरीरकायप्रयोगी— औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगी के कर्मणशरीरकायप्रयोगी एवं वनस्पतिकाय पर्यन्त प्रश्नोत्तर कहा । वायुको वैक्रियमिश्रशरीरकाय—

प्रयोग है

द्विन्द्रिय का औदारिकशरीरकायप्रयोगी यावत् का कर्मणशरीरकायप्रयोगी है । एवं चौरि

पर्वेन्द्रिय तिर्यच जैसे नारकी भेद यह के औदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोग भी है । मनुष्य को कायप्रयोग निर्णय भग २१ प्रिकयोगे ३२ चतु सयोगी १६ सर्व ण

वानव्यन्तर जीतिपी वैमानिक जैसे असुरकुमार

१६४

१६५

१६५

(२ उद्देश्य पूर्ण ज्ञाया)

नारकी नारकी में उपजै के अनारकी नारकी में उपजै एव वैमानिक पर्यंत कहा, नारकी नारकी में निकले के अनारकी से, एव वैमानिक पर्यंत जोतिपी वैमानिक में घयन्ति ऐसा कहना

कृष्णलेखी नारकी कृष्णलेखी नारकी में उपजै इत्यादि निर्णय यावत् शुक्ललेखी शुक्ललेखी में उपजै एव २४ वक्रक में यथोचित कहना

(३ उद्देश्य पूर्ण ज्ञाया)

परिणाम गद्य इत्यादि गाया

तु लेख्या कही

कृष्णलेख्या नीललेख्या को पाके तद्वर्ण तद्वर्ण तद्वर्ण न्यावि पर्णे परिणामे

एवं अन्तिमापे नीललेख्या कापोतलेख्या को पाके कापोत तेजोलेख्या को पाके तेजोलेख्या पद्म लेख्या को पाके पद्मलेख्या शुक्ललेख्या को पाके

तद्वर्णादिपर्णे परिणामे इत्यादि सद्वर्णान्त कृष्णलेख्या कैसी वर्ण से, जीमूत अजन खजन

नीललेख्या वर्ण निरूपण, कापोत लेख्यादि वर्ण निरूपण

एव आस्वाद निरूपण तु लेख्या का तीन लेख्या दुरन्तिगन्ध और तीन सुरन्ति गन्ध

है, एव शुद्धाच्युत, एव प्रज्ञास्ता प्रज्ञास्त, सक्ति प्रासक्तिष्ट, और स्पञ्ज, सुगति दुर्गतिगामी कही है। कृष्णलेख्या ३। ९। २७। ८१। ४२।

५२३

५२५

५२६

५३३

५१३

५१४

५२१

५२२

५२२

मनुष्य सर्व समाहार है इत्यादि जैसे नारकी, फर्क क्रियामें है  
 जेव क्रियासे तीन जेद है  
 दानध्यन्तर जैसे असुरकुमार  
 एव जातिपा वैमानिक जी जेव यह के वेवना से  
 जैसे औधिक गमा कहा तेसे सलेज्य का गमा  
 द्विषि है  
 कहना वैमानिक पर्यन्त  
 पृथिवी अप्वनस्पति पर्चेद्रिय तिर्यच मनुष्य जैसे  
 औधिक गमा कहा जेव मनुष्य को क्रिया में  
 प्रमत्त अप्रमत्त कहा  
 (१ उद्देशा पूर्ण ज्ञा)  
 कितनी लेख्या ल कही, नारकी को कितनी ले

प्र्या, तिर्यच योनिक को ल लेख्या, एकीद्रिय  
 को चार लेख्या,  
 पृथिवीकाय को चार लेख्या, अप्व वनस्पति जी  
 छैनही है, तेजो वायु द्वीद्रिय त्रीद्रिय चतुरि  
 द्रिय जैसे नारकी, पर्चेद्रिय तिर्यच को ल, सम  
 तिम पर्चेद्रिय तिर्यच जैसे नारकी, गर्जज पचे  
 द्रिय तिर्यच को ल एवं लेख्या वक्तव्यताधिकार  
 गन्तजमनुष्य को ल, देव को ल, देवियों को चार,  
 एव नयनगासि देव देवी दानध्यन्तर देव देवी  
 वैमानिक देव देवी लेख्याधिकार  
 यह जीव सलेजी कृच्छलेजी यायत् शुक्लेजी में  
 कौन किस्से योना घणा इत्यादि अल्प बहुत्व  
 वक्तव्यता उद्देश समाप्ति तक

४९२

४९३

४९४

४९५

४९६

४९७

४९८

४९९

५००

५०१

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| नारकी पर्याप्त नारकी पणें कितने काल तक रहे<br>इत्यादि अधिकार                                 | ५४९    | स्ययोगी स्ययोगीपणें, एव मन अचनकाय योगी  | ५५६    |
| सद्ब्रिय सद्ब्रियपणें कालसे कथतक होय इत्यादि   | ५४९    | निर्णय  | ५५७    |
| एव पर्याप्त स्यपर्याप्त का खालाया कहा  | ५५०    | एव स्त्री पुरुषवेद नपुसकवेद प्रश्न, अवेद प्रश्न,<br>सकपाई प्रश्न, एव क्रोध माया मान लोभ कपायी | ५५९    |
| सकाय सकायपणें, पृथिवीकाय पृथिवीकायपणें,<br>एवं अग्नेजवायु                                    | ५५१    | अकपायी निर्णय   | ५६०    |
| वनस्पतिकाय प्रश्न, त्रसकाय त्रसकायपणें, अ<br>काय स्यकायपणें, एव त्रसकाय पर्याप्त स्यपर्याप्त | ५५२    | सलेखी का प्रश्न एव त्र ले० खीका खालाया क<br>हना खलेखी नी                                      | ५६१    |
| तक कहा   |        | सम्यग्दृष्टि सम्यग्दृष्टिपने इत्यादि निर्णय   | ५६२    |
| सूक्ष्म पृथिवी स्यपूतेज वायु वनस्पति, एव वा<br>दर नी   | ५५४    | ज्ञानी ज्ञानीपने कालसे कथतक इत्यादि प्रश्नोत्तर   | ५६३    |
| थादर निगीद प्रश्न,<br>स्ययोगी स्ययोगीपणें काल से कितने काल होय,                              | ५५५    | विजग ज्ञानी वक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अविधिद<br>शनी का प्रश्न                                  | ५६५    |
|  |        | सयत असयत सयतासयत प्रश्न   | ५६६    |

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक            |
|--|--------|--|-------------------|
| <p>७ परिणामें परिणमैं<br/>         कृष्णलेत्रया अनन्तप्रादेशिकी एव यावत् शुक्लले<br/>         त्रया, कृष्णलेत्रया असंख्येयप्रवेशावगाढ एव<br/>         यावत् शुक्ललेत्रया, कृष्णलेत्रया की कितनी अ<br/>         वगाहना एव शुक्ललेत्रयावगाहना, स्यान् अस्<br/>         स्यात्<br/>         लेत्रयास्यानीं का, अल्पयहुत्व व्रथ्यार्थं प्रवेशार्थं<br/>         व्रथ्यार्थं प्रवेशार्थं से<br/>         (बीया उवेशा पूर्ण हुआ)<br/>         कृ लेत्रया कही, कृष्णलेत्रया नीलेत्रया को पाके<br/>         जैसे बीये उवेशे में कहा वैदूर्य मणि दृष्टान्त<br/>         पर्यन्त कहना इत्यादि वक्तव्यता<br/>         (पाचया उवेशा पूर्ण हुआ)</p> | ५३४    | <p>कृ लेत्रया कही, मनुष्य की कितनी लेत्रया इ—<br/>         त्यादि निर्णयाधिकार<br/>         (लेत्रया पद १७ वा पूर्ण)<br/>         ॥ १८ वा पद कहते हैं ॥</p>  | ५४२               |
|  | ५३५    | जीवगृहदिय काए यह सम्रह गाथा २<br>जीव जीवपनें कालसे कयतक रहै, सर्वकाल<br>नारकी नारकीपनें काल से कितने काल रहै,<br>एव तिर्येच क्षेत्र से काल से कहा, तिर्येखणी,<br>मनुष्य मनुष्यणी देव देवीदनका प्रश्नोत्तर<br>नारकी अपर्याप्त नारकी पने कालसे कय तक<br>एव याथदेवी पर्यन्त | ५४५<br>५४५<br>५४६ |
|  | ५३६    |  |                   |
|  | ५४०    |  |                   |

द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्द्वैमानिक एव २४ दहक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत

अन्तक्रिया करै तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्त क्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय भै जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तक्रिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनन्तरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया

एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अष्टकायिक भी वनस्पति का यिक छ पंचेन्द्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश

५७५

५७५

मनुष्य दश मनुष्यणी धीश यानव्यतर दश व्यतरी पाष जोतिपी बीस इत्यादि नारकी नरक से निकल नरक में उपजै नहीं नारकी नरक से निकल असुरकुमार में उपजै नहीं

नारकी नरक से निकल पञ्चेन्द्रिय तीर्यञ्च में यावत् चतुरेन्द्रिय

नारकी नरक से निकल व्यतर जोतिपी वैमानि

क में उपजै नहीं असुरकुमार असुरकुमार से निकल नारकी में उपजै नहीं असुरकुमार मर कै असुरकुमार में उपजै नहीं एव यावत्

असुरकुमार मरके पृथिवीकाय में उपजै कदाचित्

स्तनितकुमार

५७६

५७६

५७७

५७९

माकारोपयुक्त श्रुनाकारोपयुक्त त्री हसीतरह  
 तन्मस्य आहारक प्रश्न, केवल श्वाहारक तथा  
 अनाहारक काल  
 ज्ञापक श्रुतापक प्रश्न, काय परिचय श्रुपरिह काल  
 निर्णय  
 पर्याप्त श्रुपर्याप्त नो पर्याप्त नो श्रुपर्याप्त सूक्ष्म  
 यादर सज्ञी असज्ञी  
 नवसिद्धिक श्रुत्रसिद्धिक वरम अवचरम काल  
 निर्णय  
 (१८ वा पद समाप्त हुआ)

॥ ११९ कहते हैं ॥

जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि है,

एव नारकी असुरकुमार यात्र तस्तनितकुमार  
 पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि हो है, एव जन  
 स्पातिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिथ्यादृष्टि  
 नहीं है एव धीरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पर्वेन्द्रिय  
 तिर्य्यञ्जोत्तिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक  
 तीनों है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि है  
 (१९ वा सम्यक्त पद कहा)

॥ २० वा पद कहते हैं ॥

नेरह्य श्रुतकिरिया यह द्वार गाथा-जीव श्रुत  
 क्रिया करे एव नारकी यावद्वैमानिक, नारकी  
 नारकी में श्रुतक्रिया करे नहीं  
 नारकी असुरकुमार में अन्तःक्रिया करे एव यात्र

देव भी भेद यह दो पृथिवी से वैमानिक से

होय शेष नहीं होय  
महलीक सातमी से तेज वायु से नहीं, सेनापति

आदि भी एव  
अश्वरत्न हस्तिरत्न रत्नप्रमा से निकल यायत् सह  
स्वारदेव हो, चक्ररत्न चर्म दह छत्र मणि अंसि  
काकिणिरत्न असुरकुमार से ईजान तक हो,  
शेष नहीं, असयत भविकद्रव्य देव आविरा  
धितसयम, विराधित सयमा सयम से विराधि  
त सयमा सयम असङ्गी तापस कादर्पिक चर  
णपरिव्राजक किलिषापिक तिरश्चीन आजीविक  
आभियौगिक सलिगी दर्शनव्यापन्नक यह देव  
लोक में उपजै तो कहा कौन किस देवलोक

चार प्रकार असङ्गि आयु कहा, असङ्गी जीव  
क्या नैरायिकायु करै कि देवायु करै एव मनु  
ष्यायु देवायु जैसे नारकायु, एह नारकी अस  
ङ्गिआयु यायत् देव असङ्गि आयु से कौन  
किस्से थोड़ा घणा है एव अलपवज्रत्व  
(२० वा अतक्रिया पद पूर्ण)

॥ २१ वा कहते हैं ॥

विहिसठाणपमाण यह द्वार गाथा  
पाच श्रीदारिकादि शरीर कहे  
एकेद्रियादि ५ जेदस श्रीदारिक पाच जेदेहे  
पृथिवीकायादि ५ जेदस एकेद्रिय श्रीदारिक ज्ञा



एव अप् वनस्पति में भी असुरकुमार मरके तेज  
वायु द्वौद्रिय त्रौद्रिय चतुरौद्रिय में न उपजै

शेष पाच में उपजै इत्यादि  
जैसे पृथिवीकाय कहा तेसे अप् वनस्पति भी  
कहना, तेजसकाय से निकल तेजसकाय में

उपजै यायत् स्तनितकुमार  
जैसे तेज तेसे वायु, बेरींद्री बेरींद्री से निकल  
नारकी में उपजै इत्यादि पृष्ठेद्रिय तियच प  
बेंद्री तियच से निकल नारकी में उपजै इहा तक  
रत्नप्रभा पृथिवीका नारकी निकल तीर्थकर होय,  
कोड एक, एव यायत् वालुकाप्रभा पक्रममा  
पृथिवीका नारकी निकल तीर्थकर न होय

धूमप्रभा तमा यायत् सप्तमी

५८४

असुरकुमारचवके तीर्थकर पणा पावे नही, एव  
यायत् अप्, तेजस्काय तेजस्काय से निकल  
तीर्थकर होय नही धर्मसुने एव वायु मी, व  
नस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थकर न हो,  
पृष्ठेद्रिय तिर्यङ्च मनुष्य वानव्यंतर जोतिपी

अतक्रिया ही करै

सौधर्म देव चवके तीर्थकर होय कोई एक जैसे

रत्नप्रभा नारकी एव यायत्सर्वार्थसिद्ध का देव

रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय, शर्कराप्रभा

का न होय एव यायत्सातमी का नारकी, ति

र्यच मनुष्य भी नही, मवनपति ध्यतर जोतिपी

वैमानिक से होय, एव यलदेव मेद यह के

शर्करापृथिवीका नारकी भी होय, एव वासु

५८५

५८५

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| सस्या० सम्मुखिंम मे सर्वत्र ऊकही है, मनुष्य मे ६ सस्यान सम्मू० मे ऊकही है, औ दारिक शरीर की कितनी बनी अवगाहना है इत्यादि  | ५९८    | धारह योजन इत्यादि, श्रीनिद्र तीन कोस, चौरिंद्री चारकोस, पंचेद्रिय १००० योजन इत्यादि | ६०१    |
| पृथिवीकाय एकेद्रिय औदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, वा दर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय मो तंजस्काय वायुकाय मो ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अंगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरैक हजार योजन एव पर्या० अंगुल अस ख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है | ५९९    | जोयणसहस्रच्छगा यह सग्रहणि गाथा २ मनुष्यीदारिक शरीरावगाहनाधिकार                      | ६०२    |
| द्वीन्द्रिय जघन्य अंगुल असख्यात भाग उत्कृष्ट   | ६००    | वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार  | ६०३    |
|  |        | वैक्रिय शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार  | ६०८    |
|  |        | नारकी छादि दढक मे वैक्रियशरीर सस्यान  | ६०८    |
|  |        | वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार  | ६१०    |
|  |        | आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार   | ६१६    |
|  |        | आहारकशरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार   | ६१९    |
|  |        | तैजसशरीर वक्तव्यता  | ६२०    |
|  |        | तैजसशरीर सस्यान निर्णय २४ दढक मे  | ६२१    |

पृथिवीकाय एकैद्रिय औदारिक शरीर सुद्धन या  
दर नेदसे दो नेद, सुद्धन तथा यादरजी पर्याप्त

अपर्याप्त नेदसे प्रत्येक दो दो नेदहे  
एव वनस्पतिकाय एकैद्रिय औदारिकजी कहा  
द्वित्रिचतुराद्रिय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त

नेदसे द्विद्रिय कहाहे  
पंचैद्रिय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो  
नेद है, तिर्यच औदारिक तीन नेदहे एव जल

स्यल स्रवरादि जेदनिर्णय  
मनुष्य पंचैद्रियौदारिक शरीर दो नेद इत्यादि  
औदारिक शरीर नानासस्थान सस्थित है, एकै  
द्रिय का औदारिक नानासस्थानहे, पृथिवी

५९२

५९२

५९३

५९३

५९३

५९५

काय मसूरचद्र सस्थान सस्थित, एव सुद्धन पृ/

थिवीका यादर कान्नी कहा  
अपूकाय स्तिवुकविटु सस्थान, सुद्धन यादरपर्या  
प्ता पर्याप्त जी, तेज सूचीकलाप सस्थित एव  
सुद्धनयादर पर्याप्त पर्याप्त जी, वायु पताका  
सस्थान सस्थित है, एव सुद्धनादि जीहे, वन  
रुपति नानासस्थान सस्थितहे, एव सुद्धनादि  
जीहे, द्वैद्रियौदारिक शरीर ऊरुसस्थान है,  
एव तेरिद्री चउरिद्री जी, पंचैद्रिय तिर्यचको

ऊ सस्थान है पर्याप्त अपर्याप्त कोन्नी  
पर्याप्त अपर्याप्त समूर्च्छिम पंचै ० तिर्यच ऊरुहे,  
प ० अ ० गर्जज पंचैद्रिय तिर्यच नाना है,  
एव तिर्यच के १ अलावे हैं, जलचर में ६

५९६

५९६

|  |     |  |   |
|--|-----|--|---|
| सस्या० सम्प्रच्छिन्म मे सर्वत्र ऊरुही है, मनुष्य मे ६ सस्यान सम्प्र० मे ऊरुही है, स्त्री दारिक शरीर की कितनी बनी अवगाहना है इत्यादि  | ५१८ | धारह योजन इत्यादि, त्रान्द्रि तीन कोस, बौरिंद्री चारकोस, पचेद्रिय १००० योजन इत्यादि  | ६०१   |
| पृथिवीकाय एकैद्रिय स्त्रीदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अगुल असस्यात माग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एवं सुदृक्न पर्याप्ता पर्याप्त, वा दर पर्याप्ता पर्याप्त भी, एव अपूकाय भी तैजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अगुल असस्यात माग उत्कृष्ट सा तिरिक हजार योजन एव पर्याप्त अगुल अस स्यात माग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है | ५१९ | जोयणसहस्रकुगा यह सग्रहाणि गाथा २ मनुष्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार वैक्रिय शरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार नारकी छादि दढक मे वैक्रियशरीर सस्यान वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार आहारकशरीर सस्यान वक्तव्यताधिकार तैजसशरीर वक्तव्यता तैजसशरीर सस्यान निर्णय २४ दढक मे | ६०२<br>६०३<br>६०८<br>६०८<br>६१०<br>६१६<br>६१९<br>६२०<br>६२१ |
| द्वीन्द्रिय जघन्य अगुल असस्यात माग उत्कृष्ट  | ६०० |  |   |

पृथिवीकाय एकैन्द्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म वा

दर जेवसे दो जेद, सूक्ष्म तथा वादरजी पर्याप्त

अपर्याप्त जेवसे प्रत्येक दो दो जेदहे

एव वनस्पतिकाय एकैन्द्रिय औदारिकनी कहा

द्वित्रिचतुरिन्द्रिय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त

जेवसे द्वित्रिच कहाहे

पञ्चैन्द्रिय औदारिक शरीर त्रियच मनुष्यसे दो

जेद है, त्रियच औदारिक तीन जेदहे एव जल

स्थल सचरादि जेवनिर्णय

मनुष्य पञ्चैन्द्रियौदारिक शरीर दो जेद इत्यादि

औदारिक शरीर नानासंस्थान संस्थित है, एकै

न्द्रिय का औदारिक नानासंस्थानहे, पृथिवी

५९२

५९२

५९३

५९३

५९३

५९५

काय मसूरचद्र संस्थान संस्थित, एव सूक्ष्म पृ

थिवीका वादर काजी कहा

अपकाय स्तिवुक्रविदु संस्थान, सूक्ष्म वादरपर्या

प्ता पर्याप्त नी, तेज सूचीकलाप संस्थित एव

सूक्ष्मवादर पर्याप्त पर्याप्त नी, वायु पताका

संस्थान संस्थित है, एव सूक्ष्मादि नीहे, वन

स्पति नानासंस्थान संस्थितहे, एव सूक्ष्मादि

नीहे, द्वैन्द्रियौदारिक शरीर जलसंस्थान है,

एव त्रैन्द्रि चतुरिन्द्रि नी, पञ्चैन्द्रिय त्रियचको

कु संस्थान है पर्याप्त पर्याप्त नी कोनी

पर्याप्त अपर्याप्त सम्पूर्ण पर्याप्त त्रियच जलहे,

पञ्च अञ्ज गन्तव्य पञ्चैन्द्रिय त्रियच नाना है,

एव त्रियच के ९ अंशवे हैं, जलचर में ६

५९६

५९६

संस्था० सम्मुखिर्म मे सर्वत्र जोरही है, मनुष्य मे ६ संस्थान सम्मू० मे जोरही है, छो दारिक शरीर की कितनी बनी अवगाहना है

इत्यादि  
पृथिवीकाय एकेन्द्रिय श्यौदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अगुल असंख्यात भाग एव न पर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, वा

दूर पर्याप्ता पर्याप्त मी, एव अपूकाय भी तंजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति मे जघन्य अगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरिक हजार योजन एव पर्याप्त ० अंगुल अस रखात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा ऐसे है

द्वीन्द्रिय जघन्य अगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट

५९८

५९९

६००

६००

वारह योजन इत्यादि, त्रीन्द्र तीन कोस, चौरिद्री चारकोस, पंचेन्द्रिय १००० योजन इत्यादि

जोयणसहस्रकुगा यह सग्रहणि गाथा २ मनुष्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार

वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार

वैक्रिय शरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार

नारकी आदि दृढक मे वैक्रियशरीर संस्थान

वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार

आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार

आहारकशरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार

तैजसशरीर वक्तव्यता

तैजमशरीर संस्थान निर्णय २४ दृढक मे

६०१

६०२

६०३

६०८

६०८

६१०

६१६

६१९

६२०

६२१

भारणातिक समुद्रघात समयहत जीव के तैजस शरीर की कितनी अवगाहना औधिक सूत्र, एवं एकैद्विय द्वीन्द्रियादि समयहत के तैजस

की अवगाहना कही एवं मरणसमुद्रघात समयहत नारकी के तैजस की, पंचैद्विय तिर्यच मनुष्य असुरकुमारादि समयहत तैजसावगाहनाधिकार कर्मण शरीर पाच प्रकार एकैद्वियादि भेद से, तैजस शरीर समान यत्कथ्यता सर्व कहना

अनुत्तरोपपातिकवेद्य पर्यंत औदारिक शरीर पुद्गल कितनी दिग्घा से चिर्णे इत्यादि निर्णय, वैक्रिय पुद्गलादि भी कहा एवं यावत्कर्मण शरीर पुद्गल भी, उपचिर्णे आ

६२३

६२४

६२७

६२८

पचिर्णे, जिस्को औदारिकशरीर तिसको वैक्रिय जिस्को वैक्रिय तिसको औदारिक शरीर इत्यादि यत्कथ्यता

यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कर्मण शरीरों में द्रव्यार्थ से प्रवेशार्थ से द्रव्यार्थ प्रवेशार्थ से कौन किस्से योडा घणा है इत्यादि निर्णय

६२९

६३०

यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कर्मण शरीरों में जघन्यावगाहना उत्कृष्टावगाहना मध्यमावगाहना में कौन किस्से अल्पयत्कत्व (२१ वा पद कहा)

६३१

॥ २२ वा कहते हैं ॥

कितनी क्रिया कही कायिकी आदि पाच क्रिया

| विषय और प्रश्नादि   | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि   | पत्रांक |
|---|---------|---|---------|
| कही, कायिकी २ जेदे, स्थधिकरणकी २ जेदे, प्राद्वैपिकी ३ जेदे, पारितापनिकी ३ जेदे एव क्रिया निरूपणाधिकार   | ६३४     | होय एव याथवैमानिक पर्यन्त कहना, एव ना रकी श्यादि के वध का निर्णय  | ६३८     |
| जीव सक्रिय है के अक्रिय है इत्यादि ओधिक जीव प्राणातिपात क्रिया करै, काहे स करै, एव नारकी श्यादि दुरुको मे जी कहा वैमानिक पर्यत एव मूपावाद अद्वैतादान मैथुन परिग्रह सूत्र जी | ७३५     | है एकवचन वज्रवचने वैमानिक तक एव श्याद कर्म के एकवचन वज्रवचन से १६ दुरुक कहना  | ६३९     |
| एव क्रोध मान माया लोभ प्रेम द्वेष कलह अभ्या ख्यान पैसून्य परनिदा श्रुतिरति मायामपा भिय्यादर्शनशाल्य जी सर्व नारकी श्यादि वैमा   | ६३६     | जीव की जीवों से कितनी क्रिया, कदाचित् ३। ४। ५। और कदाचित् अक्रिय, जीव की ना रकिश्यों से कितनी पूर्ववत्, स्तनितकुमार से पृथिवी से अप् तेज वायु वनस्पति द्वित्रिचतु रिद्रिय पर्चेद्रिय मनुष्य से जैसे जीवों से, दान अन्तर जोतिपी वैमानिक से जैसे नारकी से | ६४०     |
| निक पर्यन्त मे जैसे पूर्व कहा कहना जीव प्राणातिपात से सप्तविध अष्टविध बधक   | ६३७     | एकैक जोय पद मे चार २ दुरुक  | ६४१     |



कायिकी आदि पाच क्रिया कही, नारकी को पाचो क्रिया है, एव वैमानिक पर्यन्त, जिस जीव को कायिकी क्रिया है उसको आधिकरण की है जिस्का अधिकरण की तिसको कायिकी

है इत्यादि जिस समय में जीव को कायिकी क्रिया है उस समय में अधिकरण की जिस समय अधिकरण की तिस समय कायिकी एव पाचो क्रिया के

सूत्र कहे जिस देश में प्रीथ को कायिकी तिस देश में अधिकरण की जिस्में अधिकरण की तिसमें कायिकी इत्यादि, प्रवेश में भी एव कहा, ५ क्रिया सांयोजिक कही २४ दृक में ए अधिकार

६४५

६४६

६४७

जीव जिस समय कायिकी आधिकरणकी प्राप्ति पिकी क्रिया न स्पष्ट उस समय प्राणातिपात से भी स्पष्ट, इत्यादि पूर्वग्रत् १ वचन बहुत्र

चन से कहना पाच क्रिया कही, आरम्भिकी पारिग्रही माया प्रत्यया अप्रत्यास्थान मिथ्यादर्शनप्रत्यया, आरम्भिकी आदि किस्को है, प्रमत्त सयत को, सयतासयत अप्रमत्तसयत अप्रत्यास्थानी

मिथ्यादृष्टी को क्रम से है नारकी को पाच क्रिया यावद्द्वैमानिक पर्यन्त, जिस्को आरम्भिकी तिसको पारिग्रहिकी दु-

स्यादि निर्णय है जीव को प्राणातिपात विरमण, काहे से जीव

६४८

६४९

६५०

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक |
|--|--------|---|--------|
| प्राणातिपात विरमण करे इत्यादि अधिकार प्रतिपादन   | ६५२    | ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मप्रकृति कही  | ६६०    |
| प्राणातिपातविरत जीव कितनी कर्म प्रकृति बाधे  | ६५३    | नारकी को कितनी कर्मप्रकृति, एव यावद्वैमानि क, कैसे जीव आठ कर्मप्रकृति बाधे एव वै मानिक पर्यन्त  | ६६१    |
| इत्यादि २७ भग निरूपण   | ६५६    | ज्ञानावरणी कर्म जीव कैसे बाधे इत्यादि १६  | ६६२    |
| एव प्राणातिपातविरत जीव के २७ भागे एव मृपाशाद्विरत यावत् मायामृपाविरत जीव मनुष्य की कहा, मिथ्यादर्शनशून्यविरत का निरूपण, २७ भागे कहे एव क्रिया निर्णय पाचो क्रियाओ का अल्पयहुत्व निरूपण | ६५९    | जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदे, नारकी ज्ञानावरणी कर्म वेदे एव वैमानिक पर्यन्त एव ज्ञाप कर्म प्रकृति दृढक भी कहना                                    | ६६३    |
| (२२ क्रिया पद समाप्त)  | ६६०    | ज्ञानावरणी कर्म जीवने बाधा स्पृष्ट वयस्पृष्ट सख्या विना यावत् गति को पाक स्थिति को पाके पुद्गलपरिणाम को पाके कितने प्रकार अ नुभाग कहा इत्यादि | ६६५    |
| ॥ ३२ वा पद कहते हैं ॥<br>कतिपगढी कहि यधह इत्यादि द्वार गाथा  |        |   |        |

## विषय और प्रश्नादि

पत्राक

पत्रांक

एव सातवेदनी का ७ अनुभाग कहा, असातका

मी ८ ही कहा  
मोहनीका अनुभाग १ तरह, आयुका १ एव  
सर्व कर्मका

(१ उद्देशा पूरा कथा)

आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी ५ जेद, दर्श  
नावरणी निद्रा ५ दर्शन १ एव नव, वेदनी १६

प्रकार साता ८ तरे असाता ८ तरह, मोहनी  
दो जेदें दर्शनमोहनी तीन चारिअमोहनी दो

जेदें, कथाय वेदनी १६ जेदें हे  
नो कथायवेदनी १ प्रकार, आयु ४, नाम १२

गति नाम ४ जेदें, जातिनाम ५, शरीर नाम ५,  
जेदें हे

अगापाग ३, शरीरवधन ५, शरीरसघात ५,  
नाम ८ जेदें सस्थान नाम ६, वर्ण ५, गध २,  
रस ५, स्पर्श ८, अगुरुलघु १, उपघात १,  
पराघात १, अानुपर्वी ४, उत्स्थास १, शेष  
सर्व १, एक है यावन्वीर्यकर है, विहायीगति २  
जेदें, गोत्र २ जेदें उच्चै ८, नीचै ८, अन्त

६७७

६८२

६९५

६९९

७००

ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मस्थिति निरूपणाधिकार  
एकैत्रिय जीव ज्ञानावरणी को क्या बाधै एव ८

कर्म कहना

एव द्वित्रि चतुरिद्वय को जी कहना

एवं पञ्चैत्रिय ज्ञानावरणी का क्या बाधै इत्यादि  
निरूपण

(२३ वां पद पूर्ण ज्ञाया)

॥ २४ वा पद कहते हैं ॥

अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक  
को, जीव ज्ञानावरणी (छाति) कर्म बाधता  
ज्ञाया कितनी कर्म प्रकृति बाधे इत्यादि निर्णय  
(२४ वां पद पूर्ण ज्ञाया)

॥ २५ कहते हैं ॥

छाठं कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म बाधती  
जीव कितनी प्रकृति वेदे, एव नारकी यावद्वै  
मानिक, एव पृथक् सेत्री, यावत् अतराय  
तक कहना, जीव वेदनी कर्म बाधता कितनी

७०४

७०५

७०६

७०७

ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति बन्धक कौन,  
मोहनीय का जघन्यस्थिति बन्धक कौन, आयु  
का जघन्य स्थिति बन्धक कौन इत्यादि  
उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी बाधे  
कि तिर्यच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्ट स्थि  
तिक ज्ञानावरणी कर्म बाधे इत्यादि निरूपण  
एवं आयु को ठोठ सातो कर्म के छाळावे कहना,  
उत्कृष्टस्थितिक आयुकर्म क्या नारकी बाधे इ  
त्यादि कैसा तिर्यच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म  
बाधे  
कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु  
बाधे

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक |
|--|--------|--|--------|
| <p>कर्म प्रकृति वेदे, एव एकत्व पृथक् से स्याठी कर्म वेदे यावद्वैमानिक</p> <p>( २५ वा पद पूर्ण कहा )</p> <p>॥ २६ कहते हैं ॥</p> <p>स्याठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक को, खीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति बाधे, इत्यादि निर्णय</p> <p>( २६ वा पद कहा पूर्ण )</p> | ७१२    | <p>कर्मों के स्याठावे समाप्ति पर्यन्त</p> <p>( २७ वा पद कहा पूर्ण )</p> <p>सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २,<br/>नारकी सच्चिन्नाहार के सच्चिन्नाहार मियाहार<br/>एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी स्याहार<br/>का अर्थ है, कितने कालसे स्याहार की इच्छा<br/>होय इत्यादि</p> <p>नारकी क्या स्याहार करे इत्यादि निरूपणाधिकार<br/>असुरकुमार स्याहार का अर्थ है, एव जैसे नार<br/>की यायत्त मयोमय परिणमे<br/>पृथिवीकाय आहार का अर्थ है, निरंतर आ<br/>हारेच्छा होती है, क्या स्याहार है जैसे नारकी</p> | ७१७    |
|  | ७१३    |  | ७१८    |
|  |        |  | ७१९    |
|  |        |  | ७२०    |
|  |        |  | ७२५    |

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                   | विषय और प्रश्नादि  | पत्राक                   |
|---|--------------------------|--|--------------------------|
| को कहा तैच इहा भी कहना सर्व वनस्पति<br>काय पर्यन्त एवमेव<br>द्वीन्द्रिय आहारार्थी है, एवं पूर्ववत् सर्व कहना<br>यावत् असुखजत्व पर्यन्त<br>एव त्रिचतुरिन्द्रियाहारार्थ, आहार काठादि नि<br>रूपणाधिकार<br>मनुष्य आहारादि निर्णयाधिकार यावत् सर्वाय<br>सिद्ध देव तक कहा<br>नारकी क्या एकेन्द्रियशरीर आहार के यावत्पक्षे<br>द्वियशरीर आहार, एव स्तनितकुमारपर्यन्त<br>पृथिवीकाय प्रश्न, द्वीन्द्रिय एव यावच्चतुरि-<br>न्द्रिय इत्यादि जिसके जितनी इन्द्रियशरीर<br>उस्की उतनेही का आहार, नारकी लोमाहार | ७२६<br>७२८<br>७२९<br>७३० | है प्रक्षेपाहारी नहीं एव एकेन्द्रिय भी<br>सर्व देश भी पूर्ववत् वैमानिक पर्यन्त, द्वीन्द्रिय<br>से मनुष्य तक दोनु है, नारकी ओजाहारी है<br>मनमद्धी नहीं, एव सर्व देश यावद्वैमानिक<br>दोनु है इत्यादि निरूपणाधिकार<br>(१ उद्देशा पूर्ण ज्ञात्रा)<br>आहार मविय सबी यह गाया, जीव आहारक<br>भी है अनाहारक भी है<br>एव नारकी यावत् असुखकुमार यावद्वैमानिक<br>सिद्ध अनाहारी है, एव वज्रवचन से भी आ<br>लाया कहना<br>भवसिद्धि आहारक अनाहारक भी है, एव वैमा<br>निक पर्यन्त एव अभवसिद्धिक नोभवसिद्धिक | ७३४<br>७३५<br>७३६<br>७३७ |

| विषय और प्रश्नावि   | पत्राक | विषय और प्रश्नावि  | पत्राक |
|---|--------|--|--------|
| नो अमवसिद्धि आहार अनाहार निर्णय<br>(द्वार १)  | ७३८    | दी प्रकार उपयोग कहा,<br>साकारोपयोग आठ नेत्र, अनाकारोपयोग चार<br>नेत्रे                               | ७५०    |
| सद्गी जीव आहारक अनाहारक मी है एव वैमा<br>निक पर्यन्त एकैन्द्रिय विकर्षेन्द्रिय न पूछना<br>एव असली मी कहना स्तनितकुमार तक<br>एव मनुष्य मी, सिद्ध अनाहारक, सलेयी जीय<br>का प्रश्न एकत्वपृथक् से | ७३९    | नारकी की कितने प्रकार उपयोग, साकारोपयोग<br>६, अनाकारोपयोग तीन प्रकार एव स्तनित<br>कुमार पर्यन्त कहना | ७५१    |
| सम्पद्गुष्टि जीव आहारक प्रश्न, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय<br>छ मगा  | ७४०    | पृथिवीकाय उपयोग प्रश्न यावद्भनस्पतिकाय, द्वी<br>न्द्रिय प्रश्न                                       | ७५२    |
| सयत आहारकानाहारक निर्णय, एकत्व पृथक्<br>से सकपायी प्रश्न  | ७४२    | पर्वेन्द्रिय तिर्येव जैसे नारकी, मनुष्य जैसे शौचिक<br>उपयोग इत्यादि                                  | ७५३    |
| (२८ वा आहार पद कहा)<br>॥ २९ वा कहते हैं ॥   | ७४४    | (२९ वा पद समाप्त जाया)<br><br>॥ ३० कहते हैं ॥  | ७५३    |

| विषय और प्रवृत्ति   | पत्राक                   | विषय और प्रवृत्ति  | पत्राक                   |
|---|--------------------------|--|--------------------------|
| कितने प्रकार पञ्चज्ञा कही २, साकार पञ्चज्ञा ६ प्रकार, अनाकार पञ्चज्ञा तीन प्रकार है<br>एव जीव को कहना<br>नारकी को २ पञ्चज्ञा, साकार पञ्चज्ञा १ अनाकार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त<br>पृथिवीकाय को १ साकारपञ्चज्ञा एव वनस्पति पर्यन्त<br>द्विन्द्रिय को १ साकार पञ्चज्ञा सो २ तरहकी है<br>एव त्रीन्द्रिय भी षड्विन्द्रिय को २ साकार पञ्चज्ञा जैसे द्विन्द्रिय को अनाकारपञ्चज्ञा १ कही, मनुष्य को जैसे जीवो को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक<br>जीव साकारपञ्चयी है के अनाकार इत्यादि | ७५६<br>७५७<br>७५७<br>७५८ | केवली इस रत्नप्रज्ञापृथिवी को अनाकार हेतु उपादुष्टान्त वर्ण सस्यान प्रमाण से जिससमय जाणै उससमय देखै इत्यादि प्रश्न<br>(३० पद समाप्त अष्ट्या)<br>॥ ३१ कहते हैं ॥<br>जीव सज्ञी अज्ञी के नो सज्ञी नो अज्ञी इत्यादि प्रश्न निर्णय<br>पृथिवी काय प्रश्न, एव यावच्चतुरिन्द्री मनुष्य जैसे जीव, पञ्चैन्द्रिय तिर्यच वानध्यन्तर जैसे नारकी जोतिपी वैमानिक सज्ञी,<br>(३१ वा पद कहा) | ७५८<br>७६०<br>७६२<br>७६३ |



॥ ३२ कहते हैं ॥

जीव सयत के असयत के सयतासयत, एव नारकी प्रश्न, यायचतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यक मनुष्य प्रश्न एवं चिरुतक

( ३२ वा पद कहा )

॥ ३३ कहते हैं ॥

नेद विषय सठार्जे यह गाथा  
दो प्रकार अर्थात् कही जयप्रत्यय द्वायोपशमिक  
नेद से, देव नारकी को जयप्रत्यय, मनुष्य

तिर्यक को द्वायोपशमिक  
नारकी जघन्य छठुं क्रोश उत्कृष्ट चार जार्जे अर्थात्  
वर्ष से, रत्नप्रज्ञा का नारकी छठार्जे जघन्य

उत्कृष्ट चार जार्जे, शकरा का जघन्य तीन  
उत्कृष्ट सार्द्ध, बालुका नारकी जघन्य छठ-  
उत्कृष्ट तीन, एकप्रज्ञा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट  
छठार्जे, धूमप्रज्ञा नारकी जघन्य छठ उ० दो  
तमा का नारकी क्रोश जघन्य उत्कृष्ट छठ, नीचे  
सातमी का जघन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट क्रोश ।  
असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट अस  
स्थात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टवही,  
एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेन्द्रिय तिर्यक ज  
घन्य अगुल असस्थात प्राग उ० असस्थात  
द्वीपसमुद्र, मनुष्य अगुल असस्थात प्राग जघन्य  
उत्कृष्ट असस्थात अलोक में लोक प्रमाण स्वर्ग,  
वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट

७६४

७६५

७६७

७६८

सौधर्म देव जघन्य अगुल असख्यातभाग उ०—  
नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा  
असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान ।  
एव इज्जानदशमी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे  
शर्करा का नीचला चरमान्त, एव माहिन्द्रदेव  
भी, ब्रह्म छान्तकदेव सिर्फ नीच तीसरी का  
नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्त्रार चौथीके  
नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत आरण अ  
च्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का  
चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे लठी  
के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव  
ज० अगुल असख्यात भाग उ० सातमी के

७६९

नीचे का चरमान्त, तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र,  
ऊपर स्थितिमान  
अनुत्तरोपपातिक देव समिल्लोकि नाडी जागे,  
नारकी का अर्थात् क्षुराकार, असुरकुमार या  
वत् स्तनितकुमार का पत्यक के आकार, प  
चेद्विष तिर्यंच का नानाकार है, मनुष्य का भी  
एव, यानव्यन्तर का पटहाकार, जातिपी का  
जालराकार । सौधर्म देव का ऊर्ध्वमृदगाकार  
एव अच्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुष्प  
चगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जयको नाली  
के आकार

७७१

नारकी यावत् स्तनितकुमार अर्थात् के भीतर  
है के बाहिर, भीतर है, पचेद्विष तिर्यंच या

| विषय और प्रश्नादि   | पत्राक | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                          |
|---|--------|---|---------------------------------|
| हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देखावधि है, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेन्द्रिय त्रियं च भी एवं, मनुष्य दानू । व्यन्तर जातिषी वैमानिक जैसे नारकी । नारकी का अग्रधि आनुगामिक अ प्रतिपाती अवस्थित है । एवं स्तनितकुमार पर्यन्त । | ७७२    | अणतरागयाहारे डह गाथा २<br>नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता याव त २१ दहक मे<br>नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अ-<br>नाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता<br>नारकी जिन पुद्गलो को आहारपर्णे छे उनकी<br>जार्णे देखे इत्यादि निर्णय<br>नारकी को असख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी<br>अप्रशस्त भी वैमानिक कीमीहि<br>नारकी सम्यक्तामिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्य-<br>हमिथ्यात्वाभिगमी भी है, एवं वैमानिक पर्यन्त<br>एकेन्द्रिय चिकलेन्द्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है<br>देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भग | ७७३<br>७७४<br>७७५<br>७७६<br>७७७ |
| पंचेन्द्रिय त्रियं च का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एवं मनुष्य भी, दानध्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी<br>(३३ वा पद पूर्ण हुआ)   | ७७३    |   |                                 |
| ॥ ३४ वा पद कहते हैं ॥   |        |   |                                 |

प्रश्न निर्णय  
भयनपति ध्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव  
सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अव्युत तक  
सदेवीक सपरिचार हैं, ग्रैवेयकानुत्तर देव अ  
देवीक अपरिचार हैं  
परिचारणा पाच प्रकार है कायादि भेदसे उसमें  
भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरि  
चारणा है, शनत्कुमार माहेद्र में स्पर्शपरिचा  
रणा है, ब्रह्मलातक में रूपपरिचारणा है, शुक्र  
सहस्तर में शब्दपरिचारणा है, अव्युतान्त ४ में  
मनपरिचारणा है, ग्रैवेयकानुत्तर में परिचा-  
रणा नहीं है।

इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार

यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक देवों  
में कौन किसे अप्रपञ्चत्व है  
(३४ वां पद पूर्ण हुआ)

॥ ३५ वा कहते हैं ॥

सीयायदह्वसारीर यह सग्रह गाथा  
शीत उष्ण मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही,  
नारकी को कौन वेदना  
द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नार  
की कौन वेदना वेदै एव वैमानिक पर्यन्त  
शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी  
भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना  
वेदै एव यावद्द्वैमानिक पर्यन्त

७७८

७७९

७८०

७८०

७८४

७८६

७८७

७८८

| विषय और प्रश्नादि   | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि  | पत्रांक                  |
|---|---------|--|--------------------------|
| एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदे श्वीर नहीं,<br>साता असाता सासासात एव तीन प्रकार वेद<br>नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सब जीव<br>यावद्द्वैमानिक पर्यन्त<br>दुख सुख मिश्र एव तीन प्रकार वेदना है, नारकी<br>को कौन वेदना यावद्द्वैमानिक पर्यन्त<br>अभ्युपगमिकी श्रौपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना<br>है नारकी से चौरिन्द्री तक श्रौपक्रमिकी है,<br>वियं च मनुष्य में दो, ध्यन्तर जातिपी वैमानिक<br>को जैसे नारकी को कही जैसे कहा<br>निदा अनिदा भेद च दो वेदना, नारकी को कौन<br>वेदना है कृत्यादि निर्णय, एव स्तनितकुमार<br>पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एव चौरिन्द्री, ति | ७८९     | यं च मनुष्य ध्यन्तर जैसे नारकी कहा<br>ज्योतिषी का प्रश्न,<br>(३५ या पद कहा)<br>॥ ३२ कहते हैं ॥<br>वेदन कपाय मरणे इह गाथा सप्रहरी, जितने<br>समुद्रात कहे<br>वेदना समुद्रात असख्य त सामयिक श्रान्तमूर्च्छ<br>तिरु, एव आहारक तरु, केवलिनमृदु। त<br>आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्रात,<br>असुरकुमार को पाच समुद्रात, एव स्तनित<br>कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एव<br>चौरिन्द्रो पर्यंत, यायुकाय को चार समु० | ७९१<br>७९२<br>७९३<br>७९४ |

पर्वद्वितीय तिर्यञ्च यावत् वैमानिक को पाष समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स

७९६

मु० अतीत अतः पुरस्कृत इत्यादि एव असुरकुमार को जी वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दण्ड कहा, एकैक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केगलिसमु० अतीत इत्यादि

७९८

एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस जी एव पाच २४ दण्ड नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य मे

७९९

है, एव वैमानिक जेद वनस्पतिकाय मनुष्य मे एकैक नारकी का नारकी पणे कितने वेदना स०

८००

८०१

अतीत इत्यादि एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुरकुमार को नारकीपणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुरकुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक

८०२

एव वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दण्ड होय, नारकी के नारकीपणे कितने कपायसमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनितकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान मे एकोत्तरिका से जहा

८०४

| विषय और प्रश्नादि  | पत्राक                          | विषय और प्रश्नादि   | पत्राक                   |
|--|---------------------------------|---|--------------------------|
| तक वैमानिक को वैमानिकपणे में, एव २४।<br>२४ दहक, वैक्रिय जैसे कपाय, तैजस जैसे<br>एकैक नारकी के नारकीपने कितने आहारक<br>एकैक नारकी के नारकीपणे कितने कंत्रलि स०<br>अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में<br>नेद है, एव तैजससमु० पर्यन्त कहा<br>यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समथहत<br>असमथहत जीर्णों में कौन किस्से योना घणा<br>यह नारकी वेदना कपाय मरण वैक्रिय समवहत<br>इत्यादि निर्णय | ८०७<br>८०८<br>८०९<br>८१२<br>८१३ | यह असुरकुमार वेदन कपाय मरण वैक्रिय तैज<br>स सम० निर्णय<br>पृथिवीकायादि निरूपण द्वीन्द्रिय यात्रपचेद्वि-<br>वेदनादि यावत् असमवहतों में कौन किस्से<br>योना घणा इत्यादि अधिकार<br>मनुष्य वेदनादि यावत्केवलिसमु० समवहता<br>समथहतों में कौन किस्से<br>कपायसमु० बारप्रकार क्रोधादि के बार भेदसे,<br>नारकी को ४ कपाय समु० एव यात्रद्वैमानिक<br>एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एव याव<br>तु अतीत इत्यादि<br>एव लोभसमु० पर्यन्त ४ दहक एकत्व पृथक् से<br>४ दहक, एकैक नारकी के नारकीपने कितने | ८१४<br>८१६<br>८१७<br>८१८ |





| विषय और प्रस्ताव   | पत्राक                              | विषय और प्रस्ताव | पत्राक |
|--|-------------------------------------|------------------|--------|
| योग निरोध समय निरूपणाधिकार<br>श्रीलेशिकाखानिरूपणाधिकार<br>चार कमप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक तेजस<br>कार्मण त्यजे श्रुजुश्रणि पाके अस्पृशद्वति हो<br>के मुक्त होय सिद्ध होय<br>अशरीर जीवधन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण<br>निष्कृष्यसहस्रुक्ता सिद्धत्व निरूपण लक्षण गाथा<br>(समुद्भूत पद ३६ पूर्ण कहा) | ८४५<br>८४६<br><br>८४७<br>८४७<br>८४८ |                  |        |
| ॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥  |                                     |                  |        |
| ॥ समाप्त है ॥  |                                     |                  |        |

ववगयजरमरणमए सिष्ठेक्षमिवदिज्जणतिविहेण । ववामिज्जणयारिद तेलोक्कगुरुमहावीरं ॥ १ ॥  
सुयरयणनिहाणजिण वरेणमवियज्जणणिहुडकरेण । उववसियामगयया पन्नयणासह्मभावाण ॥ २ ॥  
वायगवरवसाठं तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुह्मसुयसमिधुधोण ॥ ३ ॥ सुयसागराविए  
ऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिक्ख । सीसगणस्समगवठं तस्सणमोद्धज्जसामस्स ॥ ४ ॥ धुज्जयणमिणचित्त सुय  
रयणदिठ्ठिवायणीसद । जहवसिखयमगयया अहमवितहवसइस्सामि ॥ ५ ॥ पययणा १ ठाणाइ २, यज्जत्र  
तह्म ३ ठिई ४ विसंसाय ५ । वक्कती ६ उस्सास, ७ सखा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ मासा ११ सरीर १२  
परिणा, म १३ कसाय १४ इदिय १५ प्पठंगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अत्तकिरियाय २०  
॥ २ ॥ तंगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । यधए २४ कम्मवैयए २५, वेयस्सवधए २६  
वेयवैयए २७ ॥ ३ ॥ आहारं २८ उवठंगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सज्जे ३२ चैव । उही ३३ पवियारण ३४

व्यपगतकारामरखजयाम् सिद्धाभविष्यद्यन्निविषेन । वन्देक्षिप्तवरेण्ण त्रैलोक्यगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ युतरवनिधानाञ्जन वरेखन्नख्यजननिवृत्तिकरे  
॥ २ ॥ उपदक्षितान्नगवता प्रद्यापनासहस्रानाम् ॥ ३ ॥ वाचकवरवशोत्र योविशतितमेनधीरपुरुषेण । दुहुरपरेणमुनिना पृथगुत्तमसमुद्रुहिना ३ ॥  
भुतसागराद्भीमपित्वा येनभुतरवमुत्तमदत्त । क्षिप्यगुणायनगवते तस्मैमन्त्रायत्रयामय ॥ ४ ॥ अय्ययनमिदंक्षिप्य युतरवदृष्टिवादनिस्पन्द । यथा  
वक्षितंमगवता इमपितयावर्षयिष्यामि ॥ ५ ॥ प्रद्यापनास्यानानिबुद्धनक्षत्राण्यस्तिविशेषय । व्युत्क्रान्तियाञ्छ्वासः सञ्जायोनिषचरमादि ॥ ६ ॥  
प्रापाक्षरीरपरिष्ठासः कयायेन्निप्रयोग्य । लेख्याकायस्थितिवो सम्यग्मयाक्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अथगाहमास्थान क्षियाकर्मोपक्रमणः । वन्यको  
वेदकयैव वेदव्यवस्य ॥ ८ ॥ वेदवेदकणाक्षार योपयोगीय दक्षोत्तमः । सत्त्वाधसप्रसद्यैवा वक्षिप्रविचारका ॥ ९ ॥ वदनाथ सुमुहता पटत्रि

# विषय और प्रस्तावि

पत्राक

पत्राक

योग निरोध समय निरूपणाधिकार  
श्रीलेशिकाखानिरूपणाधिकार

चार कर्मप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक तैजस  
कामंण त्यजे ऋजुश्रौण पाके अस्पृश्यादिति हो

के मुक्त होय सिद्ध होय  
अशरीर जीवघन इत्यादि सिद्ध उद्गुणनिरूपण  
निष्कृष्यसद्गुस्का सिद्धत्व निरूपण उद्गुण गाथा  
(समुद्घात पद ३६ पूर्ण कहा)

॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त ऊर्ह ॥

८४५

८४६

८४७

८४७

८४८

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिणवस्त्रपरिणया हालिद्ववस्त्रपरिणया सुक्लित्रवस्त्रपरिणया । जे गधपरिणया ते दुविहा पस्यता, तजहा—सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पचविहा पणता तजहा तित्तरसपरिणया कद्रुयसपरिणया कसायसपरिणया श्यबिलरसपरिणया मङ्गरसपरिणया । जेफासपरिणया ते श्यठविहा पस्यता, तजहा—कस्करुफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लङ्कयफासपरिणया सीयफासपरिणया उस्निग्धफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्फासपरिणया । जेसठाणपरिणया ते पचविहा पस्यता, तजहा—परिमलसठाणपरिणया बहुसठाणपरिणया तससठाणपरिणया चउरससठाणपरिणया श्यायतसठाणपरिणया ॥ जे वसुत्तं कालवस्त्रपरिणया ते गधत्तं सुस्निग्धपरिणयावि दुस्निग्धपरिणयावि, रसत्तं तित्तरसपरिणयावि कद्रुयसपरिणयावि कसायसपरिणयावि श्यबिलरसपरिणयावि मङ्गरसपरिणयावि, फासत्तं कस्करुफासपरिणयावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लङ्कयफासपरिणयावि ।

स्तथा-सुरभिगन्धपरिष्ठा दुरभिगन्धपरिष्ठा । ये रसपरिष्ठा स्तो पञ्चविधा प्रज्ञता स्तथा-तित्तरसपरिष्ठा कटुकरसपरिष्ठाः कपा-  
 यरसपरिष्ठा आक्षरसपरिष्ठा मधुररसपरिष्ठा । य रसोपरिष्ठा स्तो ऽष्टविधा प्रज्ञतास्तथा-ककशरसपरिष्ठा मधुररसपरिष्ठा शुभ्र  
 कषयप्रपरिष्ठा लघुकरसपरिष्ठाः शीतरसपरिष्ठाः श्लिष्टरसपरिष्ठाः श्लिष्टरसपरिष्ठा ककशरसपरिष्ठा । ये सत्यानपरिष्ठा स्तो  
 पञ्चविधा प्रज्ञतास्तथा परिभ्रष्टसत्यानपरिष्ठा दृढसत्यानपरिष्ठा क्पस्त्रसत्यानपरिष्ठा आथतसत्यानपरि-  
 ष्ठाः । य दष्टः क्षालवर्षपरिष्ठा स्तो गन्धतः सुरभिगन्धपरिष्ठा अपि दुरभिगन्धपरिष्ठा अपि कटुश्च  
 रसपरिष्ठा अपि कपायरसपरिष्ठा अपि आक्षरसपरिष्ठा अपि मधुररसपरिष्ठा अपि ककशरसपरिष्ठा मधुररसपरिष्ठा



परिणतावि कद्रुयस्परिणतावि कसायस्परिणतावि अम्विलस्परिणतावि मञ्जरस्परिणतावि, फासठे  
 कस्करफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिण  
 तावि उसिणफासपरिणतावि णिऊफासपरिणतावि लुरकफासपरिणतावि, संठाणठे परिमंलसठाणपरिण  
 तावि बहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि ।  
 जवखठे हालिद्वखपरिणता ते गधठे सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणतावि, रसठे तित्तरसपरिणता  
 वि कद्रुयस्परिणतावि कसायस्परिणतावि अयिलस्परिणतावि मञ्जरस्परिणतावि, फासठे कस्कर  
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिऊफास  
 परि० लुरकफासपरिणतावि, सठाणठे परिमंलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरसस  
 ठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जेवखठे सुक्खिखसपरिणता ते गधठे सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगध

न्यपरिबता अपि रसतांलत्तरसपरिबता अपि कटुकरसपरिबता अपि अस्तरसपरिबता अपि मधुररसपरिबता  
 अपि, रसगतः कस्करपक्षपरिबता अपि सुदुकरपक्षपरिबता अपि गुरुकरपक्षपरिबता अपि लघुकरपक्षपरिबता अपि शीतस्पर्शपरिबता अपि  
 उष्णस्पर्शपरिबता अपि स्निग्धस्पर्शपरिबता अपि रुक्षस्पर्शपरिबता अपि, सत्यागतः परिमंलसस्थापपरिबता अपि वृत्तसत्यापपरिबता  
 अपि अस्त्रसत्यापपरिबता अपि बहुरस्त्रसत्यापपरिबता अपि आयत संस्थानपरिबता अपि । ये वर्येताः सुक्खिखसपरिबता स्ते गन्धतः सुस्निगन्ध  
 परिबता अपि दुरभिमन्धपरिबता अपि रसतांलत्तरसपरिबता कटुकरसपरिबता कसायस्परिबता मधुररसपरिबता अपि ।  
 रसगतः कस्करपक्षपरिबता अपि सुदुकरपक्षपरिबता अपि गुरुकरपक्षपरिबता अपि लघुकरपक्षपरिबता अपि शीतस्पर्शपरिबता अपि उष्ण

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि  
सठाणत् परिमळसठाणपरिणतावि बहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि  
झायतसठाणपरिणतावि । जेवखत् नीलवखपरिणता ते गधत् सुझिगधपरिणतावि दुझिगधपरिणतावि,  
रसत् तित्तरसपरिणतावि कट्टुपरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अघिलरसपरिणतावि मळारसपरिण  
तावि, फासत् कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लळयफासपरिणतावि  
सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणत् परिमळ  
सठाणपरिणतावि बहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि झायतसठाणपरि  
णतावि । जे वखत् लोहियवखपरिणता ते गधत् सुझिगधपरिणतावि दुझिगधपरिणतावि, रसत् तित्तरस

अवि भुवळस्पष्टपरिणता अवि लघुवळस्पष्टपरिणता अवि वीतवळपरिणता अवि उअरपणपरिणता अवि शिखरपणपरिणता अवि कुरपण  
परिणता अवि, बल्यानता परिमळसससल्यानपरिणता अवि वृत्तसल्यानपरिणता अवि अयतसल्यानपरिणता अवि अयतसल्यानपरिणता  
अवि अयतसल्यानपरिणता अवि । ये वळता लोहितवळपरिणता लो गयत भुरगिनगभपरिणता अवि भुरगिनगभपरिणता अवि, रसत लि  
खरपरिणता अवि बटकरसपरिणता अवि कयायरसपरिणता अवि चापूरसपरिणता अवि मपूररसपरिणता अवि, रपण्तः कळसरपणपरि  
वता अवि लघुवळस्पष्टपरिणता अवि लघुवळस्पष्टपरिणता अवि वीतवळपरिणता अवि वीतवळपरिणता अवि उअरपणपरिणता अवि लि  
न्यरपणपरिणता अवि कळस्पष्टपरिणता अवि बल्यानताः परिमळसससल्यानपरिणता अवि वृत्तसल्यानपरिणता अवि अयतसल्यानपरिणता  
अवि भुवळस्पष्टपरिणता अवि अयतसससल्यानपरिणता अवि । ये वळते आदिद्वयपरिणता लो गयतः भुरगिनगभपरिणता अवि भुरगिन

चउरससंस्थानपरिणतायि श्यायतसंस्थानपरिणतायि । जे गधने दुस्मिगंधपरिणता ते वसुने कालवसुपरि०  
नीलवसुपरिणतायि लोहितवसुपरिणतायि हालिद्वयसुपरिणतायि सुक्लेश्वसुपरिणतायि, रसने तित्तरस  
फरककफासपरिणतायि कनूयसपरिणतायि कसायसपरिणतायि श्यायलरसपरिणतायि मज्जरसपरिणतायि, फासने  
उसिणफासपरिणतायि मउयफासपरिणतायि गरुयफासपरिणतायि लज्जयफासपरिणतायि सीतफासपरि०  
वहसंस्थानपरिणतायि णिठफासपरिणतायि लुक्कफासपरिणतायि, संस्थानने परिमळसंस्थानपरिणतायि  
तित्तरसपरिणता ते वसुने कालवसुपरिणतायि नोलवसुपरिणतायि श्यायतसंस्थानपरिणतायि  
परिणतायि सुक्लेश्वसुपरिणतायि, गधने दुस्मिगंधपरिणतायि दुस्मिगंधपरिणतायि, फासने करककफासप

अयि आयतसंस्थानपरिणता अयि । ये गन्धो दुरभिगन्धपरिणता लो वर्धतः कषयवर्धपरिणता अयि नीलवर्धपरिणता अयि लोहितवर्धपरिणता  
अयि हरिद्रवर्धपरिणता अयि शुक्लवर्धपरिणता अयि रसतस्मिक्करसपरिणता अयि कटुकरसपरिणता अयि कपायसपरिणता अयि कश्चरस  
अयि शीतरसपरिणता अयि उष्णरसपरिणता अयि तिग्णरसपरिणता अयि सुदुस्मिगंधपरिणता अयि कुरुक्षपशपरिणता अयि लघुक्षपशपरिणता  
अतात्ता वर्धतः कषयवर्धपरिणता अयि अत्यसंस्थानपरिणता अयि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अयि, संस्थानत परिमळसंस्थानपरिणता  
तः दुरभिगन्धपरिणता अयि दुरभिगन्धपरिणता अयि लोहितवर्धपरिणता अयि श्यायतसंस्थानपरिणता अयि । ये रसतस्मिक्करसपरि  
अयि, गन्ध  
अयि कुरुक्षपशपरिणता अयि



परिणतायि, रसतुं वित्तरसपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० श्रुम्विलरसपरि० मङ्गररसपरिणतायि,  
 फासतुं कक्कफासपरिणतायि मउयफासपरिणयायि गरुयफासपरिणयायि लङ्गयफासपरिणतायि सोयफा  
 सपरिणतायि उंसिणफासपरिणतायि णिद्रफासपरिणतायि लुक्कफासपरिणतायि, सठाणनुं परिमल्लसठाण  
 परिणतायि वट्टसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि चउरससठाणपरिणतायि श्यायतसठाणपरिणतायि।  
 जे गधतुं सुप्पिगघपरिणता ते वखुत्तुं कालवखुपरिणतायि नीलवखुपरिणतायि छोटितवखुपरिणतायि हाळि  
 वुथखुपरिणयायि सुक्किवखुपरिणतायि, रसतुं तित्तरसपरिणतायि कद्रुयसपरिणतायि कसायसपरिणता  
 यि श्रुयिलरसपरिणतायि मङ्गररसपरिणतायि, फासतुं कक्कफासपरिणतायि मउयफासपरिणतायि गरुय  
 फासपरिणतायि लङ्गयफासपरिणतायि सीतफासपरिणतायि उंसिणफासपरिणतायि णिद्रफासपरिणतायि  
 लुक्कफासपरिणतायि, सठाणनुं परिमल्लसठाणपरिणतायि वट्टसठाणपरिणतायि तससठाणपरिणतायि

स्पर्धपरिणता यपि विगयरपधपरिणता यपि रुक्कपधपरिणता यपि सल्यानतः परिमसदत्तसल्यानपरिणता यपि वृत्तसल्यानपरिणता यपि  
 अत्तसल्यानपरिणता यपि चतुरस्रसल्यानपरिणता यपि व्यायतसल्यानपरिणता यपि । ये नव्यतः सुरभिगम्यपरिणता से वसतः लक्षवधपरि  
 षता यपि मोक्षवधपरिणता यपि लोहितवधपरिणता यपि वारिद्वयवधपरिणता यपि पुष्पावधपरिणता यपि, रवतानिचरवधपरिणता यपि  
 वट्टवरवधपरिणता यपि कपावरवधपरिणता यपि कल्लरसपरिणता यपि मपूररवधपरिणता यपि स्याततः कक्कस्यवधपरिणता यपि वट्टस्यवधपरि  
 षता यपि गुक्कस्यवधपरिणता यपि लपुक्कस्यवधपरिणता यपि वीतरपधपरिणता यपि उप्पस्यवधपरिणता यपि विगयरपधपरिणता यपि रुक्क  
 स्पर्धपरिणता यपि, सल्यानतः परिमसदत्तसल्यानपरिणता यपि वृत्तसल्यानपरिणता यपि चतुरस्रसल्यानपरिणता यपि

વ્યયાપરિ० સુક્તિલ્પચપરિણતાવિ, ગધનં સુસ્મિગધપરિણતાવિ, ફાસનં કરકઠ્ઠાસપરિ०  
 પરિ० મડયફાસપરિ० ગરુયફાસપરિ० લઙ્ગયફાસપરિ० સીતફાસપરિ० ઉસિણફાસપરિ० ણિદ્ધફાસપરિ०  
 લુરુકફાસપરિણતાવિ, સઠાણનં પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ० ઘટ્ટસઠાણપરિ० તસસઠાણપ० ઘડરસસઠાણપ०  
 આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે સરનં અથિલરસપરિણતા તે ઘસનં કાલચસપરિ० નીલચસપરિ० હોહિતવ  
 ચપરિ० હાલિદ્ધવચપરિ० સુક્તિલ્પચપરિણતાવિ, ગધનં સુસ્મિગધપરિણતાવિ દુસ્મિગધપરિણતાવિ, ફાસનં  
 કરકઠ્ઠાસપરિ० મડયફાસપરિ० ગરુયફાસપરિ० લઙ્ગયફાસપરિ० સીયફાસપરિ० ઉસિણફાસપરિ०  
 ણિદ્ધફાસપરિ० લુરુકફાસપરિણતાવિ । સઠાણનં પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિ० ઘટ્ટસઠાણપરિ० તસસઠાણપરિ०  
 ઘડરસસઠાણપરિ० આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે રસનં મઙ્ગરપરિણતા તે ઘસનં કાલચસપરિ० નીલચસપરિ०

દ્વચ્ચપરિણતા અપિ બુદ્ધવચપરિણતા અપિ, ગમ્મત' સુરન્નિગમ્મપરિણતા અપિ દુરન્નિગમ્મપરિણતા અપિ, સ્વર્ગોતઃ કલ્પશરપદોપરિણતા અપિ સુદુ  
 સ્વર્ગોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ તપુકરપદોપરિણતા અપિ શ્રીતરપદોપરિણતા અપિ ઉત્તરપદોપરિણતા અપિ કિમ્મરપદોપરિણતા અ  
 પિ રુદ્ધરપદોપરિણતા અપિ, સંસ્થાનતઃ પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિણતા અપિ વૃત્તસઠાણપરિણતા અપિ અક્કસઠાણપરિણતા અપિ તતુરસઠાણપરિ  
 પરિણતા અપિ આયતસઠાણપરિણતા અપિ । યે રસતોચ્ચરસપરિણતા સ્તે ઘસનં કાલચપરિણતા અપિ નીલચપરિણતા અપિ હોહિતચપરિ  
 ણતા અપિ હારિદ્ધવચપરિણતા અપિ બુદ્ધવચપરિણતા અપિ, ગમ્મત' સુરન્નિગમ્મપરિણતા અપિ દુરન્નિગમ્મપરિણતા અપિ, સ્વર્ગોતઃ કલ્પશરપદો  
 પરિણતા અપિ સુદુરપદોપરિણતા અપિ ગુરુકરપદોપરિણતા અપિ તપુકરપદોપરિણતા અપિ શ્રીતરપદોપરિણતા અપિ ઉત્તરપદોપરિણતા અપિ કિ  
 મ્મરપદોપરિણતા અપિ રુદ્ધરપદોપરિણતા અપિ, સંસ્થાનતઃ પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિણતા અપિ વૃત્તસઠાણપરિણતા અપિ અક્કસઠાણપરિણતા

રિણતાંવિ મડયફાસપરિણતાંવિ ગરુયફાસપરિણતાંવિ હઙ્ગયફાસપરિણતાંવિ સીતફાસપરિણતાંવિ ડસિણ  
 ફાસપરિણતાંવિ ણિન્દ્રફાસરિણતાંવિ હુસ્કફાસપરિણતાંવિ, સઠાણઠે પરિમઠ્ઠસઠાણપરિણતાંવિ ઘટ્ઠસઠા  
 ણપરિણતાંવિ તસસઠાણપરિણતાંવિ ચઠરસસઠાણપરિણતાંવિ ધ્યાયતસઠાણપરિણતાંવિ । જેરસઠે કઠુયરસ  
 પરિણતા તે વસુઠે કાલયક્ષપરિણતાંવિ નીલવક્ષપરિણતાંવિ હોહિતવક્ષપરિણતાંવિ હાલિદ્વયક્ષપરિણતાંવિ  
 સુક્ષિપ્તવક્ષપરિણતાંવિ, ગઘઠે સુશ્નિગઘપરિણતાંવિ દુશ્નિગઘપરિણતાંવિ, ફાસઠે કસ્કઠ્ઠફાસપ૦ મડયફા  
 સપરિ૦ ગરુયફાસપરિ૦ હઙ્ગયફાસપરિ૦ સીયફાસપરિ૦ ડસિણફાસપરિ૦ ણિન્દ્રફાસપ૦ હુસ્કફાસપરિણ  
 તાંવિ, સઠાણઠે પરિમઠ્ઠસઠાણપરિ૦ ઘટ્ઠસઠાણપરિ૦ તસસઠાણપરિ૦ ચઠરસસઠાણપ૦ ધ્યાયતસઠાણપ  
 રિણતાંવિ । જે રસઠે કસાયરસપરિણતા તે વસુઠે કાલયક્ષપરિ૦ નીલવક્ષપરિ૦ હોહિતવક્ષપરિ૦ હાલિ

સપુલ્લસપર્ણપરિણતા અપિ શ્રીતરપર્ણપરિણતા અપિ કપ્પરપર્ણપરિણતા અપિ રૂપરપર્ણપરિણતા અપિ, સ્વસ્થાનતઃ પરિ  
 મઠ્ઠસર્ણસ્થાનપરિણતા અપિ વૃત્તસ્થાનપરિણતા અપિ અક્ષરસ્થાનપરિણતા અપિ ચતુરક્ષસ્થાનપરિણતા અપિ આયતસ્થાનપરિણતા અપિ ।  
 એ રચતાઃ કટુલ્લસપરિણતાકો વર્ણઃ કપ્પરર્ણપરિણતા અપિ નીલવર્ણપરિણતા અપિ હોહિતવર્ણપરિણતા અપિ શ્રીતરવર્ણપરિણતા અપિ કુલ  
 ર્ણપરિણતા અપિ નમ્બતાઃ સુરમિનમ્બપરિણતા અપિ પુરવિગ્નમ્બપરિણતા અપિ સ્વપ્પાતઃ નર્ણશરપર્ણપરિણતા અપિ મુરુપર્ણપરિણતા અપિ મુરુ  
 લ્લસપર્ણપરિણતા અપિ સપુલ્લસપર્ણપરિણતા અપિ શ્રીતરપર્ણપરિણતા અપિ કપ્પરપર્ણપરિણતા અપિ રૂપરપર્ણપરિણતા  
 અપિ સ્વસ્થાનત પરિમઠ્ઠસર્ણસ્થાનપરિણતા અપિ વૃત્તસ્થાનપરિણતા અપિ અક્ષરસ્થાનપરિણતા અપિ ચતુરક્ષસ્થાનપરિણતા અપિ આયત  
 ર્ણસ્થાનપરિણતા અપિ । ય રચતાઃ કસાયરસપરિણતાકો વર્ણઃ કપ્પરર્ણપરિણતા અપિ નીલવર્ણપરિણતા અપિ હોહિતવર્ણપરિણતા અપિ શ્રીતર

फासपरिणतावि, सठाणउ परिमळसठाणपरि० वहसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
 आयतसठाणपरिणतावि। जे फासउ मउयफासपरि० ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवख  
 परि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिखवखपरिणतावि, गधउ सुम्रिगधपरि० दुम्रिगधपरिणतावि, रसउ तित्त  
 रसपरि० कळुयरसपरि० कसायरसपरि० आचिलरसपरि० मळारसपरिणतावि, फासउ गरुयफासपरि०  
 लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उचिणफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणउ परि  
 मळसठाणपरि० वहसंठाणपरि० तससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि। जे फासउ  
 गरुयफासपरिणता ते वखत कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिख  
 वखपरिणतावि, गधउ सुम्रिगधपरि० दुम्रिगधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कळुयरसपरि० कसायरस

वता आपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिवृता अपि आयतसंस्थानपरिवृता अपि। य स्पष्टतो वृत्तसंस्थानपरिवृतास्यो वृत्तः कल्पवर्णपरिवृता अपि नीलवर्ण  
 परिवृता अपि लोहितवर्णपरिवृता अपि शारिद्रवर्णपरिवृता अपि शुकवर्णपरिवृता अपि गन्धः सुरभिगन्धपरिवृता अपि दुरभिगन्धपरिवृता  
 अपि, रसतः तिस्रसपरिवृता अपि कटुकरसपरिवृता अपि कषायरसपरिवृता अपि कसूरसपरिवृता अपि मधुरसपरिवृता अपि, स्पष्टत  
 गुरुस्त्रसपरिवृता अपि संपुष्पसंस्थानपरिवृता अपि शीतस्त्रसपरिवृता अपि लज्जस्त्रसपरिवृता अपि क्षिप्रस्त्रसपरिवृता अपि रुक्मस्त्रसपरिवृ  
 ता अपि, संस्थानत परिमळसंस्थानपरिवृता अपि वृत्तसंस्थानपरिवृता अपि व्यसंस्थानपरिवृता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिवृता अपि आय  
 तसंस्थानपरिवृता अपि। ये स्पष्टतो गुरुस्त्रसपरिवृता अपि कल्पवर्णपरिवृता अपि नीलवर्णपरिवृता अपि लोहितवर्णपरिवृता अपि श  
 रिद्रवर्णपरिवृता अपि शुकवर्णपरिवृता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिवृता अपि दुरभिगन्धपरिवृता अपि, रसतः तिस्रसपरिवृता अपि कटु

लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतायि, गघनं सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणता  
 यि, फासतं कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उस्मिण  
 फासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतायि, संठाणतं परिमल्लसंठाणपरि० यहसंठाणपरि० तंसस  
 ठाणपरि० चउरससंठाणपरि० स्यायतसंठाणपरिणतायि ॥ जे फासतं कक्कफासपरि० ते वसुधं कालव  
 यपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतायि, गघनं सुस्निग्धपरि०  
 दुस्निग्धपरिणतायि, रसतं तिस्रपरि० कक्रुयपरि० कसायपरि० स्यायल्लपरि० मज्जरसपरि०  
 तायि, फासतं गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उस्मिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क

कपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आपतसंस्थानपरिणता अपि । य रसतो मधुररसपरिणता को वर्यतः कासवर्णपरिणता अपि नीलवस्त्रपरि  
 ता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि प्राग्निवर्णपरिणता अपि सुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुदुर्गन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,  
 रसवर्णतः कक्कफपरिणता अपि चतुरस्रपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि लज्जयपरिणता अपि सीतपरिणता अपि उस्मिणपरिणता अपि,  
 संस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आपतसंस्थानपरिणता अपि वृत्तवर्णपरिणता अपि वृत्तवर्णपरिणता अपि उज्जय  
 अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि प्राग्निवर्णपरिणता अपि सुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुदुर्गन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि दुर  
 चिन्त्यपरिणता अपि, रसतः तिस्रपरिणता अपि चतुरस्रपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि लज्जयपरिणता अपि सीतपरिणता अपि उस्मिणपरिणता अपि,  
 ता अपि, मधुररसपरिणता अपि चतुरस्रपरिणता अपि आपतसंस्थानपरिणता अपि वृत्तवर्णपरिणता अपि वृत्तवर्णपरिणता अपि उज्जय

लवणपरि० लोहितवणपरि० हालिद्ववणपरि० सुक्लिप्तवणपरिणातावि, गघनं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरि०  
 रिणतावि, रसनं तित्तरसपरि० कसायरसपरि० क्षयिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि,  
 फासनं कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुरकफासप  
 रिणतावि, सठाणनं परिमलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० श्यायत  
 सठाणपरिणतावि । जेफासनं उंसिणफासपरि० ते वखनं कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहितवणपरि०  
 हालिद्ववणपरि० सुक्लिप्तवणपरिणतावि, गघनं सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसनं तित्तरसपरि०  
 ककुयरसपरि० कसायरसपरि० क्षयिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासनं कक्कफासपरि० मउयफा

अपि अलसस्थानपरिणता अपि पतुरलसस्थानपरिणता अपि आयतसस्थानपरिणता अपि । ये रपशतः क्षीतरपशंपरिणतास्ते वखनं कक्कफण  
 परिणता अपि नीलवणपरिणता अपि लोहितवणपरिणता अपि क्षयिलवणपरिणता अपि मञ्जरसपरिणता अपि रसतः सुरभिगन्धपरिणता  
 अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि क्षयायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुर  
 सपरिणता अपि रपशतः कक्कफणपरिणता अपि मधुरपशंपरिणता अपि गुरुकस्यपशंपरिणता अपि लघुकस्यपशंपरिणता अपि स्निग्धस्यपश  
 परिणता अपि रुदरपशंपरिणता अपि संस्थानतः परिसरससंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि अक्षरसंस्थानपरिणता अपि अ-  
 तुरलसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । य रपशतः पञ्जरपशंपरिणतास्ते वखनं कालवणपरिणता अपि नीलवणपरिणता  
 अपि लोहितवणपरिणता अपि क्षयिलवणपरिणता अपि मञ्जरसपरिणता अपि रसतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि  
 पि, रसतः तित्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि क्षयायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, रपशतः

परि० श्रुथिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासठे कस्करुफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय  
फासपरिणतावि उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुस्करुफासपरिणतावि, सठाणठे परिमळसठाणपरि०  
बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० श्यायतसठाणपरिणतावि । जे फासठे लङ्कयफासपरि  
णता ते वयाने कालवयपरि० नीलवयपरि० लोहितवयपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवयपरिणतावि,  
गधठे सुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसठे तिसरसपरि० कऊयरसपरि० कसायरसपरि० श्रुथिलर  
सपरि० सञ्जररसपरिणतावि, फासठे कस्करुफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि०  
णिठफासपरि० लुस्करुफासपरिणतावि, सठाणठे परिमळसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि०  
चउरससठाणपरि० श्यायतसठाणपरिणतावि । जे फासठे सीतफासपरिणता ते वयाने कालवयपरि० नी

करसपरिहता अपि क्यायरसपरिहता अपि कट्टरसपरिहता अपि मधुरसपरिहता अपि, इत्यक्षतः क्लृप्तशयसपरिहता अपि मधुरशयपरि  
 हता अपि शीतरसपरिहता अपि उष्णसर्पपरिहता अपि त्रिगुणसपरिहता अपि कृकसर्पपरिहता अपि, सत्यानतः परिमपकससत्यान  
 परिहता अपि वृत्तसंस्थानपरिहता अपि अक्षतस्थानपरिहता अपि अनुरक्षसत्यानपरिहता अपि आयतसत्यानपरिहता अपि । ये रसज्ञतो  
 मधुकरसपरिहतास्तो वदतः कृष्णसर्पपरिहता अपि नीतसपरिहता अपि लोहितसर्पपरिहता अपि हारिद्रसपरिहता अपि धुङ्गद्रसपरि  
 हता अपि गण्डतः सुरभिगण्यपरिहता अपि दुराप्रियगण्यपरिहता अपि रसतस्तिक्ततरसपरिहता अपि कटुतरसपरिहता अपि काषाढरसपरि  
 हता अपि कट्टरसपरिहता अपि मधुरसपरिहता अपि इत्यक्षतः क्लृप्तशयसपरिहता अपि मधुरशयपरिहता अपि शीतरसपरिहता अपि  
 उष्णसपरिहता अपि त्रिगुणसपरिहता अपि कृकसर्पपरिहता अपि, सत्यानतः परिमपकससत्यानपरिहता अपि मधुरशयपरिहता

दुष्प्रिगधपरिणतायि, रसते तिस्ररसपरि० कसोयरसपरि० अविहरसपरि० मञ्जरसपरिण  
तायि, फासते कस्करफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण  
फासपरिणतायि, सठाणते परिमलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
आयतसठाणप० । जे सठाणते परिमलसठाणपरिणता ते वणते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहित  
वखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवखपरिणतायि, गधते सुस्निग्धपरिणतायि दुस्निग्धपरिणतायि, र  
सते तिस्ररसपरि० कसोयरसपरि० अविहरसपरि० मञ्जरसपरिणतायि, फासते कस्कर  
फासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्रफास  
परि० लुक्कफासपरिणतायि । जेसठाणते वहसठाणपरि० ते वणते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि

रसपरिणतायि वणते कालवखपरिणता अयि लोहितवखपरिणता अयि अविहरसपरिणता अयि मञ्जरसपरिणता  
अयि, अन्यतः सुराभिगन्धपरिणता अयि दुराभिगन्धपरिणता अयि, रसत तिस्ररसपरिणता अयि कटुकरसपरिणता अयि कपायरसपरिणता  
अयि अक्षरसपरिणता अयि मधुररसपरिणता अयि, स्पष्टत ककशस्पर्शपरिणता अयि मृदुस्पर्शपरिणता अयि गुरुकरसपरिणता अयि लघुकर  
स्पर्शपरिणता अयि स्त्रीरसपरिणता अयि उग्ररसपरिणता अयि, संस्थानतः परिमलससंस्थानपरिणता अयि धृतसस्यनपरिणता अयि  
असंस्थानपरिणता अयि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अयि आयतसंस्थानपरिणता अयि । ये संस्थानतः परिमलससंस्थानपरिणतास्ते वणत काल  
वखपरिणता अयि नीलवखपरिणता अयि लोहितवखपरिणता अयि अविहरसपरिणता अयि कटुकरसपरिणता अयि कपायरसपरिणता अयि अक्षरसपरिणता अयि म  
धुराभिगन्धपरिणता अयि, रसतः तिस्ररसपरिणता अयि कटुकरसपरिणता अयि कपायरसपरिणता अयि अक्षरसपरिणता अयि म





दुष्प्रिगधपरिणतायि, रसते तिस्रसपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० क्षयिलसपरि० मञ्जरसपरिण  
तायि, फासते कस्करुफासपरि० मउयफासपरि० गऊयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण  
फासपरिणतायि, सठाणते परिमळसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०  
श्यायतसठाणप० । जे सठाणते परिमळसठाणपरिणता ते वखते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहित  
वखपरि० हालिद्वयवखपरि० सुक्लिप्तवखपरिणतायि, गधते सुप्रिगधपरिणतायि दुष्प्रिगधपरिणतायि, र  
सते तिस्रसपरि० कङ्कयसपरि० कसायसपरि० क्षयिलसपरि० मञ्जरसपरिणतायि, फासते कस्करु  
फासपरि० मउयफासपरि० गऊयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफास  
परि० लुक्कफासपरिणतायि । जेसठाणते बहसठाणपरि० ते वखते कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि

रुचयव्यापरिणतास्ते वखते कृष्णवखपरिणता अपि नीलवखपरिणता अपि लोहितवखपरिणता अपि शारिद्रवखपरिणता अपि शुक्लवखपरिणता  
अपि, गत्वत सुरभिगत्वपरिणता अपि दुरभिगत्वपरिणता अपि, रसत तिकरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता  
अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, वपस्वत कक्करपक्षेपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकरपक्षपरिणता अपि लघुस  
पर्शपरिणता अपि क्षीतरपक्षपरिणता अपि उधरपक्षपरिणता अपि, संस्थानतः परिमणवत्संस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि  
म्यसंस्थानपरिणता अपि अनुरससंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमणवत्संस्थानपरिणतास्ते वणतः कृष्ण  
वखपरिणता अपि नीलवखपरिणता अपि लोहितवखपरिणता अपि शारिद्रवखपरिणता अपि, गत्वतः सुरभिगत्वपरि  
णता अपि दुरभिगत्वपरिणता अपि, रसतः तिकरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि म

तथस्यपरि० हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं ति  
 स्तरस्यपरि० कन्दुरस्यपरि० कसायरस्यपरि० अयिलरस्यपरि० मङ्गररस्यपरिणतावि, फासत्तं कस्करुफासप०  
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क  
 फासपरिणतावि । जेसठाणत्तं तससठाणपरि० ते दयत्तं कालवस्यपरि० नीलयस्यपरि० णोहितवस्यपरि०  
 हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गधत्तं सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं तित्तर  
 स्यपरि० कन्दुरस्यपरि० कसायरस्यपरि० अयिलरस्यपरि० मङ्गररस्यपरिणतावि, फासत्तं कस्करुफासपरि०

दुरस्यपरिणता अपि, स्पष्टतः कस्करुस्यपरिणता अपि दुरस्यपरिणता अपि गुरुस्यपरिणता अपि लघुस्यपरिणता अपि शीतरस्य  
 परिणता अपि तप्तरस्यपरिणता अपि लिङ्गरस्यपरिणता अपि कृतस्यपरिणता अपि । ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वदन्तः कृष्णवर्णे  
 परिणता नीलवर्णपरिणता सोहितवर्णपरिणता हारिद्रव्यपरिणता अङ्गवर्णपरिणता अपि, गन्धतः दुरजिगन्धपरिणता दुरजिगन्धपरिणता  
 अपि, रसवर्णपरिणता अपि कन्दुरस्यपरिणता अपि कसायरस्यपरिणता अपि अस्तरस्यपरिणता अपि मधुररस्यपरिणता अपि स्पष्टतः कस्करु  
 स्यपरिणता अपि दुरस्यपरिणता अपि गुरुस्यपरिणता अपि लघुस्यपरिणता अपि शीतरस्यपरिणता अपि तप्तरस्यपरिणता अपि कृतस्यपरिणता अपि । ये संस्थानतः अङ्गसंस्थानपरिणतास्ते वदन्तः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता  
 अपि सोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि अङ्गवर्णपरिणता अपि, गन्धतः दुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि, रसवर्णपरिणता अपि कन्दुरस्यपरिणता अपि कसायरस्यपरिणता अपि अस्तरस्यपरिणता अपि मधुररस्यपरिणता अपि स्पष्टतः कस्करु  
 स्यपरिणता अपि दुरस्यपरिणता अपि गुरुस्यपरिणता अपि लघुस्यपरिणता अपि शीतरस्यपरिणता अपि तप्तरस्यपरिणता अपि कृतस्यपरिणता अपि । ये संस्थानतः अङ्गसंस्थानपरिणतास्ते वदन्तः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० गिरुफासपरि० लु  
 रकफासपरिणतात्रि । जे सठागले चउरससठाणपरिणता ते वखाने कालवखपरि० नीलवखपरि० छोह  
 यवखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिषयखपरिणतात्रि, गधने सुस्निगधपरि० दुस्निग उपरिणतात्रि, रसने  
 तिसरसप० कहुयरसप० कसायरसपरि० अत्रिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतात्रि, फासने ककरुफासपरि०  
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० गिरुफासपरि० लु  
 फासपरि० । जे सठागले आयतसंठाणपरिणता ते वखाने कालवखपरि० नीलवखपरि० छोहितवखप०  
 हालिद्वयपरि० सुक्लिषयखपरिणतात्रि, गधने सुस्निगधपरिणतात्रि, रसने तिसर  
 परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अत्रिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतात्रि, फासने ककरुफासपरि०

दिग्गपरमपरिणता अपि कुरुष्यपारणता अपि । ये सुखानतमरस्वस्यानपरिणतास्त वक्ष्येताः कातव्यपरिणता अपि नीलवखपरणता  
 अपि लाहितवखपरिणता अपि हारिवृषखपरिणता अपि शुक्रश्वपरिणता अपि गन्धत सुरनिगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि,  
 रसतास्तिक्करपरिणता अपि कटुकरपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पष्टतः कजडा  
 रसपरिणता अपि मृदुकरपरिणता अपि गुरुकरपणपरिणता अपि लघुकरपणपरिणता अपि श्रोतस्वपणपरिणता अपि उग्रस्वपणपरिणता अपि  
 किंपरस्वपणपरिणता अपि कुरुष्यपणपरिणता अपि । य सुखानत आयतसस्यानपरिणतास्ते वक्ष्येताः लज्जवर्णपरिणता अपि नीलवखपरिणता अपि  
 लोहितवर्णपरिणता अपि हारिवृषखपरिणता अपि शुक्रश्वपरिणता अपि, गन्धत सुरनिगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि, रसत  
 स्तिक्करपरिणता अपि कटुकरपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पष्टतः कजडा

तद्यस्यपरि० हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गघत्तं सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं ति  
 दुरसपरि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासत्तं करकण्ठफासप०  
 मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उचिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुस्क  
 फासपरिणतावि । जेसठाणत्तं तससठाणपरि० ते दयत्तं कालवस्यपरि० नीलवस्यपरि० उोहितवस्यपरि०  
 हालिद्वयस्यपरि० सुक्लिप्तवस्यपरिणतावि, गघत्तं सुस्निग्धपरिणतावि, रसत्तं तित्तर  
 सपरि० कन्दुरसपरि० कसायरसपरि० अथिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासत्तं करकण्ठफासपरि०

पुररसपरिबता अपि, स्पष्टतः ककण्ठरसपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि गुह्यरसपरिबता अपि लघुरसपरिबता अपि शीतरसपदा  
 परिबता अपि उज्जरसपरिबता अपि लिङ्गरसपरिबता अपि रुक्मरसपरिबता अपि मे सत्त्वान्तो वृत्तस्त्वान्तपरिबतास्ते वयतः कण्ठवर्ध  
 परिबता नीलवर्धपरिबता ओहितवर्धपरिबता शारिद्रवधपरिबता शृङ्गावधपरिबता अपि, गन्धतः सुरजिन्मन्धपरिबता दुरजिन्मन्धपरिबता  
 अपि, रवतस्त्रिज्वपरिबता अपि कटुकरसपरिबता अपि कषायरसपरिबता अपि अक्षुरसपरिबता अपि, स्पष्टतः कर्ण  
 धरसपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि गुह्यरसपरिबता अपि लघुरसपरिबता अपि शीतरसपरिबता अपि उज्जरसपरिबता  
 अपि लिङ्गरसपरिबता अपि रुक्मरसपरिबता अपि मे सत्त्वान्तः अन्तस्त्वान्तपरिबतास्ते वयतः कण्ठवधपरिबता अपि नीलवधपरिबता  
 अपि लोहितवधपरिबता अपि शारिद्रवधपरिबता अपि शृङ्गावधपरिबता अपि, गन्धतः सुरजिन्मन्धपरिबता अपि दुरजिन्मन्धपरिबता अपि  
 रवतस्त्रिज्वरसपरिबता अपि कटुकरसपरिबता अपि कषायरसपरिबता अपि अक्षुरसपरिबता अपि लघुरसपरिबता अपि स्पष्टतः कण्ठरस  
 धरपरिबता अपि सुदुस्पर्शपरिबता अपि गुह्यरसपरिबता अपि लघुरसपरिबता अपि शीतरसपरिबता अपि उज्जरसपरिबता अपि

गिहिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ छुणेगसिद्धा १५ । सेत छुणतरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा । से  
त परपरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा १ परपरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा २ छुणेगसिद्धा ५०  
तजहा-छुपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाय सखेजसमयसिद्धा चसखेज  
समयसिद्धा छुणतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा । सेत चससारसमावणजी  
वपणवणा । से कित ससारसमावणजीवपणवणा १ ससारसमावणजीवपणवणा पचविहा पणत्ता, तजहा  
एगिदियससारसमावणजीवपणवणा चेहदियससारसमावणजीवपणवणा तेहदियससारसमावणजीवपणव  
णा चउरिदियससारसमावणजीवपणवणा पचिदियससारसमावणजीवपणवणा । से कित एगिदियससार  
समावणजीवपणवणा १ एगिदियससारसमावणजीवपणवणा पचविहा पणत्ता, तजहा-पुढविकाइया

यनेकलिङ्ग सिद्धा १५ । सेपा उमन्नरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा । अय कतिविधा परपरसिद्धश्चससारसमावणजीवपणवणा १ । परपर  
सिद्धाससारसमावणजीवपणवणा अमकविधा प्रपणा । तद्यथा अमयमसमयसिद्धा, द्विसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, यावत्  
सस्यमसमयसिद्धा, अस्म्येयसमयसिद्धा, अमन्तसमयसिद्धा, सेपा परपरसिद्धाससारसमावणजीवपणवणा । सेपा उमन्नरससारसमावणजीवपण  
वणा । अय कतिविधा ससारसमावणजीवपणवणा प्रपणा । तद्यथा-एकेन्द्रियससारसमावणजीव  
पणवणा द्विन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा त्रीन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा चतुरिन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा, पञ्चन्द्रियससार  
समावणजीवपणवणा । अय कतिविधा एकेन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा १ । एकेन्द्रियससारसमावणजीवपणवणा प्रपणा । तद्य  
था-पुष्पिबीकापिद्धा, अप्पकापिद्धा, तेज्ज कापिद्धा, वायुकापिद्धा, वनस्पतिकापिद्धा । अय कतिविधा १ । पुरस्वीकापिद्धा

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिहफासप० लुक्फासपरि  
 णतात्रि ॥ सेत्त रुविञ्चजीवपसुवणा ॥ सेत्त स्यजीवपसुवणा ॥ से कित जीवपसुवणा ? जीवपसुवणा दुविहा  
 पयात्ता, तजहा-ससारसमावसुजीवपसुवणा स्यससारसमावसुजीवपसुवणा । से कित स्यससारसमा  
 वसुजीवपसुवणा ? स्यससारसमावसुजीवपसुवणा दुविहा पयात्ता, तजहा-स्यणतरसिहस्यससारसमाव  
 णजीवपसुवणा परपरसिहस्यससारसमावसुजीवपसुवणा । से कित स्यणतरसिहस्यससारसमावसुजीवपसु  
 वणा ? स्यणतरसिहस्यससारसमावसुजीवपसुवणा पससरसिहस्यससारसमावसुजीवपसुवणा १ स्यतित्य  
 सिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ स्यतित्यगरसिद्धा ४ स्यययुद्धसिद्धा ५ पत्तेययुद्धसिद्धा ६ युद्धयोहियसिद्धा ७  
 इत्थीलिगसिद्धा ८ पुरिसलिगसिद्धा ९ नपुसकलिगसिद्धा १० सलिगसिद्धा ११ स्यसलिगसिद्धा १२

परिकता अपि गुरुवस्यपरिकता अपि गुरुवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि  
 स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि स्यवस्यपरिकता अपि  
 जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-ससारसमावसुजीवप्रज्ञापना, ससारसमावसुजीवप्रज्ञापना च । स्य कतिविधा प्रज्ञापना प्रज्ञापना । १  
 जीवप्रज्ञापना १ । ससारसमावसुजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । ससारसिद्धाससारसमावसुजीवप्रज्ञापना परंपरसिद्धाससारसमावसु  
 प्रज्ञापना च । स्य कतिविधा प्रज्ञापना ससारसमावसुजीवप्रज्ञापना । १ ससारसिद्धाससारसमावसुजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता ।  
 तद्यथा तीर्थसिद्धाः १ सतीपसिद्धाः २ तीर्थकरसिद्धाः ३ सतीर्थकरसिद्धाः ४ सत्यसिद्धाः ५ प्रत्येकसिद्धाः ६ सुदुर्लभसिद्धाः ७  
 कोत्तिहसिद्धाः ८ पुरुषसिद्धाः ९ नपुंसकसिद्धाः १० स्यात्सिद्धाः ११ स्यसिद्धाः १२ स्यसिद्धाः १३ स्यसिद्धाः १४ स्यसिद्धाः १५

गिहिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणुतरसिद्धश्चससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा । से  
त परपरसिद्धश्चससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा ? परपरसिद्धश्चससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा ५०  
तजहा-अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसयमसिद्धा जाय सखेजसमयसिद्धा अ्सखेज  
समयसिद्धा अणुतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धश्चससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा । सेत अ्ससारसमाद्यक्षुजी  
वपक्षवणा । से कित ससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा ? ससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा पचविहा पयत्ता, तजहा  
एगिदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा येइदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा तेइदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षव  
णा चउरिदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा पचिदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा । से कित एगिदियससार  
समाद्यक्षुजीवपक्षवणा ? एगिदियससारसमाद्यक्षुजीवपक्षवणा पचविहा पयत्ता, तजहा-पुठविकाइया

एनेकलिङ्ग सिद्धा, १५ । सेया उननरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । परंपर  
सिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अन्नकविधा प्रज्ञा । तद्यथा अथमममममविद्धा द्विसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, यावत्  
सत्यप्रसमयसिद्धा, अत्यन्तप्रसमयसिद्धा, अन्नप्रसमयसिद्धा, सेया परपरसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेया अससारसमापन्नजीवप्रज्ञा  
पना । अथ कतिविधा ससारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा । तद्यथा-एकेन्द्रियससारसमापन्नजीव  
प्रज्ञापना द्वीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुरिन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चिन्द्रियससार  
समापन्नजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञा । तद्य  
था-पृथिवीवायिका, अप्वायिका, वेला वायिका, वनरपतिवायिका । अथ कतिविधा पृथिवीवायिका ? । पृथिवीवायिका:





गजगणपयाले । अक्षपलस्रयालुय यादरकाएमाणित्रिहाणा ॥२॥ गोमेज्जाएयरुयए अक्केफालिहेयलोहिंयस्केय ।  
 मरगयमसारगह्वे, नुयमोयगह्वदनीलिय ॥ ३ ॥ चठणगेरुयहसे पुलएसोमधिणययोधह्वे । चदप्पन्नवेरुलिण ज  
 छकतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयायणेयतहप्पगारा ते समासनु दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जहागय अयपज्जह  
 गाय, तत्यण जेतें अयपज्जहाग तेण अयसपत्ता तत्यण जेतें पज्जहाग एतेसि वणादेसण गधादेसण रसादे  
 सेण फासादेसण सहस्सगसाविहाणाड ससिज्जाइ जोणिप्पमहसयसहस्साइ पज्जहागणिस्साए अयपज्जहागाव  
 क्कामति, जत्य एगो तत्य णियमा अयसखेज्जा । सेत्त खरवाटरपुढाविकाइया । सेत्त नादरपुढाविकाइया ॥ सेत्त पु  
 ढाविकाइया ॥ से कित अयाउकाइया ? अयाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअयाउकाइयाय यादर  
 अयाउकाइयाय । से कित सुज्जमअयाउकाइया ? सुज्जमअयाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जहसुज्जल

रुचकोऽङ्क स्फटिकतोहिताद्यहति ॥ मरकतमसारगह्वी, नुप्रमोचकल्लभीती व ॥ ३ ॥ चत्वनगेरुयहसे पुलकसो गन्धिवयोद्वे ॥ चम्प्रमन्नवेदु  
 यो जलकालः सुयकालय ॥ ४ ॥ ये चान्ते तथा प्रकारात्त समासतत्तया प्रशस्तः । तद्यथा-पर्याप्तका, अयपाप्तकाय, तत्र ये एते उपपाप्तकास्ते  
 असमाप्ताः । तत्र ये एते पर्याप्तका यत वर्याद्वेन गत्याद्वेन रसादेशेन सख्यायको विधानाति सख्येयानि । योनिप्रमुत्तानि यत्तस  
 इत्याद्य पर्याप्तप्रियया अयपर्याप्तका व्युत्क्रामान्ति, यत्रैकस्तत्र निवसा असख्येयाः । त एत खरवाटरपुयायवीकायिका । त एते यादरपुयित्रीकायि  
 काः । त एत पुयित्रीकायिकाः ॥ अय कतिविधाः अयकायिका ? । अयकायिका द्विविधा प्रशस्तः तद्यथा-सूत्तापुकायिकाः यादरापुकायिका ।  
 अय कतिविधाः सूत्तापुकायिका, ? । सूत्तापुकायिका द्विविधाः प्रशस्तः । तद्यथा-पर्याप्त सूत्तापुकायिका, अयपर्याप्तसूत्तापुकायिका । एते  
 सूत्तापुकायिकाः ॥ अय कतिविधा यादरापुकायिकाः ? । यादरापुकायिका अनेकविधाः प्रशस्तः । तद्यथा-अवश्याय, विमं मदिक्कं, करको,

[illegible][illegible]

गाय अपञ्जत्तगाय । सेत्त सुञ्जमतेउकाइया । से कित् वादरतेउकाइया ? छुणेगविहा पयत्ता, तजहा  
 डुगालं जाला ममुरे अच्ची अछाए सुद्धागणी उक्ता विज्जू असणी गिग्वाए सधरिससमुठिए सूरकतमणिणि  
 रिसए, जेयावखु तहप्पगारा ते समासह दुविहा पयत्ता, तजहा पञ्जत्तगाय अपञ्जत्तगाय, तत्यण जेते  
 अपञ्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्यण जेते पञ्जत्तगा एएसि वखादेसेण गधादेसेण रसाएमण फासादेवण सह  
 स्सग्गमोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमहसयसहस्साइ पञ्जत्तगणिस्साए अपञ्जत्तगा वक्कमति, जत्य एगी  
 तत्य णियमा असखज्जा ॥ सेत्त वादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ? वाउकाइया दुवि  
 हा पयत्ता, तजहा सुञ्जमवाउकाइयाय यादरवाउकाइयाय । सेत्त सुञ्जमवाउका  
 दुविहा पयत्ता, तजहा पञ्जत्तगसुञ्जमवाउकाइयाय अपञ्जत्तगसुञ्जमवाउकाइयाय । सेत्त सुञ्जमवाउका  
 इया । से कित् वादरवाउकाइया ? यादरवा० छुणेगविहा पयत्ता, तजहा पाईणयाए पटीणयाए दाहि

कान्तमस्सिपसूता, ये वाप्यस्य तथा प्रकारात्त समासतो द्विविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा-पयासका, अपयासकास्ते अथ  
 प्राप्ताः । तत्र ये पयासकास्ते वखादक्षम गन्धादेशेन रसादेशेन स्वर्गादेशेन सङ्ख्यापञ्चो विधानानि सस्येयानि । योनि प्रमुखास्ति क्षातमङ्गलादि  
 पयोसकानिप्रया अपयोसका ध्युम्कामानि । येनैकस्तत्र त्रयमा असस्येया । तद्यत्त यादरतेउकायिका । तमते तेन-कायिका ॥ अथ कतिविधा  
 वायकायिकाः ? वायुभायिका द्विविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा--सूक्ष्मत्रायुकायिका यादरवायुकायिकाय । अथ कतिविधाः सूक्ष्मत्रायुकायिका ? ।  
 सूक्ष्मत्रायुकायिका द्विविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा पयोससूक्ष्मत्रायुकायिका, अपयोससूक्ष्मत्रायुकायिका । तमते सूक्ष्मत्रायुकायिका । अथ क्षात  
 विधा यादरवायुकायिका । यादरवायुकायिका अनेकविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा-प्राचीनकायु, दक्षिणकायु, उदोचीनकायु, ऊ

णवाए उदीणवाए उहुवाए अहोत्राए तिरियवाए विदिसीवाए वाउज्जमेत्रा उक्कलिया वायमळलिया उ  
 क्कलियावाए मळलियावाए गुआवाए गुआवाए सयहवाए घणवाए तणुवाए सुधवाए, जेयावन्ने तहप्यगा  
 रा ते समासत्ते दुविहा पखुत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्यण जेते अपज्जत्तगा तेण अउसप  
 त्ता, तत्यण जेते पज्जत्तगा एएसिण यखावेसेण गधावेसेण रसावेसेण फासावेसेण सहस्सगसोविहाणाइ  
 सखिज्जाइ जोगिण्यमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमत्ति, जत्य एगो तत्य नियमा अउस  
 र्जेज्जा ॥ सेत्त यादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से कित यणस्सहकाइया वणस्सहकाइया दुविहा प०,  
 तजहा सुज्जमवणस्सहकाइयाय यादरवणस्सहकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सहकाइया २ दुविहा पखुत्ता,  
 त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सहकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सहकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सहकाइया । से कित

प्यवायुः अथोवायुः तिर्यक्वायुः विदिक्वायुः, वातोद्गमैः, वातोत्कलिकाः, वातमरुतोः, वरुत्कलिकावातो, मरुत्कलिकावातो गुल्मावा  
 तो सञ्जावातो वक्त्रिवातो पनवातमनुवातः क्षुद्रवातः ये मान्ते तया प्रकारास्त सर्वे द्विविधाः प्रकृताः । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका  
 य । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते अचमृताः । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते मर्कटयोर्न गन्धादेर्येन रसादेर्येन स्यादेर्येन सहस्रापयो विधानानि संख्या  
 तानि । योनिप्रमुक्तानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि क्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यदेक सप्त नियमा अचक्षयः । तस्य आदरवायुकायिकाः ।  
 तस्य वायुकायिका ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिका द्विविधा प्रकृताः । तद्यथा मूलमवनस्पतिकायिका आदरव  
 स्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा मूलमवनस्पतिकायिका द्विविधा प्रकृताः । तद्यथा पर्याप्तमूलमवनस्पतिकायिकाः  
 अपर्याप्तमूलमवनस्पतिकायिकाः, यएते मूलमवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा आदरववनस्पतिकायिकाः ? आदरववनस्पतिकायिका द्विविधाः

यादरवणस्सड्काइया २ दुयिहा पयससा, तजहा पत्तेयसरीरवादरवणस्सड्काइयाय साहारणसरीरवादरव  
णस्सड्काइयाय, से कित पत्तेयसरीरवादरवणस्सड्काइया २ दुय्यालसविहा पयससा, तजहा रुक्कागुच्छा  
गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणयलयहरियतसहि जलरुहकुहणाययोधव्वा ॥ १ ॥ से कित रुक्का २ दु  
यिहा पयससा, तजहा एगठियाय बज्जवीयगाय, से कित एगठिया २ अण्णेगविहा पयससा, तजहा निव  
यजवुकोस वसालअकोसपेलुसेलूया । सत्तड्मोयड्डमालुय यउलपलासेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवअरिठे विनेल  
एहरिण्णयनत्ताए । उवेन्नरियास्वीरिणि योधव्वेधायड्डपियाले ॥ २ ॥ पूहयनिवकरए सएहातहसीसवायअस  
जेय । पुखागनगरुक्के सिखिक्खीतहअसोमेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणमूलाविअसस्विज्जजीवि  
या कदावि स्वधावि तयावि सालावि पवालायि, पत्तापत्तेयजीविया, पुष्पा अण्णेगजीवा, फला एगठिया ॥

प्रश्नः । तद्यथा प्रत्येकशरीरयादरवणस्यपत्तिर्कायिकाः । साधारणशरीरयादरवणस्यपत्तिर्कायिकाः । अथ कतिविधाः प्रत्येकशरीरयादरवणस्यपत्ति  
र्कायिकाः ? । प्रत्येकशरीरयादरवणस्यपत्तिर्कायिकाः द्वादशविधाः प्रश्नः । तद्यथा वृक्षा गुच्छा गृहमासता वज्रयः पवगाधैव ॥ वृक्षवलयपरिती  
पविप्रसन्नकुशकाय योडव्याः ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षाः ? । वृक्षा द्विविधाः प्रश्नः । तद्यथा एकास्थिका यद्वीचकाय । अथ कतिविधाः  
यकास्थिकाः ? । एकास्थिका अनेकविधाः प्रश्नः । तद्यथा निम्बाम्यजम्बकोणम्य झालाङ्कोठपोल्लुखेशास्याः ॥ झम्बकमोचकमालकयजुल पत्ता  
यकरजनेदात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिणाः विप्रीतकशरीतकभङ्गाताः ॥ उभ्येन्नरिकाङ्गीरणी योसुखीपातकीप्रियासी ॥ २ ॥ पत्तिर्कायिकरज्जाः अस्त्र  
सत्याग्निशपासभजदात् ॥ पुभागमाणवृक्षी श्रीपवीचथाशीकाः ॥ ३ ॥ यपि चाम्ये तयाप्रकारा एतेया मूलाणि असस्ययजीवकानि । फन्दा अपि  
रक्ष्या अपि स्वपोषि धाराया अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पास्यनेकजीवकानि । फलाण्यकास्थिकानि । उत्तरी एकस्थिकाः ।

नत्राए उदीणत्राए उह्वत्राए स्थोत्राए तिरियवाए विदिसीत्राए वाउज्जमेत्रा उक्कलिया वायमकलिया उ  
 क्कलियात्राए मकलियावाए गुजात्राए ऊजात्राए सयहत्राए घणवाए तणवाए सुठ्ठवाए, जेयावन्ते तहप्पगा  
 सा, तत्थण जेत पज्जसगा एएसिण वयादेसेण गघादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ  
 सखिज्जाइ जाणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जसगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ नियमा सुत्त  
 रकेज्जा ॥ सेत्त यादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से कित थणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,  
 तजहा सुज्जमवणस्सइकाइयाय यादरवणस्सइकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सइकाइयाय दुविहा प०,  
 त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सइकाइयाय अपज्जसमुहुमवणस्सइकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सइकाइया । से कित

र्ववायु अपोवायु, तिर्यक्वायु विदिक्वायु वातोद्भासे, वातोत्कलिका, वातमरकलो उत्कलिकावातो, मयकलिकावातो; गुल्जावा  
 तो वम्बावातो संघट्टिवातो, पनकाततमुवातः सुदुवातः से वान्ते तथा प्रकारास सर्व द्विविधाः प्रज्ज्ञाः । तथा-पर्याप्तका । अपर्याप्तका  
 य । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असमाप्ता । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वत्तादेसेन गत्तादेसेन रसादेसेन रसादेसेन सहस्रापहो विधानानि सत्या  
 तानि । योनिप्रमुक्तानि क्षतसहस्राणि पर्याप्तकानि त्रया अपर्याप्तका व्युत्कलमिति । यत्रैक एव नियमा असम्भवा । तएत वादरवायुकायिकाः ।  
 तण्ठे वायुकायिकाः ॥ अथ कतिविधा क्षतसहस्राणि पर्याप्तकानि त्रया अपर्याप्तका व्युत्कलमिति । यत्रैक एव नियमा असम्भवा । तएत वादरवायुकायिकाः ।  
 स्तिकायिकाः । अथ कतिविधा सुक्ष्मवणस्पतिकायिकाः ॥ सुक्ष्मवणस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ज्ञाः । तथा-पर्याप्तका । अपर्याप्तका  
 अपर्याप्तसूक्ष्मवणस्पतिकायिकाः, तएते सूक्ष्मवणस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा वादरवणस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ज्ञाः । तथा-पर्याप्तका । अपर्याप्तका  
 वादरवणस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा वादरवणस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ज्ञाः । तथा-पर्याप्तका । अपर्याप्तका

ना ॥ ३ ॥ सगपाणकासमहृग अग्घाणगसामसिदुवारेय । करमहृहृरुसग करीरुरावणमहत्थे ॥ ४ ॥  
जाउलतमालपिरिणी गयमारिणिकुह्वकारियाजेणी । जावडकेयडतहग जपाछलाउसिअकोखे ॥ ५ ॥ जेया  
वखे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ अणगविहा पयात्ता, तजहा सेरियणोमालिय कोरिटय  
वत्युजीवगमणोज्जे । पीइयपाणकणडर कुज्जायतहसिदुवारय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहजू हियायतहमसियायवायु  
ती । वत्युलकच्छुलसेवा लगठिमगदतियाचेय ॥ २ ॥ चपगजाडणवणी डयायकुदेतहामहाजाई । एवमणंगगारा  
हवतिगुम्मा मुणयहा ॥ ३ ॥ सेत्त गुम्मा ॥ से कित लयाने लयाने अणगविहाने पयात्ताउ, तजहा-पउमल  
यानागलया आसागचपयलययचूतलता । दणलतवासितलता अहमुत्तयकुदसामलता ॥ १ ॥ जेयावखेत  
हप्पगारा सेत्त लयाने ॥ से कित वल्ली २ अणगविहाने पयात्ताउ, तजहा-पूसफलीकालिगी तुथीतपुसीय

वोइसाक्या ॥ करवीरावडमहास्या ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरिणीय मारवकुडवारिकानियही ॥ यायककतकिशुकी गयपालोवप्याकुल ॥ ५ ॥ ये  
वाग्य तथाप्रकारासे गुच्छाः । अय कतिवचा गुग्गुमाः १ । गुग्गुमा अयमेवत्रिधा । तद्यथाः सरिसनामानवमालिका कारपटक्यः पुजीवकमनो  
य ॥ २ ॥ वस्यज्जातीमारङ्गा मुपुज्जुलसयामहाकायः ॥ एवमनेकाकारा जवलिगुग्गुमाकनेकविधाः ॥ ३ ॥ तयसे गुग्गुमा ॥ अय कास्ता लताः ल  
ता अनेकविधाः प्रपमास्तद्यथा पट्टलताभागलता अशीकचम्यकलताद्यनलता । वनवासुकीलतप्त अतिमुक्ककुस्त्रयामलता ॥ १ ॥ याद्यात्या  
सायाप्रकारास्ता लताः । अय कास्ता वल्लया, वल्लयोनकविधाः प्रपमास्तद्यथा-पुंसबशीकालिणी तुम्बीपुसीनयोनलदी । पोपातकीपटोली  
पञ्जाङ्गुलकापवासीव ॥ १ ॥ अहृगुलताचकुटुबी ककाटोकारियल्लोसुवगा । जुपवाचवल्लुलीया त्यापावलीपदेवदाथीका ॥ २ ॥ आस्तोटावा



सेत एगठिया ॥ से कित यज्जयीयागा २ स्थणगविहा ५०, त० स्थलियतेदुक्कयिठे स्थवाणगमाउलिगविसेय  
 स्थामलगफगसदालिम स्थसोत्येउधरयठेय ॥ १ ॥ णग्गीहणटिरुके पिप्परिसयरीपिलुक्करुकेय । काउत्रि  
 कुलुन्नरि बोधहादेयदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएक्कहो हसिरीसेसत्तवसादहिअने । लोअधवचदणज्जण णीमेक  
 णकययेय ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा एएसिण मूलावि स्थसिखज्जजीविया, कडावि खधावि तयावि सालावि  
 पत्रालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायस्थणंगजीविया, फला यज्जयीया, सेत यज्जयीया ॥ सेत रुक्का ॥  
 से कित गुक्का २ स्थणगविहा पक्खसा, तज्जहा—वाइगिणंअल्लहपुण हयतहक्करीयजासुमणा । रुवीअट  
 इणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुलुन्नरिपिप्पालया अतसीविहीयकायमाईय । चूसपणोलोअदलि  
 थाउअवावत्युलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयोधवे । णिगुणिअक्कतूत्रि अ्याठईचेवतलउ

अथ कतिविधा वपुवीरकाः । वपुवीरका अनेकविधाः प्रसङ्गा । तथा अस्मिन्नतिशुद्धकपित्या आम्बाटकमातुसिद्धविशयाय ५ आमलसपन  
 सदाहिम मयसोदुम्बरबटाय ॥ १ ० अथापनन्निवदो विप्वलीशताबरीसका ५ कादुम्बारिजुसुत्तरी बोहव्यादवदारुय ५ २ ५ तिलकालावुक्कअत्रा  
 बोधयिरीयसप्तपदंदिपकाः ॥ साप्रथमस्वगार्धुन नीपकुठअकटस्याय ॥ ३ ० यथायये तथाप्रकारा यतया मूमाणि असुरययजोवकाणि । कस्या  
 अपि रक्त्या अपि लभोपि आका आप प्रकासा अपि यत्रास्यपि मत्सेकवीरकानि, पुण्यास्यप्यनकावकाण फलाप्यपि वपुवात्राणि । उक्ता  
 वपुवीरका । उक्ता युक्ताः ५ अथ कतिविधा गुक्ताः १ । मुक्ता अप्यनकविधाः प्रसङ्गाः । तथाया वृत्ताकसङ्गकोवा यवं मुक्ताप्यनारिजुममम् ५  
 रुपी कादि कनीली तुमसातथाविजोराक्या ५ १ ॥ कुलुन्नरिपिप्पालयाः अतसीविहीयकास्यामादि ५ चूदेअपनीकप्यजिका काठालकाववरयुवो ॥  
 २ ५ पक्खवोरुक्काः अतसिधायकाय ५ निरुवहाकनूवारिकाः काठविहीयतकोडा ५ ३ ५ अजयालकायमइका याठकविशुबाराक्याः ५ करव

री हियसिधुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरुकेकुहविदे करकरुसुठेतहाविजगय । मञ्जरतण्डुरयसिप्विय धीयहे  
सुकलितनय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेस तणा ॥ से कित वलया २ ख्णंगविहा पखत्ता, तजहा-ताले  
तमालतक्कलि, तेयालीसालिसारकक्काणे । सरलेजायतिकेयड, कदलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयकरुकाहे  
गुरुक्के, लवगरुक्केयडोडयोधे । पूयफलीखज्जारी, धीयध्वानालिऐरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेस  
वलया । से कित हरिया ? हरिया ख्णंगविहा पखत्ता, तजहा-ख्जोरुहवोवाणो, हरितगतहतदुल्लज्जा  
गतनेय । वत्तुलपोरगमज्जा, रपोडवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्ही सोलियसाएतहंवमभुक्की ।  
मूलगसरिसवख्खिळ, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहन्तराले फणज्जुएख्खएयन्नूयणए । चोरगदमण  
गमरुयग सतपुप्फिटीवरैयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेस हरिया । से कित ठंसहीने ? ठंसहीने  
ख्णंगविहाने पखत्ताठ, तजहा-सालीवीहीगोज्जम जयकलमसूरतिलमुगा । मासणिप्पायकुल्लय ख्खलिसि  
दसतीणएलिथा ॥ १ ॥ ख्खयसीकुसुनकोद्वय कगरालगवरुकोदुसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तियोद्वय ॥ पूणफलउर्बुर बोदुब्बीमारिकेलथ ॥ २ ॥ येवाग्गे तथाप्रकाराले वलया ॥ कय कतिविधा हरितकाः । हरितका अप्पमक  
विधाः । तथाया अप्पाठोवोडा हरिततण्डुलोवलगतनेक ॥ वत्तुलपोरगमज्जार वौडवल्लीवपालिक्का ॥ दकपोपलिक्कादवी ख्खलिकाशा  
कलयेवमयड्डी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाग्ग्वल खाकद्वययत्तकयेव ॥ तुलसीकज्जोरालो कज्जुननुर्बमेदेन ॥ चोरवत्तमनकरुच थतपुप्पीन्वीत्रैवतथा ॥  
यवाग्गे तथाप्रकाराले डारताः ॥ कय खात्ता कोयय ॥ कोययो उमकविधाः प्रथमाः । सालोटीहीणोचूमा यवकलमसूरतिलमुगा ॥ मास  
निप्पाठकुसत्याः वत्तसीदशालीयकालिक्का ॥ १ ॥ अप्पसीकुसुमकोद्वय कङ्गरालमासकोद्वयकाः ॥ ख्खणवरिसवमूलवीयाः येवाग्गे तथाप्रकारालो

एउयालुकी । घोसातईपकोठा पचगुलिस्थायणालीय ॥ १ ॥ कगुलयाकदुइया कक्षोऊइकारियझईसुन्नगा ।  
 कुयवाययागलीपा यायझीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अण्ठोआअइमस्य नागलयाकरहसूरयझीय सघहसुमिण  
 सायिय जासुमणकुविदयझीया ॥ ३ ॥ मुविथअथायझी वीरविराडीजियतिगोयाळी । पाणीसामावझी गुजा  
 यझीययत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोसफुसिया गिरिकसइमालुयायअजणई । वहफुस्यकोगलिमा गलीयतह  
 अझ्झोईया ॥ ५ ॥ जेयायसो तहप्यगारा सेत यझीत ॥ से कित पछगा २ अणगविहा पयत्ता, तजहा  
 इस्कूयाइस्कुवऊये वीरणातइइक्कऊयेमासेय । सुठेसरंयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कका  
 वसेययवसेय । उदएकुणएचिमए कठावेलयकषाणे ॥ २ ॥ जेयावसो तहप्यगारा सेत पछगा ॥ से कित  
 सणा ? तणा अणगविहा पयत्ता, तजहा-संक्रियगतिरहोसिय दस्रकुसेपहएयपोऊडा । अण्णअसठाए

तिमुचक नामसतेकपसूरवस्सो ॥ १ ॥ कपयैसुमसोपिच कातसुमनाः कुविन् ॥ १ ॥ मुविआम्बावझी वीरविराटीजियन्तीसीपासी । पावी  
 इयामावझी मुञ्जावझीपयत्याको ॥ ४ ॥ सोयवतीचट्टिगोत्रा कुरसीनिरिकविसालुकाण्णकी । द्विपुयबागबिमोरेरे तसेवाम्याहुवोदीकाः ॥ ५ ॥  
 या बाम्यासाया प्रकारका वझयः । कच को ते यर्वना पयगा कनेकाविषा प्रज्जसास्तया-इश्याइसुवाटिका वीरवोतयाइकामासय ॥ ५ ॥  
 सरेयवेत्ता तिमिरावतपोरनपासाइ ॥ १ ॥ बंधोवेसूककाः ककायजलायेवयवजः ॥ उदकुठकविमुकाः कठावेलयकषाको ॥ २ ॥ जेयाम्बे त  
 यामकासो यर्वनाः ॥ कच कानि वुक्कानि कनेकाविषानि प्रज्जसाणि । तया-एरवट्टा कुविन्ः करकपदुपठोतयाविमकुच ॥ अणुरववट्ट  
 रकस्य भेदावबोर्षचक्रवत् ॥ १ ॥ यानिआप्यानि तया प्रकारवि साभि वुक्कानि । कच कतिविषा वझयः ? । कलवा कनेकाविषाः प्रज्जसाः ।  
 तया यासकासासगुठो तत्तादिवत्तारिकाचारकसाका ॥ करककाविषीसीसो ककलकायाउकवज ॥ १ ॥ सुलवकोविदुवको कचकुवववव

रो हियसिसुयेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरुकेरुखिविदे करकस्सुठेतहाविन्नगय । मज्जरतण्णुरयसिप्पिय योधधे  
सुकलितणय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेस तणा ॥ से कित वलया २ अणंगविहा पखहा, तजहा-ताले  
तमालेतक्कालि, तेयालीसालिसारकहाणे । सरलेजायतिकेयड, कवलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ अयसरुकाहिं  
गुरुके, लवगरुकेयहोइयोधधे । पूयफलीखज्जारी, योधधानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत  
वलया । से कित हरिया ? हरिया अणंगविहा पखहा, तजहा-अज्जीरुहवोदाणो, हरितगतहत्तदुल्ल  
गतणेय । वल्लुलपोरगमज्जा, रपोइववीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदवी सोलियसाएतहं वमरुक्की ।  
मूलगसरिसवअचिल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहन्तराले फणज्जुएअज्जएयन्नयणए । चोरगदमण  
गमरुयग सतपुप्फिदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत हरिया । से कित ठसहीत्त ? ठसहीत्त  
अणंगविहान पखहात्त, तजहा-सालीवीहीगोज्जम जयकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुल्लय अलिंसि  
दसत्तीणएलिचा ॥ १ ॥ अयसीकुसुनकोद्व कगूरालगयरहकोहुसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तिवोद्वः ॥ पूगफसंसर्गः बोद्धव्योत्तारिकेल्य ॥ २ ॥ येवाम्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः ॥ हरितका अप्यनेक  
विधाः । तद्यथा अप्यारुखीवोहा हरिततण्डुलोत्तलगतानेक ॥ वल्लुलपोरगमज्जार पौडवखीवपालिका ॥ वकपोपतिजादवी स्वास्तिबाधा  
कलायेवमरुको ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बल कावधत्रयलकधेव ॥ तुलसीरुधोराको षण्णुनमूर्धमेन ॥ चोरदबमनकसवक्क शतपुप्पीन्दीत्ररचतया ॥  
यथाग्ये तथाप्रकारास्ते वारताः ॥ अथ काला कोपय ॥ कोपययो उवकविधाः प्रथमाः । कालोद्रीहीगोपूमा यवकलमसूरतिलमुग्गाः ॥ मास  
निप्पावकुल्लयः अलसीदशवीककालिङ्गः ॥ १ ॥ अयसीकुसुमकोद्व कगूरालमासघोत्रवकाः ॥ अणधरिसवमूलवीयाः येवाम्ये तथाप्रकारास्तास्ते

एलयालुकी । घोसातर्दपक्षोला पर्वगुलिश्चायनालोय ॥ १ ॥ कगूलयाकदुडया कक्षोरुडकारियसंदं सुजगा ।  
 कुयथायथागलीपा थायक्षीतहदेयदालीय ॥ २ ॥ अण्कोथाअशुमद्य नागलयाकहसूरयक्षीय सघहसुमिग  
 साधिय जासुमणकुयिंदयक्षीया ॥ ३ ॥ सुद्धियश्चंथायक्षी धीरयिरालीजियतिगीथाकी । पाणीसामायक्षी गुजा  
 वक्षीययत्याणी ॥ ४ ॥ ससयिदुगोसफुसिया गिरिकयादमालुयायअजणई । दहफुत्तयकोगलिमा गलीयतह  
 अक्षोर्योर्वीया ॥ ५ ॥ जेयाययो तहप्पगारा सेत्तं यक्षीत्ति ॥ से कित पसुगा २ अणगयिहा पणत्ता, तजहा  
 हक्खुयाड्ढकुयन्तये थीरणातहहक्कोन्नेयमासेय । सुठेसरंयंत्ते तिमिरंसेतपोरगणले ॥ १ ॥ यसेयेलकणए कका  
 वसेययवसेय । उवएकुणएयिमए ककाधेलूयकसणे ॥ २ ॥ जेयाययो तहप्पगारा सेत्त पसुगा ॥ से कित  
 तणा ? तणा अणंगयिहा पणत्ता, तजहा-सेकियगंतियहोत्तिय दसुक्खंसेपसुएयपोरुडला । अणुणअथसाठए

१ तिसुक्ख भावत्तेरुजसूरवरत्थो ५ । उपपेसुमनसोपिच जातमुमम । दुविण्णक्षीकाः ७ ३ ॥ सुद्धिक्खाम्बावक्खो वीरवरानीपय्जोनीपात्तो । पाकी  
 इयामावक्षी भुज्जावक्षीयवत्थाकी ७ ४ ॥ सेयवधीचद्धिगोत्रा पुरमीगिरिकविमामुक्काज्जणको । द्विपुण्णकागज्जिमोगरो तसेयवाप्पाद्धोरीकाः ७ ५ ॥  
 या आम्बाक्खया प्रकारासा वसुयः । अथ से ते पवणाः पवणा अनेकविधाः प्रप्रसासादया-इत्थयाइपुवाटिका कोरकोतयाइकानामव ५ प्रव्ही  
 चरेपवेत्ता तिमिरावतपोरपसाव ॥ १ ॥ वंछोवेसुक्खकाः अकार्थज्जलयेययवज्जः ॥ उदककुठकविमुकाः कण्ठावेसुक्खकाको ७ २ ॥ सेवान्ते न  
 याप्रकासे पवणाः ५ अथ कानि यवानि यवानि अनेकविधानि प्रप्रसाति । तदया-वरवह कुलविण्णः करकवपुवटोत्तयाविमपुव ५ अणुरयवपु  
 रववप्य नेदत्तलोप्पवसुक्खवम् ७ १ ॥ यानिवाप्पानि तव्वा प्रकाराणि ताभि तुकाणि । अथ कतिविधाः अज्जवाः १ । अज्जवा अनेकविधाः प्रप्रसाति ।  
 तदया दासमासावक्खो वत्तात्तिप्रकारिकारकसाका ॥ करककानिधीसेको करककयाज्जववव ५ १ ॥ वृत्तवटोविट्टवटो जववववववव

साधारणसरीरधादरयणस्सहकाइया ? २ अणुगविहा पसहा, तजहा-अथए पणए सेवाले लोहिणी निह  
त्यिजगा अस्सकम्भी सिहकम्भी सिउठातप्पोमुसदीय ॥ १ ॥ रुकुणहरियाजारु, ढीरयिरालीतहेवकिहीया  
हलिहसिगवेरेय, अ्यालुगमूलएह यकटूय कणकठुमज्जपोगलइतहेव मज्जासिगी विरुहा सप्पसुगधा णि  
त्तरुहा चैय धायरुहा पाढामियवालुकी मज्जरसा चैय रायवप्पी य पउमा य माढरी दति वणिक्किहाति  
यावरा मासपम्भी मुग्गपस्सि जीवियरिसिके य रेणुया चैव कात्तली स्वीरकात्तली तथा जग्गीणहाइयाकिमिरा  
सिज्जहुमुत्याणगलइपेलुगाइय कियेह पउले य हठहरतणुया चैव लोयाणी कयहकदेवज्जे सूरणक तहेन  
स्सखुं एए अणुतजीवा जेयावखे तहात्रिहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलित्तियायेर । सखेज्ज मसखिज्जा वोच  
ह्वाअणुतजीवाय ॥ १ ॥ सिघाऊगस्सुगुच्छो अणुगजीवोउ होति पायहो । पत्ता पत्तयजिया दोखियजीवाउ फले

वपपा-अनन्ध, पनन्ध सेवाल, लोही बीडू, सिघका । अणुबबी सिघकबी सवविट ततो, सुवुवतो ॥ १ ॥ तसकन्दकुन्वरिक्खवीरविराली त  
यावात्ता । वारिद्वयभुवेर आसुमूनीकत्तु ऊपकन्दमपुपोलेव ॥ २ ॥ मपुअप्पीविरुठी सवसुगन्विच्छिक्खकटा । अरमरुद्धावातालो मपुवरसाचराज  
सता ॥ ३ पट्ठागाव्वाविवात्तो वरवीकियातिजावरासासपबी । मुद्गपबीजोवरसिका रडुकावाकाकोलोलीरकाकोलो ॥ ४ ॥ चङ्गाफमराविमाप्या गु  
हामुल्यवासुका ॥ ५ । ऊपपीसइयडकम्भी तथावरतन्तुलोपाबी ॥ ५ ॥ ऊपकन्दवज्जकम्भी सूरणकदःसखुं । एते अनन्धजीवा ये वाप्यग्ये सपा  
पूताः ॥ ६ ॥ वज्जमूलकम्भमूलस वसीमूलासायावपरे । सखेया असखेया थोटुव्याद्यतथापरे ॥ १ ॥ अङ्गाटकस्सुगुच्छोय नेज्जीवोप्रवतिविधेय ।  
पत्राः प्रत्येकबीवा द्वीहीजीवोपसविधेयो ॥ २ ॥ यस्यमूलसप्रमस्य समोभङ्गसुदुवपते ॥ अनन्धजीवाकम्भलो येवाप्यग्येतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य  
कम्भस्य प्रमस्य समो भङ्गसुदुवपते ॥ अनन्धजीवाकम्भलो येवाप्यग्येतथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य कम्भस्य प्रमस्य समो भङ्गसुदुवपते ॥ अनन्धजीवा

गारा सेत ठसहीन । से कित जलरुहा २ स्थणेगविहा पणहा, तजहा-उदए थुअ पणए सेवाले कउ हवे कसेक्या कच्छनाणी उप्यले पउमे कुमुदे पण्डिणे सुअए सोगधिण पोळरीए महापोळरीए सययत्ते नद स्वयत्ते कलहारे कोकणदे थुरविदे तामरस जिस जिसमुणाले पोस्कुले पोस्कुले जेयावणे तहप्प गारा सेत जलरुहा । से कित कुहणा ? स्थणेगविहा पणहा, तजहा-थुअ काए कुहणे कुणक्की दद्वहलिया थुआए सज्जाए ठसोए वसीणहिा करए १ जेयावणे तहप्पगारा सेत कुहणा । पाणाविहस ठाणा वस्काणपुगजीवियापणा । स्वधोविपुगजीयो तालसरउनालिपरीण ॥ १ ॥ जहसगउसरिसयाण सिडेस मिस्साणयहियावहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहयातिलपप्पक्रिया यज्जपहितिलेहि सहतासती । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत पत्तेयसरीरयादरयणप्फडाडया । से कित

पपयः ॥ अथ कतिविधा जलरुहाः १ । जलरुहा अनेकविधाः प्रकृताः । तद्यथा-उरले अरुण पनले छेवाले कलम्पुले वृहे २ अवेदवकाभभावाः उत्पत्तपत्तकुमुदाणि ३ १ ॥ नालिमसुअसीगन्धिकपुवरीक अतपत्र सइअपत्रकङ्गारकोकणदारविन्दनामरक विनविमवकाल पुकन पुकनमात्ति नेदात् । वेवान्ने तथाप्रकादास्ते जलरुहाः । अथ कतिविधाः प्रकृताः । अथ कतिविधाः प्रकृताः । तद्यथा-पाय काय, पुवइ कुवक इत्यर्हासका, अथाव समज सत्राव अनीकहित कुवकरनेदात् । वेवान्ने तथाप्रकादास्ते जलरुहाः । तद्यथा-पाय काय, पुवइ एकत्रीविकापत्राः । स्कन्धोपि वैकत्रीवोत्पत्तसरलभारिकेतीनाम् ॥ १ ॥ यथावकमर्थयाका लेखनिकाको कतिकादत्तम् । अनेकवरीराको अन्धान्व विवरीरकपाताः ॥ १ ॥ यथाकातिलपर्यटिका बहुभित्तिलेवहासका । अनेकवरीराको तथाअन्धान्विकावरीरवहासका ॥ ३ ॥ यथाः अनेकवरीर वाररन्मस्यविकाधिका । अथ कतिविधाः अथावकवरीरयादरयणम्यविकाधिका । अथावकवरीरयादरयणम्यविकाधिका अनेकविधाः प्रकृताः ।

हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसेखधे जेयावखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए हीरोन्नगेपदीसई । परि  
 स्तजीवातयासाउ जेयावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसेसाले  
 जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसेपत्ते जेयावखेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नग  
 ६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीस  
 स्स हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसेपुप्फे जेयावखेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिस्तजीवेउसे  
 ई । परिस्तजीवेउसेउ जेयावखेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठारि लक्ष्मीग्रहलतरीन्ने । स्थणतजीवाउसाठक्षी जायाव  
 वीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठारि लक्ष्मीग्रहलतरीन्ने । स्थणतजीवाउसाठक्षी जायाव

स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तम्भे ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य रक्तस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तम्भे  
 ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त रक्तस्य य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु ज  
 गत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त  
 म्भे ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ५ ॥ यश्रमवासस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तस्य ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य ज  
 गत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तम्भे ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तम्भे  
 य य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु जगत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फल य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य ज  
 गत्स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु बीजे ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कन्धस्य काष्ठेभ्यो नष्टस्य कृष्णस्य मवेत् ॥ यमस्तभीनास्त  
 त्वचि या वाप्यग्य तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य रक्तस्य काष्ठेभ्यो नष्टस्य कृष्णस्य मवेत् ॥ यमस्तभीनास्त त्वचि ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य श्या



जनिधा ॥ २ ॥ जस्समूलस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयात्रयेतहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्स  
 जग्गस्स समोन्नगापदीसइ । अणतजीवेउसेकदे जेयायन्तेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सजग्गस्स समोन्नगीय  
 दीसइ । अणतजीवेउमखघे जेयाथक्केतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएजग्गाए समोन्नगीयदीमड । अणतजीया  
 तयासाउ जेयाथक्कातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसइ अणतजीवेउसेसाल जेयायन्ते  
 तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसइ । अणतजीवेपथालेसे जेयाथक्कातहाविहा ६ ॥  
 जस्सपत्तस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसइ । अणतजीवेउसेपत्ते जेयायन्तेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुष्पस्सजग्गस्स  
 समोन्नगोपदीसइ । अणतजीवेउसपप्फे जेयायन्तेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसइ ।  
 अणतजीवेउसेउ जेयायन्तेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सधीयस्सजग्गस्स समोन्नगोपदीसइ । अणतजीवेउनत्रीण  
 जेयायक्केतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सजग्गस्स हरीरोन्नगोपदीसइ । परित्त जीवेउसेमूले जेयावक्कतहाविहा १  
 जस्सकंदस्सजग्गस्स हरीरोन्नगोपदीसइ । परित्त जीवेउसेकदे जेयायन्तेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सजग्गस्स

लामूल यवाप्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य श्लाका मज्झमा च समो जङ्गलु दूषयते ॥ अमल जीवाल्लङ्काया येवाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य स्व  
 लुप्रभायाः समो जङ्गलु दूषयते ॥ अमलजीवा काण्डहु येवाप्यग्य तथाविधाः ॥ ५ ॥ यस्यावाप्तस्य जग्गस्य समो जङ्गलु दूषयत ॥ अमलोनलजीवाः  
 सु र्वेवाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पात्रस्य जग्गस्य समो जङ्गलु दूषयते ॥ अमलजीवा काण्डे ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य ज  
 ग्स्य समो जङ्गलु दूषयते ॥ अमलजीवा काण्डे ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च जग्गस्य समो जङ्गलु दूषयते ॥ अमल जीवाल्लु फले  
 ये वाप्यग्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य धीकल जग्गस्य समो जङ्गलु दूषयत ॥ अमलजीवा काण्डुर्वाच ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य जग्ग

हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेउसेखवे जेयायखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएजगगाए हीरोजगेपदीसई । परि  
 त्तज्जीवातयासाउ जेयायखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सजगस्स हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेउसेसाले  
 जेयावन्तेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सजगस्स हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेपवालउ जेयावन्तेतहाविहा  
 ६ ॥ जस्सपप्पस्सजगस्स हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेउसेपप्पे जेयायखेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सजग  
 स्स हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेउसेपुप्फे जेयावन्तेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सजगस्स हीरोजगेपदीस  
 ई । परित्तज्जीवेउसेउ जेयायखेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सजगस्स हीरोजगेपदीसई । परित्तज्जीवेउसे  
 वीए जेयावन्तेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाठ तत्तीवहलतरीजवे । झुणतज्जीवाउसान्तही जायाव

स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवाकामूले ये वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तरान्ते  
 ये वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त ररकस्य य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य स्वचक्षु न  
 म्नाया हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त  
 खात्ते ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ५ ॥ यदप्रकाशस्य जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तस्य ये वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भ  
 नस्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तरान्ते ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तरपु  
 ष्य ये वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ८ ॥ यद्वनस्य तु जगत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त य वाप्यग्य तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य धीजस्य ज  
 गत्स्य हीरो जङ्गलु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्वीण ये वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कम्पस्य काष्ठेभ्यो जगत्स्य य वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ ११ ॥ यस्य ज्ञा  
 त्वचि या वाप्यन्ता तथाविधाः ॥ १२ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो जगत्स्य य वाप्यन्ते तथाविधाः ॥ १३ ॥ यस्य ज्ञा

खातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठानं तस्सीयहलतरीनये । अणतजीयाउसातस्सी जायाययातहाविहा ॥ २ ॥  
 जस्सखघस्सकठानं तस्सीयहलतरीनये । अणतजीयाउसातस्सी जायाययातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससाउाडुक  
 ठानं तस्सीयहलतरीनये अणतजीयाउसातस्सी जायाययातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठानं तस्सीतणु  
 यरीनये । परित्तजीयाउसातस्सी जायाययातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठानं तस्सीतणुयरीनये । परित्त  
 जीयाउसातस्सी जायाययातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखघस्सकठानं तस्सीतणुयरीनये । परित्तजीयाउसातस्सी  
 जायावखातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससाउाडुकठानं तस्सीतणुयरीनये । परित्तजीयाउसातस्सी जायाययातहावि  
 हा ॥ ४ ॥ चक्खागजजमाणस्स गठीचुखघनोनये । पुठयीसरिस्सएणजेदेण अणसजीययियाणाहि ॥ १ ॥  
 गूढसिरागपत्त सच्छीरजंघहोइनिच्छीरं । जपियपणठसंथि अणतजीययियाणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजउयायउया

तस्स काष्ठेय्य भवतीतु बहुता भवेत् ॥ जगत्तीवाकालापि या वाप्यया साधाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेय्यो त्तरत्नं तन्मुरीमता ॥ प्रत्येक  
 जीवारत्नं तु या वाप्यया साधाविधाः ॥ १ ॥ यस्य कल्पस्य काष्ठेय्यो त्तरत्नं तन्मुरीमता ॥ प्रत्येकजीवारत्नं तु या वाप्यया साधाविधाः ॥ २ ॥  
 यस्य स्कन्धस्य काष्ठेय्यो त्तरत्नं तन्मुरीमता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या वाप्यया साधाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य शालस्य काष्ठेय्यो त्तरत्नं तन्मुरीम  
 ता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या वाप्यया साधाविधाः ॥ ४ ॥ जगद्गुरुप्रमाणस्य यन्त्रिबर्हीकताभवेत् ॥ एतयो सदृशं प्रदेना मत्त जीव विजा  
 नीयात् ॥ गूढ विराज पत्रं सच्छीरं पत्रं भिःशीरम् ॥ यदपि प्रमद्वन्त्रि घननाजीवं विजातीयत् ॥ पुण्यं प्रतर्जस्वतर्जं मूलमदृशमास्तवदृश्यं । सद्धेय  
 प्रमद्वेयं मोदुप्यसमन्तीदृश्यं ॥ ३ ॥ येकेचिन्नालकद्रुः पुण्याः तन्मेयप्रोविन्नालस्युः । प्रविताद्यामनाजीवा येवाप्ययेतथाविधास्युः ॥ ४ ॥ यद्व्य  
 त्तिकन्धो वनारकल्पस्यैवकिञ्चिजीव । एतेहमन्तजीवा एकोजीवोविपश्चाले ॥ ३ ॥ पुष्पाजलमुल्लसकन्धो कण्डुकमुल्लसकोपकोद्वन्धो । इत्येवत्येक

यिथयथासनालिशाय । सखिजमसखेज्जा योधर्माणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालिशायथा पुण्फासखेज्जाजी  
 तिजीयस्स । पत्तयपत्ताइ पुण्फाडिअणगजायाड ॥ १० ॥ पुसमफलफाणिग तुनतउनलुवालुक्क । घोसात्तय  
 यिथयथासनालिशाय । सखिजमसखेज्जा योधर्माणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालिशायथा पुण्फासखेज्जाजी  
 तिजीयस्स । पत्तयपत्ताइ पुण्फाडिअणगजायाड ॥ १० ॥ पुसमफलफाणिग तुनतउनलुवालुक्क । घोसात्तय  
 यिथयथासनालिशाय । सखिजमसखेज्जा योधर्माणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालिशायथा पुण्फासखेज्जाजी  
 तिजीयस्स । पत्तयपत्ताइ पुण्फाडिअणगजायाड ॥ १० ॥ पुसमफलफाणिग तुनतउनलुवालुक्क । घोसात्तय

१२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहालिशायकुहणकुडुक्के । एणअणतजीवा कुडुक्केहोडनयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिश्रूवीए  
 पफाल तिट्ठयंचेवतिट्ठस ॥ ११ ॥ वटममकहाह एयाडहणतिगजीवस्स । पत्तयपत्ताइ सक्कसरमंसरमिजा  
 यिथयथासनालिशाय । सखिजमसखेज्जा योधर्माणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेडनालिशायथा पुण्फासखेज्जाजी  
 तिजीयस्स । पत्तयपत्ताइ पुण्फाडिअणगजायाड ॥ १० ॥ पुसमफलफाणिग तुनतउनलुवालुक्क । घोसात्तय

जीयोवक्तामहसोवध्युयोवा । ओविध्यमूलेजीयो सोधिज्जपत्तेपठमर्याए ॥ ११ ॥ सद्योविकिसउत्तुखलु उगम  
 माणोश्चणतर्हचणितु । सोषेवयियहुतो होठपरिघोश्चणतोवा ॥ १५ ॥ समयवक्ताण समयतेचिसरीराणि  
 द्युत्ती । समयश्चणगहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण यत्तणसाहारणागतचेव । जयज्ज  
 याणगहण समासठत्तिपिगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारी साहारणमाणपाणगहणच । साहारणजीयाण सा  
 हारणलरकणपुय ॥ १८ ॥ अहस्ययोगोलोधतो आठतत्तयणज्जसकात्तो । सद्योश्चगणिपरिणत्तु णिन्नुयजीने  
 तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोयहत्तिहव सखेज्जाणयपासिउसक्का । ठोसतिसरीराइ णिन्नुयजीयाणणताण २०  
 लोगागासपपुच णिन्नुयजीवठवेहिऐक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाश्चणतात्तु ॥ २१ ॥ लोगागासपदेवे  
 परित्तजीवठविह्नुऐक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाश्चसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सश्चसस  
 न्नागमित्तात्तु । लोगाश्चसस्साश्चपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरोह पच्चरुत्तनेपरुचियजीया

वा ॥ १५ ॥ समकस्युत्ताकावा समकतेयांहरिभिर्वृत्तिः । समकप्रयाणापान ग्रहस्योच्छ्वासनिश्वायो ॥ १६ ॥ एकस्यचपहृद्वं तद्वद्वृत्तांसापारखा  
 नाच । यद्वद्वृत्तांपद्वच समकसखदपिचेल्ल ॥ १७ ॥ साधारणमाहारः प्राद्यापानादिकभवेत् सवम् साधारणब्रीहाना साधारणलसपदेतत् ॥ १८ ॥  
 यथायोचोस्मातो नातकासतपनीयसङ्ग्राहः । सर्वोन्मिपरिखत-युनु आनीद्विनिगोदब्रीवागत्वम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोश्चयावा संत्येयाभांनवोपल  
 प्पानि । गावास्सपदृश्यन्ते ऽनन्तानांनिगोदबीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाग्रप्रदेशे निगोदब्रीवंल्यापयैवेकम् । एवमुभीयमाना प्रवन्ति तोकाचनना  
 स्तु ॥ २१ ॥ लोकाकाग्रप्रदेशे प्रत्येकबीचल्यापयैवेकम् । एवमुभीयमाना प्रवन्ति साकाचस्ययाताः ॥ २२ ॥ पर्याप्तप्रत्येकबीचाः प्रतरस्यासङ्गमागमि  
 ता । अचक्यतोकाचपयोशा साधारणाचनन्ताः ॥ २३ ॥ यन्निःकसुखरीरे प्रत्येकतेप्ररुपिवाजीवाः । मूलावाद्यायाद्या यदुपपद्येनतमान्ति ॥ २४ ॥

सुक्रमाध्याणगिज्जा चस्कुप्फासनतेइति ॥ २१ ॥ जेयावणो तहप्पगारा ते समासत्तं दुग्गिहा पणुत्ता, त०  
 पज्जत्तगा य अणुपज्जत्तगाय, तत्थण जे ते अणुपज्जत्तगा तेण अणुसपत्ता, तत्थण जेतं पज्जत्तगा तेसिण वत्ता  
 देसण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जा  
 त्तगणिस्साए अणुपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय अणुसखिज्जा सिय अणुणता एणसिण  
 इमात्तं गाहात्तं अणुणतत्तत्तं तजहा—कदायकदमूलाय रुक्कमूलाइयाथरे । गुच्छायगुम्भत्रत्तीय वेळुयाणित्ता  
 णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिचाम्मे हडेयसवालकिरुहएणए । अणुएयकच्छन्नाणी कटुक्कोकगवीसड्ढमे ॥ २ ॥  
 तयत्तत्तपत्तलसुय पत्तपुप्फलसुय । मूलगमज्जवीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर  
 वादरयणस्सइकाइया । सेत्तयादरयणस्सइकाइया ॥ सेत्त एगिदिया ॥ से कित वेइदिया ? वेइदिया अणुणेग  
 विहा पणुत्ता, तजहा—पुल्लकिमिया कुच्छकिमिया गळूयलगा गोळोमा गेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

धेपिचाम्मे तयाप्रकारात्ते समासतोद्विषाः प्रचसासाधया-पर्याप्तकायापर्याप्तकाय, तत्र यद्यपर्याप्तकास्ते उच्यन्ताः, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषां  
 वर्णाद्वयान् गत्यादौर्ध्वं रसादेऽन्तेन स्पृक्षादिष्वो गृह्णाद्यर्थो विचानानि (वेदाः) सख्येयानि योनिप्रमुखात्तसवस्त्राणि पर्याप्तकानिअया अपर्याप्तका  
 ध्युर्यमन्ते यत्रैकस्तत्र स्यात्सख्येयाः स्यादसख्येयाः एतेयानिमा गाथा अनुगमन्त्या साधया-कम्पायकम्बमूलानि यद्वमूलानिचाप  
 रे । गुच्छागुम्भाद्यवमग्नय वेळुकाभिरुक्कानिच ॥ १ ॥ पटोत्पलस्यट्टाट्टकान् इदमवालकप्रपत्तकाय । अवनकायकच्छन्नाणिः अणुदुक्कयकोत्तिययत्तिकः  
 ॥ २ ॥ त्यक्कत्तपिपमात्तेपु पत्तपुप्फलसुय । मूलगमज्जवीणपु योनिःकस्यापिकापिण ॥ ३ ॥ सत्ताः साधारणजरीरयादरयणस्सपत्तिकायिका । उ  
 त्ता यादरयणस्सपत्तिकायिका । समासानि एकेन्द्रियाणि । अथ के ते द्वेन्द्रिया ह्येन्द्रिया अनेकाविधाः प्रचसासाधया पूति छापकाः कुदिगपि

ईमं हा गोजलीया जलीया जाला उया सखा मखगगा धुवा खुवा खंधा वराहा सोतिया मोक्षिया कहुया  
 वासा एगठवसा दुहर्दयसा णदिवायसा सयुक्ता माडवाहा सिप्पि सपुना चंदणा समुद्धलिरका, जयायणे  
 तहप्पगारा सहे ते समुच्छिमा नपुमगा त समामनु दुयिहा प०, त०-पज्जसगाय अपज्जसगाय णनिण  
 एयमादियाण येइदियाण पज्जस पज्जसाण सत्तजाहुल्लोको जाणिप्पमूहसयसहस्सा नयतीति मरकाय ॥  
 सत्त यइदियससारसमायखुजीयपखयणा ॥ से कित तइदियससारसमायखुजीयपखयणा २ १ अणगविहा  
 पखसा, तजहा-उवाइया रोहिणिया कुय पिपीलिया उहेमगा उहुदिया उक्कलिया उप्पाया उप्पका तण  
 हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणयिटिया पत्तयिटिया फलविटिया वीयविटिया तंपुरु  
 णमिजिया तउसिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिड्डिया ज्जिड्डिया किगिरा किगिरिना वाक्कया लज्जया सु

[illegible]

नगा सीवत्ययो सुयधेता इदकादया ईदगीत्रया तुरतुत्रगा कील्यलवाहगा जूया हाहाहलां पिसुया सत  
घादया गीम्ही हल्यिसीका जैयात्रयो त० सहे ते समुच्छिमनपसगा त समासहे दुविहा पयात्रा, तजहा—  
पञ्जत्तगाय अ्यपञ्जत्तगाय । एणसिण एणमादयाण तद्वदियाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण अण्ठाज्जकुलकोफिजोणि  
प्यमुहसयसहस्सा हवतीति मरकाय । सत्त तेहदियससा० । से कित चउरिदियससारसमाचयजीवपय  
णा २ ? अण्णेगविहा पयसा, तजहा—अधिय पासिय मेच्छिय, मगसिरकीफ तहा पयग य । ठक्कग कु  
कुरुकुह, नदावसेय सिगिरिणे । किरहपत्ता नीलपत्ता छालिदुपत्ता सुक्किपत्ता चित्तपरका  
विचत्तपरका ठहजलिया जलचारिया गजोरा णीणिया ततवा अत्यिरोफा अत्यिवेहा सारगा नेउरा डोला  
नमरा जरिली जरुला तोम्मा विञ्जुया पत्तविञ्जुया क्खणविञ्जुया जलविञ्जुया पिग्गला कणगा गोमयफीफा  
जंयावत्त तहप्यगारा सहे ते समुच्छिमा नपुत्रगा त समासहे दुविहा पयात्रा, तजहा—पञ्जत्तगाय अ्यप

का इन्द्रगोपाः तुरतुन्वगाः कुलत्यवाहगा यूका हाहाहलाः पिङ्गका सववायकाः कदोघला वसिष्ठका ये वाप्यस्य तथानिचास्ते सर्वे समुच्छि  
मा नपुत्रकविङ्गः त समासतो द्विविधा प्रपन्नाः । तस्या यथोक्तकाययथोक्तकाय । यतयाभनमाविज्ञाना तन्निवाका यथोक्तकायतानासद  
जातिभुलकाटयोनिप्रसूतयसहस्राणि सर्वाणि इत्याख्यातम् ॥ तयते भीष्मययाद्या ॥ अथ कतिविधावतर्निन्दियससारसमाचयजीवपयाः  
१ । चतुर्दिन्दिपससारसमाचयजीवपयापमा अनन्तविधाः प्रपन्नाः । तस्या अापचपुच्छिमासक सज्जकीटालयापतङ्गाय ॥ सत्कुणकुलककु  
इन्द्राः बर्तायगुहिरकाय ॥ १ ॥ कपपणा भीसपणा साविहतपदाः हारतपणाः सुहृदशायात्रपणा चवित्रपणा उपजलिका जलधारया गजोरा  
निपतासक्तवोरकाया चासवेयाः सारङ्गा मनुसा वासा व्रमरा व्रमर्षो जलरुहाः दाहा यायका पत्रयायकाः गामयधुधिकाः जलधुधिकाः



छत्तगाय । एणसिण एयमाइयाण चउरिदिंयाण पज्जतापज्जत्ताण नयजाहुकुउकोहि जोणिप्पमूहसयत्तह  
 रसाइ नवतीति मरुकाय । सेस चउरिदिंयससारसमावणजीवपणवणा । से कित पचिदिंयससारसमावण  
 जीवपणवणा ? पचिदिंयससारसमावणजीवपणवणा चउविहा पणत्ता, तजहा-नेरइयपचिदिंयससारस  
 मावणजीवपणवणा तिरिक्कजोणियपचिदिंयससारसमावणजीवपणवणा मणुस्सपचिदिंयससारसमावण  
 जीवपणवणा देवपचिदिंयससारसमावणजीवपणवणा । से कित नेरइया ? सत्तविहा पणत्ता, तजहा  
 रयणप्पज्जा पुढवीनेरइया सक्करप्पज्जापुढवीनेरइया वालुयप्पज्जापुढवीनेरइया धूमप्पज्जापुढवीनेरइया तम  
 प्यज्जापुढवीनेरइया तमतमप्पज्जापुढवीनेरइया । ते समासहे दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जतगा झपज्जत्त  
 गाय । सेत्त नेरइया । से कित पचिदिंयतिरिक्कजोणिया ? तिविहा पणत्ता, तजहा-जलयरपचिदिं

रिमपणत्ताः कवणाः नोमयकीटाः से काप्यस्ये तथाप्रकारास्ते समुद्दिमा नपुसकास्ते समासतो द्विविधाः प्रपत्ताः ॥ पर्याप्तका अपयासकाश्च ॥ एते  
 पानेवमादीना चतुरिन्द्रिययास्याङ्कं पर्याप्तपर्याप्ताना अवलसुसुकोटिगतसहस्राणि भवन्ति इति व्याख्यातम् ॥ तदन्ते चतुरिन्द्रियसमापन्न औ  
 वमप्रापनाः ॥ अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनाः ? । पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनास्तुविधा प्रपत्ताः ॥ तद्यथा ने  
 रयिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनाः तिर्यक्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनाः मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनाः दे  
 वपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवमप्रापनाः । ते कतिविधा नैरयिकाः ? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रपत्ताः । तद्यथा-रजवना पचिबो नैरयिका ग्रंथर  
 म्प्रा पचिबो नैरयिका वालुकमनापचिबो नैरयिका धूममनापचिबो नैरयिका तमस्तन म्प्रा पचिबो नैरयिका ते क्वा  
 सीत द्विविधाः प्रपत्ताः तद्यथा पर्याप्त अपयासका । तस्यै नैरयिकाः । अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियवियणानिकाः ? । पञ्चेन्द्रियवियणानिका

यतिरिक्कजोगिया थलयरपचिदियतिरिक्कजोगिया खहयरपचिदियतिरिक्कजोगिया । से कित जलयरप  
चिदियतिरिक्कजोगिया २ ? पचविहा पन्तता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुसुमारा । सेकि त  
मच्छा २ १ छणगविहा पखुत्ता, तजहा सरहमच्छा खवत्तमच्छा जगमच्छा विज्जिअियमच्छा हलिइमच्छा क  
मगरिमच्छा रोहियमच्छा हलसागरा गागरा वत्ता तिमिगिला णक्का तडुलमच्छा । सेत्त  
णिक्कामच्छा सालिसिच्छियामच्छा लज्जणमच्छा पन्नागा पन्नागाहपन्नागा । जेयावत्ते तहप्पगारा । सेत्त  
मच्छा । से कित कच्छन्ना २ दुविया पखुत्ता, तजहा अठकच्छन्ना य मसकच्छन्ना य । सेत्त कच्छन्ना । से  
से कित गाहा २ ? पचविहा पखुत्ता, तजहा देलीवठगा मुद्दया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से  
कित मगरा २ ? दुविया पखुत्ता, तजहा-सोळमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २

क्खिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा बलवरपञ्चनिद्रयतियक्क्योनिकाः खलवरपञ्चनिद्रयतियक्क्योनिकाः सुखरपञ्चनिद्रयतियक्क्योनिकाः । अथ कतिविधा  
कलवरपञ्चनिद्रयतियक्क्योनिकाः १ । बलवरपञ्चनिद्रयतियक्क्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-मरस्या कच्छपा याहाः मकराः जिझुमा  
राः । अथ कतिविधाः मरस्याः १ । मरस्या अन्नविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सुङ्गमरस्या सुतलमरस्याः युगमरस्याः चिज्जमरस्याः इरिद्रमरस्या मस  
रमरस्याः रोप्पुतमरस्या इतीमरस्या सुगरमरस्याः गगरमरस्याः बइन्मरस्या वठगरमरस्या तिमिमरस्याः तिमिङ्गुलमरस्याः नळमरस्याः तण्डु  
समरस्या कनकमरस्या सालिमरस्या मासिकमरस्याः समनमरस्या पत्ताकमरस्या पत्ताकपताकमरस्या ये वाप्यये तथाप्रकारास्त मरस्याः ।  
अथ कतिविधा कच्छप १ । कच्छपा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अस्थिकच्छपा मासकच्छपाय । तएते कच्छपा । अथ कतिविधा याहाः १ ।  
याहा पञ्चविधा प्रज्ञप्ताः विबुधा वटुया सुतुना पुनकाः सीमाकाराः तएते याहाः । अथ कतिविधा मकराः । मकरा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः सु

एगागारा प०, सेस सुसुमारा । जेयायन्ते तहप्यगारा ते समासन्तं दुयिहा पयसा, तजहा--समुच्छिमा य  
 गम्भवक्कतिया य तत्यण ज ते समुच्छिमा ते सहे नपुसका, तत्यण जे ते गम्भवक्कतिया ते तियिहा प०,  
 तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एतसिण एवमाइयाण जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्झापाज्जत्ताण  
 छुत्तरसजाडुकलकोणियाण्यमुहसयसहस्सा जवतीति मरकाय । सेत्त जलयरपचिदिय० । से कित यत्त  
 यरपचिदियतिरिस्कजाणिया २ ? दुयिहा पयसा, तजहा चउप्ययत्तयलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया परि  
 सप्ययलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया य । से कित चउप्ययलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? चउत्तिहा  
 पयसा, तजहा एगखुरा दुखुरा गळीपया सणफ्फया । से कित एगखुरा २ ? अण्णेगविहा पयसा, त०  
 खुरसा खुरसतरा घोळगा गह्मना गौरस्करा कदलगा खिरिकदलगा आधत्ता । जेयायन्ते तहप्यगारा । सेत्त

यहामकराः नरसमकराश्च । तयते मकराः । अथ कतिविधाः सिंगुमाराः १ । सिंगुमारा यकाकाराः प्रज्झासकपले सिंगुमारा । ये वाप्यन्ते त  
 याप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्झासाः । समुत्थिमाय गनमुत्थाग्निकाश्च । तत्र ययते समुत्थिमास्ते समासत मर्बे मपुसकाः । तत्र ययत गर्जे  
 योदसत्रातिक्कमकोटियोभिन्नुक्कसतसहस्रकणि पयसोति चाल्यातम् ॥ तयत्त यलवरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्का । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गि  
 यतिपयस्योनिक्काः १ । खलवरपन्वेग्गियतियेक्कपोनिक्का द्विविधाः प्रज्झासाः । तद्यथा समुत्थिमायत्तयलयरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः । यरिज्येत्तत्तर  
 पन्वेग्गियतियत्तयोनिक्का । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः २ । यत्तुत्थिमायत्तयलयरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः । अथ  
 ताः । तद्यथा-यत्तुत्थिमायत्तयोनिक्का द्विविधाः प्रज्झासाः । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गि  
 यतिपयस्योनिक्काः । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गियतियत्तयोनिक्काः । अथ कतिविधाः खलवरपन्वेग्गि

एगसुरा । से कित दुखुरा २ ? अण्णेगयिहा पणुत्ता, तजहा-उहा गोणा गवया रोज्जा समया महिसा सधरा वराहा अया एलगा रु ससन चमर कुरग गोकखमाई सेत्त दुखुरा । से कित गलीपया २ ? अण्णे गविहा पणुत्ता, तजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गहा । जेयावये तहप्पगारा । सेत्त गलीपया । से कित सणप्फया २ ? अण्णेगयिहा पणुत्ता, तजहा सीहा वग्गा दीथिया अण्ण तरण्णा परस्सरा सिंया ला सुणगा कीलवणगा (ग्रया ५००) कोकत्तिया ससगा चित्तगा विव्वलगा । जेयावये तहप्पगारा । सेत्त सणप्फया । तसमासत्त दुविहा पणुत्ता तजहा समुण्णिकमाय गण्णवक्कत्तियाय । तत्थण जे ते समुण्णिकमा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जे ते गण्णवक्कत्तिया ते तिविहा पणुत्ता, तजहा हत्थी पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमादियाण थलयरपचिवियतिरिक्कजोणियाण पज्जसापज्जत्ताण वसजाइकुलकोफिजोणियमुह

पोटका गवना गौरसराः कन्दलकाः श्रीकन्वलकाः कावतांय । ये काप्यन्ते तथाप्रकारः । तथेते एकसुरा । अथ कतिविधाः द्विसुराः ? । द्विसुरा रा खनेद्विधाः प्रचक्षता । तद्यथा-उष्ण गोका गवया रोहाः द्वायका मयियाः द्वाभ्यारा वराहा अत्रा यलका करव धारजायमरा कुरङ्गा गोकर्को दिवा क्षपते उष्णा द्विसुराः । अथ कतिविधा गवहीपदा ? । गवहीपदा अण्णनेकविधाः प्रचक्षताः । तद्यथा-इत्थी गण्डक मूज्जइत्थी उष्ण गण्डाः यथाप्यन्ते तथाप्रकारः उष्णा गवहीपदाः । अथ कतिविधा सुखपदाः ? । सुखपदा अनेकविधा प्रचक्षताः तद्यथा चिदा व्याघ्रा द्वोपिनो अथा मरुचका परशराः इयाहा विरासाः द्वाभ कोला कोडतय सणका विप्रकाः विहालाः येवाप्यन्ते तथाप्रकारास्सर्वे समखाः । ते समासतो द्विविधा प्रचक्षताः । तद्यथा-समुण्णिकमाय गण्णवक्कत्तिमाय । तत्र ये समुण्णिकमास्ते सर्वे मपुसकाः । तत्र यएते गर्जभुरज्जानिकास्ते त्रिविधा प्रचक्षताः । तद्यथा लिण पुरुया नपुसकाः । एतेषामेवमादीनां स्वतन्त्रपण्णोद्धपतियक्योत्तिमानां पयोसापयोसानां इयत्राठिक्कलकोटियोभिप्रमु

सयसहस्सा हवतीति मस्काय । सेत चउप्ययथलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया । से कित परिसप्ययलयर  
 पचिद्वियतिरिक्कजोणिया २ ? दुविहा पणुत्ता, तज्जहा उरपरिसप्ययलयरपाचिद्वियतिरिक्कजोणिया नुय  
 परिसप्ययलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया य । से कित उरपरिसप्ययलयरपचिद्वियतिरिक्कजोणिया २ ? च  
 उच्चिहा पणुत्ता, तज्जहा अयगरा छासाळिया महोरगा । से कित अही २ दुविहा पणुत्ता, तज्जहा  
 दहीकरा य मउळिणो य । से कित दहीकरा २ ? अणगविहा पणुत्ता, तज्जहा आसीविंसा दिठोविंसा  
 उगगविंसा जोगविंसा तथाविंसा लालाविंसा उस्सासविंसा अस्सासविंसा कण्हसप्या सेठसप्या कउदरा दप्प  
 पुप्फा कीलाहा मेलिमिदा ससिदा जेयाथणे तहप्यगारा । सेत दहीकरा । से कित मउळिणो २ ? अणग  
 विहा पणुत्ता, तज्जहा दिव्वागा गणसा कसाहीया वउला चिसुणिणो मऊळिणो अही अहिंसिलागा वाय

सयसहस्साणि सवकीण आस्थातमुत्तायुप्यदस्ससरपण्णेन्द्रियतियक्कोनिका । अय कतिविंसाः पारसपरस्सलसरपण्णेन्द्रियतियक्कोनिका-  
 का । पारसपरस्सलसरपण्णाद्वयतिर्यक्कोनिका द्विविंशः प्रश्नः । तद्यथा उर परिसपरस्सलसरपण्णित्थियतियक्कोनिकाः मुअपरिसपरस्सल  
 सरपण्णेन्द्रियतियक्कोनिकाय । अय कतिविंसाः उर परिसपरस्सलसरपण्णेन्द्रियतियक्कोनिकाः । उर परिसपरस्सलसरपण्णित्थियतियक्कोनिका  
 कायतविंशः प्रश्नः । तद्यथा अय अणगरा आसासविंसा महोरगा । अय कतिविंसा अय । अययो द्विविंशः प्रश्नः । तद्यथा दहीकरा  
 य मुकुलिनय । अय कतिविंसा दहीकराः । दहीकरा अनेकविंशः प्रश्नः । तद्यथा आतोविंसा दप्पाविंशः अयविंशः ओगविंसा त्वचाविंशः  
 साजाविंशः उप्फाविंशः निग्गाविंशः कण्हसप्या कउदरप्याः कोसावः अेलिमिदा सविंशः ये चाप्यय तथाप्रकारा  
 लयत दहीकरा । अय कतिविंशा मुकुलिनः । मुकुलिनो अनेकविंशः प्रश्नः । तद्यथा दिव्वा गणसा कसाहीया वउला चिसुणिणः मऊळिणः अहिंसिलः वाय

ऋगा । जेपावखे तहप्यगारा । सेत्त यडलिया । सेत्त ख्यही । से कित ख्यगारा ? एगागारा पख्यहा,  
 सेत्त ख्यगारा । से कित ख्यासालिया ? कहिण जते । ख्यासालिया समुच्छति ? गीयमा ! ख्यतीमणस्सखे  
 हे ख्यहाडजेसु दीवेषु णिख्वाएण पखरससु कम्मज्जमीसु खाधात पळ्ळु पचसु महाविदेहेसु चक्रवर्तीखधावा  
 रेसु वासुदेवखधावारेसु यलदेवखधावारेसु महामळालियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर  
 निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेळनिवेसेसु कळ्ळनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पहणनिवेसेसु ख्याग  
 रनिवेसेसु ख्यासमनिवेसेसु सवाहननिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एणसिण चैव त्रिणासेसु । एत्थण ख्यासालिया  
 समुच्छति । जहन्नेण ख्यगुलस्स ख्यसखिज्जहागमिन्तीए लंगाहणाए, उक्कोसेण वारसजोयणाइ । तहाणुरु  
 व च ण विस्सज्जवाहसेण ज्ञमिदालिप्पण समुठति । ख्यसक्की मिच्छविठी ख्यन्नाणी ख्यतीमुज्जत्तथाडया

तित्तः अर्थः अहिमुगताः वायुकुहागाः । येवाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तथेते मुकुलितः । उक्ता अर्थः । अथ कतिविधा अजगराः ? । अजगरा  
 रक्षाकारः प्रसङ्गाः तथेते अजगराः । अथ कस्यासालिगाः ? । अथ जहन् । गीतम् । अन्तमध्ये मनुष्येष्वेवार्हवतीये  
 पु द्वीपेषु निज्जर्पात पञ्चवस्सु कम्मज्जमिषु पुनश्च पञ्चसु महाविदेहेषु चक्रवर्तिरखन्वावारेषु वासुदेवरखन्वावारेषु यलदेवरखन्वावारेषु माणकलि  
 चरखन्वावारेषु महामाणकलिकरखन्वावारेषु ग्रामान्वेषेषु नगरान्वेषेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कयटनिवेशेषु महस्यनिवेशेषु द्वीपमुखानि  
 वेशेषु पत्तमान्वेषेषु चाबगरनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु सवायनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु यतेपामेव विनाशेषु । यतेषु आशाविला समुच्छन्ति । ज  
 पण्यनाकुलस्या सस्येपज्जागमात्रया उवगाहमया । उक्ताप्येते हादशयोगमानि तथामुख्य च विष्णुमाधवाभ्याम् (विष्णुरस्यूलस्याभ्याम्) ज्ञमिं हसयित्वा  
 समुतिष्ठते । अथचित्तिमिप्पावृष्टिः अजगानी अन्तर्मुहूर्तोयुरेव कालं करोति । तथेते आसालिगाः । अथ कतिविधा मदोरगाः ? । मदोरगा अनेक

अथ काठ करेह । सेस ध्यासाडिया । से कित महोरगा २ ? छणेगेविहा पखसा, तजहा स्यतेगहया  
शुंगुल पि छगुलपुहसिया यि विपच्छियि यियच्छिपुहस्त पि रणो पि रणीपुहसिया पि कुच्छपि कुच्छ  
पुहसिया यि धणु पि धणपुहसिया यि गाउय पि गाउयपुहसिया यि जोयणं पि जोयणपुहसिया यि  
जोयणमय पि जायणसयपुहसिया यि जोयणसहस्स पि तण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते  
गतिय डह वाहिरणसु दीयसमुदेसु हयति जेयायद्वे तहप्पगारा संस मन्नोरगा । ते समामत्त बुयिहा प०,  
सं०—मम्मुच्छिमाय गन्नयक्कतिया य । तत्थण जेतें समुच्छिमा ते महे णपुमगा, तत्थणं जेतें गन्नयक्कतिया  
शुण तियिहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुसगा, एणिसण एयमाहयाण यज्जसा २ ण उरपरिसप्पाणं दसजा  
इकुलकोकीजाणिप्पमुहसयसइस्सा हयती ति मरकाय । सेस उरपरिसप्पा । से कितं नुयपरिसप्पा २ खुंज

[illegible]

विहा पयसा, तजहा-णउला सेहा सरा सहा सरठा सारा खारा घरोडला विस्सजरा मूसा मगसा पड  
 छउप्याइया जे यावदे तहप्यगारा । ते समासने दुविहा प०, त०-समुच्छि  
 लाइया त्यीरविरालिया जाहा तत्यण जेते समुच्छिमा ते सवे नपुसगा, तत्यण जेते गप्पवक्कतिय तेण तिविहा  
 मा य गप्पनक्कतियाय, तत्यण जेते समुच्छिमा ते सवे नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्झात्ता २ ण ज्ञयपरिसप्पाण नवजाइकुल  
 पयसा, तजहा-इत्यो पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्झात्ता २ ण ज्ञयपरिसप्पाण नवजाइकुल  
 कौन्निजोणिप्यमुहसयसहसाइ हवतीति मरकाय । सेत्त ज्ञयपरिसप्पयलयरपचेटियतिरिक्कजोणिया । सेत्त  
 परिसप्पयलयरपचिविदियतिरिक्कजोणिया । से कित्त स्वहरपचिविदियतिरिक्कजोणिया २ चउविहा पयसा,  
 तजहा-चम्मपरकी लोमपरकी समुगपरकी वियतपरकी । से कित्त चम्मपरकी २ छुणंगविहा प०, त०  
 वग्गुली जलोया छुण्णिहा नाररुपरकी जीवजीया समुहुवायसा कखसिया परिकेवेली जेयावसे तहप्यगा  
 रा ॥ सेत्त चम्मपरकी ॥ से कित्त लोमपरकी २ छुणंगविहा प०, त० ठका कका कुरला वायसा चक्का

मूर्ध्नाय गन्धकालिकाय । तत्र ये समुच्छिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र ये गन्धकालिकास्ते विविधा प्रप्रसाः । तद्यथा स्त्रिय पुरुषा नपुस  
 काः । एतेषामवसादीना पर्याप्तपर्याप्ताना मुत्रपरिसर्षाणा नमनानि कुलकाटियाणि प्रमुखातसस्त्राणि भवन्तीति श्रुत्या । उक्ता मुत्रपरिसर्ष  
 रत्नसवरपञ्चेन्द्रियतिवन् योनिका । उक्ताः परिसपरस्थलरपञ्चन्द्रियतियक्यामिकाः । अथ कतिविधा सुवरपञ्चेन्द्रियतिवन् योनिका ? । स  
 ररपञ्चन्द्रियतिवन् योनिका । तद्यथा चमपदी लोमपदी समुद्रकपदी विततपदी । अथ कतिविधा चमपदीः, चमपदीणा  
 मेकाविधा प्रप्रसाः । तद्यथा यजुसा जलोकाः कविलाः नाररुहपदी जीवजीवाः समुद्रवायसा कसुतिया पानिविराली य वाप्यग्ये तथाप्रकाराः ।  
 तएत्त चमपदिबः ॥ अथ कतिविधा लोमपदिबः ? । लोमपदिबोनेकविधाः प्रप्रसाः तद्यथा उट्टा कट्टा गुरला वायसा चक्कात्ता इमा कल



चेव कालं करेद् । सेत्त स्यासालिया । से कित महीरगा २ ? छर्णेगविहा पखत्ता , तजहा अत्येगडया  
अगुल पि अगुलपुहसिया वि वियच्छिवि वियच्छिपुहस्त पि रयणी पि रयणीपुहसिया पि कुच्छपि कुच्छ  
पुहस्तिया वि धण पि धणपुहसिया वि गाडय पि गाडयपुहस्तिया वि जोयण पि जोयणपुहसिया वि  
जोयणसय पि जायणसयपुहसिया वि जोयणसहस्स पि तंण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते  
णत्थि इहं वाहिएसु दीयसमुदेसु हवति जेयात्रत्ते तहप्पगारा संत्त महीरगा । ते समासत्ते वुविहा ५०,  
त०-सम्मूच्छिमाय गस्रत्रक्कतिया य । तत्थण जेते समुच्छिमा ते सहे णपुसगा, तत्थण जेते गस्रत्रक्कतिया  
तेण तिथिहा ५०, त०-इत्थी पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाढयाण यज्झत्ता २ ण उरपरिसप्पाण दसजा  
इकुलकीलीजाणिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मस्काय । सेत्त उरपरिसप्पा । से कित नयपरिसप्पा २ छर्णेग

[illegible]

जाह्नुकलकोक्रिञ्जतिनञ्छुद्वेतरसाइच । दसदसयहोतिणत्रगा तहवारसचेत्रयोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपचिदिय  
 तिरिस्सजोगिया ॥ सेत्त पचिदियतिरिस्सजोगिया ॥ सेत्त तिरिस्सजोगिया ॥ सेत्त मणुस्सा २ दुविहा प०,  
 त० समुच्छिममणुस्सा य गम्भवक्कतियमणुस्सा य । स कित समुच्छिममणुस्सा, कहिण ज्ञन । समुच्छिम  
 मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सखेत्त पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अह्नु डजेसु दीवसमुद्देसु  
 पण्यरससु कम्मन्नीसु तीसाए अकम्मन्नीसु ठप्पन्नाए अतरदीनएसु गम्भवक्कतियमणुस्साण चेत्त उच्चारसु  
 था पासयणेसु वा खलसु वा सिघाणएसु वा वत्तसु वा पिप्पेसु वा पूएसु वा सुक्कोसु वा सुक्कोपोगलपरिसाहेसु  
 वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिदमणसु वा सहेसु चेत्त असुहएसु ठाणेसु एत्थण समु  
 च्छिममणुस्सा समुच्छति, अंगुलस्स अस्सखिज्जागमिप्पीए उगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्ताणी  
 सव्वीहि पज्झहीहि अपज्झाप्तगा अतोमुज्झात्ताया चेत्त काल करति । से कित गम्भवक्कतियमणुस्सा २

दस चेत्त पाहव्याः ॥ १ ॥ तयत्त सुवरपचन्द्रियतियकपाणिः । तयत्ते पयेन्द्रियतियकपाणिः ॥ तयत्ते तियकपाणिः ॥ अय कतिविधा मनु  
 य्याः । मनुय्या अप्यनकथियाः प्रज्ञा । तद्यथा-समूक्षिममनुय्या । गजव्युत्ताभिकमनुय्या । अय कतिविधाः समूक्षिममनुय्या । कस्सित्थु प्रद  
 क । समूक्षिममनुय्या समूक्षिनि । गौतमाभिमनुय्याप्र पच्यत्थ्यादिशतम योजनगतसद्वेषेण सार्वहीयेण शीपसमुद्रं पण्यदशासु कम्मन्निपु स  
 यथाकम्मन्निपु पट्पण्णादशान्तरहीयेण गजव्युत्ताभिकमनुय्याया चेत्त सप्ततरेण वा समीपेण या अस्स वा शिघ्राण केण ( नावाभलेण ) वा यान्त  
 पु पिप्पेण वा पूयेण वा सुक्केण वा सक्कपुट्तपरिसाहेण वा विगतकसवरं वा रतीयुहपसंयोगेण वा नगरनिदमनं वा सर्वेण वेवाशच्चिपु  
 स्थानेण एतं समूक्षिममनुय्या समूक्षिनि । अहुत्तस्य अचख्यमागमात्रया अयगाएनया अचन्निप्यादृष्टिरघात्री सर्वोद्दि पयाप्तमपपांशका अन्त

गा हसा कलहसा पायहसा रायहसा स्यान्ना सेनीवगा वलागा पारिष्ववाकुचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ  
रा सतयच्छा गहरा पोळरीया कागा कामियुगा वज्रुला तित्तिरा बहमा लावगा कवीया कविजला पारे  
यया चिह्ना चासा कुकुन्ना सुगा बरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लीमपस्की । से  
कित समुमापस्की २ एगागारा प०, तेण नल्लि डह बाहिरएसु दीयसमुद्धेसु जयति । सेत्त समुगपस्की । से  
कित विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्लि डह बाहिरएसु दीयसमुद्धेसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस  
मासठे दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गल्लवक्कतिया य । तल्लण जेते समुच्छिमा तेससु नपुसगा तल्लण  
जेते गल्लवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० हल्लो पुरिसा नपुसगा । एएसिण एयमाडयाण खहरयरपचिदि  
यतिरिस्सजोणियाण पज्झापाज्झाण वारसजाइकुलकोणिजोणियमहसयसहम्सा हवतीतिमस्काय, चत्तठ

ईवः रात्रइसाः चडाः सेनीवगाः बहुलाः पारिषवाः कुन्नाः सारसाः मसूराः दातवत्साः गहराः पोपत्तरीकाः सागाः कामिपु  
गा बल्लसला तित्तिराः वतकाः लावकाः कपाताः कपिजलाः पारिवकाः चटकाः बाडाः कुकुटाः सुकाः बरिण मदनसलाः कामिस्तः सयहा  
वरुणा एवमाद्य तयते सोमपादकाः । अय कतिविधाः समुद्रपादकाः । समुद्रपक्षि यथाकारा प्रचसतः । तेनू याध्येय होपसमुद्धेसु भवन्ति । त  
यते समुद्रपादकाः । अय कतिविधा विद्यतपक्षि यथाकारा प्रचसतः । तेन बाध्येय होपसमुद्धेसु भवन्ति । तयत विततपक्षि  
कः । ते समावतो द्विविधा प्रचसतः समुद्रिमाद्य गर्भव्युत्कान्तिकाद्य । तत्र ययते समुद्रिमास्ते सर्वे मपुसकाः । तत्र ययते ममन्दुरकान्तिकास्त  
त्रिविधा प्रचसतः तदाका क्षिपः पुरुषाः मपुसकाश्च । एतेबायबमादीनां सवरयन्नेन्निपतिर्बयोनिमानापयोसाचर्योसामा हावशात्रातिमुल को-  
टियीममसुखवत्सवसादि भवन्त्यादि चाख्यातम् ॥ अत्रात्राति कुलकोटयो भवन्ति नवार्थवत्पादकाणि तेन ॥ इवइय च भवन्ति नवकास्ताया हर

कित मिलस्कू ? २ अणेगविहा पखत्ता, तजहा सगा जवण चिलाय सयर वहर काय मुरुओइ अऊग णि  
 राग पक्कल णीय कुलस्क गोएहा सीहला पारस गोघअथ दमिल चिहल पुलिद हारीस दोवयोक्ताण गघ  
 हारग वहालिय अज्जल रोम पास वउसा मलयाय यधुयाय सूर्याल कुकुरगमेअ परहव मालय मगर  
 अजासिय कण दीरण रहासीस खसखासिय नेदूर मठ ओविलग लउस खउस कोक्काया अरयागा हूण  
 रोमग नमत्त विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तामिलस्कू से कित अयायिया ? २ अयायिया दुविहा पखत्ता,  
 तजहा इहिपत्तारिया य अणहिपत्तारिया य । से कित इहिपत्तारिया ? २ ठविहा पखत्ता, तजहा—  
 अरहता चक्कावही यलदेवा यासुदेवा चारणा यिज्जाहरा ॥ सेत्त इहिपत्तारिया ॥ से कित अणहिपत्तारि  
 या ? २ नवविहा पखत्ता, तजहा खेत्तारिया जानिअारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया जासारिया  
 णाणारिया दसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अठठवीसतिविहा पखत्ता, तजहा राय

बा। यवनाः विन्तायाः अघराः ववराः कायाः अरुवहा प्रहगा तीहगाः पक्काः नीपाः कुसणा गोवहा सीहलाः पारवाः गोघअथाः धमिलाः पि  
 ज्जा। पुत्तिन्वा। हारीसा द्वोववाकाः गन्यहारका वहासियाः आयासाः रोमाः पासाः वउसा मलवाया यणुवायाः लउसा खउसा केषयाः भ  
 रवाणा पूवाः रोमनाः जमखाः विन्तायाः वासीयाः एवमादय । तयत्ते सेक्का । यथ कतिविधाः आयेका आपका द्विविधा प्रचसा । अविमलः  
 अणुद्विमलः । यथ कतिविधा अणुद्विमलः अणुद्विमलः पट्टविधा प्रचसा । तद्यथा चाहेता चकावता यलदेवा यासुदेवाः चारणाः विद्यापराः  
 तयत्ते अणुद्विमलः । यथ कतिविधा अणुद्विमलः ? १ अणुद्विमलतो नवविधाः प्रचसाः तद्यथा चेन्नायोः कात्यायोः कुलायोः कर्मोपो शिल्पायो ज्ञा  
 यापो मानापो दसणार्योः चरित्तार्योः । यथ कतिविधाः चेन्नायो चत्वार्यो साहपण्यविधाः प्रचसाः तद्यथा-राजपण्यनगरवस्याचममएता



सेत कुलारिया ॥ से कित कम्मोरिया ? २ छुणेगविहा पणसा, तजहा-दीस्सिया सुत्तिया कप्पासिया  
 मुत्तावेया जीया नेरुवेयालिया कोलालिया नेरयाहणिया जेयाथणे तेहप्यगारा । सेत कम्मोरियो ॥ स कित  
 सिप्पारिया १ २ छुणेगविहा पणसा, तजहा-तुणागा ततुयाया पहागारा देयना वरुना कठपाउयारा  
 मुजपाउयारा जतारा यत्तारा पण्णारा पोल्यारो लप्पारा चित्तारा सखरा दतारा जतारा जिप्पगारा सेत्ता  
 रा कोफिगारा जेयावन्ते तेहप्यगारा ॥ सेत सिप्पारिया ॥ से कित नासारिया २ जेण छुप्पमागहाए ना  
 साए नासति, जत्ययिय न यत्तोलिधी पवत्तड बन्नीएण लिवीए छठारसयहे लेकविहाणं पणत्ते, तजहा  
 धन्नीजयणमिया दासापरिसा खरुही पुक्करसारिया नोगयडया पहराडया छुत्तरकरिया छुत्तरपुठिया  
 वेणडया निरुहडया छुत्तरलिधी गणियलिधी गंधसुलिधी श्यायासलिधी माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥ १८ ॥  
 सेत नासारिया ॥ से कित नाणोरिया १ २ पचविहा पणसा, तजहा-शुन्निणिबोहियनाणारिया सुयना

याः ये वाव्यन्त तयाप्रकाराः । अथ कतिविधाः शिल्पायाः । तुन्नागाः तन्नुवायाः पट्टकारा दक्का वसुधाः काष्ठपादुकाकरा मल्लपादुकाकराः ।  
 टवकारा यन्त्रकाराः प्रभाकराः पोत्याराः लघाराः चित्रकरो धारकरा दत्तकराः स्रक्काराः त्रिङ्गकारा ( कटकराः ) सेत्तारा कोटिकराः ।  
 य वाव्यन्त तयाप्रकारा । तपते शिल्पायाः । अथ कतिविधाः ज्ञापयाः । ज्ञापया ये अस्मन्मणचीनायो ज्ञापन्ते यत्रेय ब्राह्मणील्लिपिः प्रवसते  
 तस्यां ब्राह्मण्यो लिप्यामष्टादशविध लेख्यविधौ भवसते । तद्यथा ब्रह्मी यवभानी वार्सपुरुषाया खरुही पुष्परसोरिका नोगयती अत्तरिका  
 चत्तरपुठिका वेशकीया निष्ठिका कडुल्लिपि गत्तवल्लिपि चार्दमाल्लिपि माइक्करा दोमिल्लिपि पोलिन्देल्लिपिः तद्यत भाषायाः ।  
 अथ कतिविधाः ज्ञानापीः । ज्ञानापी धर्मविधीः प्रवर्धः । तद्यथा अभिनिर्वाचयामायाः अन्तर्धानायाः अथाधिर्धानायाः मन पयत्तजामाया

गिहमगहचपा श्रुगामहतामलित्तिर्यगा य । कंचणपुरकलिगा वाणारसि चेश कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस  
 लागय पुरचकुसोरियकुसहा य । कपिष पचाला श्रुहिठत्ताजगलाचेय ॥ २ ॥ दारपतीयसुरठा मिहिउत्रि  
 देहायचच्छकोसधी । नविपुरसन्निहा चव्हिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वडराऊनच्छुरणा श्रुच्छातहमसियात्र  
 इदसखा । सोसियमहयाच्वेदी वीहजयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मज्जरायसूरसेणा पावान्नगोयमासपुरिचहा ।  
 सावस्थीयकुलाणा कीलीवरिसचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयत्रियात्रियनगरी कंयइछठचश्रारियन्नणिय । एत्युप्प  
 सिजिजाज चक्कीणरामकस्हाण ॥ ६ ॥ सेत्तखेस्रारिया ॥ से कित जाइश्रापरिया ? २ ठसिहा पयसा,  
 तजहा-श्रवठायकलिडा त्रिवेहावेदगाइय । हरियाचंचुगचेत्र क्कएयाहस्रजाहस्र ॥ ७ ॥ सेत्त जाइश्रारि  
 याय ॥ से कित कुलारिया ? २ ठसिहा पयसा, तजहा-उग्गा जीगा राइया इस्कागा नात्ता कोरहा ।

भस्तिविद्वाय । भाष्यमपुरकलिगा वाराचसीवेवकाशीव ॥ १ ॥ साकताकोथमकाःपुरचकुसः शीरिचकुयायतः । कामित्यंपाभ्याताः यद्विद्वान्ना  
 कुसयिद ॥ २ ॥ दारावतीचसुराश्रुः मिथित्ताविदेशावसकीश्रुःम्यो ॥ मन्त्रीपुरंगारित्तस्य प्रद्विसपुरमेवमलयाय ॥ ३ ॥ यैराटमस्वपरया चच्छा  
 तयान्वित्तादद्यात् ॥ श्रोत्रिकावसीचवेदी वीतजयासिचुसीवीराः ॥ ४ ॥ मयुराचसूरसेना पायामन्त्रीवमासपुरवही ॥ श्रावकोचकुनात्ता कोटोव  
 नीचसाटाव ॥ ५ ॥ युताम्बिकाचनगरी कण्यस्यार्धमार्गेमालितम् ॥ यस्मादुतयुजिमाना बलाकोरामकजानाम् ॥ ६ ॥ ते मूल क्षेत्राय ॥ कान्ना कालि  
 विवा आस्यार्योः । आस्यार्यो यद्विवा प्रकृताः तथया चाम्बहाः कालम्बः वैदेशः वेदङ्गः हरिताः पुषुकाः बलता इत्यत्रातयः । तयते आत्मा  
 यो । अय कालिविवाः कुतार्यो । कुतार्योः यद्विवाः प्रकृताः । तथा जीना राजानः इत्याकावः आताः कीरवाः । मवल कुलावोः । अय कालिवि  
 वाः कर्मार्योः । कर्मार्यो यवेकविवाः प्रकृताः । तथाचा-दोविवाः कोसिकाः कार्यविवाः मुत्तिमेवलिवाः अचवेवविवाः कोकाविवा मरवावि

दृष्ट्वाणसंज्ञायाः सप्तपदमार्गे हि जससुयल्लक्ष्णा । सप्तार्हेणयविहीहि वित्यारुहसिनायद्यो ॥ ९ ॥ दसणनाणस्य  
 रिस्ते तयविणएसुसमिदुगुनीसु जोकिरियाज्जावरुहसो खलुकिरियावरुहसामा ॥ १० ॥ धुणान्निगगेहियकुदिठी  
 सुखेवरुहसिहोडनायद्यो । धुविंसारसुपययणं धुणान्निगगेहिदयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोधुल्लिकायकम्म सुयधम्मखलु  
 चरिधुधम्मच सदुहड्डाजिगान्निहियं सोधम्मरुहसिनायद्यो ॥ १२ ॥ परमत्यसयवोया सुदिठपरमत्यसेवणावा  
 वि । वावक्कुदसणयज्जाणाय सम्मत्तसदुहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्कस्विय णिधुतिगिक्काधुमूढदिठीय उववू  
 हयिरीकरण यक्कुपप्पावणेअुठ ॥ १४ ॥ संध सरागदसणारिया । से कित वीयरागदसणारिया ? २ दु  
 विहा पयुत्ता, तजहा उस्सत्तकसायवीयरामदसणारिया स्वीणकसायवीत्तस्मादसणारियाय । से कित  
 उयस्सत्तकसायवीत्तरागदसणारिया ? २ दुविहा पयुत्ता, तजहा पढमसमयउयस्सत्तकसायवीत्तरागदसणारि

कविशितेज्ञातव्यः ॥ ५ ॥ समस्त्यजिपमहविः शुभद्वानमजतिपस्य । अयतोवृषभेकावकाङ्कानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवाद्य ॥ ६ ॥ ध्यावा, सुवप्रावाः  
 सुयप्रमाद्येयस्वल्पतया ॥ सर्वेदाधनयविधिभिः वित्कारुचिरसविशेषः ॥ ८ ॥ दशतद्यानवरिजे तपोविभयस्यसंभितितुमिदुव ॥ यः कुर्याद्भाव  
 हाचः सरसुक्रियाः कविर्मासा ॥ १० ॥ अन्तर्निगुहीतकुदृष्टिः सर्वेवहविमवतिज्ञातव्यः ॥ अन्तर्निगुहीतद्योपु ॥ ११ ॥ योस्तिनायक  
 न शुभपर्वचरित्रपर्व ॥ अष्टपञ्चतिविर्भाभिहित सधर्मसंविज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमायसंलोयोवा सुसुपरमायसंलोयोवापि ॥ व्यापककुदर्थनतत्र नाः  
 असम्पन्नतजनाय ॥ १३ ॥ तपते सरागदर्शनायोः । अथ कतिविधा वीत्तरागदर्शनायाः ? द्विविधा-प्रपञ्चा-तद्यया-उपपञ्चा  
 कपायवीत्तरागदर्शनायोः त्रिविधः कतिविधः उपपञ्चात्तकपायवीत्तरागदर्शनायोः ? । उपपञ्चात्तकपायवीत्तरागदर्श  
 नायो द्विविधः प्रपञ्चः तद्यया-प्रपञ्चस्ययोपपञ्चात्तकपायवीत्तरागदर्शनायोः । अथवा उपपञ्चात्तकपायवीत्तरागदर्शनायोः ।



णारिया ठहिनाणारियो मणधल्लयनोणारिया केअलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से कित दसणारिया ? २  
 दुविहा पयसो, तजहा—सरागदसणारिया ये योयरागदसणा ० । से कित सरागदसणारिया य ? २ दस  
 विहा पयसो, तजहा—निस्सगुअदेसरुई स्थोणोरुइसुत्तयोयरुइचेव । स्थजिगमधित्योरुइ किरियासखेअध  
 म्मरुइ ॥ १॥ नूयत्येणाद्धिगया जीआजीआयेपुखोपीवेव । संहस्समहुंयासवस यरोयवेयइएसणिस्सगो २ ॥  
 जोजिमदिठेनावे चउविहेसद्वहाइसयमेव । एमेवणणहत्तिंय णिसगरुइत्तिणाइवो ॥ ३ ॥ एएचेव उच्चावे,  
 उवदिठेजोपरेणसद्वह । उउमत्येणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायवो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो स्थणाएरोयएपअ  
 येअत्तु । एमेवणखुहत्तिंय एसीआखारुइनामा ॥ ५ ॥ जोसुंअमहिजातो सुएणउगाइउसम्मत्त । स्थणेणया  
 हिरेणव सोसुंखरुइत्तिनायवो ॥ ६ ॥ एंगपएणेगाइ पवइजोपसरुइउसम्मत्त । उदइवत्तिंयिदू सोयीयरुइ  
 त्तिनायवो ॥ ७ ॥ सोहोइस्थनिगमरुइ सुयनाणजस्स । स्थ्यत्तविठ एकारसथंणाइ पइखगादिठिथानंय ॥ ८ ॥

वस्तुनामायां । वण्ठे आनायां । अथ कतिविधा दहनायां दहनायां द्विविधाः प्रथमा । तद्यथा सरागदहनायां बीतरागदहनायां । अथ  
 कतिविधाः सरागदहनायां ? सरागदहनायां दहविधाः प्रथमा । तद्यथा निरुणीपदेइकविधाआरंभियुक्ताविबोधवपय ॥ अत्रिमद्विधि वि  
 चारंवि विध्याचेपवर्तवया ॥ १ ॥ प्रुतावैनाचिभता जनिनीवाइपुत्तपायं च ॥ अथवैमत्यावर्तवरा एतमिदानींविधेयाः ॥ २ ॥ योजिमद्विहा  
 आरंभं चतुर्विधान् अइवातिक्कपमेव ॥ यववेअंनुवात्तादि निरुणद्विविधित्तामिं ॥ ३ ॥ एतामैवविधांअं उधदिहाअं चपरवोदिन्ये ॥ अथस्वे  
 नाजिनेन उपदिठमसिस्सावत्त ॥ ४ ॥ योइंनुमणान्णाअवा रोचवैसेअवचंत्तुं ॥ अंअवेअंनुमणीं चवेणोआंदिचिंनो ॥ ५ ॥ योइंनुमणींआवः  
 सुवेअववाइवेअवां ॥ ६ ॥ अइवअववाइवेअवां ॥ ६ ॥ अथयइंअनेणपिपएअं ॥ अथयइंअनेणपिपएअं ॥ ६ ॥ अथयइंअनेणपिपएअं ॥ ६ ॥

उद्वाणसहनावा सहपमानेहि अससुयलदा । सदाहेणयविहीहि वित्यारुइसिनायवो ॥ ९ ॥ दसणनाणक्  
रित्ते तथविणएसहसमिडुगुहीसु ओकिरियान्नाथरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ धुणन्निगोहियकुदिठी  
सखेवरुइत्तिहोइनायवो । धुविंसारुपवयणे धुणन्निगहिनुयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोधुत्तिकायकम्म सुयधम्मखलु  
वरिसुधम्मच सदुहइजिणानिहियं सोधम्मरुइत्तिनायवो ॥ १२ ॥ परमत्यसयओथा सुदिठपरमत्यसेवणावा  
वि । वावक्कुदसणवज्जणाय सम्मससदुहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्कखिय णिद्धितिगिच्छाशुमूढदिठीय उववू  
हियिरीकरणं यच्छुल्लपजावणेअुठ ॥ १४ ॥ संस्र सरागदसणारिया । से कित वीयरागदसणारिया ? २ दु  
विहा पयसा , तजहा उससतकसाययीयरामदसणारिया स्त्रीणकसायवीतरागदसणारियाय । से कित  
उयसंतकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पयसा , तजहा पढमसमयउवसतकसाययीतिरागदसणारि

कश्चिदिति द्वास्तव्यः ॥ ७ ॥ समस्त्यन्निगमसंवि- भुक्तानामप्रवृत्तिरस्य ॥ अयमेवमुदेकादशाङ्कानि प्रकीर्त्तयतिदृष्टिवादयः ॥ ८ ॥ द्रव्याद्या, सर्वज्ञावा-  
 सवप्रमाद्येयस्य त्वसत्याः ॥ सर्वेद्यायनयार्थविभि- विस्ताररुचिस्सविषय ॥ ९ ॥ द्वात्रिंशत्तत्त्वविषय ॥ १० ॥ यः कुप्योद्भाव  
 काचः सकलज्ञिया रुचिर्मासा ॥ १० ॥ अर्थाप्रियार्थीतदुद्गृह्यः सर्वेष्वर्थविभक्तितत्त्वः ॥ अर्थाप्रियार्थीतदुद्गृह्य ॥ ११ ॥ योऽस्ति कायश्च  
 न भुक्तचर्मैश्चरित्वयमेव ॥ अद्वयानि विनिर्मासित सधर्मरुचिर्जातव्यः ॥ १२ ॥ परमाद्यं संस्तोवा सुदुष्पदभाषसेवनेवापि ॥ व्यापककुदर्थो नवर्ज भाः  
 च सम्प्राप्तदशाभा ॥ १३ ॥ तत्पते सरागदर्शनार्थः ॥ अथ कांतविद्या वीतरागदर्शनार्थः ॥ वीतरागदर्शनार्थः ॥ द्विविधः प्रपञ्चा ॥ तद्व्या- उपपञ्चा  
 कपायवीतरागदर्शनार्थः ॥ कांतविद्या वीतरागदर्शनार्थः ॥ अथ कांतविषय उपपञ्चात्तत्त्वयायवीतरागदर्शनार्थः ॥ उपपञ्चात्तत्त्वयायवीतरागदर्शनार्थः  
 नाथो द्विविधः प्रपञ्चात् ॥ तत्पते-प्रपञ्चसम्भूयोऽस्ति कांतविद्या वीतरागदर्शनार्थः ॥ अथ कांतविषय उपपञ्चात्तत्त्वयायवीतरागदर्शनार्थः ॥ उपपञ्चात्तत्त्वयायवीतरागदर्शनार्थः

या अथपठमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया, अथवा चरिमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया  
य अथचरिमसमयउधसतकसायवीतरागदसगारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसगारिया ? २ दु  
विहा पक्षात्ता, तजहा लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया केवलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया य ।  
से किते लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया ? २ दुविहा पक्षात्ता, तजहा सययुचलउमत्यस्त्रीणकसाय  
वीतरागदसगारिया युचयोहियलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । से कित सययुचलउमत्यस्त्रीणक  
सायवीतरागदसगारिया सययुचलउमत्यस्त्रीण० दुविहा पक्षात्ता, तजहा पठमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणक  
सायवीतरागदसगारियाय अथपठमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया, अथवा चरिमसमय  
सययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया० अथचरिमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया

योपद्यानकसायवीतरागदसगारिया अथचरिमसमयपक्षात्ता कसायवीतरागदसगारिया । अथ कतिविधा स्त्रीण कसायवीतरागदसगारिया ? १ । स्त्रीणकसाय  
वीतरागदसगारिया द्विविधाः प्रथमा । तपसा-बदलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारियाः केवलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । अथ कतिविधा  
बदलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया ? १ । बदलस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया द्विविधाः प्रथमाः सययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारियाः  
युचयोहियलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । अथ कतिविधाः सययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारियाः प्रथमाः ? १ । सययुचलउमत्यस्त्रीण  
कसायवीतरागदसगारिया द्विविधाः प्रथमाः । तपसा-प्रथमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया अथचरिमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसाय  
वीतरागदसगारिया । अथवा चरिमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया अथचरिमसमयसययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । त  
यते सययुचलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । अथ कतिविधा युचयोहियलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया । युचयोहियलउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसगारिया

य । सेत्त सयधुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित्त बुद्धवोहिंयद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पक्खप्पा , तज्झा पढमसम्यद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया अपढमसम्यद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसम्यद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । सेत्त त्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया अचरिमसम्यद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । से किं बुद्धवोहिंयद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । संत्त ल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । से किं त केवलस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पक्खप्पा , तज्झा—सजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया अजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित्त सजोगिकेवलस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया दसणारिया १ २ दुविहा पक्खप्पा , तज्झा पढमसम्यद्धुल्लउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागदसणारिया अप

[illegible]

हमसमयसजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय । सेत सजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय । से कित अजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय ? २ दुविहा पख्खा, तजहा पठमसमयअजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय अचरिमसमयअजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय अचरिमसमयअजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय । सेत सजोगिकेवलस्वीकसायवीतरागदसणारियाय । सेत स्वीकसायवीतरागदसणारियाय । सेत बीतरागदसणारियाय । सेत दसणारियाय । से कित चरिहारिया ? २ दुविहा पख्खा, तजहा—सरागचरित्तारिया बीतरागचरित्तारिया । से कित सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पख्खा, तजहा—सुद्धमसपरायसरागचरित्तारियाय दाय

[illegible]

रसपरायसरागचरित्तारियाय । ते कित सुक्कमसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुधिहा पण्णा, तज्जहा-  
पठमसमयसुक्कमसपरायसरागचरित्तारिया अण्णपठमसमयसुक्कमसपरायसरागचरित्तारिया य, अण्णवा चरिम  
समयसुहुमसपरायसरागचरित्तारिया अण्णचरिमसमयसुक्कमसपरायसरागचरित्तारियाय । अण्णवा सुक्कमसपरा  
यसरागचरित्तारिया दुधिहा पण्णा, तज्जहा सकिंलस्समागाय त्रिसुक्कमागाय सेत्त सुक्कमसपरायसरा  
गचरित्तारिया । से कित वायरसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुधिहा पण्णा, तज्जहा पठमसमयवायर  
सपरायसरागचरित्तारिया अण्णपठमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अण्णवा वायरसपरायसरागचरित्तारि  
यसरागचरित्तारिया अण्णचरिमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया सेत्त सरागचरि  
या दुधिहा पण्णा, तज्जहा पाणिवाइं य अण्णपाणिवाइं न सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया सेत्त सरागचरि  
त्तारिया । स कित वीतरागचरित्तारिया ? २ दुधिहा पण्णा, तज्जहा उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया  
खी गकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उवसतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुधिहा प०, तज्जहा

[illegible]

पठमसमयउद्यसतकसायवीतरागचरित्तारिया अथपठमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य अहवा चरिम  
समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अथरिमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत उवसतक  
सायवीतरागचरित्तारिया । से कित स्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पसुत्ता, तजहा उउमत्य  
स्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उउमत्यस्त्रीणकसायवी  
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसुत्ता, तजहा सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकनायवीतरागचरित्तारिया युरुयो  
द्वियउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया युरुयो  
दुविहा ५०, तजहा पठमसमयसययुद्धस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथपठमसमयसययुद्धउउमत्यस्त्री  
णकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा अरिमसमयसययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथचरिम  
समयसययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत सययुद्धउउमत्यस्त्रीणकसायवीतरागचरित्तारिया

द्विविधा प्रज्ञता । तद्यथा-प्रथमसमयोपज्ञानकपायवीतरागचरित्तार्योः प्रथमसमयोपज्ञानकपायवीतरागचरित्तार्योः । प्रथम  
प्राप्तकपायवीतरागचरित्तार्योः अथरमसमयोपज्ञानकपायवीतरागचरित्तार्योः । तद्यत उपज्ञानकपायवीतरागचरित्तार्याः । अथ  
कपायवीतरागचरित्तार्योः । श्रीकपायवीतरागचरित्तार्यो द्विविधा प्रज्ञता । तद्यथा-अष्टस्त्रीकपायवीतरागचरित्तार्योः  
रागचरित्तार्योः । अथ कतिाकथाः अष्टस्त्रीकपायवीतरागचरित्तार्योः अष्टस्त्रीकपायवीतरागचरित्तार्योः द्विविधाः प्रज्ञता । तद्यथा  
लक्ष्मीकपायवीतरागचरित्तार्योः बुद्धबोधितकपायवीतरागचरित्तार्योः अथ कतिाकथाः अष्टस्त्रीकपायवीतरागचरित्तार्योः  
द्विविधाः प्रज्ञता । तद्यथा प्रथमसमयकपायवीतरागचरित्तार्योः प्रथमसमयकपायवीतरागचरित्तार्योः । अथवा अष्टस्त्रीकपायवीतरागचरित्तार्योः

रिया । से पित्त थछ थोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुयिहा पणुत्ता ; तजहा पढम समयथुधोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया थपढमसमयथुधोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया थचरिमसमयथु गचरित्तारिया य, शुहया चरिमसमयथुधोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया थकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ थयोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से कित केथलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुयिहा पणुत्ता ; तजहारिया सेत्त लउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया थजोगिकेथलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुयिहा पणुत्ता ; तजहा-

दुःखं हि पृथक् । स क्विन्तु सजागिकेयाल्लक्षणकसायथात्तरागचरि  
विरित्तारिया य । से क्विन्तु सजागिकेयाल्लक्षणकसायथात्तरागचरि



पठमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया शुपठमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतराग  
 चरित्तारिया य, शुहवा चरिमसमयसजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुचरिमसमयसजो  
 गिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य। सेत सजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। से कित  
 शुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पखत्ता, तजहा-पठनसमयशुजोगिकेवल्लि  
 खीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुपठमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य, शुहवा  
 चरिमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य शुचरिमसमयशुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीत  
 रागचरित्तारिया य सेत शुजोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। सेत केवल्लिखीगकसायधीतराग  
 चरित्तारिया। सेत स्त्रीगकसायधीतरागचरित्तारिया सेत वीतरागचरित्तारिया। शुहवा चरित्तारिया पचन्नि  
 हा पखत्ता, तजहा-सामाहयचरित्तारिया लेनुवठाथर्णायचरित्तारिया परिहारत्रिसुद्धिचरित्तारिया सुक्कम  
 सपरायचरित्तारिया शुहस्कायचरित्तारिया य। से कित सामाहयचरित्तारिया १ २ दुविहा पखत्ता, तजहा

तयत्ते सुवोनिबेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। यद्य कतिविधा ययोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया ययोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरि  
 त्तारिया द्विविधा प्रकृताः। तद्यथा--प्रथमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया यप्रथमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य  
 यथा चरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया यशुचरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। तयत्ते यथाचरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य  
 तरागचरित्तारिया। तयत्ते चरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। तयत्ते यथाचरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य  
 यथाचरित्तारिया। तयत्ते यथाचरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया। तयत्ते यथाचरिमसमयायोगिकेवल्लिखीगकसायधीतरागचरित्तारिया य

इन्द्रियसामाद्वयचरित्तारिया आद्यकक्षियसामाद्वयचरित्तारिया य । सेत्त सामाद्वयचरित्तारिया । से कित  
 छेनुग्रहाणीयचरित्तारिया १ २ दुग्निहा पणत्ता, तजहा-साद्वयारा छेनुग्रहाणीयचरित्तारिया निरद्वयारा  
 छेनुग्रहाणीयचरित्तारिया । सेत्त छेनुग्रहाणीयचरित्तारिया । से कित परिहारायिसुद्धियचरित्तारिया १ २  
 दुग्निहा पणत्ता, तजहा-निश्चिस्तमाणपरिहारविमुद्धियचरित्तारिया निश्चिष्ठकाद्वयपरिहारविमुद्धियचरित्तारिया  
 रियाय । सेत्त परिहारविमुद्धियचरित्तारिया । से कित सुक्कमसपरायचरित्तारिया १ २ दुग्निहा पणत्ता,  
 तजहा सकलित्समाणसुक्कमसपरायचरित्तारिया तिसुक्कमाणसुक्कमसपरायचरित्तारियाय सेत्त सुक्कमसपरा  
 यचरित्तारिया । से कित अहस्कायचरित्तारिया १ २ दुग्निहा पणत्ता, तजहा अहमत्य अहस्कायचरित्तारिया  
 केवलिसुहस्कायचरित्तारियाय सेत्त अहस्कायचरित्तारिया सेत्त अणगहिपत्तारिया सेत्त

अय कतिविधा सामायिकचरित्राणो सामायिकचरित्राणो द्विविधाः प्रथमा तद्यथा-इतरसामयिकचरित्राणां अथकापितसामयिकचरित्राणां । तप  
 ते सामयिकचरित्राणो । अय कतिविधाः अहस्कायचरित्राणो १ अहस्कायचरित्राणां प्रथमा तद्यथा-सातिचाराः अहस्कायचरित्राणां  
 यचरित्राणो निरतिचाराः अहस्कायचरित्राणो । तपत अहस्कायचरित्राणो १ अय कतिविधा परिहारविज्ञाद्विचरित्राणां १ परिहारवि  
 ज्ञाद्विचरित्राणो द्विविधाः प्रथमा तद्यथा निरतिचाराः अहस्कायचरित्राणां निरतिचाराः अहस्कायचरित्राणां द्विविधाः अहस्कायचरित्राणां । तपत परिहार  
 विज्ञाद्विचरित्राणां । अय कतिविधाः अहस्कायचरित्राणां अहस्कायचरित्राणां द्विविधाः प्रथमा तद्यथा उपनिषदयमामनुस्मृत्यारायचरित्राणां  
 विज्ञाद्विचरित्राणां । तपत अहस्कायचरित्राणां । अय कतिविधा यथास्यातचरित्राणो १ यथास्यातचरित्राणो द्विविधाः प्रथमा  
 तद्यथा-अहस्कायचरित्राणो अहस्कायचरित्राणो । तपते यथास्यातचरित्राणो । तपते अहस्कायचरित्राणो । तपते अहस्कायचरित्राणो ।

आयरिया सेत कम्मजूमिगा सेत गप्पयक्कतिया सेत मणस्सा से कित देवा २ चउत्तिहा प०, तजहा न्न  
 णयासी याणमतरा जोहसिया वेमाणिया से कितं जयणयासी दसयिहा पयसा, तजहा छुसु  
 रकुमारा नागकुमारा सुवयकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीयकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ  
 कुमारा यणियकुमारा तेसमासउत्तियिहा पयात्ता, तजहा—पज्जत्तगाय छपज्जत्तगाय सेत न्नवणयासी से  
 कित वाणमतरा २ छुठविहा प०, तजहा किन्नरा किपरिसा महीरगा गधहा जक्का रक्कासा नूया पिसा  
 या ते समासउत्तियिहा पयसा, तजहा पज्जत्तगाय छपज्जत्तगाय संत वाणमतरा। से कित जोहसिया २  
 पयविहा पयसा, तजहा चदासूरागहनरक्काताता तेसमासउत्तियिहा पयात्ता, तजहा पज्जत्तगाय छप  
 ज्जत्तगाय। से कित जोहसिया से कित वेमाणिया २ दुविहा पयात्ता, तजहा कप्पोवगगाक्काइयाय से कित

तयते बमजूमिगा। तयत एज्जुत्तामिका। तयते मज्जयाः। तयते मज्जयाः। देवायुत्तियिहा प्रपत्ताः तयथा—प्रपत्तवात्तिनः बान्धव  
 रः स्यात्तामिका वेमनिका। तय कतिविहा प्रपत्तवासिनाः। तय कतिविहा प्रपत्तवासिनाः। तयथा—प्रपत्तवासिनाः बान्धव  
 विद्युत्तुमारा बन्धुमारा हीपकुमाराः उदधिकुमाराः विज्जुकुमाराः वायुकुमाराः कान्तिकुमाराः। त कमासतो द्विदिवा प्रपत्ताः पयसा  
 दायपयसाय। तयत जवणवासिनाः। तय कतिविहा बान्धवमारा। तय कतिविहा प्रपत्ताः। तयथा—किपुत्तयाः बन्धोरमाः  
 मय्यदो वक्का रक्का रक्काः पयसाः। तय कतिविहा प्रपत्ताः। तयथा—किपुत्तयाः बन्धोरमाः। तय कतिवि  
 हा स्योतिविहाः स्योतिविहा पयसाः। तय कतिविहा प्रपत्ताः। तयथा—किपुत्तयाः बन्धोरमाः। तय कतिवि  
 हा। तयते स्योतिविहाः। तय कतिविहा स्योतिविहा। तय कतिविहा प्रपत्ताः। तयथा—किपुत्तयाः बन्धोरमाः। तय कतिविहा

कप्योद्यगा२ आरसविहा पयस्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिंठा वजलीया छंतया महासुक्का  
 सहस्सारा स्याणया पाणया स्याणया सञ्जुया तसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्जत्तगाय  
 सेत्त कप्योद्यगा से कित कप्याईया २ दुयिहा पयस्ता, तजहा गोयिज्जगाय स्युण्णरोववाड्याय त कित  
 गोयिज्जगा २ नयविहा पयस्ता, तजहा हिंमिहिंमिगोयिज्जगा हिंमिमज्जिमगोयिज्जगा हिंमिउयरिम  
 गोयिज्जगा मज्जिमहिंमिगोयिज्जगा मज्जिम२ गोयिज्जगा मज्जिमउयरिमगोयिज्जगा उवरिमहिंमिगोयिज्ज  
 गा उयरिममज्जिमगोयिज्जगा उयरिम२ गोयिज्जगा तेसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्ज  
 त्तगाय सेत्त गोयिज्जगा । से कित स्युण्णरोववाड्या२ पचयिहा पयस्ता, तजहा विजया वंजयता जयता  
 स्यपराजिया सञ्चत्तिसिद्धा तेसमासत्तं दुयिहा पयस्ता, तजहा पज्जत्तगाय स्यपज्जत्तगाय सेत्त स्युण्णत्तरोववा

स्तोपणाः ? कस्योपणा द्वादशविधा प्रकृताः । तद्यथा सौचमो ईशानाः समस्तकुमारा माहेन्द्रा ब्रह्मलोकाः सातकाः मन्नामुकाः सङ्क्राराः का  
 नताः प्राकृताः स्यान्ताः । ते समासतो द्विविधाः प्रकृताः तद्यथा पर्योताद्यापर्योताद्य । तद्यत कस्योपणाः । अथ कतिविधाः कस्या  
 नीता ? कस्यानीताः द्विविधाः प्रकृताः तद्यथा--यैवयकाः अनुत्तरवैमानिकाः य । अथ कतिविधाः यैवयकाः यैवयका नवविधाः प्रकृताः तद्यथा-  
 यथाचायैवयकाः, यथोनध्यमयैवयकाः, अथपरितनयैवयकाः, मध्यमाया यैवयका, मध्यममध्यमयैवयकाः मध्यमोपरितनयैवयका, उप  
 रितनाचोयैवयका उपरितनमध्यमयैवयका उपरितनोपरितनयैवयकाः ते समासता द्विविधाः प्रकृताः पर्योताद्यापर्योताद्य । तद्यत यैवयकाः ।  
 पच कतिविधा अनुत्तरवैमानिकाः ? अनुत्तरवैमानिकाः पञ्चविधाः प्रकृताः । तद्यथा-विजयाः यैवयकाः जयताः अपराजिताः सवाचांसिद्धाः ।  
 ते समासतो द्विविधाः प्रकृताः तद्यथा--पर्योताद्यापर्योताद्य । तद्यते कर्मोपा । तद्यते वैमानिकाः । तद्यते दवाः ।



लोयस्स अस्सेज्झाङ्गागे । कहिण भत्ते । वादरपुढविकाइयाण अण्ण पण्णत्ता ? गोयमा !  
 जत्थेय वादरपुढविकाइयाण पण्णत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, तत्थेय वादरपुढविकाइयाण अण्णत्तगाण ठाणा  
 पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अस्सेज्झाङ्गागे । कहिण भत्ते । सुज्झम  
 पुढविकाइयाण पण्णत्तगाण अण्णत्तगाणयठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुज्झमपुढविकाइया जेपण्णत्तगा जे  
 अण्णत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अण्णत्तगा सव्वलोयपरियावत्तगा पण्णत्ता समणाउत्तो । कहिण  
 भत्ते । वादरपुढविकाइयाण पण्णत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । सठाणेण सप्तसु घणोदधीसु सप्तसु घ  
 णोदधिवल्लसु अहोलीए पायालेसु नवणेसु नवणपत्थेसु उहुलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावल्लियासु  
 विमाणपत्थेसु तिरियलीए अगळेसु तलाएसु सरंसु नदीसु वहेसु वायीसु पुत्तरिणीसु दीहिंयासु गुजालि  
 यासु सरंसु सरपत्तियासु सरसरपत्तियासु त्रिलपत्तियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिन्नलेसु पत्तलेसु वप्पिणंसु दी  
 वेसु समुद्दसु सव्वेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलभूमिआसु एत्थण वादरपुढविकाइयाण पण्णत्तगाण

संख्यलगे । कास्सन् नदत्त सूत्तपुत्थिदीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रवृत्तानि गीतस सूत्तपुत्थिदीकायिकायै पर्याप्तगा य  
 अपर्याप्तगास्तो सर्वे पक्षविधाः अविशेषा अमाद्याता सर्वसौखपर्याप्तगाः प्रवृत्ताः अमष्टायुषन् कास्सन् नदत्त वादरापुत्थायिकाना पर्याप्तका  
 ना स्थानानि प्रवृत्तानि । गीतस सूत्तानेव सप्तसु घणोदधीसु सप्तसु घणोदधिवल्लयेषु अविशेषे पातासाणु भवनेषु भवनप्रक्षरेषु ऊर्ध्वलोके कश्यपे  
 य विमानेषु विमानावल्लिकासु विमानप्रक्षरेषु तिर्यक्लोके अवटणु तद्वागणु सररसु नदीषु इदेषु वापीय पुत्तरणीषु दीपिकासु गुण्ठाजिकासु स  
 ररसु सरसरपत्थेषु विमानप्रक्षरेषु विमानेषु पत्तलेषु वप्पिणेषु दीपेषु वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयणु जलस्थानेषु एतेषु वादरापुत्थायिकाना

इया सेत कप्याईया सेत वेमाणिया सेत देशा सेत पचिदिया सेत ससारसमावयुजीअपन्तवणा सेत जीव  
 पक्षवणा सेत पन्तवणा ॥ पन्तवणाए पढम पय सम्मस ॥ १ ॥ कहिण जते ! यादरपुढियि  
 काडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पक्खस ॥ गोयमा ! सठाणण अण्ठसु पुढवीसु तजहा—रयणप्पज्जाए सक्करप्प  
 ज्जाए धालुयप्पज्जाए पक्कप्पज्जाए धूमप्पज्जाए तमप्पज्जाए अहेसत्तमाए इंसिप्पज्जाए अहोलीए  
 पायालेसु नवणेसु नवणपत्थेसु निरएसु निरयात्रलियासु निरयपत्थेसु उहुलीए कप्पेसु विमाणेसु त्रि  
 माणायलियासु विमाणपत्थेसु तिरियलीए टकेसु कूरेसु सेलेसु सिहरीसु पज्जारसु यिजएसु वस्करेसु  
 वासेसु वासहरपहएसु या वेलासु वेडयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्धेसु एत्थण यादरपढवीकाडयाण  
 पज्जत्तगाण ठाणा पक्खस ॥ उववाएण लोयस्स अ्सखेज्जनागे समुग्घाएण लोयस्स अ्सखेज्ज ० सठाणेण

सपते पब्बन्धिया । सपते उंवारवनापक्खवीवमज्जापमा । सपते जीवमज्जापमा । सपते मज्जापमा । इति सीमदुपाप्याय रामचन्द्र मणि विष्णु  
 भागवतम् विरचिते जीवमज्जापमा कथमवमपठानुवाकः ॥ ५ ॥

कल्लिन् मदन । वादरपचिबीकायिकानां ययीसानां क्वाणानि मज्जासन्नि । नीतल । कस्सावेनाहासु पांचवीसु सपथा--रत्नमभायां झक्करमवा  
 यां वासवमभायां पङ्कमभायां मूममभायां तममभायां तमकानां मज्जापानमसुतमायामीधरमज्जापानमपोतोक्क पातालसु प्रबलसु प्रबलमज्जारसु  
 नरदेव नरकावलिक्कासु निरयमज्जारसु उप्पलोक कवपसु विमानेसु विमानावलिक्कासु विमानमज्जारसु तिबेज्जलोके टङ्गेन कुट्टसु अलेसु मज्जारसु  
 विज्जदेव उवारसु नावसु वासहरपढसु या क्कासु वेदिकासु दारसु तोरणेसु दीपेसु कम्पेसु यमसु वादरपचिबीकायिकानां ययीसानां क्वाणा  
 नि ययीहाति । सर्वेव वादरपचिबीकायिकानावपयीसानां क्वाणानि ययीहाति । कवपावेनाहि कवंतोवे वज्जुएवेन कवंतोवे उक्कावेन कवंतोवे

लीयस्स अस्सखेज्झन्नागे । कहिण नत्ते । आदरपढविक्काइयाण अणपज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा !  
 जत्थेअ आदरपढविक्काइयाण पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता, तत्थेअ आदरपढविक्काइयाण अणपज्जात्तगाण ठाणा  
 पयत्ता, उववाएण सव्वलोए समग्वाएण सव्वलोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्झन्नागे । कहिण नत्ते । सुज्झम  
 पुढविक्काइयाण पज्जात्तगाण अणपज्जात्तगाणयठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सुज्झमपुढविक्काइया जेपज्जात्तगा जे  
 अणपज्जात्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अन्नानत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पयत्ता समणाउत्तो । कहिण  
 नत्ते । आदरअणउकाइयाण पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घर्णादधीसु सत्तसु घ  
 णोदधिवल्लसु अहोलीए पायालेसु नयणेसु नन्नपत्यन्तेसु उहलोयकप्पेसु विमाणेसु विमानावल्लियासु  
 विमाणपत्यन्तेसु तिरियलीए अगन्तेसु तलाएसु सरंसु नदीसु ठहंसु वाथीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालि  
 यासु सरंसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिसलेसु पल्लेसु वप्पिणंसु दी  
 वेसु समुदसु सव्वेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिअसु एत्थण आदरअणउकाइयाण पज्जात्तगाण

सव्वपन्नगे । आस्सम् मवत्त सूत्तपुयिबोकायिकाना पणोत्तानामपयोत्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि । गीतम् सूत्तपुयिबोकायिकाय पयोत्तगा य  
 अणयोत्तगास्तो सर्वे एकाविंशः अविंशोपा अनाद्याताः सर्वलोकपयोत्तकाः प्रवृत्ताः अस्मिन् अदन्त आदरायकायिकाना पयोत्तका  
 नां स्थानानि प्रवृत्तानि । गीतम् सत्त्वानेन सत्तसु पणोदधिसु सत्तसु घनोदधिवल्लेसु आचलोके पातासपु प्रवनेसु भवनप्रक्षरेषु अर्च्यलोकके कल्पे  
 पु विमानेषु विमानावल्लिकासु विमानप्रक्षरेषु तिर्यक्लोकके अचटपु तट्टागपु सरस्सु महीपु प्रदेसु वापीपु पुष्करिणीषु दीपिकासु गुज्जालिकासु व  
 ररसु सरसरपत्तिषु विसर्पत्तिषु निम्बरपु विषवरेषु पणवत्तपु वमेसु मीपेषु समुद्रपु सर्वेषु चैव अताथयपु अतस्थानेषु एतेषु आदरायकायिकाना



ठाणा पयसा, उवचाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने । कहिण जते ! यादरथाउकाइयाणं अपज्झसगाण ठा  
 णा पयसा ? गोयमा ! जत्थेव यादरथाउकाइयाण पज्झसगाण ठाणा तत्थेव यादरथाउकाइयाण अप  
 ज्झसगाण ठाणा पयसा, उवचाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणण लीयस्स अस्सखेज्झनाने ।  
 कहिण सुज्झमथाउकाइयाण पज्झसापज्झसाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! सुज्झमथाउकाइया जेय पज्झसगा  
 जे अपज्झसगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणसा सव्वलोए परियावन्नागा प०, समणाउसो ! कहिण  
 जते ! यादरतेउकाइयाण पज्झसगाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुस्सखेने अहुइज्जेसु  
 दीवसमेसु निव्वाचाए पत्तरससु कममनमीसु याघाय पफुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण यादरतेउकाइयाण  
 पज्झसगाण ठाणा पयसा, उवचाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्झनाने,  
 सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्झनाने । कहिण जते ! यादरतेउकाइयाण अपज्झसगाण ठाणा पयसा ? गो  
 यमा ! जत्थेव यादरतेउकाइयाण पज्झसगाण ठाणा तत्थेव यादरतेउकाइयाण अपज्झसगाण ठाणा प०,

[illegible]

उवयाएण लीयस्स दोसु उहुकवाळेसु तिरियलीयतहेसमुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जइ  
 नागे। कहिण भत्ते ! सुज्जमततेउकाइयाण पज्जसगाण अण्णत्तगाणय ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सुज्जमततेउ  
 काइयाण जे पज्जसगा अण्णत्तगा ते सव्वे एगविहा अयिससा अनाणत्ता सव्वलीयपरियावन्नगा पयात्ता  
 समणाउसो ! कहिण भत्ते ! यादरयाउकाइयाण पज्जसगाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु  
 घगवाएसु सत्तसु घणयाययलएसु सत्तसु तणयायवलएसु अहोलीए पायालेसु ज्ञयणेसु  
 भवनपत्यहेसु भवणत्तिहेसु भवणनिरुहेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्यहेसु निरयत्तिहेसु निरयनि  
 रूहेसु उहुलीयक्येसु विमाणसु विमाणायलियासु विमाणपत्यहेसु विमाणत्तिहेसु विमाणनिरुहेसु तिरि  
 यलीएसु पाइणदाहिणउदीणसव्वेसु चेय लोगागासत्तिहेसु लीगनिरुहेसुय एत्यण यादरवाउकाइयाण प  
 ज्ञत्तगाण ठाणा पयात्ता , उवयाएण लीयस्स अस्सखेज्जेसु नागेसु समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्जनागेसु

समुद्धानेन लोकस्यासम्पन्नाय स्वस्थानेन लोकस्यासम्पन्नाय । कस्मिन् जदत्त । यादरतेजाकायिकानामपयोसकाना स्थानानि प्रपन्तानि । गो  
 तम । यदेव यादरतज्जायिकानां पर्याप्तकाना स्थानानि प्रपन्तानि तदेव यादरतेज्जायिकानामपयोसकानां स्थानानि प्रपन्तानि । उपपातेन  
 सबलोके समहात्मन सबलोके स्वस्थानेन लोकस्यासम्पन्नाय । कस्मिन् जदत्त । मूर्खाप्यायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्तानि ?  
 गो० । मूर्खाप्यायिका य व पर्याप्ता ये वापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविद्याया अनाद्याताः सर्वलोके पर्यापया प्रपन्ताः अमयायुषन् कस्मिन्  
 भवन्त । यादरतेज्जायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रपन्तानि, गोतम । स्वस्थानेन अन्तर्मध्यक्षेत्रे अद्भुतोयपु द्वीपसमद्रेषु निव्याप्यते प  
 च्चदशसु कमनूमिषु व्यापात महीत्य पञ्चसु महाविदेषु यादरतेज्जायिकानां पर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्तानि । उपपातेन लोकस्यासम्पन्ना

સઠાણેણ હોયસ્સ ઇસસેજ્જેસુ નાગેસુ । કહિણ નતે । ઇપજ્જાણવાદરયાકાહયાણ ઠાણા પમસા ? ગોય  
 મા ! જલેવ યાદરવાકાહયાણ પજ્જાણાણ તલેવ યાદરવાકાહયાણ ઇપજ્જાણાણ ઠાણા પમસા ।  
 હવથાણ સહ્લોણ સમુઘાણ સહ્લોણ । સઠાણેણ હોયસ્સ ઇસસેજ્જેસુ નાગેસુ । કહિણ નતે । સુજ્ઞમ  
 વાકાહયાણ પજ્જાણાણ ઠાણા પમસા ? ગોયમા ! સુજ્ઞમવાકાહયાણ જે પજ્જાણાણ તે  
 સહે એગિવિહા ઇવિસેસા ઇનાણસા સહ્લોયપરિયાવન્તગા પમસા સમગાઉસો ! કહિણ નતે યાદરવણ  
 રસહકાહયાણ પજ્જાણાણ ઠાણા પમ ? ગોયમા ! સઠાણેણ સસસ ઘગોદહોસુ સસસ ઘગોદહિવલણસુ ઇહો  
 હોણ પ્રયાલેસુ નવણેસુ નવણપત્યમેસુ હહુહોણ કપ્પેસુ વિમાણેસુ વિમાણાવહિયાસુ વિમાણપત્યમેસુ તિરિય  
 હોણ ઇગગ્ગસુ તહાગેસુ નદીસુ વાવીસુ પુસ્કરિણીસુ વીહિયાસુ ગુજાલિયાસુ સરેસુ સરસરપતિયાસુ સરપ  
 તિયાસુ થિલપતિયાસુ હજ્જરેસુ નિજ્જરેસુ પહ્લેસુ પહ્લેસુ વપ્પિણંસુ દીઘેસુ સમહેસુ સહેસુચેત્ર જહાસ  
 ઇસુ જહઠાણેસુ ઇત્થણ યાદરવણસ્સહકાહયાણ પજ્જાણાણ ઠાણા પમસા । ઉયથાણ સહ્લોણ, સમુઘા

ને સમુદ્ધતેન લોકસાસકેયમાને સત્તાનેન લોકસાસકેયમાને । કલિન્ પ્રદન । યાદરવેત્ર કાવિકાનામયપદ્ધતાનો સ્થાનાનિ પ્રદાપ્તાનિ ?  
 યોતન । યોતન યાદરવેત્ર કાવિકાના પર્વોપ્તાનો સ્થાનાનિ તથેવ યાદરવેત્ર કાવિકાનામયર્વોપ્તાનો સ્થાનાનિ પ્રદાપ્તાનિ । ઉપપાતેન લોકસ  
 હયોદ્ધર્વપાઠયોઃ તિર્પણ્લોકતદેકસમુદ્ધતેન સર્વેભો લોકસાસકેયમાને । કલિન્ પ્રદન । પુસ્તકઃ કાવિકાના પર્વોપ્તાનામ  
 પર્વોપ્તાનામ ચ સ્થાનાનિ પ્રદાપ્તાનિ । યોતન પુસ્તકઃ કાવિકાના ને પર્વોપ્તાનામ કમપર્વોપ્તાનામ સર્વે ચક્રિકાઃ કલિકાનામ  
 પર્વોપ્તાનામ પ્રદાપ્તાનિ પ્રદાપ્તાનિ । કલિન્ પ્રદન । યાદરવેત્ર કાવિકાના પર્વોપ્તાનામ કલિકાનામ પ્રદાપ્તાનિ પ્રદાપ્તાનિ

एण सव्वोए सठाणेण लीगस्स अस्सखेज्जइजागे । कहिण नत्ते । आदरवणस्सइकाइयाण अणपज्जसगाण  
ठाणा पयससा ? गोयमा । जल्येय आदरवणस्सइकाइयाण पज्जसगाण ठाणा तल्येअ आदरवणस्सइकाइ  
याण अणपज्जसगाण ठाणा पयससा । उअअएण सव्वोए समुग्घाएण सव्वोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जा

[illegible]

इज्ञागे । कहिण जते । सुज्झमयणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अण्णत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुज्झमयण  
 स्सइकाइया जे पज्जसगा जे अण्णत्तगा ते सव्व एगविहा अविमसा अनाणसा सव्वलोयपरियायगा  
 पयसा, समाणाउसे । कहिण जत ! येइदियाण पज्जत्ता पज्जसगाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! उहुओए  
 तदेकदेसजाग, अहोओए तदेकदेसजागे, तिरियओए अगण्ठसु तलाएसु नदीसु वाथीसु पुस्करणीसु दीहियासु  
 गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिखलसु पव्वलेसु वप्पिणेसु दीयेसु स  
 मुद्दसु सव्वेसुवेय जलासएसु जलठाणेसु एत्थण येइदियाण पज्जत्तापज्जसगाण ठाणा पयसा । उववाएण  
 लागस्स अण्णत्तगाणय ठाणा पयसा ? गोयमा ! उहुओए तदेकदेसजाग अण्णत्तगाणय ठाणा पयसा । कहिण  
 जत ! तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पयसा ? गोयमा । उहुओए तदेकदेसजाग अण्णत्तगाणय ठाणा पयसा ।

गौतम । अ दरवमवपत्तिविकाना पर्याप्तकाणां स्वानानि तत्रैव वादरवमवपत्तिविकानामपर्यायां स्वानानि प्रपञ्चयामि । उपपातेन सर्वलोके व  
 नुद्धानेन सर्वलोके सुखानेन लोककामस्येवभावे । कस्मिन्नु भदन् । पर्याप्तकाणामपर्याप्तकाणां च स्वानानि प्रपञ्चयामि । गौतम । नूनमवमवपत्ति  
 विका ये पर्याप्ता ये अपर्याप्तमाको सर्वे एकविधा वदित्वा । यत्ताञ्चात्ता सर्वलोकपर्याप्तकाणां प्रपञ्चमाः समवा यस्मिन् । कस्मिन्नु वदन् । होन्नि  
 याको पर्याप्तपर्याप्तकाणां स्वानानि प्रपञ्चयामि । गौतम । अप्वलोक तदेकदेसजागे अपोलोके तदेकदेसजागय तियकलोके कण्टपु तमानेसु नदीसु  
 वापीसु पुस्करणीसु दीपिकासु मुक्कालिकासु वरस्स वर पङ्काजकाव वर वरपङ्कलिकासु सतुधरेसु निज्जरेसु चिखलसु पस्सलसु पप्पिखसु दीपसु व  
 मुद्दसु सव्वेसु येव यत्ताञ्चयेसु यत्तलानसु यत्तेवा होन्निक्कावां पर्याप्तपर्याप्तकाणां स्वानानि प्रपञ्चयामि । उपपातेन लोककामस्येवभावे अनुद्धानेन  
 लोककामस्येवभावे सुखानेन लोककामस्येवभावे । कस्मिन्नु वदन् । होन्निक्कावां पर्याप्तपर्याप्तकाणां स्वानानि प्रपञ्चयामि । गौतम । अप्वलोक

देसनागे, तिरियलोए अगंरुसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु  
 सरसरपतियासु बिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वण्णिणेसु दीत्रेसु समुद्देसु सवेसुचेय जला  
 सएसु जलठाणसु एत्यण तेइदियाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा पखाप्ता, उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे  
 समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे । कहिण भत्ते । धउरिदियाण  
 पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा पखाप्ता १ गोयमा । उहुलोए तदेकदेसनागे, अहोलोए तदेकदेसनागे, तिरियलोए  
 अगंरुसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु निज्ज  
 रेसु उज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वण्णिणसु दीत्रसु समुद्देसु सवेसुचेय जलासएसु एत्यण धउरि  
 दियाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा पखाप्ता । उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे समुग्घाएण लोयस्स अस्स  
 खेज्जाइनागे, सठाणण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे । कहिण भत्त । पचिदियाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा प०

तदेकदेसनागे अचोसोके तदेकदेसनागे तिरियलोए अगंरुसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सर  
 पत्तिकासु बिलपत्तिकासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु वण्णिणेसु दीत्रेसु समुद्देसु सवेसुचेय जलासएसु एत्यण धउरि  
 पयोप्तापयोप्ताना स्थानाणि प्रष्टवन्ति । उपयातम लोकास्यासुरयभाग समुत्तातेन लोकस्यासुरयभागो सुस्थानेन लोकस्यासुरयभाग । कस्मि  
 न्नु प्रष्टवन्ति । वतुरिन्द्रियाणा पयोपतापयोपताना स्थानाणि प्रष्टवन्ति । गीतम । अप्यलाक तदेकदेसनागे अचोसोके तदेकदेसनागे तिरियलोके  
 अगंरुसु तलाएसु यात्रीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सर पत्तिकासु बिलपत्तिकासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलेसु पल्ललेसु व  
 ण्णिणेसु दीत्रेसु समुद्देसु सवेसुचेय जलासएसु एत्यण धउरिदियाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा पखाप्ता । उवयाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे समुग्घाएण लोयस्स अस्स  
 खेज्जाइनागे, सठाणण लोयस्स अस्सखेज्जाइनागे । कहिण भत्त । पचिदियाण पज्जाप्तापज्जाणा ठाणा प०

इज्ञागे । कहिण जते । सुज्झमयणस्सइहकाट्ठयाण पज्जत्तगाण छुपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुज्झमयण  
स्सइहकाट्ठया जे पज्जत्तगा जे छुपज्जत्तगा ते सहे एगविहा छुविससा अनाणप्पा सव्वलोयपरियात्रयुगा  
पयप्पा, समाणाउसो । कहिण जत । खेहदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पयप्पा ? गोयमा । उहुलोए  
तदेकदेसज्जाग, अहोलोए तदेकदेसज्जागे, तिरियलोए अगंरुसु तलाएसु नदीसु धात्रीसु पुस्करणीसु दीहिंयासु  
गुजालियासु सरेंसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरसु निज्जरेंसु चिक्खलसु पल्लेसु धप्पिणेसु टीवेसु स  
मुद्दसु सहेसुखेय जलासएसु जलठाणेसु एत्यण खेहदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पयप्पा । उववाएणे  
लागस्स अस्सखेज्जइज्ञागे, समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जइज्ञागे सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जइज्ञागे । कहिण  
जत । तंइदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पयप्पा ? गोयमा । उहुलोए तदेकदेसज्जाए अहोलोए तदेक

नीतम । इ इरवमवर्पितकियाणानां पर्याप्तकानां स्वाभावानि तत्रैव बाह्यवमवर्पितकियाणानामवर्पणानां स्वाभावान् प्रकृतानि । उपपत्तेन स्वलोके सु  
मुद्रातन स्वलोके सत्त्वानेन लोचक्यासंखयज्जाने । कांसिमु भवन् । पर्याप्तकानामवर्पणानां च स्वाभावानि प्रकृतानि । नीतम । मूलमवमवर्पित  
कियाणा ये पर्याप्ताना य अपर्याप्तवास्ते सर्वे एकविधा कविस्मयः कनाकावाः स्वलोकापर्याप्तकानाः प्रकृताः कथंवा युजन् । कस्मिन् भवन् हीन्नि  
वाकां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्वाभावानि प्रकृतानि । नीतम । अप्यलोका तत्त्ववेदाने यचोलोके तदेकदशार्कय तियकलोके अट्टपु मठानेषु मठेषु  
वापीषु पुच्छरकीषु दीपिकाषु मुक्कासिकाषु करल्ल कर पङ्कासकाव शरासरपङ्कलिकाषु सतत्तरेषु निक्करेषु चिक्खलसु परवत्तसु पय्यिक्खसु हीपसु च  
मुद्दसु सर्वेषु चैव जल्लासयेषु जलत्त्वानेषु एतेषां हीन्निवाका पर्याप्तापर्याप्तकानां स्वाभावानि प्रकृतानि । उपपत्तेन लोचक्यावस्वेवज्जाने समुद्रातेन  
लोचक्यावस्वेवज्जाने चत्त्वानेन लोचक्यावस्वेवज्जाने । कस्मिन् प्रवन् हीन्निवाका पर्याप्तापर्याप्तकानां स्वाभावानि प्रकृतानि । नीतम । मूलमवमवर्पित

तमसा धद्यगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मेदवसापूयरुहरिमसचिस्कसलित्ताणल्लेयणतला अ्सुईवीसा परम  
दुस्सिगधा काऊयगणिघन्तान्ना कस्ककफासा दुरहिवासा अ्सुन्ना नरगा अ्सुन्ना नरएसु वेयणात्त एत्थण  
नरइयाण पज्झापाज्जत्ताण ठाणा पयसप्पा, उववाएण लोयस्स अ्सखेज्जडन्नागे, समुग्घाएण लीलस्स अ्स  
सखेज्जडन्नागे, सठाणेण लोयस्स अ्सखेज्जडन्नागे, एत्थण यद्धवे नेरइया परिवसति काला कालाज्जासा ग  
नीरलीमहरिसा नीमा उप्पासणगा परमकरइ। यथेण पयसप्पा, तेण तल्ल णिच्च नीया णिच्च तल्ल णिच्च  
तसिया णिच्च उप्पिन्ना णिच्च परममसुत्तसयत्थनरगज्जय पच्चणुस्सयमाणा विहरति। कहिण जत्ते! रयणप्पन्ना  
पुढवीनेरइयाण पज्झा पज्झाण ठाणा प० ? कहिण जत्त! रयणप्पन्नापुढविनेरइया परिवसति ? गी० !  
इमीस रयणप्पन्नाए पुढवीए अ्सोउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उविरे एग जोयणसहस्समोगाहिवा

दुरप्रसंखामसत्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतपइअसूयनसत्तस्योतिपप्रजा मेदवसापूयसपरिमासकदेमसिपूतानुसपमतस। अस्सुन्ना विक्खा  
(आममन्विक्काः) परमदुरज्जिगन्था अपोताग्निवर्काजा (लोइयस्यमान यादुधोमोः कपोवकसहदावा ययामेव जूठाः) ककयस्पर्याः दुर  
प्पासा अस्सुन्ना नरका अस्सुन्नाय नरक वदना। एतेपु नेरयिक्का पयोपूतापर्वापूतामा स्थानानि प्रचप्पतानि। उवपातेन सोकस्य अ्सहयेय  
भागे धमुद्धुपातम सोकस्यासहयेयप्रण सत्त्वामेव सोकस्यासहयेयप्रण, एतेपु अइवा नेरयिक्का परिवसतिक्कासाः कासाभासाः गम्भीरत्तामइ  
पी उत्ताशतनाः परमरुक्काः वल्लेन प्रचप्पनाः। तम तत्र नित्यवीता नित्यत्रस्ता नित्यमुच्चिग्गा नित्यपरमाज्जुभसवदुभरकज्जयं पयनु  
ज्जयमाना विहरति। कस्सिन्नु प्रवत्त रवप्रप्पापूचिधीनेरयिक्का पयोपूतापर्वापूतामा स्थानानि प्रचप्पतानि। कस्सिन्नु प्रवत्त रवप्रप्पापूचिधी  
नेरयिक्काः परिवसन्ति ?। नीतम। एतस्या रवप्रप्पायां पूचिब्बामशीत्युत्तरस्यतयोजनयत्तसइअवाहुत्वाभोपर्येक योजनसइअमवनाप्पापूचिक्क योज



? गीयमा । उहलीए तदेकदेसनागे छहीलीए तदेकदेसनागे तिरियलीए अगळेसु तलाएसु नदीसु टहेसु  
 घाघीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु  
 णिज्जरसु विमलेसु पल्लेसु योप्येणसु दीयसु समुहेसु ससेसुचेय जलासएसु जलठाणंसु एत्यण पचिदियाण  
 पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा , उववाएण लोयस्स असेखेज्जहनागे , समुवाएण लोयस्स असेखेज्जह  
 नाग , सठाप्पण लोयस्स असेखेज्जहनाग । कहिण नत ! नेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा ?  
 कहिण नत ! नेरहया परिवसति ? गीयमा । सठाणेण सप्तसु पुढवीसु तजहा—रयणप्पजाए सक्करप्पजाए  
 वालुपप्पजाए पकप्पजाए धूमप्पजाए तमप्पजाए एत्यण नेरहयाण चउरासि निरयावास  
 सयहस्साइ नवतीति अस्काय , तेज णरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निज्जघयार

वरयेयमाने समुदुपातेन लोकस्सावश्ययजाने वत्थानेन लोकस्सावश्येयजाने । कस्सिमु मवत्त । पण्णेन्नियाकां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि ग्रह  
 णानि । नीतम अण्णलोके उदकदहसजाने जयोसोके तदेकदेसनागे तिरियलीए अगळेसु तलाएसु नदीसु टहेसु  
 घाघीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु  
 णिज्जरसु विमलेसु पल्लेसु योप्येणसु दीयसु समुहेसु ससेसुचेय जलासएसु जलठाणंसु एत्यण पचिदियाण  
 पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा , उववाएण लोयस्स असेखेज्जहनागे , समुवाएण लोयस्स असेखेज्जह  
 नाग , सठाप्पण लोयस्स असेखेज्जहनाग । कहिण नत ! नेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा ?  
 कहिण नत ! नेरहया परिवसति ? गीयमा । सठाणेण सप्तसु पुढवीसु तजहा—रयणप्पजाए सक्करप्पजाए  
 वालुपप्पजाए पकप्पजाए धूमप्पजाए तमप्पजाए एत्यण नेरहयाण चउरासि निरयावास  
 सयहस्साइ नवतीति अस्काय , तेज णरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निज्जघयार

तमसा धत्रगयगहचदसूरनरकत्तेजोऽसपहा मेदवसापूयकहिमसुचिकक्षलिहानुलेयणतला अ्सुईवीसा परम  
दुष्पिगंधा काऊयगणिवन्ताना कस्करुफासा दुरहिंयासा अ्सुना नरगा अ्सुना नरएसु वेयणाए एत्यण  
नरइयाण पञ्जहापञ्जताण ठाणा पखत्ता, उवयाएण लोयस्स अ्सखेज्जइजागे, समुघाएण लोलस्स अ्  
सखेज्जइजागे, सठाणेण लोयस्स अ्सखेज्जइजागे, एत्यण बहवे नेरइया परिवसति काला कालाजासा ग  
नीरलोमहरिसा नीमा उप्तासणगा परमकएहा यथेण पखत्ता, तेण तल्य णिच्च नीया णिच्च तल्य णिच्च  
तत्तिस्या णिच्च उच्चिगा णिच्च परममसुजसथरनरगतय पच्चणुप्पयमाणा विहरति। कहिण जत्ते। रयणप्पन्ता  
पुढवीनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प०? कहिण जत्त। रयणप्पन्तापुढविनेरइया परिवसति? गो०।  
इमीस रयणप्पन्ताए पुढवीए अ्सुतीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उविरे एग लोयणसहस्समोगाहिंसा

दुरप्रसंख्यानवित्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतयइहमसूर्यनसत्रज्योतिरयमसा मेदवसापूयकपरिभासकदंभसिपूतानुत्तपमतसा। अमुना विखा  
(वामगन्धिकाः) परमदुराभिगन्थाः अपोतान्निवर्त्तनाः (लोहेशस्यमान यादृशोन्मेः कृष्णोवसकसुवदाना ययामेव प्रुताः) ककयस्पर्शाः दुर  
व्यावा अमुना नरका अमुनाय नरक वदन्ता। एतेषु नेरयिकाया वर्णोप्तापयोप्ताणा स्थानानि प्रच्छपूतानि। उपपातेन लोकस्य असहयेय  
भाग समुद्रुपातन लोकास्यासहयेयभाग स्थानेन लोकास्यासहयेयभाग, एतेषु बहवो नेरयिकाः परिवसन्ति कासा कासाजासाः यन्मीरलाभइ  
यी उत्तवासभगाः परमकपमाः वर्द्धन प्रच्छपूता। तन तत्र नित्यव्रीता नित्यत्रस्ता नित्यंश्रिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभवदुनरकप्रय पपमु  
नूपमाना विहरन्ति। अस्मिन्नु वदन्त रत्नप्रजापुच्छिर्वातिरयिकाको वर्णोप्तापयोप्ताणा स्थानानि प्रच्छपूतानि। अस्मिन्नु प्रदन्त रत्नप्रजापुच्छि  
नेरयिकाः परिवसन्ति?। गीतन। एतस्मा रत्नप्रजायां पृथिव्यामशीत्युत्तरस्वतयाजनश्वतसइहसकापुंस्थामोपर्येकं योजनसइहमवगाद्यापर्येकं योज

१ गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसन्नागे छहोलोए तदेकदेसन्नागे तिरियलोए अगन्नेसु तलाएसु नदीसु वहेसु  
वादीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गजालियासु सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरसु  
गिज्जरसु विसलेसु पसलेसु वाप्येसु दीयेसु समहेसु सधेसुचेत्र जलासासु जलठाणेसु एत्यण पचिदिद्याण  
पज्जाप्तापज्जाप्ता ठाणा पयप्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जहन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जह  
न्नाग, सठाणण लोयस्स असखेज्जहन्नाग । कहिण नत ! नेरइयाण पज्जाप्तापज्जाप्ता ठाणा पयप्ता ?  
कहिण नत ! नेरइया पारिवसति ? गोयमा ! सठाणेण सन्नसु पुठवीसु तज्जा-रणप्यन्नाए सक्करप्यन्नाए  
वालुप्यन्नाए पकप्यन्नाए धूमप्यन्नाए तमप्यन्नाए तमतमप्यन्नाए एत्यण नेरइयाण चउरासि निरयावास  
सयइस्साइ नयतीति अस्काय, तेण नरगा अतोवहा याहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निज्जधयार

[illegible]

तमसा धवगयगहचदसूरनस्कृत्तजोडंसपहा मेदवसापूयकाहिरमसुचिस्कृत्तलिह्याणुलेघनतला अमुईवीसा परम  
दुष्प्रिगधा काजयगणिवन्ताजा कस्कृत्तफासा दुरहिंयासा अमुना नरगा अमुना नरएसु वेयणात् एत्यण  
नरइयाण पज्जसापज्जत्ताण ठाणा पयसा, उवयाएण लीयस्स अस्सखेज्जइजागे, समुग्घाएण लीलस्स अ  
स्सखेज्जइजागे, सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जइजागे, एत्यण बढवे नेरइया परिवसति काला कालाजासा ग  
नीरलोमहरिसा नीमा उप्पासणगा परमकएहा यथेण पयसा, तेण तस्य णिच्च नीया णिच्च तत्या णिच्च  
तसिया णिच्च उच्चिग्गा णिच्च परमसुजसयत्तनरजय पच्चणुप्पयमाणा विहरति। कहिण जते! रयणप्पन्ना  
पुढवीनेरइयाण पज्जसा पज्जसाण ठाणा प०? कहिण जत। रयणप्पन्नापुढविनेरइया परिवसति? गो०।  
इमीस रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहसाए उयिरि एग जीयणसहस्समोगाहिहा

सुरप्रस्थानसंस्थिता नित्यान्वकारवमसा व्यपगतयइवन्नसूयनसुत्रन्योतिपप्रज्ञा मेदवसापूयकचिरमासकदमसिपूतानुलपनतला अमुना विस्वा  
( धामगन्धिकाः ) परमदुरन्निगन्थाः कपोताग्निवर्त्तना ( लोहपथ्यमान यादृशोमे, लघोवयस्तद्वदना ययामेव जृता ) ककधस्पर्शाः दुर  
व्यावा अमुना नरका अमुनाय मरक वदना। एतेषु नेरयिकावा पर्योपतापर्योपताना स्थानानि प्रप्यताति। उवयातेन लोकास्य कसकेय  
भाग समुद्रुपातेन लोकास्यासक्येपनाग सत्यामेन लोकास्यासक्येयनाग, एतेषु बहवो नेरयिकाः परिवसन्ति कासाः कासाप्रासाः गम्भीरलोमह  
पौ वत्तत्रावनयाः परमकप्राः बर्द्धन प्रप्यन्ताः। तेन तत्र नित्यव्रीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्दिग्ना नित्यपरमासुभसयदुमरकजय पयनु  
नूयमाना विहरति। कस्मिन्नु वदन् रजप्रज्ञापुचिचीनेरयिकावा पर्योपतापर्योपताना स्थानानि प्रप्यताति। कस्मिन्नु जदन् रजप्रज्ञापुचिची  
नेरयिका परिवसन्ति?। गौतम। एतस्या रजप्रज्ञाया पायिज्यामचीत्युत्तरसुतपोबनवसइल्लापुत्तलोपयेकं योजमसइल्लमवगायापयेकं योज

हेठाचिंगं लोयणसहस्स थज्झिन्ना मज्जे अण्हसुरिजोयणसयसहस्से एत्यण रयणप्यज्जापुढविनेरइयाण तीस  
निरयावाससयसहस्सा वयतीति मस्काय, तेण नरगा अतो वहा थाहि चउरसा अहे खुपपसठाणसठिया  
निच्चघयारतमसा वयगयगह्वंदसूरनस्कसजोइसपहा मेदयसापूइयपळळरुहिरमसच्चिक्खलित्तानुलेवणतला  
असुईवीसा परमदुस्सिगघा कात्तअग्गोणवस्साजा कक्कफासा दुरहियासा असुज्जाणरगा असुजा नरगेसु वे  
दणाह एत्यण रयणप्यज्जापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पक्खप्पा, उववाएण लोयस्स असखेज्जा  
इज्जागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जाइज्जागे, सठाण लोयस्स असखेज्जाइज्जागे। तत्थण बह्वे रयणप्य  
जापुढविनेरइया परिवसति। काळा कालाज्जासा गजीरलोमहरिसा जीमा उप्पासणगा परमकिण्हा वन्नेण  
पक्खत्ता, समणाउत्तो ! तेण णिच्च जीया निच्च तत्थया णिच्च तत्थिया णिच्च उहिग्गा निच्च परममसुन्नसयठ

मवइस्स वज्जित्ता मयेउवसपत्ति योजनसहसहले एतत्तु, रत्तमजापुविनीरयिकावा विद्वाकिरयावाससहसहसाहि ज्वलीत्याख्यातम् । तेन  
नरका चकवृत्ता वाप्रे चतुरस्रा अक्षः शुद्धप्रस्थानसंख्यता नित्यान्वकारतमसा ज्यमसपइवन्नसूयनसहस्योतियप्रभा मेदवसापुपयटसठ  
पिरमसिद्धमसिप्पानुत्तवनतत्ता धम्मभा विस्वाः परमदुरधिगत्वाः कयोतामिवर्द्धोनाः कक्कस्यद्धो दुरप्पासा अज्जुजा नरका नरकत्तु वेदना  
व । एतेषा रत्तमजापुविनीरयिकावा पर्याप्तापर्याप्ताना खानानि प्रकप्पुत्तानि । उपयातेन लोकास्वाहंरयभाब समुदुपातेन लोकस्यावश्येय  
प्राप्ते स्वत्वातेन लोकस्यावश्येयभाग । तत्तन्नु बह्वो रत्तमजाः पुचिदीनीरयिकाः परिवसन्ति । कासाः कासावासाः नन्तोरेसाभइवो जीमा वत्तवा  
समकाः परमकप्पाः बर्बेन प्रकप्पनाः जज्जा युक्कम् । तेन भित्ति प्रोता नित्य वत्ता नित्यं भविता नित्यपुट्टिगता भित्ति परमासुभवंदुनरकधवं  
पयमुदुवमाना विहरन्ति । कस्सिन्नु जइय बर्बरमजापुचिदीनीरयिकावा पर्याप्तापर्याप्तानां खानानि प्रकप्पुत्तानि । कस्सिन्नु जइय अक्करवज्जा

नरगन्धय पञ्चगुणयमाणा विहरति । कहिण जते ! सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा  
 पयात्ता ? कहिण जते, सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिबसति ? गीयमा ! सक्करप्पन्नापुढविणु यत्तीसुत्तर  
 जोयणसयसहस्सवाहसाए, उवरि एण जोयणसहस्स उग्गाहिन्ता हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जिन्ता मज्जे  
 तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण सक्करप्पन्नापुढवीणेरइयाण पणवीस निरयात्रासहस्सा वज्जगयगहचटसूरणस्क  
 तेण नरगा अत्ती यहा याहि चउरसा अहे खुप्पसठानसठिया णिच्चयारतमसा वज्जगयगहचटसूरणस्क  
 वज्जोइसपहा मेयवसापूयपल्लवहिरमवचिस्सिल्लित्तानुलेत्रणतला अ्सुइवीसा परमदुस्सिगघा काऊअग्गणि  
 यण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता । उववाएण लोयस्स अ्सखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अ्सखे  
 यण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता । तत्थण बहने सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिबसति । काला  
 ज्जइन्नागे सठानण लोयस्स अ्सखज्जइन्नागे । तत्थण बहने सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिबसति । काला  
 पयिबीनिरियका परिबसन्ति ? गीतम अकरमन्नपयिक्का द्वाविग्गुत्तरयोअनघातसइस्से यत्तेयु अकरमन्नपयिक्का पण्णविद्यालि निरयावावज्जतसइस्साणि नवलीत्यात्यातम् ।  
 सइस्स वज्जयित्था नय्य त्रिअदुत्तरयोअनघातसइस्से यत्तेयु अकरमन्नपयिक्का पण्णविद्यालि निरयावावज्जतसइस्साणि नवलीत्यात्यातम् ।  
 तन नरका अल्लभता अविद्यनुरत्ता अय शुरमवस्थानसंस्थता नित्यान्कारतमसा व्यपगतपइवइस्सुयनइय ज्वातिपज्जा मेदवसापूयपटलसइपरि  
 मासकदमत्तिमानुमपनतला अज्जन्ता विस्साः परमदुरभियन्ता कापूपाणिनवज्जात्राः ककत्तरवशा दुरप्पयावा अज्जन्ता नरका अज्जन्ता नरकेषु यदना  
 य । यत्तेयु अकरमन्नपयिक्का पयोसापयोसाणा त्यामान प्रज्जासन्ति । उपवातेन लोबत्थासव्येयज्जागे समुत्तातेन लोबत्थासव्येयज्जागे  
 सत्यामन लोबत्थासव्येयज्जागे । तस्मिन्नु यइवः अकरमन्नपयिक्का परिबसन्ति । कासाः कासज्जावाः गम्भीरलोमइयो श्रीमा उच्चासनका



सखेज्जहन्नागे । सठानेण लोयस्स अस्सखेज्जहन्नागे । तत्थण यद्दवे वालुयप्पन्नापुठ्ठीणेरड्ढया परिवससति  
 काला कालाज्जासा गन्तीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वग्गेण प० समणाउम्मा । तेण निञ्च  
 नीया निञ्च तत्था निञ्च तसिया निञ्च उद्धिगा निञ्च परमसुजसयद्द णरगन्नय पच्चणुप्पवमाणा विहरति ।  
 क्कहिण जत्ते । पक्कप्पन्नापुठ्ठविणरड्ढयाण पज्जाप्पापज्जाप्पाण ठाणा पणत्ता ? गोयमा । पक्कप्पन्नापुठ्ठीए वी  
 सुत्तरजीयणसयसहस्सयाहप्पाए उव्वारि एग जीयणसहस्स उग्गाहिप्पा हेठावेग जीयणससस्स वज्जिप्पा  
 मज्जे अठारसुत्तरे जीयणसयसहस्से एत्थण पक्कप्पन्नापुठ्ठविणरड्ढयाण दस निरयावाससयसहस्सा जवतीति  
 मस्काय । तण णरगा अत्तो यद्दा याहि चउरसा अहे खुत्तप्पसठानसठिया निञ्चययारतमसा ववगयगह  
 चदसूरनस्कत्तजोइसपद्दा मेयवसापूयपऊलकाहिरमसिचिक्खिलिसाणुलेयणतला अस्सुइवीसा परमदुस्सिगधा

ना स्थानानि प्रपन्नानि । उपवातन लोकास्यासक्येयभागे समुत्तातेन लोकास्यासक्येयभागे । तस्मिन् यद्दवः काल  
 कप्रमपयिबीनैरयिका परिवससति । कासाः कासाभावाः नमीरलोमहर्षो नीमा उत्तासणगाः परमकिण्हा वग्गेन प्रपन्नाः अनयायुमन् । तेन  
 नित्यनीता नित्यवत्ता नित्य व्रिता नित्यमुद्दिना निरयं परमाक्षुजसवद्द नरकजयं पयन्नुयमाना विहरन्ति । कस्मिन् जदन्त । पङ्कप्रजपुण्य  
 बीनैरयिकाया पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि । गीतम् । पङ्कप्रजपुण्य विद्यत्युत्तरयोजमल्लतसहस्रयसुलायामुपरि यकं योजनसहस्र  
 मूर्त्याद्याप एक योजनसहस्र वल्यित्या मध्ये अष्टादशोत्तरे योजमल्लतसहस्रे यतपु पङ्कप्रजपुण्यिबीनैरयिकाया व्रानिरयावासा ज्ञातसहस्रादि जय  
 कीत्यास्यातम् । तेन नरका चत्तुर्वेता चाष्टादशोत्तरा अथः सुरप्रसस्थानसास्थता नित्यान्कारतमसा व्यपगतयश्चन्द्रसूयमद्वज्योतिपप्रकागा मे  
 दवसापूयपटसहचिरमासकदमलिसामुलपनतता अम्मात्रा विद्याः परमदुरजिगत्या कापूयागिवर्षाणा ककस्यपक्षो दुरत्यया अमुना नरका अमु



काजयगणिग्रन्थात्ता ककरुफासा दुरहियासा अस्सुत्ता नरगा अस्सुत्ता नरगोसुवेयणात्तु एत्थण प्पकप्पन्नापुत्थि  
 णेरइयाण पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा पग्गुत्ता । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जाहन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स  
 अस्सखेज्जाहन्नागे, सत्ताणंण लोयस्स अस्सखेज्जाहन्नागे तत्थण यद्दत्तं पकप्पन्नापुत्थिणेरइया परिवसति, काला  
 काळात्तासा गत्तीरलोमहरिस्सा ज्ञीमा उप्पासणगा परमकिण्हा वग्गेण पग्गुत्ता समणाउत्तो । तेण निच्च ज्ञीया  
 निच्च तत्या निच्च तसिया निच्च उच्चिग्गा निच्च परममसुत्तसयद्द नरगन्तय पच्चुणवमाणा विहरति । कहि  
 णं भत्त ! धूमप्पन्नापुत्थिणेरइयाण पज्जाप्तापज्जात्ताण ठाणा पग्गुत्ता ? गीयमा । धूमप्पन्नापुत्थिणीए अत्ता  
 रसुत्तरजीयणसयसहस्सथाहस्साए उव्वारि एग जीयणसहस्स उग्गाहिस्सा हेत्ता वेग जीयणसहस्स वज्जिप्पा मज्जे  
 सोत्तसुत्तरे जीयणसयसहस्स एत्थण धूमप्पन्नापुत्थिणेरइयाण तिग्गि निरयावाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय  
 तण नरगा अत्तो वट्ठा व्वाहि व्वउरसा अहे खुप्पसत्ताणसत्थिया निच्चययारतमसा वयगयगहचदसूरनरक

भा नरकपु वदना एवेपु पक्कममा पुत्थिणीनिरयिकाणां पयोत्तापयोत्ताणां क्वाभाणि प्रज्जासन्ति । उववातेन लोक्कस्याख्येयज्जागे समुत्तातन लोक्कस्या  
 सस्सेयमाने लक्कातन लोक्कस्यासंख्ययज्जागे । तत्तनु वक्कव, पक्कमपुत्थिणीनिरयिकाः परिवसन्ति । कासा कासाप्तासाः मत्तीरलोमहर्यो ज्ञीया उ  
 त्तासत्ताः परमकप्पाः वक्कन प्रज्जासाः ज्ञमकायुत्तन् । तेन नित्यं ज्ञीया नित्यप्रज्ञा नित्य वदित्ता नित्यभुत्तिष्सा भिरये परमाप्पुत्तवक्कनरकप  
 य पयेनुत्तयमानाः विहरन्ति । कास्सिप्पु प्रदत्त । धूमप्रपुत्थिणीनिरयिकाणां पयोत्तापयोत्ताणां क्वाभाणि प्रज्जासन्ति ? । भौत्तव । धूमप्रज्ञायो पुत्थि  
 व्यामष्टादयोत्तयोक्कनसत्तसत्तल्लुत्तायापुपरि एव पयोत्तसत्तल्लुत्ताया एक योक्कनसत्तल्लुत्ताया वक्कयित्ता भव्ये वोत्तसुत्तरे योक्कनसत्तल्लुत्ते य  
 तपु धूमप्रपुत्थिणीनिरयिकाणां भौत्ति नित्यवाससत्तल्लुत्ता विक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता वक्कयित्ता

सृजोहसपद्मा मेयवसापूपपद्मलरुहिरमसचिक्खल्लित्ताणलेवणतला अ्सुईयीसा परमदुस्सिगधा काज्जश्रुगणि  
 ययात्ता कक्कफासा दुरिहियासा अ्सुत्ता नरगा अ्सुत्ता नरगेसु वेयणात्त एत्थण धूमप्यत्तापुढविणेरडयाण  
 पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पक्खत्ता । उववाएण लीयस्स अ्सखेज्जइत्तागे, समुग्घाएण लीयस्स अ्ससखेज्जइ  
 त्तागे, सत्ताणेण लीयस्स अ्ससखेज्जइत्तागे तत्थण बह्वे धूमप्यत्तापुढविणेरडया पारिवसति काळा कालात्तासा  
 गत्तीरलीमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकिण्णहा वय्थेण पक्खत्ता समणाउसो । तेण णिच्चे नीया निच्चे तत्था  
 निच्चे तत्तिया निच्चे उट्ठिग्गा निच्चे परममसुत्तसयत्तनरगजय पच्चणुत्तवमाणा विहरति । कहिण जत्ते । तमा  
 पुढविनेरडयाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पक्खत्ता ? गोयमा । तमापुढयीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सवाह  
 स्साए उयरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स थज्जिहा मज्जे चोद्वसुत्तरे जोयणसहस्से

ता नित्यात्यकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूयमक्षत्रव्योतिपद्मता मद्भवसापूपपटलसर्पिरभांसकदमलित्तानुलेपनतला पशुजा विक्खाः परमदुरभिगत्याः  
 कापूपातिनवर्षाभाः कक्षशरपक्षी पशुजा नरका पशुजा भरक्षेपु वेदनाय । एतपु धूमप्रजपूयिबीनिरयिकाया पयासापयोसाना स्थानानि प्रज्जासा  
 नि । उपकातन लोबस्यासभ्येयत्तागे समुत्तातेन लोबस्यासभ्येयत्तागे सत्त्याजन लोबस्यासभ्येयत्तागे । तत्रनु यद्द्वो धूमप्रजपूयिबीनिरयिका परिध  
 वन्ति । कासाः आसात्तासाः गंभीरलाभइयो भीमा उरत्तासमका परमरुधा वयन प्रज्जात्ता दमकायप्पम् । तेन नित्यं नीताः नित्यं वत्ता नित्य  
 वसिता नित्यमुत्तिग्गा नित्यपरमाशुभसवद्वनरकजयं पयनुत्तयमाभा विहरन्ति । कस्मिन्नु मद्दमा । तमाः प्रजपूयिबीनिरयिकाया पयासापयोसाना  
 स्थानानि प्रज्जात्ता । गीतम । तमाः पूयिब्बा योळुत्तरेयोजनसत्तसत्तयपुलायासुपरि एक योजनसत्तसत्तयपुलायासुपरि एक योजनसत्तसत्त यजयि  
 स्सा मय्य चतुदशोत्तर योजनसत्तसत्ते एतेपु तमाः प्रजपूयिबीनिरयिकाया नरकावासत्तसत्तसत्ते मद्दमात्तास्थायम् । तेन नरका चत्त

एत्यण तमप्यज्ञापुढाधिणेरहयाण एग पचूणे नरगाथाससयसहस्से हवतीति मरकाय, तेण नरगा श्रुतो बहा  
 धाहि घउरसा श्रुहे खुरप्यसठाणसठिया निञ्चधयारतमसा यवगयगहचटसूरनस्कहुजोडसपहा मेदउसापूय  
 पढउरहेरमसचिस्किह्लिह्लिगणुलेयणतला श्रुमुहवीसा परमठुसिगधा कककफासा ठुरहियासा श्रुसुजा न  
 रगा श्रुसुजा नरगेसु वेयणात्त एत्यण तमापुढाधिणेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयसा, उवधाएण  
 लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे समुग्घाएण लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे सठाणेण लोयस्स श्रुसखेज्जहनागे, तत्यण  
 यहवे तमप्यज्ञापुढीणेरहया परियसति काला काळाजासा गजीरलोमहरिसा जीमा उहासणगा परमकिरहा  
 वणेण पयसा समणाउसी। तेण निञ्च जीया निञ्च तस्या निञ्च तसिया निञ्च उहिगा निञ्च परममसुजसचहु  
 नरगजय पञ्चणुस्रमाणा विहरति। कहिण जंत ! तमतमापुढाधिणेरहयाण पज्जसापज्जसाण ठाणा प०,  
 ? गीयसा। तमतमापुढीए श्रुत्तरजीयणसयसहस्सयाहसाए उवरि श्रुत्तंवसुजीयणसहस्साइ उग्गाहिता

दत्ता यद्विदुरत्ता कच दुरप्रसव्याजंस्विता नित्यान्वहारतमसा अपगतप्रवृत्तमूलनसत्रज्योतिप्रजा नेदवसा पूयपटसकधिरमांसकदमसिता  
 नृतपनवता श्रुजा विद्याः परमदुरभिमत्या ककहरपवो दुरत्यया श्रुजा नरका श्रुजा नरकपु वेदनाः एतेषु तमाप्रप्रपृथिवीनिरयिकाया पयो  
 सापर्यासां स्वासां प्रज्ञाति। उपायात्त सावसावसेयसाने समुत्तातेन लोकसावसयप्रागे सत्त्वानेन लोकसावसयमाने तन्ननु बहवसा  
 म प्रप्रपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति काला काजाप्रासाः गभीरलोमहरा जीमा उहासणगा परमकजा वर्येण प्रज्ञाता समकादुक्ता। तेन नि  
 रयजीना नित्यवस्ता नित्यवस्तिता नित्यमुद्रिता निरयं परमाश्रुप्रसवः नरकप्रयं पञ्चप्रयमाना विहरन्ति। कस्मिन् मदल। तमकान। पृथिवी  
 नैरयिकायां पर्यासापयोसां स्वासानि प्रज्ञाति। गीतय। तमस्ताना पृथिव्यामठोरयोजनवत्तवज्जलानुतापायानुपरि अद्विपपञ्चाशद्योजन

हेठावि अथ तेवणजीयणसहस्र वज्जिप्ता मज्जे तिगिजोयणसहस्रेषु एत्यण तमतमापुठवीनेरडयाण पज्जा  
 तापज्जाण पचविंसि पच अणुसरा महम्महालगा मग्गनिरया पग्गता, तज्जा—काले महाकाले रोरुए म  
 हारोरुए अपडठाने, तण नरगा अत्तो वहा याहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा  
 ववगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलाचिस्कसल्लिप्ताणुलेवणतला असुईयीसा परमदु  
 स्सिगधा करकठफासा दुराहयासा असुजा नरगा असुजा नरगेसु वेदनाए एत्यण तमतमापुठविनेरडयाण  
 ठाणा पन्नप्ता, उवथाएण लोयस्स असुखेज्जाइजाए समग्घाएण लोयस्स असुखेज्जाइजाए सठाणेण लोयस्स  
 असुखेज्जाइजाए तत्यण बह्वे तमतमापुठविनेरडया परिवसति काला कालाजासा गन्तीरलोमहारिजा जीमा  
 उतासणया परमकिरहा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तण निच्च जीया गिच्च तया निच्च उहिग्गा निच्च  
 परममसुजसवद्धं नगरजय पच्चणुप्रवमाणा विहरति ॥ असीतवहीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सहस्रास्तु दुग्घीस्वापोपि अहावपच्चासोअनसहस्राणि वज्जयित्वा मग्गे त्रियोलमसहस्रेषु यत्तए तमस्समः पयिबीनिरयिकावा पयोसापयो  
 साना पन्नदमपच्यमानुरा मग्गामहासया मग्गनिरया प्रप्पसा तद्यथा—काले महाकाले रोरवे मद्दारीरवे अमतिष्ठान तेन नरका अन्तवृत्ता य  
 दित्तुरसा अयं शुरमसस्यानसस्थिता नित्याव्यकारतमसा व्यपगतग्रहस्त्रसूर्यमस्यत्र्योतिपप्रता मदपूयवसारुधिरमांसपलब्धमल्लिप्तानुलेपमत  
 ला यशुना विद्धा परमदुरभिगत्थाः कक्कस्रपणो दुरत्यया अज्जुवा नरका अज्जुवा नरका अज्जुवा नरका अज्जुवा नरका अज्जुवा नरका अज्जुवा नरका  
 प्रप्पमानि । वपपातेन तावत्साससयेवप्राने समुहुतेन लोकस्यासंख्येयमाग सख्यामन लोकस्यासंख्येयमाग तच्चनु यइवस्समस्सम पयिबीनिरयिका  
 परिवसन्ति काला कासाजासा गन्तीरलोमइया जीमा तद्यथासमकाः परमकठफा वद्धं प्रप्पसाः अमग्गयुप्पन् । तेन नित्य मीता नित्यं प्रप्पसा नि

एत्यण तमप्यज्ञापुढविणेरडयाण एग पचूणे नरगायाससयसहस्रे हवतीति मस्काय , तेण नरगा स्युतो यहा  
 याहि चउरसा स्यहे खुरप्यसठाणसठिया निचधयारतमसा यवगयगहचंदसूरनरकृजोडसपहा मेदत्रसापूय  
 पळउरुहिरमसचिस्किखलिताणलेयणतला स्यसुडवीसा परमडुसिंगधा कस्करुफासा दुरहियाता स्यसुजा न  
 रगा स्यसुजा नरगेसु येयणाठ एत्यण तमापुढविणेरडयाण पज्जाप्तापज्जाप्ता ठाणा पयाप्ता , उयत्राएण  
 छीयस्स स्यसखेज्जज्जागे समुग्घाएण छीयस्स स्यसखेज्जज्जागे सठाणेण छीयस्स स्यसखेज्जज्जागे , तत्यण  
 घहवे तमप्यज्ञापुढीणेरडया परिधसति काळा काळाजासा गजीरलोमहरिसा नीमा उप्पासणगा परमकिरहा  
 धखोण पयुत्ता समणाउसी । तेण निज्ज नीया निज्ज तया निज्ज तसिया निज्ज उद्धिगा निज्ज परममसुजसयडु  
 नरगजय पच्चणुप्पधमाणा त्रिहरति । कहिण जति ! तमतमापुढविणेरडयाण पज्जाप्तापज्जाप्ता ठाणा प० ,  
 ? गोयमा । तमतमापुढवीए स्युत्तरजीयणसयसहस्रयाहसाए उवरि स्युत्तंनयाजीयणसहस्रसाइ उग्गाहिता

दत्ता बहिवरुत्ता अथ हुरमसस्यानसुत्थिता नित्यान्वकारतमसा अपगतपहचन्द्रमयनचत्रज्योतिपमसा मेदवसा पूषपतठपरिमासवदमसिता  
 नृसेपनतसा अज्जुजा विस्त्रा परमदुरधिगम्याः ककसस्पर्शा दुरत्यया अज्जुजा नरका अज्जुजा नरकपुदेवताः एतेषु तमाप्रपृचिभोनेरियिकाको पया  
 सापर्यामाणा स्वामानि प्रकप्ताणि । उपपातन लोकस्यासबयेयमाने समुहान्न लोकस्यासकययज्जागे सत्त्वाभेन लोकस्यासहययमाने तत्रनु बहवसा  
 न प्रमपृचिभोनेरियिका परिबन्धि कासा कामाजासाः गलीरलोमहर्षी धीमा सरत्तासमकाः परमकप्ता बर्देन प्रकप्ताः प्रमकाजुजन् । तेन नि  
 स्यवीता नित्यवस्ता नित्यव्रजिता नित्यमुद्रिता नित्यं परमाज्जुप्रसंबह नरकप्रयं पर्यज्जप्रयमाना विहरन्ति । कालिनु प्रदत्त । तमकाजः पृचिभी  
 नेरियिकाको पर्यासापर्यासाणा स्वामानि प्रकप्ताणि । नीतन । तमकाजः पृचिभोनेरियिकाको पर्यासापर्यासाणा स्वामानि प्रकप्ताणि । नीतन । तमकाजः पृचिभी

हेठावि अश्वत्थवृक्षजोयणसहस्रस्र वज्रिज्ञा मज्जे तिग्गिजोयणसहस्रस्र एत्थण तमतमापुठवीणेरडयाण पज्जा  
 तापज्जात्ताण पचदिंसि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पण्णा, तजहा—काले महाकाले रोरुए म  
 हारोरुए अणुपडठाणे, तेण नरगा अंतो वहा थाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च घयारतमसा  
 ववगयगहचदसूरनरक्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलाचिकल्ललित्ताणुलेयणतला अणुसुईवीसा परमटु  
 स्मिग्गधा कक्कफासा दुरहिंयासा अणुत्तरा नरगा अणुत्तरा नरगेसु वेदनाठ एत्थण तमतमापुठविनेरडयाण  
 ठाणा पन्तज्ञा, उवथाएण लोयस्स अणुत्तराज्जइत्ताए समुग्गएण लोयस्स अणुत्तराज्जइत्ताए सठाणेण लोयस्स  
 अणुत्तराज्जइत्ताए तत्थण बहये तमतमापुठविनेरडया परिवसति काला कालान्नासा गजीरलोमहरिसा जीमा  
 उत्तासणया परमकिण्हा वन्तेण पक्कत्ता समणाडसो। तण निच्च जीया णिच्च तया निच्च उहिग्गिगा निच्च  
 परममसुत्तसवद्ध नगरत्तय पच्चणुत्तरवमाणा विहरति ॥ असीतवत्तीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सख्खासुदुग्गहीत्वापोपि अद्धानपण्णाशब्दोदनसहस्राणि वक्षयित्वा मध्ये त्रियोदनसहस्रेषु यत्तयु तमस्तमः एयिबीनैरियिकावा पर्याप्तपयो  
 सानो पण्णदशपण्णानुत्तरा महासहास्रया मङ्गनिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-काले महाकाले रोरये महाकाले रोरये तेन नरका अणुत्तरा य  
 रियनुरखा अच खुरप्पसठाणसठिया नित्यात्वाकारतमसा अणुत्तराज्जइत्ताए समुग्गएण लोयस्स अणुत्तराज्जइत्ताए सठाणेण लोयस्स  
 ता अणुत्तरा विक्षा परमदुरधिगत्ताः अणुत्तराज्जइत्ताए दुरत्तया अणुत्तरा नरका अणुत्तरा नरकेसु वेदनाय . एतपु तमस्तमः एयिबीनैरियिकावा स्यामाणि  
 प्रज्ञप्ताणि । उपपत्तेन साकस्यासंख्येयप्रागे समुत्तातेन साकस्यासंख्येयभागे संस्थानेन साकस्यासंख्येयप्रागे तत्रपु यद्वस्तमस्तम एयिबीनैरियिकाः  
 परियेषन्ति कासाः कासाप्रासा गम्भीरलोमहयो जीमा उत्तासणयाः परमज्ञप्ताः वर्त्तेन प्रज्ञप्ताः अणुत्तराज्जइत्ताए तमस्तमः एयिबीनैरियिकावा पर्याप्तपयो

लसग अथुप्तमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अथुत्तरचयसीस लघीसवेधसयसहस्सतु अठारससोलसग चोदससहिय  
 तुलठीए । अथुत्तेयवसहस्सा उवरिमहोवज्जितोन्नणिय । मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगतमतमाए । तीसा  
 यपन्तयीसा पन्नरसदंसेधसयसहस्साह । तिन्निपपचूणेग पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण जंते । पचि  
 दियतिरिस्कजोणियाण पज्झप्तापज्झाणा ठाणा प० ? गो० । उहुलीए तदेकदेसनाए अहोलीए तदेकदेस  
 नाए तिरियलीएसु अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु स  
 रपतियासु सरसरपतियासु बिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्वेसु स  
 वेसुवेव जलासएसु जलठाणेषु एत्थण पचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्झप्तापज्झाणा ठाणा प० । उअवा  
 एण लोगरस अस्सखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे ।

त्वमुहिमा नित्यं परमाशुप्रसन्नं नरकमयं पयमुन्मयमाना विहरन्ति । अशीतिर्द्वाविंशत् अष्टाविंशतिर्विंशतीश्च । अष्टादश योहस्यमहोत्तरमेवा  
 बोधिमया ॥ १ ॥ बहोत्तरं हाविंशत् बहोव्यतिथ्यस्तस्यइत्यंतु ॥ अष्टादश योहस्यं बतुर्द्वयसहितं तु बहोविंशत् । अष्टविंशत्पञ्चाष्टस्यइत्युपरि  
 महोत्तरान्तं ततो मन्वितम् । मध्येतुच्चिपुत्रहस्ते मुत्रवन्तिनरकास्त्रयस्तमसः ॥ त्रिंशत्पञ्चविंशत् पञ्चदशैववस्तसइत्यादि । शीतिपञ्चमीतिर्बं पञ्चेवा  
 मुत्तरानरकाः ॥ ४ ॥ कास्मिन् प्रदन्त । पञ्चभिर्यतिवक्त्रयोनिनामी पर्वोत्तापयोसामा स्वाभानि प्रकृतास्ति १ योतय । अप्यलोके तदेकदेकजाने  
 अथोत्तोके तदेकदेकजाने तियक्त्रलोके अष्टटु तदानीं नदीं त्रयेण वापीणु पुष्करणीं दीपिकां गुण्णालिकां वरसु वरःपद्मलिङ्गां वरः  
 वरःपद्मलिङ्गां विलपच्छिकां उपस्करं निज्जटु चिल्लेसु पल्लसु दीपणु समुद्रं चैव जलाद्येषु जलत्वात्तु यत्तेषु पञ्चान्निवर्तित्वेन्यो  
 निनामा पर्वोत्तापयोसामा स्वाभानि प्रकृतास्ति, उपकातेन लोककार्त्तवेवप्राने समुद्रकातेन लोककार्त्तवेवप्राने लोकायेन लोककार्त्तवेवप्राने ।

कहिण जते ! मणुस्साण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० । अतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह  
 संसेसु अट्ठाईज्जेसु दीयसमुदेसु पन्तरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु ढप्पन्ताए अतरदीवेसु एत्थण  
 मणुस्साण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जाइजागे समुग्घाएण सट्ठोए सठाणे  
 ण लोयस्स अस्सखेज्जाइजागे । कहिण जते ! जवणवासीण देवाण पज्झत्तापज्झत्ताण ठाणा प० ? कहिण  
 जवणवासीदेवा परिवसति ? गो० । इमीन रयणप्पन्ताएपुठवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहत्ताए उ  
 वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्झित्ता मज्जे अट्ठत्तरिजोयणसयसहस्स ए  
 त्थण जवणवासीदेवाण पज्झत्तापज्झत्ताण सत्तजवणकीणीं च पुस्सरकत्तिपासठाणसठिया उकिंयतरिचिउलग  
 मस्कायं, तेण जवणा थाहि वह। अतो समचउरसा अहे पुस्सरकत्तिपासठाणसठिया उकिंयतरिचिउलग

अस्मिन् जदन्त । मनुयाका पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि । अन्तर्मेनुप्यवे पञ्चवत्थारिद्धतमेपु योजनशतसहस्रेपु साहेइयेपु द्वीपसमुद्रेपु  
 पञ्चदशसु कमज्जमिपु त्रिअकमज्जमिपु पट्ठपञ्चासदत्तरीविपु पत्तेपु मनुयाकां पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि । उपवातेन लोकासासंख्येय  
 ज्ञाण समुत्तातेन लोकसासक्येप्रमाने सत्त्वानेन लोकसासक्येयमागे । कस्मिन् जदन्त । जवणवासीनां देवाना पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रपन्नानि  
 अस्मिन् जदन्त । जवणवासीनां देवाः परिवसन्ति ? नीतम् । यतस्था रथप्रपुचिय्यामन्नोत्पुत्तरयोजनशतसहस्रयुत्तामाधुय्यकं योजनसहस्रमुद्गु  
 दीस्थापत्तादेके योजनसहस्रं यज्जपित्वा मध्येऽएवमस्ति योजनशतसहस्रज्जततेपु जवणवासिदेवानां पर्याप्तपर्याप्ताना समज्जवनकोट्या द्विसप्ततिजव  
 नवासज्जतसहस्रादि जवणोत्पाक्यातम् । तेन जवणानि यासन्ती वृत्तानि चत्तः समचत्तरुत्तादि अथः पुस्सरकत्तिपासठियां नि उरकीबीन्त  
 राविपुत्तगम्भीरयासपरिणानि प्राकाराहासकपाठवीरुप्रतिद्वारदेवमागानि यज्जयत्तप्रीनुकुयदोपरिवारिवानि आयोप्यानि सदामानि यानि



नीरस्वासफलिह्य पागारहालयकथान्तोरणपद्मिदुवारदेसन्नागा जतसयगिधमुसठिपरिवारिया अउज्जा सयाज  
या सया अज्जेया सदा गुप्ता अरुयालकोठरइया अरुयालकवयणमाला खेमा सिया किकरा मरुठ्ठावरिकि  
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरसचदनददरदिन्नपचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणघरुसकयतो  
रणपद्मिदुवारदेसन्नागा अस्सत्तोसत्तयिउलयहवग्घारियमस्रदामकलात्रापचन्नसरससुरजिमक्कुपुप्फपुजोयया  
रकलिया (ग्र ११००) कालागुरुपवरकुडुक्कुतुक्कुधूमत्रमर्चतगधुठुत्ताजिरामा सुगधयरगधगधिया गधय  
हीनया अक्खरगणसधसकिन्ना विस्सुत्तुम्भियससुसपन्नादिता ससुरयणमया अक्खा सरहा उरहा घठा मठा  
पीरया निम्मला निप्पका निक्ककरुक्खाया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जीया पासादीया वरिसणिज्जा अज्जिरु  
वा पद्मिदुवा एत्थण नवणवासीण देवाण पज्जप्पापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोगरस अस्सखेज्जइ

सदाशैवीनां षड् भुक्तान् षड्भस्वादिषड्कोष्टकरोचतां षड्भस्वादिषड्दशमयासानि षोषादि धियादि किङ्करामरदवठकोपरचितानि साठ  
श्लोक ( वेदिकायोग्यादिभिर्लक्ष्मैपनसंगृहीकरव ) मरितानि भोगीवसरसरक्तवन्दनददददसपञ्चाङ्गुलितसानि सपञ्चितचन्द्रमक्षसानि चन्द्रनव  
दसुक्ततारवमरिद्वारवेदजापानि कासकोत्सक्तविपुलवृत्तमावांसिप ( प्रकम्बित ) मात्स्यमक्षसापानि पञ्चदशसरसदुराजिमुक्तपुष्पुञ्जोपचारक  
सितानि कासलुक्प्रवरकुन्दककुतुब्धपुमपमयायमानमयोद्भूताजिरामांश्च सुन्यवरमभ्याज्यानि मय्यशतित्तानि चन्द्ररागवर्षवकोर्वाणि  
दिग्ब्रुटितक्षत्रसम्पदादितानि सर्वरक्षमयानि क्षत्र्यानि स्रष्टानि पृष्टानि सृष्टानि नीरज्जति निर्क्षपानि निक्षरटवक्ष्यावांनि समप्राधि समरीची  
नि सोरोतानि प्रसादीयानि दक्ष्णीयानि अभिरूपाधि प्रतिरूपाधि यतेषु प्रजनवादिना देवानां पर्याप्तपर्वोत्तमानो क्षत्र्यानि प्रजप्तानि । इष  
भातन शोकस्त्रावरवेपत्रानि सनुद्भूतेन शोकस्त्रावरवेपत्राने चक्ष्मिनेन शोकस्त्रावरवेपत्राने लोकास्त्रावरवेपत्राने सन्नु ऋचो प्रकम्बवादिदेवा परिचक्षन्ति । सप्तधा-

ज्ञागे समुष्माण लीयस्व श्वसंखेज्जहन्नागे सठाणेण लीगस्स श्वसंखेज्जहन्नागे तत्थण बहवे जघणवासीदि  
 था परिवसति त-श्वसुरानागमुवन्ता विज्जुश्वगीयवीयउहीय । दिसिपयणथिणियणामा वसहाएएन्नवण  
 वासी ॥ चूळामणिमउरयणन्नसणा फणिगरुलयइरपुष्पकलसकिउफेसा सीहमगरमयकश्चस्सवरयउमाणनि  
 ज्जुश्वचिप्पचिधगता सुकवा मदिहिया महज्जुतिया महायसा महावला महाणुजाया महासीरका हारायिराइ  
 यवत्या कळगत्तुक्रिययज्जियन्नुया श्वगदुकुलमठगठतलकणपीठधारी विचित्तहत्थान्नरणा विचित्तमालामउ  
 लिमउळा कल्लणगपवरवत्थपरिहिया कल्लणगपवरमल्लणुलेवणधरा न्नासुरयोवी पलववणमालधरा दिव्वेण  
 यस्सेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सधयणेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इहीए दिव्वाए जुहीए  
 दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए क्कायाए दिव्वाए श्वचीए दिव्वेण तएण दिव्वाए लेस्साए वसदिसाउ उज्जीवेमाणा

चतुरन्नागपुष्पां विद्युदग्निहीपोदधय । विद्यापवनलानिदास्या दशैतेनवमवाचिनोद्येया ॥ १ ॥ पुष्कामाचिसुट्टरद्वन्द्वपूरे  
 कस्तुकाङ्कितमुद्रताः । विद्यागुणवदरमाचिकस्य धर्मेमाननियुक्ताविश्वचक्रधराः ॥ २ ॥ सुकृपाभर्चिका महायुतिता महायज्ञा महायला महासुजावा  
 महेधरा हारावैरगवितवचसः कठकद्रुतितकान्मितनुजा सङ्गदकुबहलसुगुणहलकणपीठधारिणो विचित्रमालासीलिनवहलाः कल्याणप्रवरवत्थपरि  
 दिताः कल्याणप्रवरमात्स्वामुलेपनधरा न्नासुरयोन्व (धारीर) यो प्रलम्बममालाधराः दिव्येन वक्त्रेण दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्वर्णेन दिव्येन सङ्गमेन  
 दिव्येन सल्यानन दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युत्तया दिव्यया प्रमया दिव्यया शायया दिव्यया युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेत्रयया (दिव्ययशुमुव्रत  
 या) दशविद्यासुषोतमामाः प्रकाशमानाः तेन तत्र साव २ (वाक्यालङ्कारे) भवनवासिष्ठतसङ्ख्यायां साव २ सामानिकसङ्ख्याणां साव २ त्रय  
 त्रिमातां साव २ तोषपालानां साव २ अथमहिषीणां साव परिरपदा साव आचिकारिणां साव आचिकारिणीनां साव व्यापरद्वेवसरस्याणां सव्ये

नीरक्षातफलिहा पागारहालयक्याक्रुतीरणपक्रिदुधारवेसजागा अतसयगिधमुसठिपरिवारिया झुज्जा सयाज  
 या सया झुजेया सदा गुप्ता झुक्रयालकोठरइया झुक्रयालकत्रयणमाला खेमा सिधा किकरा मरक्रुओवरस्कि  
 या लाउझोइयमहिया गोसीससरसरस्रचदनदहरदिन्नपचगुलितला उयचियचदणकउसा चदणघक्रुसुकयतो  
 रणपक्रिदुधारवेसजागा झुसत्तोसत्तियिउअहवगधारियमझवामकलायापचयन्नसरससुरनिमुक्रुपुफ्फुजोयया  
 रकोडिया (ग्र ११००) कालागुरुपवरकुदुरुक्रुक्तुक्रुधूममधंतगधुक्रुतानिरामा सुगधनरगधगंधिया गधय  
 हीनूया झुच्छरगणसधसकिक्ता विस्वतुक्रुयसहसपन्तोदत्ता सहरयणमया झुच्छा सगहा छरहा घठा मठा  
 नीरया निमला निम्पका निक्कक्रुक्काया सप्पजा ससिरिया सउज्जोया पासादीया वरिसणिज्जा झुन्निरु  
 धा पक्रिरुवा पुत्यण नवणवासीण देवाण पज्जाप्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उवयाएण लीगरस झुसखेज्जइ

सदावेयानि बहा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोसुरोचिंतानि अष्टचत्वारिंशदसयमास्तानि शेमादि विधानि किङ्करामरदयक्रुतोपरिचितानि साठ  
 क्रोइय ( वेदिबागोसपादिमिहमेवमवसहीकरव ) मरितानि गोपीपसरसरस्रचदनदहरदिन्नपञ्चाहुलितस्तानि उपचितचन्दनकलहानि चन्दनच  
 दतुक्रुवतारचप्रतिहारदेसजामानि कासकोत्सकाविपुलवृत्तमायासिय ( प्रसम्भित ) मात्स्यदामकलापाणि पञ्चवहरसुरादिमुक्कपुष्पपुष्पोपचारव  
 तितानि कासानुदमवरकुन्दकतुक्रुक्कपुष्पमपमपयामगन्धोद्भूतानिरामादि सुगन्धरगन्धयन्त्रितानि गन्धवर्तितस्तानि चन्द्रोदगवस्रकोकोनि  
 तिरुद्रुटिगन्धयन्त्रबादितानि सर्वरत्नमयानि चक्रानि मन्त्रानि पृष्ठानि सुष्ठानि नीरजादि निर्धयानि निचस्तचक्रायाणि चामपादि वजरीवी  
 नि शोचोतानि प्रसादीयानि दक्षिणीयानि अभिरूपादि प्रातिरूपादि यत्नेषु प्रवर्तमानाणि देवानां पर्यवर्तमानां ज्ञानानि प्रज्ञासामि । उप  
 बातेन शोचत्तावसेवयाये समुद्भातेन शोचत्तावसेवयाये संख्यानेन लोकसावसेवयाये तन्मनु वरवो जलनवादिदेवाः परिकल्पन्ति । मन्त्रा-

लमुसतिपरिवारिया अउज्जा सदा सया धलया सदा गुहा अऊयाला कोठगरहया अऊयालकयवन्नमाला  
खेमा सिवा किकरामरऊठोवरिकिया लाउखोइयमहिंया गोसीससरसरस्रचंदद्वरदेन्नपचगुलितला उव  
चियचंदणकलसा चदणघऊसुकथोरणपऊिदुवारवेसजागा अासप्तोसप्तविउलयहयघवारियमस्रदामकलाया  
पचवअसरससुरजिमुक्कापुप्फपुजोत्रयारकलिया कालागुरुपवरकुदुरुक्कोतुरुक्कोऊज्जतधूमधमधंतगधुधुत्ताजिरा  
मा सुगधवरगाधिया गधवाहिन्नूया अऊरगणसचसकिआ विद्धतुक्रियसद्वसपन्नादिया सधरयणामिया अ  
ऊा सरहा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककऊऊाया सप्पजा ससिरिया सउज्जोया पासाइया  
दरिसणिज्जा अनिरुवा पऊिरुवा एत्थण असुरकुमारान देवान पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा पसप्ता । उववा  
एण लोयस्स अससिखिज्जइनागे समुग्घाएण लोगस्स अससखेज्जइनागे सठाणेण लोगस्स अससखेज्जइनागे त

नि वल्मीकांस्तद्विपुलसगम्भीरसावफटिकानि प्राकाराहासकचपाठोरुचमतिहारदेवज्ञानागानि यन्मगलम्रीमुखसन्नुसुखिपरिवारितानि आयोपनानि  
 वदालेयानि वदावलयाणि सदागुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोट्यकराचिंतानि अष्टचत्वारिंशत्सहस्रमालानि श्रियाणि किङ्कुरामरवयोपरचितानि  
 साध सङ्गोदय मण्डितानि गोक्षीपसरच्छवन्द्यवर्देदसपञ्चाङ्गुलितलानि उपचिंतयन्मगलज्ञानि चन्दनपटसुलततोरुप्रसिद्धारवज्ञानागानि आस  
 न्नीलसक्तविपुलसदृशप्राथा विममालस्यदामकलापानि पञ्चवक्त्रसरससुरनिमृक्षपुष्पपुष्कोपचारकलितानि आलागुसमधरकुम्भसक्तुसफूपसधमयाय  
 मानगन्धोद्भूताभिरामाणि सुगन्धस्वरगन्धयन्त्रितानि गन्धवार्तितमूतानि अप्सरोगणसपसमीचीनानि दिव्यद्रुतितयज्यसप्रद्यादितानि सवरदमया  
 नि वल्मीकाणि सल्लानि घृष्टानि सुष्ठानि वीरजांसि निष्पङ्कानि निफलकच्छायाणि समप्राप्ति समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दशनीयानि  
 अत्रिद्वयादि प्रतिद्वयादि एतेषु असुरकुमाराणां देवानां पर्योहापर्योहानां स्थानानि प्रद्वयानि । उपपानेन लोकास्यासख्येयज्ञाने समुद्भातेन लोक

पन्नासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ नयगवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तोयत्तीसाण  
 साण २ छोगवालाण साण २ अगमहीसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणियाहिइईण  
 साण २ आयरक्केवसाहस्सीण अन्नेसिच यत्थण नवणवासीण देवाणय देवीणय अहिेवच्च परेवच्च सा  
 मिस न्हिइ महस्सरगण आणार्हसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहनट्ठीगीययाइयततीतलतालतुत्ति  
 यचणमुइगपण्ण्यवाइयरवेण विद्वाइ जोगजोगाइ नुजमाणा विहरति । कहिण जते ! असुरकुमाराण दे  
 वाण पल्लत्तापल्लत्ताप ठाणा पसुप्ता २ कहिण जते ! असुरकुमारादेवा परिवसति २ गोयमा । इमीसे  
 रयणप्पजाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सयाहसाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिप्ता हेठावेग  
 जीयणसहस्स वज्जिप्ता मज्जे अठहसरे जीयणसयसहस्से याहसाए एत्थण असुरकुमाराण देवाण बोवठि  
 नयणावाससयसहस्सा नवतोति मस्काय, तेण नवणा याहि यहा अतो चउरसा अहे पुक्करकसियासठा  
 णसठिया किक्कतरविउलगजीरस्कायफळिहा पागारहालयकवाफ्तोरणपण्डिदुवारदेसनागा जतसयगिधमुस

वां च बहूना अवववांसिनां देवानां देवीनामाधिपत्य स्नामित्वा पूर्वेषु महत्तराङ्गत्वमाधेयरेणायत्यं कारयमाणाः पासयमानाः बह्वाहव्यत  
 भीतवादिचत्तीततात्तत्राटठपमसुइङ्गपटुप्रकारादिव रवेकादेव्यानि प्रोक्ताजाना विहरन्ति । कस्मिन् प्रदन्त । अशुरकुमारावां देवानां  
 सम्योतापर्याप्ताना स्नानानि प्रदत्ताणि २ कस्मिन् प्रदन्त । अशुरकुमारादेवा परिवसन्ति भीतम् । यतस्मां रजवज्रायां पूर्विकान्नीसुत्तरयोक्कन  
 तवइज्जवुत्तायामुपैर्द्धयोक्कनवइज्जमुइवरोत्ता उचत्तादेवं योक्कनवइज्जं वजवित्ता मच्चे उहवसतिवोक्कनवइज्जवुत्तायाम् यतसु अशुरकुमारा  
 वां देवानां अतुर्बेहविक्कनवावावइज्जादि वववतीत्ताकायम् । तेन वववनादि वदिइ तांनि वववअशुरकादि वच्चे पुक्करकसिवावंस्नानवत्तिवता

सामाण्यसाहस्रीण साण २ तावहीसाण साण २ लीगपाठाण साण २ अगमहिंसीण साण २ परिसाण  
 साण २ अणियाण साण २ अणियाहिंईण साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अण्वेसि च यत्तण नवणवा  
 सीण देवाणय देवीणय अण्वेवच्च पोरेयच्च सामित्त महत्तरगत्त अणार्हसरसेणावच्च कारेमाणा पा  
 छेमाणा महयाहयनहगीयवाडयततीतलतालतुत्तियघणमुइपपुप्पवाडयरेवेण दिव्वाइ जोगजोगाइ नुजमा  
 णा विहरति, चमरयालिणो इत्य दुये असुरकुमारिदा असुरकुमाररायाणो परियसति काळा महानीलस  
 रिवा नीलगुलियगयलयसिकुसुमप्यगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततयनयणा गरुडाययउज्जत्तग  
 नासा उयचियसिलप्पवालविथफलसन्निहाहरोठा पणुरसंसिसगलविमलनिम्मलदहिघणसस्वगोस्वीरकुदद  
 गरयमुणाडिया धयलदत्तसेठी हुयवहणिद्धतथोयतत्ततवाणज्जरत्ततलतालुजीहा अजणघणकसिणरयगरमणि  
 ज्जनिच्छकेसा वामेयकुलधरा अद्वचदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलिठाइ सुज्जमाइ व

स्वामन दिव्यया अथ्या युत्ता दिव्यया प्रमया दिव्यया आयाया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन देवादिशासूतोतमाना प्रजासी  
 मानः तेन तत्र स्वेपा २ नवमावासदातसदस्याणा सामानिबसदस्याणा प्रयत्तिवत्ता लोकपालानां अयमर्चिषोषा परिपदामधिकारिणा अधिकादि  
 यतीनामापरतदवसदस्याणामप्येया च यद्वा देवाना देवीनामाधिपस्य पौरपस्य आभिप्य प्रतुत्त्व मत्तरकस्यमाधेयरसेनापरय च कारयमाया  
 पालयमाणा महताऽऽइतपुत्यागीतवादिग्रतग्नीतमालासुहियपनसुदसुपुद्गयादितरवेण दिव्यानि जोगजोगानि पुञ्जाना विहरन्ति । चमरयासि  
 मीचत्रोत्रे असुरकुमाररेप्प्री असुरकुमारराजानो परिवसतः काला मज्जानीलदोपो नीलगुलिका गवतातसीकुसुमप्रकाशाः विकसितद्यतपत्रनिर्मल  
 वीतरज्जवाचमयमा गरुडायतच्चनूनुकुमासा उपविषत्तमितामवासायिस्वसन्निवाधरोषाः पाशुरक्षाशिसक्कसविमलमिसलदोषधनस्यगोरीरकुन्दो

त्यण वहवे असुरकुमारादेवा परियसति काला लोहितस्का विब्रीठा घथलपुष्पदता अस्त्रियकेसा घामेयकु  
 रुठधरा अद्भुतवर्णालिप्तगता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिठठाइ सुक्कमाइ वत्याइ पत्रपरिहिा  
 वय च पढम समहङ्गता विट्ठय च असपप्ता नदे जोह्वेणे वट्टमाणा तलन्नगयतुत्तियवरन्नसणनिम्मलनिर  
 यमणिरयणमत्तियनुया दसमुद्दामत्तियग्गहत्या चूळामणिविचित्रचिथगता सुक्का भट्ठिहीया महज्जुडया म  
 मायसा महव्वला महाणन्नागा महासोस्का हाराविराडयवत्या कवळयतुत्तिययत्तियनुया अगयकुळलभहगळ  
 यलक्खसुपीठधारी यिचिच्चहत्थालाभउलिमउला कल्लाणगपवरयत्यपरिहिा कल्लाणगपवर  
 मल्लाणुलवणधरा नासरर्वोदी पलयवनमालधरा विह्वेण वग्गेण विह्वेण गधेण विह्वेण फासेण विह्वेण सधय  
 पेण विह्वेण सठाणेण विह्वेण इट्ठीए जुहए विह्वेण पत्ताए विह्वेण तायाए अस्त्रीए विह्वेण एएण  
 विह्वेण लेसाए दसविसाठ उज्जीवेमाणा पत्तासंमाणा तंण तत्य साण २ नयणावाससयसरसाण साण २

स्वावस्त्रेयमात्र सत्त्वानेन लोहस्वावस्त्रेयजाले । तत्रानु बहवा अशुरकुमारा देवाः परित्यजन्ति । कासा लोहिताका विम्बोष्ठा घटसप्तपुष्पदन्ता च  
 वित्तोष्ठा घामय (यक्षवर्कोन्नतश्च) कुवहलधरा अद्भुतवर्णानुल्लिप्तगता इत्येकस्मिन्प्रपुष्पगसाइति वस्तुक्रियाणि सूक्ष्मानि ब्रह्माणि प्रवरपरिचाना  
 बहव प्रथमं धर्मतिष्ठाप्ता द्वितीयं वासुप्रसा भव्ये यौवने वत्तमाणा तस्यज्जुत्तितवरज्जुवका निजसर्गविरजसविहवतनुवा दसमुद्दामाविराडयवत्याः  
 पूजामविचित्रचित्रनताः सुकृपा महर्षिकाः महदुपुगः महावसा महाबलाः महापुत्रावाः महातुका हारविदारजितवक्त्रकाः घटवज्जुत्तितस्तम्भितपु  
 वा अद्भुतवहलमद्भुतसत्त्वककपीठधारिणौ विविचित्रताप्ररका निजिज्जालासार्जोक्षितकलाः कलावकाप्रवरवक्त्रपरिचिताः कलावकाप्रवरका  
 त्वाभुजेपमवरा प्राशुरवोरयः (भाशुरवरीराः) प्रवज्जवत्तमासाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन वर्णेन दिव्येन वर्णवस्त्रेय दिव्येन च

परिसाण सरण २ अणियाण साण २ अणियाहिर्वण साण २ आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वट्ठण  
 जवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्तं जहिंत्त महत्तरंगत्त आहाईसरसेणावच्च कारे  
 माणे पाळेमाणे महायाहनहगीयवाइयततीतलतुक्रियघणमुहगपठुप्पयाइयरवेण विद्वाइ जोगजोगाइ नु  
 जेमाणा विहरति । कहिण नत्ते ! दाहिणिस्साण असुरकुमारदेवाण पज्झापज्झत्ताण ठाणा पयस्सा ? कहिण  
 नत्ते ! दाहिणिस्साण असुरकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! जवुदीवे २ मदरस्स पच्चयस्स दाहिणेण इमी  
 सेरयण्यप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहस्साए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिंत्ता हेठावेग  
 जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिस्साण असुरकुमाराण देवाण देवी  
 णय चीत्तीस जवणावासयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण जवणा याहि वहा अतो चउरसा सोचेंव वय्छ  
 जाव पकिरुवा एत्थण दाहिणिस्साण असुरकुमारदेवाण पज्झापज्झत्ताण ठाणा पयस्सा । तिसुवि लोगस्स

सामानिकसहसाकां साबं २ अवकिरुत्तानां साबं २ लोकपालानां साबं २ अयमहिंसा साबं २ परियवा साणर अपिकारिणां साबं २ अपिकारि  
 यवीमाभामररुक्कदेवसहसाकामन्येयां च जइना भवजवायिनां देवाना देवीना च अपियस्यं पुरपत्तित्वं आमित्तं जनेत्त महत्तरकत्वमाप्तेयरसेनाप  
 त्य च कारयमानाः पासयमाना महताइतमुत्तगीतवादिन्नत्तलतासत्तुक्रियपणयदुक्कपटुप्रवादित्रवेण विव्वानि जोगमोमानि जुब्बामा विहर  
 त्ति । कस्सिन् प्रवत्त । दाहिणविद्यासुरकुमाराणा देवाना स्वामानि प्रज्झमानि, कस्सिन् प्रवत्त । दाहिणविद्यासुरकुमारादेवाः परिवसन्ति । गो  
 तम । जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दाहिणेनैतत्त्वां रवप्रभाया पृथिव्यामर्जीत्युत्तरजोयणसयसहस्सबुलायामुपयंज योजनसहस्समुद्यूहोत्वापस्ता  
 देवं योजनसहस्त्रं अवयित्वा भण्ये अष्टसप्ततिजोयणसयसहस्से यत्तेपु दाहिणत्वायानामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च चतुस्त्रिंशद्भवतावासयतसह



स्याद्द्वै पवरपरिहिंया वय च पदम समश्कृता विद्वयं च स्यसपत्नी ननु जीवणे वहमाणा तलन्नगयतुक्तिवप  
 वरनूसणनिम्मलमणिरयणमक्रियन्तुया वसमुद्दामाक्रियगहत्या चूनामणिविचिन्तचिचगता सुरुवा माहिंहीया  
 महज्जुया महायसा महसुल्ल महाजुजागा महासोस्का हारविंराइयवत्या कण्यतुक्तियथजियन्तुया स्यगदकुल  
 लमठगळलकस्यपीठघारी विचिन्तइत्याजरणा विचिन्तमालमलमज्ज कक्षाणगपधरवत्यपरिहिंया कक्षा  
 णगपवरमहाजुलवणा ज्ञासुरयोदी पलवयणमालधरा विद्वेण वस्सेण दिव्सेण गयेण विद्वेण फासेण विद्वेण  
 सठाणेण विद्वेण इहीए विद्वेण ज्ञासाए विद्वेण पहाए विद्वेण पहाए विद्वेण अस्सीए  
 विद्वेण एण विद्वेण लेसाए वसविंसाए उज्जोयमाणा पत्तासेमाणा तेण तस्य साण २ नवणावाससयसहरसा  
 ण साण २ सामाजियसाहरसीण साण २ तावस्तीसाण साण २ लीगपालाण साण २ स्यगमाहिंसीण साण २

द बरवदबालिवाचकइत्यनेवयो पुतबजनिम्भोत्तपौतसतपनीयरत्ततसतामुक्तिहा बज्जतपवज्जअतंविंकरमरिदित्तिग्यवेद्याः वामेयकुवकचराः  
 कर्मवन्दनस्तिप्रभाः ईवदीवब्दीतिग्नपुप्यप्रकाङ्गाणि चर्तकिएणि सुस्मादि बज्जावि प्रवरपरिहिंता बवज्ज प्रबलं वनविंकाता द्वितीय चार्त्तमासा  
 प्रद्वेयीवने वर्त्तमाना तललज्जपुतुदिववरनूयननिर्मलमिदिवमकिंतपुमा इदममुद्रानविहतायइत्ताः पूजानविचिन्तचिचिन्तताः सुकपा महपिंका  
 महपुद्गा महायसा महाबसा नकामुमावा मकासुका हारोवरावितवबज्जः कण्यतुद्विपकाभिन्तपुमाः कङ्करकुवकवहनकतलवर्त्तपीठचारिवो  
 विचिन्तइकाप्ररकाः विचिन्तमातामौलिसुज्जताः कक्षाकप्रवरकयपरिहिंताः कक्षाकप्रवरसाक्षासुसियनाः ज्ञासुरयोप्यः प्रबलममनाकाचराः  
 दिव्सेन वर्त्तेन दिव्सेन वज्जवन् विद्वेन वज्जोन्न विद्वेन कक्षा विद्वेना मुत्तया विद्वेना ज्ञाका विद्वेना ज्ञाका विद्वेना प्रबवा  
 दिव्सेनायेवा दिव्सेन एतेव दिव्सेना कक्षयया इवद्विंकापूठोत्तमानाः प्रकाकवद्वाना वीज वन चार्त्त २ (कान्ते २) प्रकनावावद्वतवककावर्त्त चार्त्त २

जीयणसयसहस्समाहसाए उवारे एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्स यज्झिता मज्जे  
 अथहस्ररिजीयणसयसहस्से एस्यण उप्परिस्साण असुरकुमाराण देवाण देवीणय तीस जत्रणायाससयसहस्सा  
 नवतीति मस्काय तेण जवणा याहि वहा अतो चउरसा सेस जहा दाहिणिस्साण जाव विहरति, यली इत्थ  
 वइरीयणिदे वइरीयणराया परियसह, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासेमाणे सेण तत्थ तीसाए जवणा  
 वाससयसहस्साण सठीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाणं पचरहं  
 अगमहिंसीण, सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवरहणं चउरह सठीण  
 आयररुक्खदेवसाहस्सीण अयंसि च यत्थण उत्तरिस्साण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अहिंवरहणं पोरेवसु  
 जाव कुम्भमाणे विहरति । कहिण जते ! नागकुमाराण देवाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पसत्ता, कहिणं

पवतस्य सत्तरण यत्तस्य रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रवाहत्या । उपर्येक योजनसहस्ररावणाद्यापयक योजनसहस्र पञ्चपित्वा  
 मय्य ऽप्यसन्ति योजनसहस्रसंख्ये अत्र भौत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिशङ्खनावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्तीति मया स्यात्तम् । तानि  
 ज्वलन्ति अद्विर्द्यन्ति अन्तश्चतुरस्यादि तप यथा दाक्षिणात्यवर्त्तिहरन्ति । यली अत्र वइरीचनन्दो वइरीचमराजा परिवसति कालो महानील  
 सर्वशो यावत्प्रकाशमान स्यात् त्रिशङ्खं ज्वलनावासशतसहस्रादि पण्डितस्याकसामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्तां त्रयस्त्रिंशत्तां त्रयस्त्रिंशत्तां लोकापाला  
 नां पञ्चानामयमद्विपीया सपरिवाराणां तिस्रणां पारिपथा सप्तानामनीलानां सप्तानामनीलानां सप्तानामनीलानां त्रयस्त्रिंशत्तां त्रयस्त्रिंशत्तां त्रयस्त्रिंशत्तां  
 च वइना भौत्तरिकाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां च पृथिव्य पुरोजातस्य यावत्तुर्वाणां विहरन्ति । अ मदन ! नागकुमाराणां देवानां  
 पर्याप्तपपाशानां स्थानानि प्रवसन्ति, अ मदन ! नागकुमारा देवाः परिवसन्ति । गीतम् । एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

अस्मिन्नेन्द्राग्रे, तस्य यदेव दग्धिनिष्ठा असुरकुमारदेवा देवीने परियसति काला लोहितरक्ता तदेव जाय  
 भ्रजेमाणे विहरति, एव सस्य भ्राणियसु भवणवासीण, चमरे इत्य असुरकुमारिदे असुरकुमारराया प  
 रियसङ्ग काले महानीलसरिसे जाय पद्मासेमाणे सेण तस्य चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण चउसठीए  
 सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउत्तह लोगपालाण पचत्तह अगमहिंसीण सपरिवाण  
 तित्तह परिमाण सत्तह अणियाण सत्तह अणियाहिंवर्हण चउत्तह च चउसठीण अयारकदेवसाहस्सीण  
 अन्नेसिं च यन्नेण दग्धिनिष्ठाण देवाण पञ्जसापज्जाण ठाणा पयसा । कहिण नत्ते । उत्तरि  
 हाण असुरकुमाराण देवाण पञ्जसापज्जाण देवाण पयस्य उत्तरेण इमीसे रयणप्यजाए पुठवीए असीउत्तर

अग्निं प्रवर्त्तयित्वा । तानि प्रवर्त्तयति दग्धिनिष्ठा अन्नेन्द्राग्रे । तत्रानुसृत्य यदेव जायत इत्येव दग्धिनिष्ठा अस्मिन्नेन्द्राग्रे  
 पयोसापयोसानां स्वानानि प्रवर्त्तयति । त्रिषोप लोकास्वाकस्यप्रागे तत्रानुसृत्य यदेव दग्धिनिष्ठा असुरकुमारदेवा देवाणां  
 तासां सर्वेषु पावसुज्जमाना विहरन्ति । एव सर्वेभ्यः जायन्तीय प्रवर्त्तयन्ति चमरे ऽत्र असुरकुमारेश्वरो असुरकुमारराजा परिवसति काले मह  
 नीलसङ्गो पावसुज्जमानः स च त्रिषोपलोकानामुपगतसहस्राणां त्रयोयुक्तेषु सामानिकसहस्राणां अस्मिन्नेन्द्राग्रे परिवसति काले मह  
 पासानां पञ्चानामपमहिंवीरा उपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सामानमीकानां सप्तानाममीकानां अस्मिन्नेन्द्राग्रे परिवसति काले मह  
 सहस्राणामप्येव च अष्टानां दग्धिनिष्ठाणां देवानां पञ्चानां परिषदां सामानिकानां अस्मिन्नेन्द्राग्रे परिवसति काले मह  
 देवानां पयोसापयोसानां स्वानानि प्रवर्त्तयति । त्रिषोप लोकास्वाकस्यप्रागे तत्रानुसृत्य यदेव जायत इत्येव दग्धिनिष्ठा अस्मिन्नेन्द्राग्रे  
 पयोसापयोसानां स्वानानि प्रवर्त्तयति । त्रिषोप लोकास्वाकस्यप्रागे तत्रानुसृत्य यदेव जायत इत्येव दग्धिनिष्ठा अस्मिन्नेन्द्राग्रे

जिज्ञा मज्जे अण्हत्तरिजोयणसयसहस्से एत्यण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण देवाण चोयालीसं न्नवणावा  
 ससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नवणा याहि वहा जात्र पक्रिक्खा एत्यण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण  
 पज्झापापज्झाण ठाणा पयत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जाहन्तागे एत्यण बहवे दाहिणिस्त्राण नागकुमारा  
 देवा परिवसति महिहिंया जात्र विहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिवसति महिहिंए  
 जाव पन्नासेमाणे सेण तस्य चोयालीसाए नवणावाससयसहस्साण ढण्ह सामागियसाहस्सीण तावन्नीसाए  
 तावन्नीसगाण चउण्ह लोगपालाण ढण्ह अगमहिंसीण सपरिधाराण तिरुह पत्तिसाण सत्तरह अणियाण  
 सत्तरह अणियागिहयईण चउवीसाए अययस्सकदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च यत्तणं दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण  
 देवाणय देवीणय अहावेच्च पोरयच्च जाय कुट्टमाणे विहरति । कहिंण नन्ते ! उत्तरिस्त्राण नागकुमाराण दे

ववपित्वा मय्येवसतियोक्कमससहस्से अत्र दाहिंयात्थानां नागकुमाराणां देवानां चतुयत्वारिंशद्भवनावाससहस्साणि प्रवन्तीत्याख्यातम् ।  
 तानि प्रवन्तानि यच्चिदृशानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाहिंयात्थाना नागकुमाराणा पर्यासापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि । त्रिधापि लोकस्यासंख्ये  
 यत्तानां अत्र यच्चो दाहिंयात्थाना नागकुमारदवाः परिवसन्ति मर्यापिका यावद्विहरन्ति । परत्र यात्र नागकुमाररेन्द्रो नागकुमारराणा परिवसति  
 मर्यादितो यावत्प्रकाशमानः सत्र चतुयत्वारिंशद्भवनावाससहस्साणा यक्षां सामानिकसहस्साणा त्रयस्त्रिंशत् ध्यायन्निर्वाणानां चतुर्णां लोकपालानां  
 पञ्चमयमर्यापिकां सपरिवाराणां तिसुधा पर्यपदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्विंशत्यास्मरद्वयसहस्त्राणां सम्येषां च य  
 दूनां दाहिंयात्थानां नागकुमारराणां देवानां च चारिपत्त्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति । क्व जदन्त । कीत्तरिकाणां नागकुमाराणां  
 देवानां पर्यासापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि । क्व जदन्त । नागकुमारा चोत्तरिका देवाः परिवसन्ति । गौतम । अम्युद्दीपे द्वीपे मन्वरस्य पर्वत

नते । नागकुमारा देवा परित्सति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुठ्ठीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स  
याहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्सं वज्जिज्जण मज्जे अठ्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण  
पज्जसापज्जसाण चुलसीइन्नयणावाससयसहस्सा हवतीति मरुकाय , सेण नवणा वाहि वहा अतो चउर  
सा जाव पफिद्धवा तत्थण नागकुमाराण पज्जसापज्जत्ताण ठाणा पयससा । तिसुवि लोगस्स अ्ससखेज्जइ  
नागे तत्थण यहवे नागकुमारा देवा परित्सति, महिद्धिया महज्जुद्धया सेस जहा ठहियाण जाय विहरति  
घरणन्नयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारायाणो परित्सति महिद्धिया सेस जहा ठहियाण जाव त्रिहरति । कहिण  
नते ! दाहिणिस्साणनागकुमाराण देवाण पज्जसापज्जसाण ठाणा पयससा । कहिण नते ! दाहिणिस्सा  
नागकुमारादेवा परित्सति ? गोयमा ! जधूद्धीवे ? भदरस्स पस्यस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुठ्  
वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिस्सा हेठावेग जोयणसहस्स व

बहसं बाह्यादावपरि एवं योजनसदृश लक्षयित्वा पुनन्ये बहुवसतियोजनसदृशस्यै च नानकुमाराका देवाना यथाज्ञापयोज्ञानो चतुरस्रो  
तिथवनाबाधवदृशादि प्रवन्तीत्याख्यातम्, तानि प्रवक्तानि बहिर्बृहन्ति जलसमुद्राणि यावदप्रतिरूपानि तत्र नानकुमाराका यथोज्ञापयो  
ज्ञाना स्वानानि प्रवृत्तानि । त्रिद्विपि लोकलोकावसेयान् तत्र बह्वो नानकुमारदवाः परित्सन्ति, अष्टद्विका भद्राष्टुतिवाः इषं यथोपिवाभा  
यावद्विहरन्ति । वरकमृताचन्द्रा च न ह्री नानकुमारदावानी पारववतिः सप्तविंशो ज्ञेय यथोपिवाभा योवद्विहरन्ति । इषाविकात्  
नानकुमाराका देवाना यथोज्ञापयोज्ञाना स्वानानि प्रवृत्तानि इषावन्ते । दक्षिकाल्पनाङ्गुमारदवाः परित्सन्ति । नैतन । जन्महीनहीय  
मन्दरस्य यनेयस्य दक्षिण एतका एवमप्रपृष्टिका ज्योत्स्नपरवीजनासकस्य काहत्याया उपर्येव योवकस्यैकजनासक स्यादेषं नीलकण्ठस्य

पञ्चाङ्गाण ठाणा पयस्य । तिसृवि लोगस्स अस्सखेज्जहन्नागे, तत्थण बह्वे सुवन्नकुमारा देवा परिवसति  
महिद्धिया सेस जहा ठहियाण जाव विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवखकुमारिदा सुवन्नकुमार  
रायाणे परिवसति महिद्धिया जाव विहरति । कहिण जते ! दाहिणिस्वाण सुवन्नकुमाराण पज्झत्तापज्झात्ता  
ण ठाणा पयस्य । कहिण जते ! दाहिणिस्वा सुवन्नकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा । इमीसे जाव मज्जे  
अच्छहस्सरिजोयणसयसइस्से एत्थण दाहिणस्वाण सुवखकुमाराण अच्छदीस जवणायाससहस्सा हवतीति  
मस्काय, तेण नयणा याहि बहा जाव पठिक्वा, तत्थण दाहिणिस्वाण सुवखकुमाराण पज्झत्तापज्झात्ताण  
ठाणा पयस्य, तिसृवि लोगस्स अस्सखेज्जहन्नागे, एत्थण बह्वे सुवखकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे  
इत्थ सुवन्निदे सुवखकुमारराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण जते ! उत्तरिस्वाण सुवन्नकु  
माराण देवाण पज्झत्तापज्झात्ताण । ठाणा पयस्य । कहिण जते ! उत्तरिस्वा सुवखकुमारा परिवसति ? गोय

अस्सासंख्येयमागमत्र यइवः सुपर्वकुमारा देवाः परिवसन्ति नदधिंकाः श्रेय ययीपिक्कानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीय इत्थ ही सुपर्वकुमा  
रेन्द्री सुवखकुमाररात्रानीं यावत्परिवसत् नदधिकीं यावद्विहरति । क्व प्रदन्त । दाक्षिणात्यानां सुपर्वकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वा  
मानि प्रदन्तानि । क्व प्रदन्त । दाक्षिणात्याः सुपर्वकुमारदेवाः परिवसन्ति ? गोतम । यतस्था यावत्तथा अमुसमतिर्योजनक्षतसइत्थ मत्र दाक्षिणा  
त्यानां सुपर्वकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवावासक्षतसइत्थुगि प्रवन्तीत्यास्यातम् । तानि प्रवन्तानि योइवंतानि यावत्प्रतिकूपायि तत्र दाक्षिणात्यानां सु  
पर्वकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वामानि प्रदन्तानि त्रिष्वपि लोकास्सासंख्येयजार्गं अत्र यइवः सुपणकुमारादेवाः परिवसन्ति । वेणुदेवोत्र सुपर्वकु  
सुपर्वकुमारराणां परिवसति । श्रेय यथा नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वामानि प्रद

याण पञ्जस्रापञ्जस्राणं ठाणा पञ्जस्रा, कंहिण जते ! उत्तरिस्त्रा नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा !  
 जभूदीवे ? मदरस्स पद्मस्स उभरेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए स्यसीउत्तरजोयणसयसहस्सयाहस्साए उ  
 वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिस्त्रा हेठावेग जोयणसहस्स वज्जिस्त्रा मज्जे स्यठहस्सरिजोयणसयसहस्से एत्यण  
 उभरिस्त्राण नागकुमाराण देवाण चप्पलीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्कायं, तेण नयणा याहि  
 यहा सेस जहा दाहिणिस्त्राण जाव विहरति, नूयाणठे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिवसइ महि  
 हिण जाव पन्नासंमाणं सेण तस्य चत्तालीसाए नयणायाससयसहस्साण स्यादेवसु जाव विहरइ । कंहिण  
 जते ! सुवस्सकुमाराण देवाण पञ्जस्रापञ्जस्राण ठाणा पञ्जस्रा । कंहिण जते ! सुवस्सकुमारा देवा परिवस  
 ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए जाव एत्यण सुवस्सकुमाराण देवाण वायस्सरिजवणावाससय  
 सहस्सा हवतीति मस्काय, तेण नयणा याहि यहा जाव पण्डिया जाव सुवस्सकुमाराण देवाण पञ्जस्रा

न उभरेण एतस्मा रजप्रजायाः पुत्रिणा लक्ष्मीस्तुरयोन्नतस्तदस्त्वकाश्रया उपर्यर्द्धं योन्नतस्त्वजवपासा प्रकाशेन योन्नतस्त्वलं वनयित्वा  
 नमोहस्तप्रतियोन्नतस्त्वले च नोत्तरिकायां नागकुमारायां देवानां प्रतुष्टत्वारिअन्नवणावासयतकहयूहि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवत्ता  
 नि वदिन्वतामि सेव यथा वाचिकत्वात्ताया यावद्विहरन्ति । प्रबानन्तो नागकुमारन्तो नागकुमारराया परिवसति । वरुहिंको वावए प्रकाशया  
 न च तत्र प्रतुष्टत्वारिअन्नवणावासयतकहयूहायां यावद्विहरन्ति । इ मदन । सुपत्तकुमारायां पत्तोसाययोत्तानो स्त्रानानि प्रवत्तानि च प्रदन्त्य ।  
 सुवस्सकुमारा देवाः परिवसन्ति ? नीतम् । एतस्या रजप्रजायाः पुत्रिणा वावएन सुपर्वकुमारायां देवानो द्विवन्ति अन्नवणावासयतकहयूहि च  
 नीत्याख्यातम् । तानि प्रवत्तानि वदिन्वतामि वावएनत्तिकयाचि तत्र सुपर्वकुमारायां देवानां वरुहात्तवकीत्तायां कावयि प्रवत्तानि । निवत्ति की

त्रेष्ट्यमियथाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उष्ट्ररिक्षाण जाव विहरति, कालाष्टसुरकुमारा नागाउद्वहीय  
 द्रुतादीवि । यरकणगणिहसगोरा होतिसुवखादिसार्थणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता विज्जुष्ट्यगीयहोति  
 दीवाय । सामापियगुवखा वाउकुमारामुणेयह्वा ॥ २ ॥ स्यसुरेसुहोतिरस्ता सिलिद्धपुप्फप्पजातहाउद्वही । स्या  
 सासथसणघरा होतिसुवखादिसार्थणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुष्ट्यगीयहोतिदीवाय । सज्जाणु  
 रागवसणा वाउकुमारामुणेयह्वा ॥ ४ ॥ कहिण नते ! वाणमतराण देवाण पज्जाप्पज्जात्ताण ठाणा  
 पसुत्ता, कहिण नते ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए रयणमयस्स  
 कळस्स जीयणसहस्सवाहस्स उवारि एग जीयणसय उग्गाहिन्ता हिठादि एग जीयणसय वज्जिन्ता मज्जे  
 स्युत्तसु जीयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाते नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति  
 मस्काय तेण नोमेज्जा नगरा वाहि बहा स्यतो चउरसा स्यहे पुस्करकवियासठाणसठिया उक्किन्नतरयि

रिवा यावद्विहरन्ति । काक्षापशुरकुमाराः मागोदधीयाबहुरौहोस्तः । यरकमकानिक्कसगौराः प्रवर्त्तिसुपणदिक्कनित्ता ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता वि  
 द्युदग्नीवज्जबन्तिहीपाद्य ॥ इयामाः प्रियमुवर्णाः वायुकुमाराराधक्षातव्याः ॥ २ ॥ स्यसुराप्रवन्तिरक्काः विलोन्घ्रपुप्फप्रमास्तयोदययः ॥ आशाष्टववत्त  
 पराः भवन्तिपुष्पोदिक्कनित्ता ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसना विद्युदग्नीवज्जबन्तिहीपाद्य ॥ सग्यामुरागवसना वायुकुमारामुणुमातव्या ॥ ४ ॥ क  
 मदन्त । वानव्यन्तराण देवाना स्यान्नामि प्रज्जासन्ति, इ प्रदन्त । वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति ? गोतम । एतस्या रत्तममायाः पणिय्या रत्तमय  
 स्य कारहस्य पोन्नशतसहस्रुवाएत्थस्य सपर्येत्तं पोन्नसहस्रमवगाह्सा उवक्कादेत्तं पोन्नसहस्रं वज्जयित्वा मज्जे उष्टसु योजनसहस्रेषु चत्र यानव्य  
 न्तराणां देवाना विद्यमसएत्थयानि नोमेष्ट्यनगरावासासथसहस्रुवि प्रवन्तीत्यास्यातम् । ते नोमिया नगरा वाहेत्तंता स्यस्यतुरसुरा अथ पुस्करकणिका



मा ! इमीसे रयणप्यन्नाए आधं एत्थेण उप्परिहोण सुवसंकुमारारणं यत्तद्धयां ज्ञाणिया तथा संसाणये चोद  
सखइ इवार्णं ज्ञाणियद्धा नवर नयणनाणत्तं इवोणनाणत्तं यथेण नाणत्तं परिहाणनाणत्तं च इमाहि गाहाहि  
अणुगतत्तं—सोवठीअसुराणं बुलसीतीचैवहोइनागाणं । यावत्तरिसुवखे वाउकुमाराणत्तखउई ॥ १ ॥  
दीयदिसाउवहीणं विज्जुकुमारिदयणिमग्गीणं । तरहपिजुयलयाणं तावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ बोही  
साओयाला अठहीसचहोइसयसहस्साइ । पखाचत्तालीसा दाहिणत्तहोतिनवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा  
बोहीसबेवसयसहस्साइ । तायालावसीसा उत्तरत्तहोतिनवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीसल्लु लम्बसहस्सात्तं  
अत्तरवज्जाणं । सामोणियाउएए चउग्गणाअायरक्कात्तं ॥ ५ ॥ चमरेचरणेतहवे गुंदवहरिकत्तअग्गिसोहेय ।  
पुखेजलक्केय अमियबेलबेयओसेय ॥ ६ ॥ बालिजुयाणदेवे गुदालीहारिस्सहेअग्गिगमाजयधिसिठे । जलप

[illegible]

खेजहज्जागे तस्यण सहवे वाणमतरा देया परिवसति तजहा—पिसाया नूया जस्का ररकसा किन्नरा किंपुरि  
 सा नूयगवतिणोय महाकाया गधहूणा य निउणगधव्विगीतरहणो अणवणियपणधन्नियइसियाइयन्नूयवा  
 इय कट्टीय महाकदीय कीइरुपयगदेया ॥१॥ वधलचवलचित्तकीलणदयप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि  
 झरती वणमालेमउलकुलसच्छदयिउव्वियान्नरणत्तारुन्नसणधरा सद्योयसुरिन्निकुसुमसुरइयपलवसोहत  
 कतवियसित्तचित्तवत्तमालरइयवच्छा कामकामा कामकयदेहधरा नाणाधिहयन्नरागवरयत्तललतचित्तचित्त  
 गणिवसणा विविहवेसीणेयत्यगहियवेसा समुइयकउप्पकलहकेलिकीलाइलप्पिया हासयोलवज्जला अस्सि  
 मीगगरसत्तिकुतहत्या अणगमणिरयणविविहनिजुत्तवित्तचित्तधगयासुकथा महिहिया महज्जुतिया महायसा  
 महायला महाणुजागा महासोरका हारविराइययच्छा कणगतुक्रिययन्नूया मगयकुलमठगजुयलक  
 खापीठधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउलकत्ताणगपवरवत्तपरिहिया कत्ताणगपवरमत्ताणुलेवणध

रावसा किन्नरा किम्मुहया पुत्तमपत्तणय महाकाया नयवन्नकाय निपुणगन्धगीतरतयः, अक्षयलीयजयको अयिवादीवेवज्जनवादी च । कम्पीय  
 महाकदी कीइणकीचेवपत्तणय ॥ १ ॥ यतेही देवतिष्णयाः, वत्तवत्तचित्तकीलनद्रविद्याः गम्भीरइवित्तप्रियाः गीतनुत्तरतयो वनमासापीठमज्जु  
 ट्ठुरलसत्तच्छन्दयिजुवित्तान्नरकवाहज्जुपत्तराः सर्वानुसुरिन्निकुसुमसुरचित्तप्रसम्बद्धीतमाभक्ताकवित्तचित्तधनमासराचित्तवत्तयः कामकामाः  
 कामकपदधररा नामाविपत्तवरागवरवत्तविज्जिज्ज ( ददीव्यमान इत्यर्थः ) निवसन्ता विविपदेहीनेपय्यगृहीतयेयाः समुदितवत्तपत्तलकेलिकी  
 लाइसप्रिया हासवोलयपुत्ता अस्सिमुट्ठुरात्तिकुत्तहत्या अन्नकमत्तरावित्तयानिपुणवित्तचित्तपुत्तगताः सुकपा भवसिक्का महाद्युतिका गधवाशयो  
 महत्तता महानुभावा महाकास्या हारविराजितवत्तयः कटक्कुट्टवत्तलान्नतपुत्ताः अज्जुदकुवत्तसमुत्तगवत्तदुत्तलवत्तपीठपारिबी विवित्रइसात्ररणा

उलङ्गनीरस्त्रायफलिहो पागारहालयकत्राकतोरणपद्मिदुवारदेसन्नागा जतसयिग्धिमुसलनुसठिपरिवारिया अ  
 उज्जा सया जया सया गुप्ता अक्रयालकुठरइयअक्रयालकयवसुमाला खेमा सिधा किकरामरठनोवररिक्  
 या लाउझोइयमहिया गोसीससरसरसचवणदधुरदिसापचगुलितला उवाथियचवणकलसा चवणघनसुकयती  
 रणपद्मिदुवारदेसन्नागा असासोसप्तविउलथहृयगधारियमस्रदामकलाथा पचवन्नसरससुरनिमुक्तापुम्फपुजीव  
 यारकलिया कालागुरुपवरकतुरुक्कधूवमधमथतगधुधुयानिरामा सुगयग्रगाधिया गधवाहिन्नुया अच्य  
 रगणसघयिकिखा दिव्वतुनियसद्वसपन्तदिया पक्रागमालाउलानिरामा ससरयणमया अच्य सयहा लठा  
 घठा मठा नीरया निम्मला निप्यका निक्ककच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा  
 अयनिरुया पक्रिक्का एत्थण थाणमतराण देयाण पज्झापाज्झाण ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लोगस्स अय

ईलानबलिता शरबीर्षाकरविपुलनन्दीरकानकलिका। आकाराहासककपाटोरबप्रतिहारदेसमानाः यश्चतुष्टिमुसलनुसठिपरिवारिता आयोष्याः  
 उदाभयाः वदगुप्ताः अष्टचत्वारिंशद्विष्टकोष्टकरविताशुचत्वारिंशत्कतवचनासाः खेमाः किङ्करामरदवकापरारुताः साउझोइयमहिताः गोभी  
 ववरवरचचन्द्रनरदरदपम्पाकृतितता उपचितचम्पनकसथाः चम्पनपटदुमततोरकप्रतिहारदेसमानाः आबल्लोत्तुसुचविपुलसुतवत्वारियमास्वदा  
 नकसायाः पचवन्नसरससुरनिमुक्तापुम्फपुजीवपचारकलितः कालागुरुपवरकतुरुक्कधूवमधमथतगधुधुयानिरामाः सुगयग्रगाधिया गधवाहिन्नुया अच्य  
 यतिपूता अष्टोत्तुसुचविपीर्षा दिव्वतुनियसद्वसपन्तदिया पक्रागमालाउलानिरामाः ससरयणमया अच्य सयहा लठा घठा मठा नीरयो  
 निम्मला निप्यका निक्ककच्छायाः सप्पन्नाः ससिरीयाः सउज्जीयाः पासादीया दरिसणिज्जा देवानी यवीला  
 यपीसामां खानानि मच्छानि । विद्वधि (व्यावेदु) कोकलाचङ्कपुमाथं तच्च अष्टको वानल्लनर देवाः परिववन्धि वधया-विवाचा भूला वदा

स्वेज्जहन्नागे तत्थण य्हवे वाणमतरा देवा परिखसति तज्जहा—पिसाया नूया जस्का रक्कसा किंकरा किंपुरि  
 सा नुयगवतिणोय महाकाया गघह्वणा य निउणगधह्वगीतरडणो ह्यणवसियपणधन्नियइसियाइयन्नूयवा  
 इय कट्ठीय महाकट्ठीय कोह्मपयगदेवा ॥१॥ चवलचचलचिक्खकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि  
 झरती वणमालामेलमउलकुलसच्छद्विडिह्मियान्नरणचारुन्नसणधरा सखीयसुरन्निकुसुमसुरइयपलवसोहत  
 कतवियसितचिक्खवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरुवदेहधरा नाणाविहवन्नरागधरवत्यललतचिक्खचिक्ख  
 गणिवसणा विविहदेसीणेत्रत्यगहिंयवेसा समुइयकडप्पकलहकेलिकीलाहलप्पिया हासयोलवज्जला ह्यसि  
 मोगरससिक्खुतहत्या ह्यणगमणिरयणविविहनिजुत्तविक्खिगयासुरूवा महिहिया महज्जुतिया महायसा  
 महायला महाणन्नागा महासोस्का हारविराडययच्छा कण्ठगतुक्खियन्नियन्नुया मगयकुलमठगजुयलक  
 खपीठधारी विचिक्खहत्यान्नरणा विचिक्खमालामउलक्खणगपवरवत्यपरिहिया कल्लणगपवरमल्लणुलवणघ

रावसा किंकरा किंमुसपा नुमगपतयस महाकाया गन्धवेगसाह निपुणगन्धवगीतरतयः, अरुपकीपणपको ह्यपिकादीवेवज्जुतवादी च । कट्ठीय  
 महाकट्ठी कोह्मकीवेवपतक ॥ १ ॥ यथेही देवविज्जयाः, चलचपलचिक्खकीलमद्वविद्याः मन्मोरद्विचित्प्रिया गीतनृत्यरतयो वममालावीकमुजु  
 टकुलसख्यद्विक्खुधितानरयचरुपयधराः सर्वर्तुसुरन्निकुसुमसुरचित्तमल्लम्यशीतमानकालविकासुताचिक्खमालारचितवससः कामकामाः  
 कामरुपदेवधरा नामाविपयधरागवरयक्खविक्खिक्ख (ददीप्यमान इत्यर्थः) निवसना विविधदेशीनेपण्यगृहीतवेयाः समुदितवन्त्यपकलहकेलिकी  
 लाइतिप्रिया शसवोलवपुता यस्मिमुद्रकृत्तिकुलकला यमकमखिरताविवियनियुक्ताविविक्खिक्खिगताः सुखया महद्विक्खि मङ्गयुतिका गह्वराशरी  
 महद्विक्खि महानुभावा महद्विक्खि हारविराजितवससः कण्ठगतुक्खियन्नियन्नुयाः अरुपकुलससुगणगल्लवपीठधारियो विचिक्खमालाजरा



रयणांमयस्स कस्स जोयणसहस्सयाहस्स उयरि एण जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जि  
 चा मज्जे अथुत्थं जोयणसएसु एत्थण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा  
 न्नवतीति मस्काय तेण ओमेज्जा नगरा याहि वहा जहा ठहिंठ नयणवसुत्तं तहा न्नाणियसो जाव पफिक्ख  
 वा, एत्थण पिसायाण देवाण पज्जाप्तापज्जाप्ताण ठाणा पणुत्ता, तिसुवि लोगस्स अयसखेज्जाइन्नागे तत्थण  
 यइये पिसाया परिवसति, महिहिंया जहा ठहिंया जाव विहरति । कहिण नत्ते ! दाहिणिप्पान पि  
 इदा पिसायरायाणो परिवसति, महिहिंया जहा ठहिंया जाव विहरति । कहिण नत्ते ! जयुदीवे २  
 सायाण देवाण ठाणा पणुत्ता । कहिण नत्ते ! दाहिणिप्पान पिसाया देवा परिवसति ? गो० ! जयुदीवे २  
 मदस्स पट्टयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स ककस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि  
 एण जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जिप्ता मज्जे अथुत्थं जोयणसएसु एत्थण दाहिणिप्पान

पयं योजनगतं वज्रपित्वा मध्येऽष्टसु योजनक्षतं यत्र पिशाचानां देवानां तिर्येणसुहेयानि भौमेयन्नगरावासक्षतसहस्राणि प्रयत्नीत्याख्यातम् ।  
 पयं योजनगतं वज्रपित्वा मध्येऽष्टसु योजनक्षतं यत्र पिशाचानां देवानां तिर्येणसुहेयानि भौमेयन्नगरावासक्षतसहस्राणि प्रयत्नीत्याख्यातम् ।  
 ते भौमेया नगरा यद्विपुता यद्योपिको प्रवतनवत्क क्षया न्नविषगो यावत्प्रतिरूपाः, यत्र पिशाचानां देवानां वयोसापर्योमानां स्थानानि मध्य  
 स्थानि, त्रिषुपि सोऽन्त्यासुस्येयनां, तत्र यद्वयः पिशाचाः परिवसन्ति मरुतुंका यद्योपिका यावद्विहरन्ति, कालमहाकालौ वात्र द्वौ पिशाचौ  
 न्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः, मरुतुंको मरुतुत्तिकौ यावद्विहरतः । क्व जदन्त । दाहिणास्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि मध्यस्थानि, क्व  
 मदन्त । दाहिणास्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति ? भोतम । जस्युदीये १ मन्वरस्य पर्यतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमयस्य क्षायउ  
 स्य योजनसहस्रास्यसोपम्येक योजनक्षतमवगाह्या पदेक योजनक्षतं वज्रपित्वा मध्येऽष्टसु योजनक्षतं यत्र पिशाचानां देवानां

रा नासुररथोदी पलयवगमालधरा दिव्येण वन्नेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सठाणेण दिव्याए इ  
हीए दिव्याए जूईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए एच्छायाए दिव्याए अक्षीए दिव्येण एरण दिव्याए छेस्साए दसदि  
साट उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तल्य साण२ चोमेज्जाणगरावाससयसहस्साण अस्सिखिज्जाण साण २  
साम्माणियसाइस्सीण साण२ अग्गमहिस्सीणं साण२ सपरिवाराण साण२ अणियाण साण२ अणियाहि  
ईण साण२ आयरस्सुवेवसाहस्सीण अस्सेसि च बल्लण याणमतराण देवाणय देवीणय अहिबच्च पोरेयच्च  
सामिन्न जहिन्त महत्तरगत्त आणार्इसरसेणावच्च कारेमाणा पाळेमाणा महायाहयनहगीयवाइयततीतलताल  
तुक्कियघणमुइणपटुप्पवाइयरवेण दिव्याइ नोगन्नोगाइ नुजमाणा विहरति। कहिण जत्ते ! पिसायाण देवाण  
पज्जप्तापज्जप्ताण ठाणा प०। कहिण जत्ते ! पिसायादेवा परिवसन्ति ? गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए

विचित्रभासासुबुद्धाः कस्याश्चप्रवरद्वकपरिहितः कस्याश्चप्रवरमास्यानुसेपनपरा प्रासुरबोन्द्या प्रस्तम्बवत्सालपरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन मण्डे  
न दिव्येन रपर्वेन दिव्येन वंस्त्रानेन दिव्यया स्वस्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रजया दिव्यया दिव्येनाचिया दिव्येनेति दिव्यया सेदय  
या इव दिव्य उद्योतयन्तः प्रजासयन्तस्ते सव स्त्रेयां २ सीमेयनगरावाप्तसप्तसहस्राको अश्वस्त्रेयानां स्त्रेयां २ सामानिकसहस्राका स्त्रेयां अप्रमद्वि  
पीशां सपरिवारावां स्त्रयां २ अनीकाणां स्त्रया २ अनीकाचिपतीना स्त्रेया २ आम्बरकदेवसहस्राकामन्त्रेयान् बहूना ज्ञानमन्त्रराका देवानां दे  
वोनाम्नाचिपत्यं पुरोवर्तित्वं स्नातित्वं जर्णुत्वा महत्तरकत्वमाश्रेयस्वत्वं सेनापतित्वं क्षुब्धः पातयन्तो महदाश्चरस्यभीतबाहिवलम्भीवत्सालानुदित  
पतद्दददुपदुप्रबाहिसरवेका दिव्यानि प्रोवजोर्वाणि पुष्काजो विहरन्ति । इत्यदन्तः पिशाचाणां देवानां पयोसाययोमाना स्त्रानानि प्रक्षसन्ति क्षान  
दन्तः । पिशाचा देवाः चरिदवन्ति ? कीदन्तः । अन्ता रजप्रजावातः पुनित्वा इवमपक्व काष्ठक पीकलसहस्राकालकोर्म्यं चोचनकृतवत्प्रजापा

रयणामयस्स कस्स जीयणसहस्सयाहस्स उयारि एग जीयणसय उग्गाहिंसा हिठावेग जीयणसय बज्जि  
 ता मज्जे अथसु जीयणसएसु एत्यण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा मोमेज्जा नगरायाससयसहस्सा  
 ता मज्जे अथसु जीयणसएसु एत्यण पिसायाण देवाण ठहिंठे नयणवसथं तथा नाणियघो जाव पक्रिफ  
 नवतीति मरुकाय तेण मोमेज्जा नगरा याहि घटा जहा ठहिंठे नयणवसथं तथा नाणियघो जाव पक्रिफ  
 दा, एत्यण पिसायाण देवाण पज्जाप्पज्जाण ठाणा पक्खता, तिसुवि लोगस्स अयसखेज्जाइनागे तत्यण  
 थह्वे पिसाया परियसति महिहिंया जहा ठहिंया जाव विहरति । काहिण जते । दाहिणिह्वाण पि  
 इदा पिसायराणाणे परिवसति, माहिहिंया महज्जइया जाव विहरति । काहिण जते । जयूहीविं २  
 सायाण देवाण ठाणा पक्खता । काहिण जते ! दाहिणिह्वा पिसाया देवा परिवसति ? गो० । जयूहीविं २  
 मदरस्स पच्चयस्स दाहिणंण इमीसे रयणप्पज्जाए पुठवीए रयणामयस्स ककस्स जीयणसहस्सयाहस्स उवारे  
 एग जीयणसय उग्गाहिंसा हिठावेग जीयणसय बज्जिह्वा मज्जे अथसु जीयणसएसु एत्यण दाहिणिह्वाण

पयैकं योजनमथ वनपित्वा मध्येऽष्टशु योजनक्षतेष्वत्र पिशाचानां देवानां तियगसहेयानि भीमेयजनगरायाससथतवइत्ताणि प्रवन्तीत्याख्यातम् ।  
 ते भीमेया नगरा यद्विपुता यद्योपिको जलमवयव स्तथा व्रक्षितलो यावत्प्रतिरूपाः, यत्र पिशाचानां देवानां पयोसापर्याप्तानां स्थानानि प्रच  
 स्तानि । त्रिषुवि लोकस्यावस्येयज्जार्ण, तत्र यइवः पिशाचाः परियसन्ति मरुद्धिका ययोपिका यावद्विहरन्ति । कासमहाकाली चात्र द्वी पिशाचै  
 न्नी पिशाचरात्रानीं परिवसतः, मरुद्धिकी महायुतिकी यावद्विहरतः । इ प्रदत्त । दाहिणत्वाणां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रचसन्ति, ए  
 मदत्त । दाहिणत्वाः पिशाचा देवाः परिवसन्ति ? गोतम । जम्बूद्वीपे ए मन्दरस्य पवतस्य दाहिणतोऽस्या रत्नप्रतायाः पण्यया रत्नमयस्य कायह  
 स योजनसहस्रयाहस्यसोपर्य्येव योजनक्षतमवगाथा चरैक योजनक्षतं यज्जयित्वा मध्येऽष्टशु योजनक्षतेष्वत्र दाहिणत्वाणां पिशाचानां देवाना



पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय, तेण नवणा जहा  
उहिउ नयणवसुत्तं तहेय चाणियव्वो जाय पफिक्खा एत्यण दाहिणिस्साण पिसायाण देवाण पज्जाप्पज्जा  
महिहिंया जहा ठेहिंया जाव विहरति काले जत्य पिसायहउ पिसायराया परिवसति माहिहिं जाव पन्ना  
स्यग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिवसाण सत्तयह अणियाण सत्तयह अणियाहिउड्डण सोउत्तयह आयर  
स्सदेवसाहस्सीण अन्नेसिच धम्मण दाहिणिस्साण यागमतराण देवाणय देवीणय आहेचत्त जाय विहरति ।  
उत्तरिस्साणं पुच्छा गो० ! जहेय दाहिणिस्साण यत्तव्वा तहेव उत्तरिस्साणपि नत्तर मदस्स पत्तयस्स उत्तरे  
य महाकाले जत्य पिसायहउ पिसायराया परिवसति जाव विहरति एव जहा पिसायाण तहा नूयाणपि

[illegible]

जाय गघष्ठाण नयर इदेषु नागत्तं प्राणियसु इमेणपि धिहिणा ज्ञयाण सुकथपठिऊवा जस्काण पुमान्द  
 माणिन्नदु रस्कासाण श्रीममहाजीमा किन्नराण किन्नरिकपुरुसा किपूरिसाण सप्युरिसमहापुरिसा महोर  
 गाण अडकायमहाकाया गघष्ठाण गीतरङ्गीतजसा जायगीयजसे विहरति-कालेयमहाकाले सुकथपठि  
 ऊवपसुनदेय । अमरवडमानजहे नीमेयतहामहाजीमे ॥ १ ॥ किन्नरिकपूरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा  
 पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण नते । अणवन्नियाण देवाण ठा  
 णा प०, कहिण नते ! अणवन्निया देवा परिचसति गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुठवीए रयणामयस्स  
 ककस्स, जोयणसहस्सबाहस्स उवरि दिठायएग जोयणसय वज्जिन्ना मज्जे अणसु जोयणसएसु अण्य  
 ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसखिज्जा नवणा धाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण जाव पठिऊवा

वाना तथा मूतानामपि पावद्वन्द्ववर्षां नवरन्मिन्द्रपु नानात्वं प्रवृत्तव्यमनेन विचिन्ना दूतात्मा सुकथप्रतिरूपी, यथासा पूषमद्वमाखिज्जो, रच  
 सां श्रीममहाजीमो, बिकराका बिकरबिम्बुसुपौ, किम्बुरुपाकां सत्पुरुषमहापुरुषो मणोरगावामतिथायमहाकावो, गन्धर्वोषां गीतरतिगीतय  
 शाय, पावद्विहरतः । बालसमवाकालः सुकथप्रतिरूपपूषेन्द्राय । अमरपतिमाखिज्जो श्रीमद्यतयामहाजीमः ॥ १ ॥ बिकरबिम्बुसुपौखलु सत्पुरुष  
 एतुतयामहापुरुषः । अतिवायमहाकावो गीतरतिद्योगीतयशाः ॥ २ ॥ विहरति । क्व प्रदत्त । अणवन्निकाणा देवानां स्थानानि मन्त्रानि, क्व  
 प्रदत्त । अणवन्निका देवा परिवसन्ति ? गीतम् । अस्या रयप्रजायाः पायव्या रवमयस्य कायस्य योजनसहस्त्रवाहस्यस्योपरि अयद्यक् योजनमस्य  
 यजयित्वा मध्येष्टु योजनज्ञानेष्टवावन्निकानां देवानां तियणसङ्केयान मयमावासाणसहस्त्राणि प्रवल्तीति मयास्मात् ॥ ते च यावरप्रतिरूपा  
 अत्राणवन्निकाणा देवानां स्थानानि मन्त्रानि । त्रियपि लोकस्यासह्यय मार्गं तथाणवन्निका देवाः परिवसन्ति महादेवा यथा पिच्छावा यावद्विह

पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मस्कार्यं, तेण नयणा जहा ठहिंठे नयणयसत्तं तहेय ज्ञाणियच्चो जाय पफिद्धा पृत्यण दाहिणिस्साण पिसायाण देवाण पज्जप्तापज्जा स्थाण ठाणा पयसत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जाहन्ताणे तत्यण ग्रहत्ते दाहिणिस्सा पिमाया देवा परिवसति मदिहिया जहा ठहिंया जाय विहरति काले जत्य पिमायहउ पिसायराया परिवसति मदिहिय जाव पजा सेमाण सेण तत्य तिरियमसखेज्जाण ओमेज्जा नगरावाससयसहस्साण चउरह सामाणियसाहस्सीण चउरह अम्भामहिंसीणं सपरिवाराण तिरह परिसाण सप्तह अणियाण सप्तह अणिया दाहिणिस्साण सोउसरह अयार स्क्वेवसाहस्सीण अन्नेसिच यत्तण दाहिणिस्साण याणमतराण देवाणय देवीणय अग्रहेअत्त जाय विहरति । उत्तरिस्साण पुक्खा गो० ! जहेय दाहिणिस्साण यत्तच्चया तहेय उत्तरिस्साणपि नवर मदस्स पत्तयस्स उत्तरे ण महाकाले जत्य पिसायहदे पिसायराया परिवसति आय विहरति एव जहा पिसायाण तहा नूयाणपि

तिवमर्हन्त्वानि औमयवननगरावाससहस्साणि प्रवन्तीति मयाक्यातम् । ए औमेया ( इत्यादि ) यथोपिहो प्रवन्मवन्न लोचैव प्रविष्टव्यो वा वरप्रतिरूपा यत्र दाक्षिणात्यानां पित्राणां देवानां यथोपायोमाना त्वानानि प्रक्षमाणि, विद्वपि लोककायक्यपमान एव यद्वहो दाक्षिणा त्याः पित्राणा देवा परिवसन्ति, अर्द्धदेवा यावत्प्रवाचयन्त स्ते सत्र तत्पर्यगच्छेयानां औमयवननगरावाससहस्साणां भक्तानां कामानिच्छाए लीलां चतुर्दशपयमिषीका अपरिवारकां तिसुवा यत्वेवं समानाश्नीधानां समानाश्नीधानां योक्तव्यानामालरक्षदेवदाहकीकालमवा प्य यदूनां दाक्षिणात्यानां कामलक्ष्मणराकां देवानां देवीनां वाचियस्य यानिद्विरति । औत्तरिकाणां यथा नीतम् । यदैव दाक्षिणात्यानां यत्र ज्ञाया यथेवापरिकाया यदि यत्वेदं यन्परका यत्वेदकोष्ठरको महाकालोय पित्रायेन्द्रः पित्राचराना वरियकम्भि यानिद्विरति एवं यथा पित्रा

जाय गघष्ठाण नयन इदं नान्तं प्राणियसु इमेणपि त्रिहिणा नूयाण सुकवपक्रिया जस्काण पुयाजद्  
 माणिजद् रस्काण नीममहाजीमा किन्तराण किन्तराकिपुससा किपुससा सप्युरिसमहापुरिसा महोर  
 गाण अडकायमहाकाया गघष्ठाण गीतरुंगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालियमहाकाले सुकवपक्रि  
 रूयपयसजदेय । अमरघडमाणजदे नीमेयतहामहानीमे ॥ १ ॥ किन्तराकिपुसखलु सप्युरिसेखलुतहामहा  
 पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण जते । अणवन्नियाण देवाण ठा  
 णा प०, कहिण जते । अणयन्निया देवा परिधसति गो० ! इमीसे रयणप्यजाए पुठवीए रयणामयस्स  
 कऊस्स, जोयणसहस्सबाहस्स उवरि दिठायएग जोयणसय वज्जिआ मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य  
 ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसखिआ जवणा धाससयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण जाव पक्रिवा

वाना तथा मूतानामपि यावद्वत्त्वार्थां नवरत्नान्पु नानात्वं प्रवितव्यमनेन विचिन्ता दूताना सुकवपप्रतिक्रिया, यथाणा पूषनद्रुमादिजद्री, रस  
 र्वां नीममहाजीमी, किन्तराया किन्तराकिपुसुपी, किम्पुसपाकां सत्यसुपमहापुसुपी महोरगायामतिकायमहाकापी, गत्यवर्था गीतरुतिगीतय  
 श्वाः, पावहिहरत । कालवमहाकालः, सुकवपप्रतिक्रियापूर्वजद्राव । अमरपतिमाखिजद्री नीमयतयामहाजीमः ॥१॥ किन्तराकिपुसुपीखलु सत्यसुप  
 एतुतयामहापुसुयः । अतिकायमहाकापी गीतरुतिचेवगीयजसा ॥ २ ॥ विहरति । अणवन्नियाण देवाना स्वामानि प्रवृत्तानि, अ  
 नदन्त । अणपक्रिया देवाः परिवसन्ति । गीतम् । अस्या रयप्रजायाः पाथव्या रत्नमयस्य कावलस्य योजनसहस्रयाइत्यस्योपरि अयदेव योजनशतं  
 वज्रपित्वा मध्येष्टु योजनशतं यथावपक्रियाना देवाना तियणसुहेणान मननावासुगतसहस्राणि जवलीति मयास्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपय  
 यथावपक्रियाना देवानां स्वामानि मद्रसन्ति । त्रियपि लोकास्सासत्यय भाग यथावपक्रिया देवाः परिवसन्ति महार्हेका यथा पिशाचा यावद्विह

एत्यण स्युणवन्नित्थिया देवाण ठाणा प०, उयवाएली० समुग्घाएली० सठाणेणली० तत्यण स्युणवन्नित्थिया देवा  
परिवसति महिहििया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा ह्युय दुवे स्युणवन्नित्थिया स्युणवन्ति  
यकुमाररायाणो परिवसति महिहििया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाण दोरहापि दाहिणि  
स्वाण उस्सरिस्वाणय ज्ञाणिया तथा सन्निहियसामाणाणि ज्ञाणियस्वा सगहणि गाहा-स्युणवन्नित्थियपणवन्नित्थिय  
इसिथाइयन्नयथाइएवेव । कदियमहाकदिय कुहकयपयगदेवाय इमे इवा-सन्निहियासामाणा धाडविधाएय  
इसीयइसिथाले ईस्सरमेहस्सरविय हयडसुत्थेविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयन्नयेतहामहासेए पयगेप  
यगपएविय नेयस्वास्याणपुष्पीए ॥२॥ कहिण जते । जोइसियाण देयाण पज्जत्ताणर ठाणा प० ? कहिण जते !  
जोइसिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पज्जाए पुढवीए यज्जसमरमणिज्जाइ नूमिन्नागाठ सत्तणउ  
इ जोयणसए उहु उप्पइत्ता वसुत्तरं जोयणसय धाहत्वे तिरियमसस्विज्जे जोइसविसए एत्यण जोइसियाण

रन्ति । सन्निहितसमानो वाच हावकपक्किक्कम्मावकपक्किक्कराज्जानो परिवसतो जहाइकी यया कासमहाकालो एवं यया कासमहाकालोहोदी दो  
द्विवात्पयो रीत्तारकावाण्ण ( वज्जव्यसा ) भकिता तथा सन्निहितसामानिकयोदपि जदित्तया सङ्गइकिगाथा-सङ्गपक्किक्कयपज्जिका वृचिवादी वे  
वसूतवादी व । कम्पीक्कम्मावकम्पी कोइवहीवेवपत्तक ॥ १ ॥ इम इत्थाः सन्निहित सामानो धावुववात्तययवार्थेपात्त । इत्तरमइदरीकलु जवति  
पुवलोविद्यास ॥ २ ॥ इत्थोहाक्करतिःकलु खेतकप्रवत्ताया मइरस्वेता पत्तकः पत्तकयदोपिच ज्ञातव्या ज्ञानुपुब्बीच ॥ २ ॥ इ भइत्त । ज्योति  
कावा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्वात्मनि प्रवृत्ताभि इ जदत्त । ज्योतिक्का देवाः परिकवन्ति ? जेतत्त । जत्था रज्जवज्जवाः पज्जिक्का ककुत्तजर  
मइत्थादु प्रुविज्जाना स्वप्पवत्तिपोक्कम्मावकम्माव इत्येतत्त योक्कम्माव ज्ञावत्तं विव्वेवत्तंवेवं ज्योतिक्कविव्वेवत्तं ज्योतिक्कावा देवानां विव्वेव

देवाण तिरियमसस्त्रिजा जोडसियविमाणायाससहसा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा अरुक्कयिठग  
 सठाणसठिया सहफालियामया अड्ढगयमुच्चियपहसियाडव यिविहमणिक्कणरयणन्नत्तिचिन्ता वाउठुत  
 यियजयेजयतीपन्नागाच्छुभाहच्छत्तकलिया तुगा गगनतलमहिहधमाणसिहरा जालतरयणपजरुम्मीलियस्स  
 मणिक्कणगयून्नियागा वियसियसयपत्तपोद्दरीया तिलगरयणरुक्कचिन्ता नानामणिमयदामालकिया अ्यतो  
 द्यहि च सरहा तवणिज्जकइलवालुयापत्त्यन्ना सुहफासा ससिरीयरुक्का पासाईया ठरिस्त्रिजा अ्यजिरुक्का  
 पक्रिरुक्का एत्थण जोडसियाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पक्खत्ता, तिसुवि लोगस्स अ्यसरेज्जइन्नागे तत्थण दहवे  
 जोडसिया देवा परिवसति तज्जहा—यहस्सईचदासूरासुक्कासणिच्छुराज्जधूमकेतुवुधाअ्यगारगा तत्ततवणि  
 ज्जक्कणगवक्का जेगहा जोडसमि चार चरति कंसुयगतिरडया अ्यठायीसइविहाय नस्सक्का देययगणा ना  
 णासठाणसठियाइय पचवन्ताठु तारयाठु ठवियलेस्साचारिणो अ्यविस्साममळलगई पत्तेय णामकपगज्जि

सुख्ययानि प्रवनावाससुवसइत्ताणि सबन्नीति मयाक्यातम्, तानि विमानानि अद्भुतपितृवत्स्थानस्थितानि त्वेस्सटिक्कमयानि अद्भुतलोत्त  
 तप्रसूतप्रजासितानि विविचमणिकमबरज्जत्तिविद्याणि कालोदुपुतविजयवेद्यन्तीपताकस्सत्तातिच्छत्रकलितानि तुङ्गानि गगनतलानुसिखिच्छि  
 राणि आसाभररवण्णरौन्मीसितमिध मणिकमबसूपिक्कानि विवसितस्थानपत्रपुण्डरीकातिलहराईचन्द्रनिद्याणि नागामणिययदाभालदुत्तानि  
 यत्तद्विहय सत्त्वाणि तपनीयसचिचरवाङ्मयाप्रलटानि अन्नपष्ठाणि सत्रीकरुणाणि प्रासादीयानि द्योनीयानि अन्निकुपाणि प्रतिकुपाणि अन्न ल्यो  
 तिकाणां पर्वांपर्याप्ताना स्वामानि प्रज्जप्ताणि त्रिद्युपि लोकाव्यासुख्येय ज्ञान तत्र बहवो ल्योतिक्कदेवाः परिवसन्ति तद्यथा—युष्मत्पथय दम्भाः  
 सूर्यो ब्रुवाः अनेयरा राइवः कतवो सुपा अङ्गारवासासुवपनीयवमबवर्त्ता य यथा ल्योतिक्कदे वार चरन्ति केतवो गतिरतिक्का अष्टाविष्ठातिविचय

यच्चिधमउद्गा महिहिंया जाव प्यनोसेमाणी तेण तत्य साण२ विमाणायाससयसहस्साण साण२ सामाणि  
यसाहस्सीण साण २ छग्गमहिंसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ छणियाण साण २ छणि  
याहिंघईण साण२ छायरक्कदेवसाहस्सीण छ्येसिं च बल्लण जोहसियाण देवाणय देवीणय छ्याहेवञ्च जाव  
विहरति च्चदेमसुरियाय एत्थ दुवे जोहसिंदा जोहसियरायाणो परिवसति महिहिंया जाव पनासेमाणा ते  
ण तत्य साण २ जोहसियविमाणायाससयसहस्साण चउत्तह सामाणियसाहस्सीण चउत्तह छग्गमहिंसीण  
सपरिवाराण तित्तह परिसाण सत्तह छणियाण सत्तह छ्याणियाहिंघईण सोउत्तह छायरक्कदेवसाहस्सी  
ण जोहसियाण देवाणय देवीणय छ्याहेवञ्च जाव विहरति । कहिण ज्ञते ! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता२  
ण ठाणा प० ? कहिं ज्ञते ! वेमाणिया देवा परिग्रसति ? गो० । इमींसे रयणप्पन्नाए पुठयीए बहुसमरम

(अष्टविंशतिवल्गाका अत्रिचिन्ताद्या सोऽवप्रसिद्धा) नञ्चा देवताया मानासत्यामसत्त्वित्वाद्य पञ्चवर्गोत्सारता (कारायत्तेवर्त्ति) अवस्थितत्वेत्या  
चारिको ऽविक्राममवहसगतिताः प्रत्येकं मानाहुमवकटितविष्णुमुकुटा मङ्गद्विका यावत्प्रजासयन्त सो तत्र स्वर्गो २ विमानावासव्यवहाराका रवे  
र्वा २ सामानिकवहाराकां स्वर्गो २ अयमद्वितीयोऽसपरिवाराका स्वर्गो २ पयदा स्वर्गो २ अनीकाना स्वर्गो २ अनीकाधिपतीना स्वर्गो २ आत्तर  
सुखदेववहाराका अन्ध्यान्व बहूनां ज्योतिष्काकां देवानां देवीनाम्नाधिपत्य पुरोवर्तित्व यावद्विहरन्ति सूर्यान्वन्वसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केभ्यो  
ज्योतिष्करात्राभौ परिवसतः मङ्गद्विकौ यावत्प्रजासयन्तौ तौ तत्र स्वर्गो २ ज्योतिष्कविमानावासव्यवहाराकां चतुर्धौ सामानिकवहाराका चतु  
र्धौमयमद्वितीयोऽसपरिवाराकां अन्ध्यान्व यावत्प्रजासयन्तौ तौ तत्र स्वर्गो २ ज्योतिष्कविमानावासव्यवहाराकां चतुर्धौ सामानिकवहाराका चतु  
र्धूनां देवाना रवीनाम्नाधिपत्य यावद्विहरतः । अथ अद्वय । वेदानिकाकां देवाना पञ्चोत्सापञ्चोद्गाकां कार्याणि प्रकृत्यानि अथ अद्वय । वेदानिका

निज्जातं नमिन्नागात् उह चंदिमसूरिगह्नकस्ताराकवाण यत्तद्व ज्ञोयणसमाह यत्तद्व ज्ञोयणसहस्सा  
 इ यत्तगात् ज्ञोयणकोलीत् यत्तगात् ज्ञोयणकाकाकोलीत् उह दूर उपपइत्ता एत्यण सोहम्मीसाणसणकु  
 मारमाहिदयन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चाणश्चुयगेविज्जाणत्तरेसु तत्य एत्यण वेमाणि  
 याण देवाण घउरासीडविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईजंयसहस्सात्ते तेवीस विमाणा हवतीतिमस्काय तेण  
 विमाणा सत्तरयणामया अच्चा सण्हा लठा मठा नीरया निम्मळा निप्पका निक्काकळ्ळाया सप्पहा  
 सत्तिरीया सउज्जीया प्रासादीया वरिसणिज्जा अज्जिक्का पफिरुक्का इत्यण वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप  
 ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जिज्जागे तत्यण वंहवे वेमाणिया देवा परिवसति त०-सोह  
 म्मीसाणसणकुमारमाहिदयन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चाणश्चुयगेवेज्जाणत्तरेववाडया  
 देया तेण मियमहिसवराहसीहत्तगलदहुहयगयवडुनुयगस्सगउसन्नकविठिमपागक्रियचिधमउळा पसिठिल

देवाः परिवसन्ति । गौतम । अस्या रत्नप्राया पृथिव्या यत्तुसमरमणीणद्वूनिप्रागादूरे बन्धूययइमन्नताराकपादा वट्टुनि योजनशतानि व  
 दूति योजनसहस्राण यत्तु योजनकोटीकोट्य लसु दूरमुपत्य। व सूर्यमैशानसनस्तुमारमाहन्त्रद्रव्जलाभकशुक्रवएत्तारानठ  
 प्राबतारखाण्णुत्तरेवयवानुत्तरपु तत्रेतेपां वेमानिकाना देवानो बहुरक्षीतिविमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतीवमानानि सप्त  
 क्षीति मयात्यासत, तानि । वमानानि सर्वरत्नयानि अन्धानि लघानि पृष्ठानि सृष्टानि धोरक्षीति निर्मलानि निष्कृानि निष्कृत्त  
 च्छायानि सप्तनापि सीरोत्तानि प्रासवीयानि वसान्नीयानि चत्तिरूपाणि प्रतिलूपाणि अत्र वेमानिकाना देवाना पयोपापयासाना स्थानानि प्रप्र  
 तानि, त्रिपि लोबसाधयेयं प्रागं तत्र यवो वेमानिका देवा परिवसन्ति तद्यथा-सीर्यमैशानसनस्तुमारमाहन्त्रद्रव्जलाभकशुक्रवएत्तारान



यच्चिधमउक्ता महिहिंया जाय प्यन्नासेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणायाससयसहस्साण साण २ सामाणि  
 यसाहस्सीण साण २ अग्गमहिंसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणि  
 याडियइण साण २ आयरस्कदेवसाहस्सीण अक्खोसि च यत्थण जोडसियाण देवाणय देवीणय अ्याहेवच्च जाय  
 विहरति चविमसरियाय एत्थ दुवे जोडसिवा जोडसियरायाणो परिवसति महिहिंया जाय पन्नासेमाणा ते  
 ण तत्थ साण २ जोडसियविमाणायाससयसहस्साण अउरह्म सामाणियसाहस्सीण अउरह्म अग्गमहिंसीण  
 सपरिवाराण तिरह्म परिसाण सत्तरह्म अणियाण सत्तरह्म अणियाहिंयइण सोलससह्म आयरस्कदेवसाहस्सी  
 ण जोडसियाण देवाणय देवीणय अ्याहेवच्च जाय विहरति । कहिण जत्ते ! वेमाणियाण देवाण पज्जस्ता २  
 ण ठाणा प० ? कहिण जत्ते ! वेमाणिया देवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए बहुसमरम

(अष्टाविद्यवित्तस्याका अन्नविमाद्या लोकाप्रसङ्गा) मत्तया देवगणा जालासल्यामसत्त्वताय पण्यवर्गोत्तारका (स्वारायवेसर्वादि) अन्नस्त्वित्तस्यया  
 चारितो ऽविद्याममवहसमविकाः प्रत्येक नामगुणप्रवर्तितविभूमुकुटा मज्झहिंका वासवप्रजासयस्य स्ते तत्र स्वेषां २ विमाणावासयवहस्साकां रवे  
 पा २ सामानिकसहस्साकां स्वेषां २ अयमद्वितीका सपरिवाराका स्वेषा १ पयसां स्वेषा २ अनीकाणा स्वेषा २ अनीकापियतीना स्वेषा २ आत्तर  
 इकदेवसहस्साकां अन्वेषाच्च अङ्गनां ज्योतिषाकां देवानां दधीमाब्बाच्चिपत्यं पुरोवत्तित्त पाकादिहरन्ति धूयोचन्द्रमसी आच ह्री ज्योतिषेन्द्रो  
 ज्योतिषरात्राभौ परिवसतः, मरुद्विहो वावटप्रजासयस्यन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिषविमाणावासयवहस्साकां अतुषोर सामानिकसहस्साकां अतु  
 र्गोमयमद्विपयोकां सपरिवाराकां अयाकां पयसां सप्तानामनीकानां समानामनीकापियतीनां वीरुकाजालात्तरकदेवसहस्साकां ज्योतिषाकान्त्वेषा  
 अङ्गना देवाना दधीमाब्बाच्चिपत्यं पाकादिहरतः । अ अदस्य । वेमाणिकाकां इमाना पयोस्तायवर्गोत्तारकां ज्ञानानि प्रवृत्तानि अ अदस्य । वेमाणिका

णिज्जाते नूभिजागाते उहु चंदिमसूरियगहनस्कसताराकवाण बल्लइ जीयणसयांइ वज्जइ जीयणसहस्सा  
 इ वज्जगाते जीयणकोफीते वज्जगाते जीयणकाफाकोफीते उहु दूर उप्पहत्ता एत्थण सोहम्मीसाणसणक  
 मारमाहिद्वयजलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चुयगेविज्जाणत्तरेसु तस्य एत्थण वेमाणि  
 याण देयाण चउरासीहविमाणसयसहस्सा सत्ताणउर्हन्नवेसहस्साते तेवीस विमाणा हयतीतिमस्काय तेण  
 विमाणा सत्तरयणामया श्चक्का सयहा लठा मठा नीरया निम्मळा निप्पका निक्ककच्छाया सय्यहा  
 ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा श्चनिरुवा इत्थण वमाणियाण देवाण पज्जात्ताप  
 ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स श्चसखेज्जइन्नागे तत्थण वहन्ने वेमाणिया देवा परिवसति त०—सोह  
 म्मीसाणसणकुमारमाहिद्वयजलोगलतगमहासुक्कसहस्सारश्चाणयपाणयश्चारणश्चुयगेविज्जाणत्तरेववाड्या  
 देया तेण मियमहिसयराहसीहल्लगलदहुहयगयवइन्नयगखगउसन्नकयिफिमपागणियचिधमउम्मा पसिढिल

देवाः परिवसन्ति । गौतम । अस्या रत्नप्रप्ताया पृथिव्या यदुत्तरमरमणीयात्तून्निजागवूरे बल्लसूययइन्नयवाराकपावा यदूनि योजनसप्तानि य  
 दून् योजनसहस्राणि यदूयो योजनकोटीबोत्थ ऊरे दूरमुत्पत्त्या सौपर्येक्षामसुनस्तुमारमाश्चन्द्रप्रज्ञाताः शशुषसहस्रारान्त  
 प्रावतारवाप्यतत्रैयकानुत्तरं तत्रैतथा येमानिकामा देवानां चतुरशीतिविमानगतसहस्राणि सप्तमयतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि त्रय  
 क्षीति मयाम्यातम, तानि विमानानि सपर्यवमवानि शब्दानि शब्दानि लघानि पृष्ठानि भूराणि नीरजांसि निर्मलानि निष्पद्मानि निष्कण्टक  
 ख्यायानि सप्रभावि सोद्योतानि प्रासादीयानि वृक्षानीयानि शान्तिरूपाणि अथ येमानिकाना देवानां पर्याप्ताप्याप्तानां स्वामानि प्रप्र  
 सानि, यियपि लोबत्वासह्येयं ज्ञानं यत्र यद्वो वेमानिका देवाः परिवसन्ति तथाया-सौपर्येक्षामसुनस्तुमारमाश्चन्द्रप्रज्ञाताः शशुषसहस्रारान

वरमउठतिरीरुघारिणो धरकुललुञ्जोद्वयाणणा मउठविस्तरिया रक्षाजा पउमप्पहगीरा नासेया सुहअखुग  
 घफासा उत्तमवेडविणो पवरवत्थगधमस्त्राणुलेत्रगधरा महिद्विया महज्जुडया महायसा मठह्ठला महानुजा  
 गा महासोरका हारविराहुययत्था कलगतुक्रियत्रियनुया ख्यगदकुलमठगलतलकखपीठघारी विचिस  
 हल्यानरणा विचिसमालामउलिकस्त्राणपवरवत्थपरिहिया कस्त्राणगपवरमस्त्राणुलेत्रणा नासुरयोदो पउवय  
 णमालघरा विस्सेण वत्तेणं विस्सेण गधेण विस्सेण फासेण दिस्सेण सधयणण दिस्सेण सठाणेण दिस्साए इहीए  
 हिस्साए जुईए जुईए पन्नाए दिस्साए ख्यायाए दिस्साए असीए दिस्सेण तेएण दिस्साए लसाए दसदिचाने ल  
 ज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्थ साण २ विमाणावाचसयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण सा  
 ण २ तावहीसगाण साण २ लोणपाळाण साण २ ख्यग्गमाहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण

मयावतारकापुतयेवकानुपरोपपातिका दवा लोच सुगमहिपवराहसिंहकनकतदुरदपणवपतिपुत्रगलपुत्रवमाङ्गुविदिमङ्गुमुकुटाः प्राङ्गियित  
 वरमुकुटाकिरीटधारिको वरबुधलाघोतितामना मुकुटदीर्घाशिरवा रत्नाजाः पट्टप्रवगीरा प्रास्तराः सुवस्त्रगन्धस्पर्शा वस्त्रमङ्गुविक्षा प्रवरवका  
 न्यमात्मानुत्पन्नवरा महद्विका महापुष्टिका महायक्षस्य महद्वला मन्त्रानुवावा महेष्टास्त्रा हारविराजितकङ्कः कटकुटितलन्वितनुवा कङ्कुर  
 वरमस्तवुत्तवदतलकपीठधारिको विविधहस्ताभरका त्रिविधमातामहीलिकस्त्रावकाप्रवरकपरिहृताः कल्पावकाप्रवरनास्यानुत्पन्ना आसुकोन्म  
 प्रप्रवा दिव्या व्यापया दिव्येनाचिवा दिव्येनैतेन दिव्यया लोहपया हस्त विभ्र तद्योतयन्तः प्रभाकथन्त को लव रवेको २ विज्याभावालकतलकहस्ता  
 यो स्वेवा २ बालानिकलहस्ताकां कल्पा २ चापविधकाणा कल्पा २ कोकयाजानां स्वेवा २ अयनविचीकां अपरिवाराकां रवेका २ पक्वदी रवेका २

२ स्थणियाण साण २ स्थणियाहिब्रईण साण २ श्यायरस्कदेवसाहस्सीण छान्नेसिं च यत्तण वेमाणियाण  
 देवाण देधीणय श्याहेयच्च पोरैयच्च सामित्त जहित्त महत्तरगत्त श्याणाहसरसणावच्च कारेमाणा पालेमाणा  
 महयाइयनहगीयवाइयततीतलतालुतुनियघणमुइगपफुप्पवाडयरवेण दिव्वाइ जोगभोगाइ जुजमाण विह  
 रत्ति । कहिण भत्ते । सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिण भत्ते ! सोहम्मगदेवा परिवससति ?  
 गो० ! जयूदीवे २ मदरस्स पख्यस्स ठाहिणण इमीसे रयणप्पत्ताए पुठवीए बज्जसमरमणिज्जाए नूभिन्ना  
 गाए उहु चदिमसूरियगहगणनस्कत्तताराण बज्जणि जीयणसयाइ बज्जणि जीयणसहस्साइ बज्जणि जीयण  
 सयसहस्साइ बज्जगाए जीयणकोफीए बज्जगाए जीयणकोफाकोफीए उहु दूर उप्पडत्ता एत्थण सोहम्मो ना  
 म कप्पे पत्तसे, पाचीणपफीणायायते उदीगठाहिणविच्छिन्ने अथचदसठाणसठिए अच्चिमालिन्नासरासिथक्का

पत्तोक्कानो स्वया २ पत्तोक्कानो स्वया २ आत्तरत्तवदवसइत्थाया अत्थेया न बज्जानं वेमाणिकामां देवानां न दवीनां वाधिपत्त्य पुरोवर्त्तते  
 त्वं स्वामित्वं जतुत्वं महत्तरकत्त्वमाद्येयुरसेनापमित्तव जुब्बन्तः पालपत्तो विहरन्ति महत्ताइतत्त्वणीतत्ताविज्जत्तत्तीतत्तासत्तुटित्तयनसुवक्कपटुप्रभा  
 वित्तरदेव दिव्यानि मागजागानि पुक्कानो विहरन्ते । अ जत्त । सोपमकदेशना पयोत्तापयोत्ताना स्वामानि प्रप्तमानि, अ जत्त । सोपम  
 कदयाः परिवसन्ति ? सीतम । अत्थूत्ताप २ मत्तरस्य पर्वतस्य दासिबतो ऽस्या रत्तप्रजायाः पापिथ्या यदुसमरमणीपादुसूमिभागादूर्ध्वं अत्तसूय  
 पगसमत्ततारासूयेन्या बज्जनि पात्तनसुत्तानि बज्जनि योजनगतसइत्थावि बज्जनि योजनगतसइत्थावि यत्था योजनकोट्या बज्जो योजनकाटीकोट्य  
 ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्त्याय सोपमे नाम कत्थ प्रप्तं प्राचीनप्रतीचीमायतमटोचोनदाकणविकीर्णं अहुअत्तसत्थानसंस्थितमभिर्मोत्ताजासारांशयच्छोत्रं अस  
 वयया पोत्तनकोट्योऽसवयेया योजनकोटीकोट्य आयाभविक्कत्ताप्यामससयेया यात्तनकोटीकोट्यः परिवपथ सर्वत्रमय मच्च पावरप्रतिरूप यथ

ने असखेज्जात जीयणकोहीत असखेज्जात अयामविक्रनेण असखेज्जात जीयण  
 कोहीत परिक्रयेण सधुरयणामए अष्टे जात्र पक्रिये तत्यण सोहम्मगदेवाण यहीस विमाणायास  
 सयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा सधुरयणमया अष्टा जात्र पक्रिया तेसिण विमाणाण यज्जा  
 मज्जदेसजाए पचयन्सएया पयसा, त०—असो गवन्सए सतवन्तवन्सए चपगवन्सए धूयवन्सए मज्जे तत्य  
 सोहम्मवन्सए तेण वन्सया सधुरयणमया अष्टा जात्र पक्रिया, एत्यण सोहम्मगदेवाण पज्जासा २ ण  
 ठाणा ५०, तिसुवि लोगस्स असखेज्जातजागे तत्यण यदेवे सोहम्मगदेवा परिवससि महिहिया जात्र पज्जा  
 सेमाणा तेण तत्य साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ अगमहिहीण साण २ सामणिमयसहस्सी  
 ण एव जहेव ठहिहियाण तहेय एतेसिपि भाणियस जात्र अयरकंदेवसाहस्सीण अक्केसि च यन्सण सोह  
 म्मगकप्पयासीण वेमाणिआण देवाण देवीणय अहेवसु पोरियसु जात्र विहरति । सक्के इत्य देविदे देव

सोचमबदेवानो इति ब्रह्मिनानाससुतसुखानि प्रवन्तीति मयाक्यातम्, तानि विमानानि सुवरजजयानि जन्मानि यावत्प्रतिरूपाणि तथा वि  
 मानाना बहुमध्यदेशमानस पंचावतंसका प्रकृतास्तथाया-ब्रह्मोकावतंसकः कामपर्वोपतलबलस्यकावतसहस्रतावतंसको मध्ये तत्र सोचमवतंसकको  
 वावतंसका सुवरजजया जन्मा यावत्प्रतिरूपाः यत्र सोचमवदेवानो धर्मोपापयोसानां स्वानानि प्रकृतानि, चिद्विपि लोकात्कावयेयं ज्ञान तत्र  
 ब्रह्मः सोचमबदेवा परिवर्तन्ति जहन्ति का यावत्प्रप्रासयन्त एत तत्र स्वर्गो २ विमानावातसहस्रकाकां स्वर्गो २ अयमहिहीको स्वर्गो २ यज्जा  
 निकररलाधानेन ब्रह्मोत्पदानां तदेवैतवानपि प्रकृतस्य यावत्प्रालम्बदेवसहस्रकाकाजन्मेवो ५ यन्सुनी सोचमवत्यवापिना देवानां देवीनां  
 पांचपत्नं यावद्विहरन्ति । ब्रह्मोत्प देवज्जो ईश्वरकः परिवर्तन्ति जन्मगतिः सुरंदरः जगज्जगुः कलकाकोककता यावत्प्रालम्बो इति ब्रह्मोत्पदीति

राया परिव्रसह वज्रापाणी पुरंदरे सयक्ताउ सहस्सस्के मधव पागसासणे दाहिणहुलीगाहिचई धत्तीसधिमा  
 णावाससयसहस्साहिचई एराधणवाहण सुरिदे श्रयवरवत्यधरे श्यालइयमालमउठे नवहेमचाचिचिचधंमल  
 कुन्तलधिखिह्जामाणगठे महिहिण जाय पन्नामेमाणे सेण तत्य धत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरा  
 सीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोमपाळाण अठरह श्रगमहिंसीण सपरि  
 धाराण तिरह परिमाण सत्तरह श्रणियाण सत्तरह श्रणियाहिचईण चउरह चउरासीण श्रायरस्कदेवसाह  
 स्सीण छन्तेसि च वज्जण साहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय श्राहेचच्च पोरिवच्च कुल्लमाणे  
 जाव विहरति । कहिण जत्ते । ईसाणगदेयाण पज्जसापज्जाणा ठाणा ५० ? कहिण जत्ते । ईसाणगदेया परिच  
 सति ? गो० ! जयूदीधे २ मदरस्स पय्यस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पनाए पुठ्ठीए यज्जसमरमणिजाए चू  
 मिन्नागाए उहु चदिमसूरियगइगणनस्कत्तताराकवाण यत्तइ जीयणसयाइ यत्तइ जीयणसहस्साइ जाय

पति द्विविज्जहिमानावाचसुत्तसहस्राधिपति रेरवणय । इतः सुरेग्वीउरवोम्यरवणपर बालवित्तमालमकुटी नवहेमचाचिचिचधंमलकुणठलविलित्य  
 मानगठो महिदिबो यावदप्रज्ञासयस लव द्विविज्जहिमानावाचसुत्तसहस्राणा चतुरस्सीत्या । सामानिकसहस्राणा अपविशरसहस्राणानां प्रायविज्ज  
 कदेवाना चतुर्वा लोकापणानां अष्टानामधमसिद्धिपीडां सपरिवाराणां तिसुवा पर्यहा समानाममीकाना समानाममीकानां चतुषा चतुरस्सी  
 त्यास्सरसहदेवसहस्राणा अग्रेयां च यद्गुनां सोपमं सत्यवासिद्धानां देवीना चाधिपत्य गुणस्य लपन् यावद्विहरति । इ प्रदत्त । ईसाणगदेयानां प  
 र्याप्तापर्याप्ताना स्थामानि प्रज्ञप्तानि इ प्रदत्त । ईसाणगदेयाः परिवर्तनाः ? गौतम । अम्यद्वीप द्वीपे मन्दरस्य पवतस्योत्तरतोल्याः रवप्रभायाः प  
 यित्वा यशुसमरमणीयावुप्सुनिजानादूर्वे चन्द्रस्यग्रहगणकचतारारूपस्यो यद्गुनि योजनसहस्राणि यद्गुनि योजनसहस्रहस्राणि पाठवुत्पत्त्याश्रया

उप्यइहा एत्यणं ईसाणे नाम कप्पे पक्खे, पाट्टणपणीणायए उदीणवाह्विणविच्छिन्ने एव जहा सोहम्मे जाव पणिसुक्खे तत्यण ईसाणगेदेवाण अठ्ठाथीस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकायं तेण विमाणा सव्व रयणामया जाव पणिरुद्धा, तेसिण बज्जमज्जेदेवताए पच थानिसगा पक्खत्ता, अक्खवणिसए फलिहवणिसए एत्यण ईसाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पक्खत्ता । तिसुवि लीगस्स असखेज्जहन्नागे सेस जहा सो हम्मगेदेवाण जाव विहरति, ईसाण इत्य देवेद देवराया परिवसति सुलपाणी उसन्नयाहणे उप्परहुलो गादिवई अठावीसविमाणावासतयसहस्साहित्रई अरयथरयत्यधरे सेस जहा सक्खस्स जाव पच्चासमाने तस्य अठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण असीतीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण खउएइ लीगपालाण अठ्ठएइ अगमहिसीण सपरित्राराण तिरएइ परिसाण सव्वएइ अणियाण सव्वएइ अणि

नाम कएय प्रवृत्तं, प्राचीनप्रतीचीनायत मुत्तरदर्शिविच्छिन्नमेव यथा सीधर्को यावत्प्रतिकृप तत्रेद्याल्लभानां दवानां बहुविधिति विंशतिमात्राव द्यतसहस्रादि प्रवृत्तात्याख्यात तानि विमानाग्न चरकस्मयानि यावत्प्रतिकृपाव तेषा बहुमध्यदद्यामाने पञ्चावतसुखाः प्रवृत्तास्तथा-यद्वा वतसुख स्टाटिकावतसुखो यावत्सुखपाठसुखो भव्ये यथानावतसुख तावत्तसुखाः सर्वरजसया यावत्प्रतिकृपा यत्रद्यामानां दिवानां पयोमापयो मग्ना स्वानानि प्रवृत्तानि, विद्याय साकाशक्येपलाग होवं यथा सीधमकदंबराया यावत्तुहुरन्ति । इत्थानद्याव इत्येभ्यो देवराजः पारिवर्तित इत्य पाणिनृपप्रवाहन चराइतोकावपति रथाविद्यतिविमानावासतयसहस्रादिपति चरकोभ्यश्चकचरः स्वर्ग यथा चकच (चक्रवर्ती) तथा या पि) यावत्प्रवाहवत्तथाहाविद्यतिविमानावासतयसहस्रादि भव्यीतिः यथानिचकचरकावो यथार्थकच चार्थविद्यमानां यत्तुर्गो कोकपाजानां च

याहिर्वईण चउरोह सुसीतीण आयरकदेयसाहस्सीण अन्नेसि च यत्तण इंसाणकप्पयासीण वेमाणियाणं  
 देवाण य देवीण य आहंयच्च पोरिवच्च कुत्तमाणे जाय त्रिहरड, कहिण जते । सणकुमारदेवाण पज्जता  
 पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिण जेत । सणकुमारा देवा परिचसति ? गोयमा । साहम्मस्स कप्पस्स उ  
 प्पिं सपस्सि सपप्फिदिसि यज्जइ जोयणाइ यत्तइ जोयणसयाइ यत्तइ जायणसयसइस्साइ यज्जगानं जोय  
 णकोप्फीत्तं यज्जगानं जोयणफोप्फाकोप्फीत्तं उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पणत्ते । पाईण  
 पप्फीणायए उदीणदाहिणयिच्छिन्ने जहा सोहम्म कप्पे जाव पप्फिक्खे, एत्थण सणकुमाराण देवाण वारस  
 विमाणायाससयसइस्सा हयतीति मरुक्काय, तण विमाणा सत्तरयणामया जाय पप्फिक्खया तेसिण विमाणाण  
 यज्जमज्जेदेसत्तागे पच यन्तिसगा पणत्ता, तजहा-अस्सागयन्तिसए सत्तययन्तिसए चपगवन्तिसए चूयवन्ति

इमानमप्रमद्विपीका उपरिवाराकां तिसुवा पयवीं समानामनीकानां वतर्वां चतुरशीतिसामानिकसइस्साका मन्थेया च  
 यद्भूता बीद्यामबल्यवासिदेवानां इवीना आपिपत्त्यं पुरावर्तित्वं मुशव्यावाहुरति । क्व जवन् । समरकुमाराकां देवानां पयोमापयान्तां स्वाना  
 नि प्रपन्नानि क्व जवन् । समरकुमारदेवाः पोरिवसन्ति ? गौतम । सोपमस्य कल्पस्यापरि सपलं समतिदिन् यद्भूतिं पाजमानि यद्भूतिं योजमद्य  
 तानि यद्भूतिं याजमद्यतसइस्साणि यद्भूता योजमकाटोकाट्यं कल्लं दूरमुत्पत्त्या च समरकुमार नाम कल्पं प्रपन्नं, प्राचीनप्रतीची  
 मायतमुत्तरदर्शनावस्तीर्थे यथा सोपमं बल्यो यावत्प्रतिकूपः तत्र समरकुमाराका वज्रानां दादशानिमानावासज्जतसइस्साणि जवन्तीति मयाख्या  
 तम्, तानि विमानानि सुवरत्नमयानि अख्यानि यावत्प्रतिकूपाणि तेषां विमानानां मण्ये यद्भूमज्जदेवाणाम् पञ्चावत्सुखाः प्रपन्नान्ताणया-चञ्चा  
 कावत्सुका यत्तपयोवत्सुकावत्सुका यत्तावत्सुको मण्यं तत्र समरकुमारावत्सुकां स्थावत्सुकाः सुवरत्नमया अख्या यावत्प्रतिकूपां सुवत्सुका



उप्यइहा एत्यण ईसाणे नाम कप्पे पत्तत्ते, पाट्टणपणीणायए उदीणवाहिणविष्कुन्ते एव जहा सोहम्मे जाय पत्तिसुखे तत्यण ईसाणगदेवाण छुठावीस त्रिमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय तेण विमाणा ससुरयणामया जाय पत्तिसुखे, तेसिण भज्जमज्जदेसनाए पच यत्तिसगा पयाप्ता, स्युक्कवत्तिसए फलिहवत्तिसए एत्यण ईसाणग देवाण पज्जप्तापज्जासाण ठाणा पयप्ता । तिसुवि लोगस्स असखेज्जज्जगे सेस जहा सो हम्मगदेवाण जाय विहरति, ईसाण इत्य देविद देवराया परिवसति सुलपाणी उसन्नयाहणे उत्तरहुली गाहिवइ छुठावीसविमाणावाससयसहस्साहिचइ स्युरयवरयत्थधरे सेस जहा सक्कस्स जाय पन्नासमाने तत्य स्युठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण स्यसीतीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए ताथप्पीसगाण चउरह लोगपालाण स्यउरह स्यग्गमहिंसीण सपरित्थाराण तिसइ परिमाण ससुरह स्युणियाण ससुरह स्युणि

नाम कर्त्तव्यं प्रवृत्तः । माचीनप्रतीचीनायत मुत्तरहद्विचिक्कीक्कमेव यथा सौचर्मा यावत्प्रतिकल्पं तत्रेद्यान्तानां इदानीं कदाविद्यति विमानावाह  
 द्रतसइहाहि प्रवन्तात्यात्मात तानि विमानान् सबरजसयानि यावत्प्रतिकल्पात् तेवा अनुमन्यदक्षमाण पन्नासतयकाः प्रवृत्तास्तथा-भट्टा  
 वतसक स्फटिकावतसको यावत्सुखयावतसको मध्ये भयानावतसक कावत्तसकाः सर्वरजसया यावत्प्रतिकल्पा कदाचित्तातो दिवाना पयोमापयो  
 माता स्नानानि प्रवृत्तानि, त्रिवर्षि लोकासुखेयत्तान् श्रेयं यथा सौचमकदेवतां यावत्तुहरन्ति । इत्यानन्ताव रवेन्द्रो देवराजः परिवसति सुल  
 पावत्तुवन्नवाह्न कतराहलोकादिपति रहाविद्यतिविमानावाहयतसइकाधिपतिः करकोज्ज्वलकथरः श्रेयं यथा कच्छल (कच्छलतोत्ता सखा वा  
 पि) यावत्तमाहवन्तहाविद्यतिविमानावाहयतसइकाधर्म्मनीतिः कानानिबसइकाकां यथाकथं यावत्तिल्लानां अनुदी लोकापज्जानो व

दयक्रसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिशसड श्रययवर  
 वत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अठएह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय  
 साहस्सीण चउएह सत्तरीण श्रायरकदेवसाहस्सीण जाव विहरड । कहिण जत । बंजलोगेवेवाण पज्जा  
 हा २ ण ठाणा पवत्ता । कहिण जत । बंजलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा  
 ण उप्पि सपरिक सपन्निदिसि बल्लइ जोयणाइ जाव उप्पडत्ता एल्लण बंजलोए नाम कप्पे पाइणपणीणा  
 यत्ते उदीणदाहिणविच्छिन्ने परिपुन्नचवसठाणसठिए अस्सिमालीनासरासिप्पन्ने अयसेस जहा सणकुमा  
 राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वरुसगा जहा सोहम्मस्स वरुसया नवर मज्जे इत्य बंजलोयव  
 क्रसए एल्लण बंजलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तेहेव जाव विहरति । बन्ने इत्य देविदे देवराया परिवस  
 इ श्रययवरयत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउएह विमाणावाससयसहस्साण सठिए

मकुमारे कसपे पावहिइरति नवरमहाना विमानावासगतसइस्साका वसतिः सामानिकसइस्साका वतुणा ( वतुनेकाना ) सप्तस्वात्मरक्षदेवसव  
 स्त्रावां ( ब्रह्मीत्यधिकगतइमात्मरक्षदेवसइस्साकाभित्यर्थः ) पावहिइरति । ण जदत्त । ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तपयोसना स्वानानि ब्रह्मसानि,  
 क जदत्त । ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? नीतम । समस्तुमारसाइस्सस्ययोसपरि सपत्त समतिदिक् यस्मिं योजनानि यावदुत्पत्याऽत्र ब्रह्मलोका  
 नाम कसपं ब्रह्मं प्राचीनमतोबोनायतभुतरदतिविस्तीर्णं प्रतिपूजकम्वसंस्त्यामसत्स्थितं अचिर्मोलाजाराशिपन्न अवशाथ यथा सप्तकुमारवां नव  
 र वत्तारि विमानावासगतसइस्साका वतुणा सोपमंस्थावतसका नवरं मध्येत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाणा देवाना स्वानानि प्र  
 वसन्ति शेष वपैव पावहिइरन्ति ब्रह्मात्र देवभ्नी देवराज परिवसात भरबोम्मरवत्यधर एव यथा सप्तकुमारे यावद्विहरति नवर वतुणा वि

सए मज्जे तल्य सणकुमारयन्त्रिसए तेण घन्त्रिसया सवुरयणमया झुक्का जाव पन्त्रिसया तल्यण सणकुमारदे  
 वाण पज्जातापज्जाण ठाणा पयससा । तिसुवि लोगस्स झसखेज्जजगे तल्यणं यहवे सणकुमारा देवा  
 देवराया परिधसह झुरययययधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तल्य थारसयह विमाणावाससयसहस्साण यात्र  
 सरीए सामाणियसाहसीण सेस जहा सक्कस्स झगमहिसीयज्ज नवर चउयह यावसरीण झायररक्कदेवसाह  
 स्वीण जाव यिहरइ । कहिण जत्ते ! माहिदाण देवाण पज्जातापज्जाण ठाणा पयससा । कहिण जत्ते !  
 माहिदगा देवा परिवसति ? गोयमा । ईसाणस्स कप्पस्स उप्वि सपन्त्रिसि यज्जइ जीयणाइ जाव  
 यज्जगाठ जीयणकोठाकोनीठ उहुं दूर उप्वइसा तल्यण माहिदे नाम कप्पे पयससे, पाईणपणीयायए जाव  
 एवं जहेव सणकुमारं, नवर झुठ विमाणायाससयसहस्सा वरुसया जहा ईसाणे नवरं मज्जे तल्य माहि

कुमाराका देवानां पयोसापयोसाया स्वात्मनि प्रज्जमानि विद्वन्वि लोकास्सावस्मेयं माण तत्र जज्जवाः समत्पुनाराः । इमाः परिवसन्ति मरुहिंका  
 यावद्विहरन्ति नवरमयमाइयो नवन्ति समत्पुनारवाच देवन्तो देवराजाः पारवसन्ति वरकोम्परयकावरः । एवं यथा झक्कस च तत्र द्वाइयानां  
 विमानावावतवइसाका द्विचसन्तिः । सामानिउवइसाकां येव यथा झक्कसायुमहिंवीनस्से नवरं वतुवा द्विचसन्तिः । इतिमात्तरवचदेववइसाकां यावद्वि  
 हरति । इ प्रदत्त । नादेन्द्राकां देवानां पयोसापयोसाया स्वात्मनि प्रज्जमानि इ मइका । माईन्वका इमाः परिवसन्ति ? गोयमा । इतिमात्तर  
 वरुसकोपरं वपवं ववन्तिद्वि चट्टनि लोकाणां यावद्विमा लोकाकोटीकोठ उहुं दूर उप्वस्य तत्र माईन्व नाम कप्पं मज्जे प्राचीनमहीधीना  
 यत्तं यावदेवं वयेव समत्पुनारं नवरमही विजावावावतवइसाचि समर्तवका वका इसादे मवरं मज्जे तत्र समत्पुनारकोठय यत्तं वीरं मज्जे

द्युऋतए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिवसह श्रयधर  
 वत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाय विहरह नवर श्रुठणह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय  
 साहस्सीण चउणह सत्तरीण श्रायरकदेवसाहस्सीण जाय विहरह । कहिण जत । बंनलोगेदेवाण पज्जा  
 हा २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण जत ! बंनलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा  
 ण उप्पि सपस्कि सपप्पिदिसि बल्लह जोयणाइ जाव उप्पडत्ता एत्यण बंनलोए नाम कप्पे पाईणपणीणा  
 यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पप्पिपुत्तचवसठाणसठिए श्रुच्चिमालीनासरसिप्पन्ने श्रयसेस जहा सणकुमा  
 राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वरुसगा जहा सोहम्मस्स वरुसया नवर मज्जे इत्य बंनलोयव  
 रुतए एत्यण बंनलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति । यजे इत्य देविदे देवराया परिवस  
 इ श्रयधरयत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउणह विमाणावाससयसहस्साण सठीए

नकुमारे बरपे यावद्विहरति नवरमष्टाना विमानावाससतसहस्साकां ससतिः सामानिकसहस्साणा वतुवां ( वतुगुणाना ) सप्तस्यास्मरकृतदेवसह  
 स्साका ( अश्वीत्यचिब्रह्मतस्य आस्मरकृतदेवसहस्साणामित्यर्थः ) यावद्विहरति । वा प्रदत्त । ब्रह्मलोकेदेवानां पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रदत्तानि,  
 वा प्रदत्त । ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? गीतम् । समस्तुमारयाश्चन्द्रकल्पयोक्तपरि सपस सप्रतिविक् धातूनि योजनानि यावदुत्पत्त्यात्र ब्रह्मलोका  
 नाम बसपं प्रदत्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूजयन्त्रसंस्थानसंस्थित आधिर्माताप्रातःशिवज चवन्नाय यथा सप्तकुमारका नव  
 र चत्वारि विमानावाससतसहस्साणि अवर्तसका यथा सौधमस्यावतसका नवरं मण्यत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाणां देवानां स्थानानि प्र  
 दत्तानि शेष तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्मात्र देवश्रो देवराव परिवसत आरजोम्बरवल्पर एव यथा समस्तुमारे यावद्विहरति नवर वतुवां वि

सामागियसाहस्सीण चउरुहयसठीण आयररुकेवसाहस्सीण अन्नेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते । छतगदेवाण पज्जाप्पज्जासाण ठाणा पक्खत्ता, कहिण जते ! छतगदेवा परिचसति ? गोयमा ! यन्नलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपस्सिकय सपप्पिदिसि यत्तइ जीयणसयाइ जाव यहुईत्त जीयणकोप्फाकीणीत्त उट्ठ दूर उप्पहट्ठा एत्थण छतए नाम कप्पे पक्खत्ते, पार्हेणपप्फोणायते जहा यन्नलोए नवर पन्नासाविमाणा याससहस्सा हवतीतिमरकाय, वरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नवर मज्जे इत्थ छतगयरुसए देवा तहेव जाव विहरति, छतए इत्थ देविदे देवराया परिचसइ जहा सणकुमारं नयर पक्खासाए यिमाणावाससइ रसाण पन्नासाए सामागियसाहस्सीण चउरुह पक्खासाण आयररुकेवसाहस्सीण अन्नेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! महासुक्काण देवाण पज्जाप्पज्जासाण ठाणा पक्खत्ता । कहिण जते ! महासुक्कादे

नामावाससवसइलाकां सतिः सामानिकवइलाकां वतुर्धो (वतुर्धुवाणां) पत्थाल्लरुकेवसइलाकां (पत्थारिखदधिकयत्तहुपदेवसइलाकां) वययान्ण वट्ठुमां पावट्टिइरति । इ जइत्थ । साल्लकदेवानां यमासापमांसाणां खानानि प्रज्जासि, इ जइत्थ । साल्लकदेवाः परिवसन्ति ? भौ तम । प्रससोबल्ल कल्पस्सोपरि सपत्तं समोवदिच्च वट्ठुनि योजनज्जातानि यावदूरमुत्थत्वाच्च साल्लकं नाज कएय प्रज्जत्तं प्राचीनप्रतीचीभावत्तं यथा सयैव पावट्टिइरन्ति साल्लकोच्च इवेन्नो दुवराज परिवसति यथा समत्तुमारं नवरं पत्थाल्लविनालावाससवसइलाकां पत्थाल्लत्तावानिकवइलाकां वतुर्धो (वतुर्धुवाणां) पत्थाल्लदाल्लरुकेवसइलाकां (लसइदाल्लरुकेवसइलाकां) कल्हेवां च वट्ठुमां पावट्टिइरति । इ जइत्थ । जहा शुभ्राकां देवानां खानानि प्रज्जासि, इ जइत्थ । जहावुक्का देवाः परिवसन्ति ? भौ तम । साल्लकका कल्पकोपरि सपत्तं समोवदिच्च वतुर्धुमां

वा परिवसति ? गोयमा ! लतस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपक्खि विविसे जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्खी  
 नाम कप्पे पक्खते, पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविचिक्खन्ते जहा यन्नलोए नवर चत्तालोस विमाणावा  
 ससहस्सा हवतीति मस्काय, वरुसगा जहा सोहम्मवक्रसगा नवर मज्जे तल्य महासुक्खवक्रसए जाव विह  
 रइ महासुक्खे इत्थ देविदे देवराया जहा सणकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणायाससाहस्सीण चत्ताली  
 साए सामाणिअसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण व्यायरस्कदेयसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण जते !  
 सहस्सारदेवाण पज्जन्ता २ ण ठाणा प० । कहिण जते ! सहस्सारा देवा परिवसति ? गो० ! महासुक्खस्स  
 कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपक्खि विविसे जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपणीणायते  
 जहा यन्नलोए नवर उविमाणावाससहस्सा हवतीति मस्काय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा  
 नवर मज्जे इत्थ सहस्सारवक्रसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्थ देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाशुक्क नाम कर्षं प्रक्षत्तम् प्राचीमप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर चत्वारिंशद्विमाणावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्ती  
 ति मयास्थातमवतसका यथा सौपमावतसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्कावतसको यावद्विहरति, महाशुक्कोत्र देवेन्द्रो देवराको यथा समस्तुमारो  
 नवर चत्वारिंशद्विमाणावासशतसहस्राका चत्वारिंशद्विमाणावासशतसहस्राका वत्तुणा चत्वारिंशदात्मरश्मिदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व प्रदत्त ।  
 सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रक्षत्तानि क्व प्रदत्त । सहस्रारदेवाः परिवसन्तः ? गीतम् । महाशुक्कस्य कल्पस्योपरि सप्तं सप्तवि  
 दिन् पावदुत्यत्तात्र सहस्रार नाम कर्षं प्रक्षत्त प्राचीमप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर पद्विमाणावासशतसहस्राणि प्र  
 वर्त्तन्तीति मयास्थात देवाकर्ष्येवावतसका यथा ब्रह्मलोकावतसका नवर मध्ये यत्र सहस्रारावतसको यावद्विहरति, सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसठीणं श्यायरस्कदेवसाहस्सीण श्युत्तेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! छतगदेवाण पज्जाप्पज्जत्ताण ठाणा पयससा, कहिण जते ! छतगदेवा परियसति ? गोयमा ! यत्तओगस्स कप्पस्स उप्पि सपरिकय सपत्तिदिसि यत्तइ जोजयणसयाइ जाव यहुईठ जोजयणकोफाकोठीठि उठ्ठ दूर उप्पइत्ता एत्थण छतए नाम कप्पे पयस्से, पाईणपत्तीणायते जहा यत्तओए नवर पत्तासाविमाणा वाससहस्सा इयतीतिमस्काय, वरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नवरं मज्जे इत्थ छतगयत्तसए देवा तहेव जाय विहरति, छतए इत्थ देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारि नवर पत्तासाए यिमाणावाससह स्साण पत्तासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पत्तासाण श्यायरस्कदेवसाहस्सीण श्युत्तेसि च यत्तण जाव विहरइ । कहिण जते ! महासुक्काण देवाण पज्जाप्पज्जत्ताण ठाणा पयससा । कहिण जते ! महासुक्कादे

सामाणावसवइत्तावां वसति । सामाणिकसइत्तावा वतुबी ( वतुनुकानां ) पत्ताालरकदेवसइत्तावां ( वत्तारिकदेविकयत्तइयदेवसइत्तावां ) अन्येपाण वतुनां यावट्टिहरति । इ इदं । सामकदेवानो ययीसापर्यासाणा स्वाणानि प्रज्जासि, इ इदं । सामकदेवाः परिवसन्ति । नौ प्रसतोव मरं पत्ताइत्तिमानावासवत्तसइत्तावां वतुमि योवमत्तानि यावदूरमुत्पत्ताण सामाणं भाव कल्पं प्रज्जं प्राचीनप्रतीचीनायत्तं यथा सयैव यावट्टिहरति, सामकोव देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा वत्तुमारं मरं मध्येव सामाणावत्तसको देवा वां वतुबी ( वतुनुकानां ) पत्ताइत्ताालरकदेवसइत्तावां ( लसइत्ताालरकदेवसइत्तावां ) अन्येवां च वतुनां यावट्टिहरति । इ इदं । यथा सामाणा देवानां स्वाणानि प्रज्जासि, इ इदं । यथावत्त सामकोवरि यत्तं यत्तारिण् वावत्त

वा परिवसति ? गोयमा । एतस्स कप्पस्स उप्वि सपन्निदिसि जाव उप्वहत्ता एत्यण महासुक्को  
 नाम कप्पे पक्खे, पार्इणपणीणायते उदीणवहिणविच्छिन्ने जहा यन्नलोए नवर चत्तालीस विमाणावा  
 ससहस्सा हवतीति मस्काय, वरुसगा जहा सोहम्मवरुसगा नवर मज्जे तस्य महासुक्कवरुसए जाव विह  
 रइ महासुक्को इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नयर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीण चत्ताली  
 साए सामाणियसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण व्यायरक्कदेयसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण जते !  
 सहस्सारदेवाण पज्जात्ता २ ण ठाणा प० । कहिण जते । सहस्सारा देवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कास्स  
 कप्पस्स उप्वि सपन्निदिसि जाव उप्वहत्ता एत्यण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पार्इणपणीणायते  
 जहा यन्नलोए नवर छविमाणावाससहस्सा हवतीति मस्काय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा  
 नवर मज्जे इत्य सहस्सारवरुसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाश्रुक नाम कएय प्रच्छसम् प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णे यथा ब्रह्मलोको नवर बत्थारिण्हिमानावाससप्तसङ्ख्याणि प्रवन्ती  
 ति मयास्मात्तमवतसका यथा सौपमांशवतसका नवरं मध्ये तत्र महाश्रुक्तावतसको यावद्दिहरति, महाश्रुकोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सप्तश्रुमादो  
 नवरं बत्थारिण्हिमानावाससप्तसङ्ख्याया बत्थारिण्हिमास्मानिकसङ्ख्याया षण्णुणा बत्थारिण्हिमास्मरकवेवसङ्ख्याया यावद्दिहरति । क्षु प्रवन्त ।  
 सहस्सारदेवानां पर्याप्तपर्वाणामा स्यान्तीति प्रश्नान्ति, क्षु प्रवन्त । सहस्सारदेवा परिवसन्ति ? गोतम । महाश्रुक्तस्य कल्पस्योपरि सप्तं सप्तति  
 दिक्षु पावदुत्पत्त्यात्र सहस्सार नाम कल्पं प्रच्छस प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णे यथा ब्रह्मलोको नवर पद्द्विमानावाससप्तसङ्ख्याणि प्र  
 वन्तीति मयास्मात्तं देवास्त्रयैवावतसका यथा ईसासत्यावतसका नवरं मध्ये यत्र सहस्सारावतसको यावद्दिहरन्ति । सहस्सारेत्र देवेन्द्रो देवरा



मारे नवर तरुह विमाणायाससहस्साण तीसाए सामाणियसाहस्सीण चउरहय तीसाण श्यायरस्कदेयसाह  
स्सीण जाव श्योहेयच्च फारेमाणे विहरति । कहिण भते ! श्याणयपाणयदेवाण पज्झाप्ता २ ण ठाणा ५०  
कहिण भते ! श्याणयपाणयदेवा परिवसन्ति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपरिक्क सुपाणिदि  
सि जाय उप्पट्ठप्ता पृत्यण श्याणयपाणयनामेण दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि  
न्ना श्चवदसठाणसंठिया श्चिमालीनासरसिप्पन्ना सेस जहा सणकुमारे जाव पणिरूवा तत्थण श्याण  
यपाणयदेवाण चत्तारि विमाणायाससया हवतीति मरकाय जाव पणिरूवा, वरुसगा जहा सोहम्मे नवर  
मज्जे पाणयवन्तंसए तेण वरुसगा ससुरयणामया श्चच्छा जाव पणिरूवा, पृत्यण श्याणयपाणयदेवाण पज्झ  
प्तापज्झाण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स श्चसखेज्जइजागे तत्थण बहवे श्याणयपाणयदेवा परिवसन्ति

का परिवसन्ति यथा सनत्तुमारो नवरं यको विमानावायसतसहस्राणां विंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्धां चिद्वदाल्मरुदेवसहस्राणां यावदापि  
त्वं पुर्वेन्विहरति । इ प्रदत्त । आगतप्रावतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रकृतानि इ भवन्त । आगतप्रावतदेवाः परिवसन्ति । नौतन ।  
बह्मुरस्य करुणापरि सपर्यं समतिदिक् यावदुत्पत्त्यानाततप्रावतनामानो द्वौ कश्यो प्रकृतौ प्राचीनप्रसीदोभायतौ उत्तरदक्षिणविकीर्णौ कर्तुं च  
नरंत्वाभवंत्सर्वौ अचिन्तोत्पत्तारसिद्धिप्रज्ञौ धय यथा सनत्तुमारो यावदप्रतिक्रयौ तथागतप्रावतदेवानां चत्वारि विमानावायसतसहस्राणि च  
कथीति मयाक्यातम् यावदप्रतिक्रयौ, यवतसुवा यथा सोचर्त्ते नवरं मध्ये प्रावतावतसुवा तावानतसुवाः सुवरजनपा जप्ता यावदप्रतिक्रया जप्ता  
मत्प्रावतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रकृतानि भिद्वपि लोकात्पावक्ययं प्रार्थं तत्र बहव आगतप्रावतदेवाः परिवसन्ति नर्वादेवा याव  
दप्रभासयन्ता ता तत्र स्वेधां २ विमानावायसतानां यावद्विहरन्ति प्रावतवाय देवेन्द्रो इवराधाः परिवसन्ति, जथा सनत्तुमारो नवरं चतुर्धा वि

महिद्विया जाव पन्नासेमाणा तेण तल्य साण२ विमाणावाससयाण जाय विहरति पाणए इत्थ देविदे देवरा  
या परिवसति जहा सणकुमारं जयर वउएह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए  
आयरकदेवसाहस्सीण अद्वेसि ए बल्लण जाव विहरति । कहिण जते ! आरणसुयाण देवाण पञ्जत्ता  
२ ण ठाणा पखत्ता । कहिण जते ! आरणसुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाण  
उप्पि सपरिक सपकिदिसि एत्थण आरणसुयानाम दुवे कप्पा पखत्ता पाईणपणीयाया उदीणदाहिणवि  
च्छिन्ता अरुचवसठाणसठिया अस्मिमालीनासरसिवन्नाजा अससिज्जाठं जोयणकोकाकोनीठं आयामवि  
रक्केण असस्वेज्जाठं जोयणकोकाकोनीठं परिकेवेण सहरयणामया अक्का सयहा लठा घठा मठा नीरया  
निम्मला णिप्पका निक्ककठक्काया सम्पन्ना ससिरीया सउज्जाया पासाईया दरिसिज्जा अन्निरुवा पणि  
रूवा एत्थण आरणसुयाण देवाण तिन्नि विमाणायाससया हवतीति मस्काय , तेण विमाणा सहरयणाम

मानावासवतानां विद्वति । सामानिकसहस्राका अशीति सामारकदेवसहस्राणामभेया न वज्जना यावाहुइरति । इ नदन्त । आरबध्युताना दे  
वानो पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपन्नानि इ नदन्त । आरबध्युतका देवाः परिवसन्ति । गीतम । आगतमागतयोः कश्यपीरुपरि सपत् सप्र  
तिदिब् अत्रानवमागतनामानो इी कश्यो प्रपन्नो प्राचीनप्रतीचीनायतायुतरदाश्चविलोकोर्षो अर्द्धेयभ्रसंस्थानसंस्थवो आचिमोत्ताभाराद्विषप्रजो  
असुख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविक्रमाज्यां असुख्येया योजनकोटीकोट्यः परिवेषण सर्वरत्नमयी अण्डो द्रव्यो सटो पृष्टो मृष्टो नीरजसो  
निमलो निप्पदुो निरुपबटध्वापो सप्रभो सलोको सोद्योतो प्रासादीपो दर्शनीयो अभिरूपो प्रतिकूपो अत्रारबध्युतानां देवाना वीदि विमाना  
वासवतानि नवन्तीति मयास्यात् । दानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अण्डानि द्रव्यानि सटानि पृष्टानि मृष्टानि नीरजानि निमलानि निप्यका

या अष्टा सरहा लठा घठा मठा नीरया निमला निपका निक्काकच्छाया सप्यजा ससिरीया सज्जीया  
 पासादीया दरिसणिजा अन्निरुवा तेसिण विमाणाण यज्जमज्जेवेसजाए पच वरुंसया पखुप्पा, तजहा  
 अकयकसए फलिहयकसए रयणयकसए जाव रुवयकसए मज्जे इत्य अमुयवकसए, तेण यकसया सहरय  
 णामया जाव पक्रिवा, एत्थण अरणमुयाण देयाण पज्जप्पापज्जप्पाण ठाणा पखुप्पा । तिस्रवि लोगस्स  
 असखेज्जइत्ताने तत्थण ग्रहवे अरणमुया देवा जाव विहरति, अमुए तत्थ देविदे देवराया परिथसइ ।  
 जहा पाणए जाव विहरति नवर तिह्ण विमाणावाससयाणं दसरह सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए  
 अयसरकदेवसाहस्सीणं अहिवस्र जाव कुवमाणे विहरति, यत्तीचठावीसा वारसाठचउरोसयसहस्सा  
 पन्नाचत्तालीसा लच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ अणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणमुएतिअि । सत्तविमाणस  
 याइ चउसुविपुसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसगहणीगाहा-चउरासीइत्थसीति आवस्ररिसहरीयसठीए ।

नि निवसठवज्जायानि वमज्जावि समीअवि सोद्योतानि प्रासादीयानि द्योनीयानि कमिअपावि प्रविक्रपावि सेयों विमानाना बहुमप्यदेशजा  
 ने पम्मावतंबकाः मज्जता लघया-अंकावतंबकाः स्फटिकावतंबको रत्नावतंबको वावदूपावतंबको अप्पे ववाअुतावतंबको से पावतंबकाः खवरज  
 रिवदन्ति यावद्विहरन्ति अमुतावा देवाना पर्याप्तान्योसानां आनानि मज्जतानि विअपि लोकावेक्येयानां एव खरव वारवाअुता देवाः य  
 निवसठवज्जा वत्तारिज्जदालसरकदेवसहस्सा वानियत्थ पुरोभात्तत्थ पावसुकुअन् विहरति इधिवद्विहरन्ति इति वदन्ती वत्तानां वाना  
 पम्मावत्तारिज्ज त्थम्पवद्विहरन्ति ॥ १ ॥ जालसावतंबकप्पे वत्तारिज्जवान्नादवाअुतेपीवि । अमुविमानवद्विहरन्ति वमुदेवेतेपुअवेसु ॥

पन्नाचमालीसा तीसावीसादसहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरस्का चउगुणा । कहिण जते ! हिठिमगेविज्जा  
गदेवाण पज्झा २ ण ठाणा पक्खत्ता २ कहिण जते । हेठिमगेविज्जागा देवा परिधसति २ गीयमा ! आ  
रणसुयाण कप्पाण उप्पि जाव उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण ततो गेवेज्जाविमाण  
पत्थप्पा पक्खत्ता, पाइणपर्हणायागा उदीणदाहिणविच्छिक्का पफिपुक्कचदसठाणसठिया अग्निमालीजासरसि  
वत्तान्ना संस जहा बज्जलोगे जाव पफिक्का, तत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणायास  
सए हवतीति मस्काय तेण विमाणा सहरयणामया जाव पफिक्का, एत्थण हेठिमगेविज्जागाण देवाण  
पज्झत्ताण २ ठाणा पक्खत्ता, तिसुवि लोगस्स असखेज्जजोगे तत्थण यहवे हेठिमगेविज्जागा देवा परि  
धसति सहे सममहिहीया सहे समज्जुतीया सहे समजसा सहे समथला सहे समानुजावा महासोरका अ  
णिदा अपेस्सा अपुरोहिया अहमिदा नाम ते देवगणा पक्खत्ता समणाउसो ! कहिण जते ! मज्झिमगाण

२ ॥ सामानिकसगृहिणाणा-चतुरशीतिरशीति द्विसप्ततिः सप्ततिरपष्टिब । पचाशसुत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा  
व्यास्रन्वाः । ॥ मदन्त । अचक्षुमपेवेकद्वाना पर्यासापर्यासाना स्थानानि प्रक्षप्तानि, क्ष प्रदन्त । अचक्षुमपेवेयकदवाः परिवसन्ति ? गीतम ।  
आरकाअ्युतकसपयोरुपरि सपत्तं सप्रतदिक् पावदूसुमुत्पत्यात्रा वक्ष्मपेवयकानां देवाना ग्रैवयकप्रक्षटानि प्रक्षप्तानि प्राचीनप्रतीचीनानापत्तानि सप्त  
रदक्षिणावलोकीति प्रतिपुषन्प्रस्थानसस्थितानि अचिर्मासाजाराशिवर्षानि येष यथा प्रक्षप्ताके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्रापक्ष्मनग्रैवयकदेवा  
नां एकादशाक्षरं विमानावासक्षतं प्रवर्तीति मयास्थ्यातम् । तानि विमानानि सर्वरक्षमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, अत्रापक्ष्मनग्रैवयकाना देवानां  
पर्यासापर्यासाना स्थानानि प्रक्षप्तानि त्रिष्वपि लोकास्यासस्येय भाग एव यहवो वक्ष्मनग्रैवयका देवाः परिवसन्ति सर्वे सममशुद्धका सर्वे सम

गेयिज्जगदेवाण पज्झसा २ ण ठाणा पयुत्ता । कहिण जते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसति ? गोयमा !  
 हेठिमगेविज्जगण उप्पि सपरिक सपाक्रिदिस जाव उप्पइहा एत्थण मज्झिमगेविज्जगदेवाण सतीगेविज्ज  
 गविमाणपत्यहा पयससा पार्इणपफीणायता जहा हेठिमगेविज्जगण नयर सत्तुवरे विमाणाधाससए हव  
 सीति मरकाए, तेण विमाणा जाव पक्रिया एत्थण मज्झिमगेविज्जग देवाण जाव तिसुयि लोगस्स झस  
 खेज्जइमगे तत्थण यइवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसति जाव झहमिदा नाम देवगणा पयससा । सम  
 पाउसी ! कहिण जते ! उवरिमगेविज्जगा देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयुत्ता । कहिण जते ! उवरिम  
 गेविज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उप्पि जाव उप्पइहा तत्थण उवरिमगेविज्ज  
 गाण देवाणं सठ गेविज्जगविमाणपत्यहा पयससा पार्इणपफीणाठ सेसं जहा हेठिमगेविज्जगण नवर

पुत्तिकाः सर्वे समयशुक्लः सर्वे समवस्त्राः सर्वे महाभुजगावा मयस्माक्या कर्मिणा अयुरोहिताः कर्मिणा नामत स्ते देवमहाः प्रज्जसाः अम  
 व । आयुस्सन् । ॥ अदत्त । मध्यमयेवकदेवाना पर्यासापर्यासाणां स्थानानि प्रज्जसानि । ॥ अदत्त । मध्यमयेवकदेवा परिवसन्ति ? पीतम । अ  
 वस्त्रमयेवकदेवानामुपरि सपटं अमरिहिकं यावदुत्पत्त्याव मध्यमयेवकदेवानां येवकप्रसङ्गाणि प्रज्जसानि प्राचीनप्रतीचीनायताभ्युत्तरदिशि  
 विहीनीनि यथा वस्त्रमयेवकाना मजर ससोत्तरं विमानावाकस्यत भवतीति भयाक्यातम् । तानि विमानानि यावद्वर्तित्वापि अवनम्यमयेवे  
 पवानां देवानां स्थानानि यावत्तिहपि कोवकाकयेवं ज्ञानं सव वसवो मध्यमयेवक देवाः परिवसन्ति यावद्वर्तित्वा नाम ते देवाः प्रज्जसाः  
 समव । आयुस्सन् । ॥ अदत्त । अपरिमयेवकदेवानां पर्यासाः स्थानानि प्रज्जसानि ॥ अदत्त । अपरिमयेवकदेवा परिवसन्ति ? पीतम । अ  
 प्यमयेवकदेवानामुपरि वाकदुत्पत्त्य वसीपरिमयेवकानां देवानां येवकप्रसङ्गाणि प्रज्जहाणि प्राचीनप्रतीचीनावतानि ज्ञेवं यथावस्त्रमयेवक

एगे विमाणावाससए हवतीति मस्काए, संस तहेव ज्ञाणियह जाय अहमिदा नाम ते देवगणा पणप्ता समणाउसी ! एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरचमज्जिमए । समयेगउवरिमए पचेअअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण जते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जात्ता २ ण ठाणा पणप्ता ? कहिण जते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यज्जाए पुढधीए बज्जसमरमणिज्जाते नूमिजागाते उहु चदिमसू रियगइगणनस्कत्तताराकूवाण बल्लइ जोयणसयइ बल्लइ जोयणसयसहस्साइ बल्लइ जोयणसयसहस्साइ यज्जि गाते जोयणकोलीते बज्जगाते जोयणकोलीकोलीते उहु दूर उप्यइत्ता सोहमीसाणसणकुमारमाहिदवज्ज लीगउतगसुक्कसहस्सारअणयपाणयस्थारणअसुयकप्पा तिणियअठारसुत्तरे गेविज्जायिमाणावाससए विती बइत्ता तेय परदूरगता नीरया निम्मला वितिमिरा विसुत्ता पचदिसि पच अणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पणप्ता, तज्जहा—विजये वेजयते जयते अपराजिए समुत्तसिद्धे । तेण विमाणा सच्चरयणामया

नां त्वरं यत् विमानवाचसत् प्रवर्तीति न्यास्यात् । शीवं तथैव मन्त्रितव्यं यावदहनिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रपन्नाः समन्त । आयुषन् । एका  
प्रसोत्तरमप-स्तनेषु सप्तोत्तरं तु माप्यमिके । अतमेकमीपदिविके पञ्चैवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ अथ । अन्तरोपपातिना देवानां पर्यासाय  
पर्यासानां स्थानानि ३० क्ष प्रदत्त । अन्तरोपपातिना देवाः परित्वसन्ति ? गीतम् । अस्या रत्नप्रपाथाः पूयिष्याः यदुत्तरमखीयाद्भूमिचानागादूर्ध्वं  
अन्तसूयपङ्कगणमकृतारारूपपाथा यद्भूमि योजनशतानि यद्भूमि योजनसहस्रानि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सीपर्मैधानवनस्तुभारमा  
रेन्द्रप्रसृतात्कशुकसद्वारानतप्रायतारबाध्युत्तरपाथा एतन्नि बाधावक्षोहोराणि ग्रंथेयकविमानावाचसत्तानि व्यतिप्रन्य ( उक्तप्य ) तेभ्योपि परं  
दूरं गता नीरवसो निर्मिता विविभिन्ना विभुसाः पञ्चतु दिशु पञ्चानुतरा मश्याविमहास्रया मश्यायिमानाः प्रपन्ना स्वद्याथा-विजयावैजयन्तो जयन्तो

गोविज्जगदेवाण पज्झन्ता २ ण ठाणा पयसता । कहिण ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसति ? गोयमा !  
 हेठिमगेविज्जगण उप्वि सपस्कि सपस्किविंशि जाव उप्वइह्मा एत्थण मज्झिमगेविज्जगदेवाण ततोगेविज्जा  
 गविमाणपत्यन्ता पयसन्ता पाईणपणीणायता जहा हेठिमगेविज्जगण नवरं सत्तुप्परे विमाणवाससए हव  
 तीति मस्काए, तेण यिमाण जाव पक्खिया एत्थण मज्झिमगेविज्जाण देवाण जाव तिसुयि लोगस्स स्यस  
 खेज्जहन्तागे तत्थण थह्वे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसति जाव स्यहमिदा नाम देवगणा पयसन्ता । सम  
 णाउसो ! कहिण ज्ञते ! उवरिमगेविज्जगा देवाण पज्झन्तापज्झन्ता ठाणा पयसता । कहिण ज्ञते ! उवरिम  
 गेविज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उप्वि जाव उप्वइह्मा तत्थण उवरिमगेविज्जा  
 गाण देवाणं तत्तं गेविज्जगविमाणपत्यन्ता पयसन्ता पाईणपणीणात्तं सेस जहा हेठिमगेविज्जगण नवर

पुत्तिका) सर्वे समपस्यन् सर्वे समवसन् सर्वे महानुजाना महाकाया अभिन्ना समेका सपुरोहितो अविमन्त्रा नामत स्तो देववक्ताः प्रज्ज्ञताः अय  
 व । आयुस्मान् । इ प्रवक्ष्यन् । मध्यमयैवेयकदेवानां पयोसापयोसाणां स्वामानि प्रज्ज्ञसानि । इ प्रवक्ष्यन् । मध्यमयैवेयकदेवाः परिवक्षन्ति ? भौतम् । अ  
 यत्तमयैवेयकदेवानामुपरि सपत्तं समस्तिहिन् वायुदुत्यत्वाच्च मध्यमयैवेयकदेवानां यैवेयकप्रकटाणि प्रज्ज्ञसानि आशीनप्रतीचीनायतास्तुत्तरदक्षिण  
 विक्कीर्णानि यथा यत्तमयैवेयकाना नवर समोत्तरं विजानावावस्यन्त भवतीति यथाक्यमात्तम् । तानि विमानानि आवातप्रतिष्ठपानि अत्रमध्यमयैवे  
 यवानां देवानां स्वामानि यावत्तिहपि लोचक्यावस्येयं आर्चं तच्च जह्वो मध्यमयैवेयका देवाः परिवक्षन्ति आवातदक्षिणान्ता नाम ते देवाः प्रज्ज्ञताः  
 प्रवक्ष्यन् । इ प्रवक्ष्यन् । उपरिमयैवेयकदेवानां पयोसाः स्वामानि प्रज्ज्ञसानि इ प्रवक्ष्यन् । उपरिमयैवेयकदेवाः परिवक्षन्ति ? भौतम् । न  
 यमयैवेयकदेवानामुपरि वायुदुत्यत्वाच्च समोपरिदक्षिणयैवेयकानां देवानां यैवेयकप्रकटाणि प्रज्ज्ञसानि आशीनप्रतीचीनायतानि स्तोत्रं यथायत्तमयैवेयका

एणे विमाणावाससए ह्यतीति मस्काए, सेस तहेव ज्ञाणियह जाय अहमिदा नाम ते देवगणा पयात्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसुत्तरचमज्जिमए । सयमेगउवरिमए पचेयअणुत्तराविमाणा ॥ १ ॥ कहिण नते ! अणुत्तरोववाइयाण देयाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पयात्ता ? कहिण नते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति ? गीयमा ! इमीसे रयणप्यजाए पुत्थीए यज्जसमरमणिज्जाए न्नीमिजागाए उह चदिमसू रियगहगणनरक्तत्तरारूवाण यत्तइ जोयणसयाह बत्तइ जोयणसहस्साह बत्तइ जोयणसयसहस्साइ वज्ज गान् जोयणकोफ्ठीए यज्जगाए जोयणकोफ्ठीए उह दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिदयन लोगलतगसुक्कसहरसारअणयपाणयअणयसुयकप्पा तियायअठारसुत्तरगेविज्जाविमाणावाससए विती वडइत्ता तेय परदूर गता नीरया निम्मला वितीमरा विसुत्ता पचदिसि पच अणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पयत्ता, तजहा-विजये वेजयते जयते अपरजिए सव्वठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया

ना मवदं एक विमानावाससत्तं प्रवर्तीति मयाख्यातम्, शेषं तथैव सखितव्य यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रवृत्ताः यतः । आयुस्सन् । एका दशोत्तरमय-स्तनेषु सप्तोत्तरंतुमाप्यामिहे । अतमेकमीपरिपिके पञ्चैकानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ इति प्रवक्त । अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्ताप योसानां ख्यामानि ३० ॥ इति प्रवक्त । अनुत्तरोपपातिनां देवाः परिवसन्ति ? गीतम् । अस्या रत्नप्रज्ञायां पृथिव्याः यद्गुप्तमरमणीयाद्भूतमिन्द्रागावृक्षे यत्प्रसूयं यद्गन्धमक्षतारारूपाया यद्भूति योजनानि यद्भूति योजनसहस्राणि यावद्भूते दूरमुत्पत्याय सीचमैद्यानवनस्तुमारमा हेन्द्रप्रज्ञानात्कमुक्तसहस्रद्वारामतमावतारणाथ्युक्तस्या खीणि आट्टावसोहराणि ग्रयेयकविमानावाससत्तानि व्यवतिव्रज्य ( उल्लस्य ) तेभ्योपि परं दूरं गता नीरवसो निर्मसा वितीमरा विसुत्ताः पचसु विषु पञ्चानुत्तरा महाविमहालया महाविमानाः प्रवृत्ता स्त्वया-विजयवेवपस्तोवपस्तो





धनुमज्जदेसनाए श्रुठजोयिणिए खेहे श्रुठजोयणाह वाहलेण पवहे , ततो श्रुणंतर चण माताए २ पाए  
 सपरिहाणीए २ परिहायमाणी २ सहेसु चरिमतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी श्रुगुलस्स सखेज्जाहनागे याहले  
 ण पयत्ता , इसीपप्पाराएण पुढवीए दुवालसनाभेज्जा पयत्ता , इसीतिवा इसीपप्पाराइवा तणूतिया  
 तणुयरीतिया सिद्धीतिया सिद्धालएतिया मुत्तीडवा मुत्तालएइवा लोयगयून्नियातिवा लोय  
 पम्मियुज्जणाइया सवपाणन्नयजीवसत्तसुहावहा यइवा । इसीपप्पाराण पुढवी सेता सखदलधिमलसोच्छिय  
 मुणालदगरयतुसारगोरकीरहारवत्ता उत्ताणयत्तसठाणसठिया सवज्जुणसुखमई श्रुच्छा सरहा लरहा घठा  
 मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककच्छाया सप्पजा ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा श्रु  
 निरुवा पन्निरुवा इसीपप्पाराएण नीसाए जोयणमि लोगतो तस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सण  
 गाउयस्स जेसे उवरिल्ले तप्पाने एत्थण सिद्धा जगवतो सादिया श्रुपज्जवसिया श्रुणेगजातिजरामरणजो

क्षमया परिशीयमाना सर्वेषु वरिमाणेषु भक्षिषावन्नोप्यतितत्त्वी क्षुण्णसत्त्वोयनाय यावत्स्येन प्रचता . इत्यप्रान्नारायणः पुण्यिवा ह्यवदा ना  
 मयेयानि प्रवन्तीति तद्यथा-इयदिति वा इयत्प्रान्नारेति वा तन्वीति वा तन्वुरीति वा सिद्धुरिति वा सिद्धासय इति वा मुक्खिरिति वा मुक्खा  
 सय इति वा लोकाय इति वा लोकायस्सुपिकति वा लोकायसमतिवाहिनीति वा सवप्रायन्नूतकीवसत्त्वसुखायइ इति वा साधेपहप्रान्नारा पुण्यिवा  
 येता इहदसविमलधीवर्तिकासुणासद्वक्त्रजलपारागोष्ठीरश्चरवत्ता कथामकक्षत्रसत्त्वानसत्थिता सवाज्जेमस्खर्णेमयो पच्छा सत्त्वा लहा पूहा मृदा  
 नीरवा निमला निप्पन्ना निष्कटकच्चाया समभा समीका सोद्योता पासादीया वक्त्रभीया कच्चिरूपा प्रतिसूपा प्रंपरप्रान्नाराया पुण्यिवा निमि  
 दिगत्या योजन लोकात्त स्वास्य च योजनस्य यदुपरितल गच्छतं तस्य गच्छतस्य यदुपरितल पद्भान्न यत्र सिद्धा सगवन्त सादिका अपपवसिता भनेकजा

अर्च्यो सरोहा घटा मठा णीरया निम्मला निष्पक्का निक्ककळ्ळया संपंजां सिंसिरीया सउज्जीया पासा  
 दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पळिरुवा एत्थण अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जसापज्जसाण ठाणा प० ।  
 तिसुवि लोणस्स अस्सखेज्जाइजागे तत्थण यहेव अणुत्तरोववाइया देवा परियसति सहे सममहहिंया सहे  
 मणाउसो । कहिण जते ! सिंहाण ठाणा पयससा । कहिण जते ! सिंहा परिवसति ? गीयमा ! सव्वठस्स  
 महाविमणस्स उव्वरिस्सालं पूजियग्गालं दुयालसजोयणे उहु अवाहाए एत्थण क्खसीपस्सारा नाम पुठवी प०,  
 पणयालीसं जोयणसयसइस्साइ अयामविक्खेण एगजोयणकोलीलं वायालीस च सयसइस्साइ तीस सहे  
 स्साइ दीन्ति य अउणापन्ते जोयणसए किञ्चिविसेसाहिए परिकेवेण पयससा । इसीपस्साराएण पुठवीए

पराजितः सर्वाचरिणः । ते विनाशः स्वरत्नमया अम्बा मत्ता पूषा सहा भीरवसो निर्मला निष्पद्मा निरुद्वहन्त्याः सम्राजः समीका सोद्यो  
 ताः प्रासादीना दर्शनीया अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा अन्निरुवा  
 सोवत्सावंक्ष्यं वान तत्र बहवोभुत्तरोपपत्तिका देवाः परिवसन्ति सर्वे समहिताः सर्वे समन्ताः सर्वे समानुभावा भद्राख्या अनिन्ना अपुरोहि  
 नौतम । सर्वापस्य महाविमानलोपारमायाः कृपिकाया द्वादशयोगनाभ्युत्तं अवापया अष्टप्राग्मारा मान पृथिवी प्रज्जसा, पंचपत्वारिंशद्योवन  
 क्षतवद्वत्तादि आयामविक्खन्त्याः नेकाकोवनकोटी द्विचत्वारिंशद्योवनवद्वत्तादि त्रिंशत्तद्वत्तादि चैकोनपचासद्योवनवद्वत्ते चिन्तिचिन्तिचिन्ति  
 नि परिकेपव प्रज्जसा अष्टप्राग्माराया पृथिव्या अनुसन्धेयवज्जाने उद्योयानिर्बलं चैव जहो वीजनाणि वाइल्लव प्रज्जलं सर्वानन्दं भावया ६ महे

तानयस्कययिमुक्ता । अन्तान्तसमोगाढा पुष्ठासध्वेविलीयते ॥ ९ ॥ फुसद्वृष्ट्यणतंसिद्धे सध्वपएसेहिनिमसो  
 सिद्धा । तेयिअसखेज्जगुणा देसपदेसोहजेपुष्ठा ॥ १० ॥ अस्सीराजीवघणा उवउत्तादसणयनाणेय । सागा  
 रमणागारं लरकणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केयलणाणवउत्ता जाणतीसध्वनायगुणजावे । पासतिसध्वेद्वखलु  
 केवलविठीहिणताहि ॥ १२ ॥ नयिअत्थियमानुसाण तसोस्कंनत्थिसध्वदेवाण । जसिद्धाणसुख अद्धावाहउवग  
 याण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत सध्वरापिअजहविज्जा । सोनतवगनइहे सध्वगासणमाइज्जा ॥ १४ ॥ जहनामको  
 सिद्धस्ससुहोरासी सध्वरापिअजहविज्जा । जवएडपरिकहेउ उवमाएताहेअसतीए ॥ १५ ॥ इयसिद्धाणसोख अ  
 ढमिच्छो नगरगुणयज्जाविहविजाणतो । जवएडपरिकहेउ उवमाएताहेअसतीए ॥ १६ ॥ जहसध्वकामगुणिय पुरिसो  
 णोयमनत्थितस्सउवम । किचिविसेवेणितो सारिस्कमिणसुणहवोत्थ ॥ १७ ॥

अथगाएनयासिद्धाः अवत्रिजगणेन भवन्तिपरिशीला । अस्थानमभिरप्यस्य यज्जरामररविमस्तुत्तानाम् ॥ ८ ॥ यथवेदःसिद्ध स्तत्रामस्तानयसयविमुक्ताः ।  
 अथोत्थसमवगाढाः स्पष्टाः (सगताः) सर्वपिलोकास्ते ॥ ९ ॥ स्पष्टास्तनक्तान्सिद्धान् सर्वप्रवचोर्नैयमवाचिहः । तेव्यसख्यंयगुवा देशप्रदंअध्वयेस्प  
 ष्टा ॥ १० ॥ अशीराजीवघना उपयुक्तादक्षान तयाद्याने । साकारानाकारं लक्ष्मस्तसुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानापयुक्ताः शान्तिस्तस्येनावगु  
 यन्तावान् । पश्यन्तिस्वत सलु केवलसुष्टिभिरगमाभिः ॥ १२ ॥ वेदास्तिमनुष्याणा तसोस्म्यनास्तिस्वदेवता । यत्सिद्धाना सीत्यमप्यायापामुपग  
 तानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुसंघमस्तु सर्वाद्वापिअकृतमनक्तुगुणम् । ममागोर्निमुक्तसुख समन्तेवगे द्यवागतसध्वपि ॥ १४ ॥ विद्वत्सुसुखराशिः सर्वा  
 द्वापिअकृतापदि नयत् । सोनतवगनइहे सध्वगासणमाइज्जा ॥ १५ ॥ सौख्यकथितान यथादिविज्जासम्यदुखगरगुणान् । पारिकर्षयितु  
 णो त्पुपमायासाव्रषामावात् ॥ १६ ॥ इतिविद्वानासौख्य समुपसर्गनास्वितस्वचोपस्यम् । किञ्चिद्विषयपठतोस्य सादृश्यं अणुतवत्यमासमिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलीजावपुणम्रवगम्रवासवसही एवते समहक्कांता सासयमणागयद् काल चिठति, तत्यवियते  
 स्ववेदा स्वयेयणाणिममा स्वसगायससारविष्यमुक्ता । पदेसनिष्ठासिसठाणा ॥ १ ॥ कहिपकिहयासिद्धा कहि  
 सिद्धापडठिया । कहिर्योदीघइसाण कहगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ खलोएपकिहयासिद्धा लोयगोयपडठिया ।  
 इहयोदीघइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥ वीहवाहस्सवा जवरिमन्नवेहिविज्जसठाण । तत्तोतिजागहीणा  
 सिद्धाणोगाहणान्निगया ॥ ३ ॥ सठाणतुइह जवचयतस्सचरमसमयम्मि । खासीयपदेसचण तसठाणतहि  
 तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेप्प्रीसा घणुसिज्जागोयहोइनायक्खो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणान्निगया ॥ ५ ॥  
 चत्तारियरयणीत्ति रयणितिजागूणिगयायधीघट्ठा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणान्निगया ॥ ६ ॥ एगाय  
 होइरयणी स्थेवयस्यगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहक्खोगाहणान्निगया ॥ ७ ॥ ठंगाहणाएसिद्धा  
 नवतिजागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणिम्यत्थ जजरामरणविष्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्ययएगोसिद्धो तत्यस्थूण

विज्जरामरणविषयकारकसंक्षेपानावपुण्णम्रवगम्रवासवसही एवते समहक्कांता सासयमणागयद् काल चिठति, तत्यवियते  
 स्ववेदा स्वयेयणाणिममा स्वसगायससारविष्यमुक्ता । पदेसनिष्ठासिसठाणा ॥ १ ॥ कहिपकिहयासिद्धा कहि  
 सिद्धापडठिया । कहिर्योदीघइसाण कहगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ खलोएपकिहयासिद्धा लोयगोयपडठिया ।  
 इहयोदीघइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥ वीहवाहस्सवा जवरिमन्नवेहिविज्जसठाण । तत्तोतिजागहीणा  
 सिद्धाणोगाहणान्निगया ॥ ३ ॥ सठाणतुइह जवचयतस्सचरमसमयम्मि । खासीयपदेसचण तसठाणतहि  
 तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेप्प्रीसा घणुसिज्जागोयहोइनायक्खो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणान्निगया ॥ ५ ॥  
 चत्तारियरयणीत्ति रयणितिजागूणिगयायधीघट्ठा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणान्निगया ॥ ६ ॥ एगाय  
 होइरयणी स्थेवयस्यगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहक्खोगाहणान्निगया ॥ ७ ॥ ठंगाहणाएसिद्धा  
 नवतिजागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणिम्यत्थ जजरामरणविष्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्ययएगोसिद्धो तत्यस्थूण

हिया दिसानुवाएण सङ्ख्योवा छाउकाइया पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहि  
या उत्तरेण त्रिसेसाहिया, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरिच्छिमेण त्रिसेसाहिया  
पञ्चिमेण त्रिसेसाहिया दिसानुवाएण सङ्ख्योवा याउकाइया पुरिच्छिमेण पञ्चिमेण त्रिसेसाहिया दा  
हिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया । दिसानुवाएण सङ्ख्योवा वणस्सठकाइया पञ्चिमेण पुर  
िच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया । दिसानुवाएण सङ्ख्योवा वेइदि  
या पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया, दिसानुवाएण  
सङ्ख्योवा तेइदिया पञ्चिमेण पुरिच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया,  
एव चउरिदियावि, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा णेरइया पुरिच्छिमपञ्चिमेण उत्तरेण दाहिणेण त्रिसेसाहिया  
गुणा, दिसानुवाएण सङ्ख्योवा रयणप्यजापुठयिणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिमेण उत्तरेण दाहिणेण त्रिसेसाहिया

विशेषापिकाः, दिगनुपातेन सर्वसोका व्यक्त्याः पश्चिमेन पूर्वव विशेषापिका उत्तरेव विशेषापिकाः, दिगनुपातेन  
सर्वसोका स्तोत्रकापिका दक्षिणेन पूर्वव विशेषापिकाः पश्चिमेन विशेषापिकाः दिगनुपातेन सर्वसोका वायुकापिकाः पूर्वव पश्चिमेन विशेषा  
पिका दक्षिणेन विशेषापिका उत्तरेव विशेषापिकाः । दिगनुपातेन सर्वसोका वामपक्षिकापिकाः पश्चिमेन पूर्वव विशेषापिका दक्षिणेन विशेषा  
पिका उत्तरेव विशेषापिका, दिगनुपातेन दक्षिणेन पूर्वव विशेषापिका उत्तरेव विशेषापिका, दिगनुपातेन  
सर्वसोका दक्षिणेन पूर्वव विशेषापिका दक्षिणेन उत्तरेव विशेषापिकाः । एवं चतुरिन्ध्रिया अपि । दिगनुपातेन सर्वसोका भेरपिकाः  
पूर्वव पश्चिमेन उत्तरेव दक्षिणेन सर्वसोका दक्षिणेन उत्तरेव दक्षिणेन सर्वसोका । दिगनुपातेन सर्वसोका । दिगनुपा

भोत्तुगन्नोयणकोड । तएहलुहाविमुक्को छच्छिज्जजहास्यमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयससुक्कालतिप्पा सुउल्लनि  
 द्वाणमुन्नगयासिद्धा । सासयमसुद्धायाह विठतिसुहीसुहपप्पा ॥ १९ ॥ सिद्धस्वियधुद्धस्विय पारगतस्वियपरपर  
 गतस्स । उम्मुक्कम्मकयया सुजरासुमरासुसगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नससुद्धुक्का जातिजरामरणयधगवि  
 मुक्का । सुद्धायाहसुक्क सुणुद्धोतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ यितिय पद समस्त ॥ २ ॥  
 दिसिगइहदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । समस्तुणाणदसण सजयउवत्तंगसुहाहरे ॥ १ ॥ आसगपरित्तप  
 ज्ञा ससुज्जमसखीयत्तवत्थिसेच्चरिमे । जीवयस्सेत्तयधे पुग्गलमइदरुएच्चय ॥ २ ॥ विसानुवाएण ससुत्थीया  
 जीया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिंया दाहिणेण विसेसाहिंया उत्तरेण विसेसाहिंया विसानुवाएण  
 ससुत्थीया पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिंया पुरच्छिमेण विसेसाहिंया पञ्चच्छिमेण विसेसा

ययासवकानगुत्तं पुरुषोमुक्तामनोवज्ज कोपि । वृषपाहुषाविमुक्ता विठतिसोषाससुत्तसः ॥ १८ ॥ इतिसंबेकालवृसा इतुल्लनिर्वाकमुपगताः वि  
 द्वाः । आसुत्तमकाबापं विठन्तिमुक्ता सुखदासाः ॥ १९ ॥ सिद्धादितिज्जहाइति पारनताइतिपरम्परगता ॥ । उम्मुक्कम्मकयया सजरासमरास्य  
 नाह ॥ २० ॥ निस्सीरसवदुःखा कातिकरामरबबन्नविमुक्ताः । सव्वाबाधसौख्य अनुभवन्तिज्जासुत्तंसिद्धाः ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रनाथ प्रियवना  
 नचन्द्रयि विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २ ॥  
 दिक्प्रमतीन्द्रियकाया योभोवेदःकषायस्तपश्च । सम्यक्ज्ञानदर्शन संयतोपयोनीतचाङ्गाए ॥ १ ॥ आबकपरीतयथो सिद्धुत्सवन्तीप्रवाक्षिचरमा  
 वि । नीचलोचनः पुद्गलमहादवमन्त्रस्तुः ॥ २ ॥ दिग्गुणातेन ( दिव्योचिकत्येत्यर्थः ) स्वस्तीका जीवाः पद्मिनेन पूर्वैश्च विषयाधिवा इक्षिणेन  
 विक्षेपाधिवा उत्तरेश्च विक्षेपाधिवाः, दिग्गुणातेन स्वस्तीकाः पद्मिनीकायिका इक्षिणोत्तरेश्च च विक्षेपायिकाः पूर्वैश्च विषयाधिवाः पद्मिनेन

[illegible][illegible]



जगुणा, विसानुवाएण सव्वत्योवा सक्करप्पन्नापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्स  
 खेज्जगुणा । विसानुवाएण सव्वत्योवा णेरइया वालुयप्पन्नापुढविपुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्स  
 खिज्जगुणा । विसानुवाएण सव्वत्योवा पक्कप्पन्नापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखे  
 ज्जगुणा । विसानुवाएण सव्वत्योवा धूमप्पन्नापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्ज  
 गुणा । विसानुवाएण सव्वत्योवा तमप्पन्नापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखेज्जगुणा  
 विसानुवाएण सव्वत्योवा अहे सप्तमापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेहिती अहे सप्तमापुढ  
 विणेरइएहिती ठठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण अस्सखेज्जगुणा, दाहिणेण अस्स  
 खेज्जगुणा, दाहिणिहिती तमापुढाविणेरइएहिती पक्कमाधूमप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिम

म न खलोकाः इकरममपचिबीनिरयिकाः पूर्वपचिबीनोत्तरेव दक्षिणेनाहस्येयगुणाः, दिक्कनुपातन खल्लोका नेरयिका वालुकाप्रजापचिबीनिरयिका  
 पूर्वपचिबीनात्तरव दक्षिणेना हस्येयगुणाः, दिक्कनुपातेन खल्लोकाः पट्टमप्रजापचिबीनिरयिकाः पूर्वपचिबीनोत्तरेव दक्षिणेनाहस्येयगुणाः, दिक्कनुपातेन  
 खल्लोका धूमममपचिबीनिरयिकाः पूर्वपचिबीनोत्तरेव दक्षिणेना हस्येयगुणाः, दिक्कनुपातन खल्लोका सप्तमाप्रजापचिबीनिरयिका पूर्वपचिबीनोत्तरे  
 व दक्षिणेनाहस्येयगुणाः दिक्कनुपातन खल्लोका अहःसप्तमापुढवीनिरयिकाः पूर्वपचिबीनोत्तरेव दाहिणात्तरेप्यो व सप्तमापचिबीनिरयिकेभ्यः बह्या  
 कावाः पचिन्ना नेरयिका पूर्वपचिबीनोत्तरकार्त्तरेयगुणा दक्षिणेनाहस्येयगुणाः, दाहिणात्तरेप्यन्तथापचिबीनिरयिकेभ्यः पक्कमावा धूमप्रजा  
 वाः पचिन्ना नेरयिका पूर्वपचिबीनोत्तरकार्त्तरेयगुणा दक्षिणेनाहस्येयगुणाः दाहिणात्तरेप्यो धूमप्रजापचिबीनिरयिकेभ्य बह्यो पट्टमप्रजावा पृ  
 चिन्ना नेरयिकाः पूर्वपचिबीनोत्तरकार्त्तरेयगुणा दक्षिणेनाहस्येयगुणाः दाहिणात्तरेप्यो पट्टममपचिबीनिरयिकेभ्य ज्ञवीवावा वाहुकाप्रजापचिबी

[illegible][illegible]



खेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुराच्छिमपच्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेण अस्सखे० तेष  
पर यज्जसमोवधन्तगा समणाउसो ! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुराच्छिमेण सखेज्जगु  
णा, पच्चिक्खिमेण विसंसाहिंया दार १ । एएसिण व्रते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणिंयाण मणुस्साण देवाण  
सिद्धाणय पचगइसमासेण कयरे कयरोहिंतो अप्पाया यज्जयावा तुल्लावा विसंसाहिंया वा ? गोयमा !  
सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया अस्सखेज्जगुणा देवा अस्सखेज्जगुणा सिद्धा अण तगुणा तिरिस्कजोणिंया अण  
तगुणा । एएसिण व्रते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणिंयाण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण  
सिद्धाणय अण्ठगत्तिसमासेण कयरे कयरोहिंतो अप्पाया यज्जयावा तुल्लावा विसंसाहिंया वा ? गोयमा !  
सव्वत्थोवा मणुस्सीण मणुस्सा अस्सखेज्जगुणा । नेरइया अस्सखेज्जगुणा तिरिस्कजोणिंणीण अस्सखेज्जगुणा

[illegible]

८ । देवा अस्वेज्जगुणा । देवीं सस्वेज्जगुणां सिद्धा अणतगुणा तिरिक्कजोणिया अणतगुणा दार २ । एएसिण न्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण तेइदियाण चउरिदियाण पच्चिदियाण अणेदियाणय कयरे कयरोइती अण्णयावा यज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सइत्योवा पच्चिदिया चउरे दिया विसेसाहिया तइदिया विसेसाहिया बेइदिया एगिदियाण तेइदियाण चउरिदियाण पच्चिदिया अणतगुणा एगिदिया अणतगुणा वि० । एएसिण न्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण चउरिदियाण पच्चिदियाण अणतगुणा कयरे कयरोइती अण्णयावा यज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सइत्योवा पच्चि दिया अणतगुणा चउरिदिया अणतगुणा विसेसाहिया, तेइदिया अणतगुणा विसेसाहिया, बेइदिया अणतगुणा विसेसाहिया, एगिदिया अणतगुणा, सइदिया अणतगुणा विसेसाहिया । एएसिण न्ते ! सइदियाण एगिदियाण बेइदियाण चउरिदियाण पच्चिदियाण पण्णगण कयरे

[illegible]

कयरोहितो ध्रुव्यावा यज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियाया ? गोयमा ! सध्रुव्योवा पज्जत्तगा चडारिदिया  
 पचिदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, येइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया,  
 एगिदिया पज्जत्तगा धुणत्तगा, सइदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सइदियाण पज्जत्ताप  
 ज्जत्तगाण कयरे कयरोहितो ध्रुव्यावा यज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियाया ? गोयमा ! सध्रुव्योवा सइदिया  
 ध्रुपज्जत्ता पज्जत्तगा सइदिया सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! एगिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे  
 हितो ध्रुव्याया ? गोयमा ! सध्रुव्योवा एगिदिया पज्जत्तगा एगिदिया ध्रुपज्जत्तगा ध्रुस० । एएसिण नत्ते !  
 येइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरोहितो ध्रुव्यावा ? गोयमा ! सध्रुव्योवा येइदिया पज्जत्ता  
 येइदिया ध्रुपज्जत्ता ध्रुसखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरोहितो ध्रु  
 व्यावा ? गोयमा ! सध्रुव्योवा तेइदिया पज्जत्तगा ध्रुपज्जत्तगा ध्रुसखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते !

सत्तानां कतरे कतरेज्योऽस्या वा यदुका वा तुस्या वा विद्योपापिका वा ? गीतम् । सर्वस्वोकाः पर्याप्तकायतुरिन्द्रियाः पञ्चैन्द्रिया पर्याप्तका वि  
 शेषोपापिका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विद्योपापिका ह्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विद्योपापिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका यन्त्रगुणाः सेन्द्रियाः पर्याप्तकाः सस्येय  
 गुणा । एतेषां नदन्त । सेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽस्या वा यदुका वा तुस्या वा विद्योपापिका वा ? गीतम् । सर्वस्वोकाः  
 सेन्द्रिया अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सेन्द्रियाः सस्येयगुणाः । एतेषां नदन्त । एकेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽस्या वा ? गीतम् ।  
 सर्वस्वोका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका सर्वस्वेयगुणाः । एतेषां नदन्त । ह्रीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽस्या वा ? गीत  
 म । सयस्वोका ह्रीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका सस्येयगुणाः, एतेषां नदन्त । सेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्योऽस्या वा ? सर्वस्वो

ठ । देवा अस्वेज्जगुणा । देवाऽऽ सखेज्जगुणाऽऽ सिद्धा अणतगुणा तिरिस्सज्जोणिया अणतगुणा दार २ ।  
 एएसिण जते ! सइदियाण एगिदियाण येइदियाण तइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण अण्णेदियाणय  
 कयरे कयरेहिती अण्णयाथा यज्जयाथा तुल्लाथा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सइत्योवा पचिदिया चउरि  
 दिया यिसंसाहिया तइदिया विसंसाहिया येइदिया विसंसाहिया अणिदिया अणतगुणा एगिदिया अण  
 सइदिया वि० । एएसिण जते ! सइदियाण एगिदियाण येइदियाण तइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण  
 अण्णसगण कयरे कयरेहिती अण्णयाथा यज्जयाथा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सइत्योवा पचि  
 दिया अण्णसगण चउरिदिया अण्णसगण विसंसाहिया, तइदिया अण्णसगण विसंसाहिया, येइदिया  
 अण्णसगण विसंसाहिया, एगिदिया अण्णसगण अणतगुणा, सइदिया अण्णसगण विसंसाहिया । एए  
 सिण जते ! सइदियाण एगिदियाण येइदियाण तइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण पज्जासगण कयरे

तथा प्रवृत्त । सेन्द्रियाकामेन्द्रियाकां हीन्द्रियाकां चतुरिन्द्रियाकां पञ्चन्द्रियाकानभिन्द्रियाकां न कतरे कतरेस्मोअया वा बहुका वा  
 तुला वा विमपायिका वा ? गोतम ! सर्वलोकाः पञ्चेन्द्रिया चतुरिन्द्रिया विद्येवायिका कीन्द्रिया विद्येवायिका कीन्द्रिया विद्येवायिका अनि  
 त्त्रिणा समस्तानुका एवेन्द्रिया समस्तानुकाः सेन्द्रिया विद्येवायिकाः । यतेषां प्रवृत्त । सेन्द्रियाकामेन्द्रियाकां हीन्द्रियाकां कीन्द्रियाकां चतुरिन्द्रि  
 याकां पञ्चेन्द्रियाकानपयोसकानां कतरे कतरेस्मोअया वा बहुका वा तुला वा विद्येवायिका वा ? गोतम ! सर्वलोकाः पञ्चेन्द्रिया कययोसका  
 चतुरिन्द्रिया कययोसका विद्येवायिका कीन्द्रिया कययोसका विद्येवायिका हीन्द्रिया कययोसका विद्येवायिका एवेन्द्रिया कययोसका अण्णसगु  
 नाः चन्द्रिया कययोसका विद्येवायिकाः । यतेषां प्रवृत्त । सेन्द्रियाकामेन्द्रियाकां हीन्द्रियाकां कीन्द्रियाकां चतुरिन्द्रियाकां पञ्चेन्द्रियाकां यथा

याण पुढायिकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अकाइ  
याण कयरे कयरोहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सख्खीवा तसकाइया तेउकाइया अस्सखेज्जगुणा, पुढवि  
काइया विसंसाहिआ, आउकाइया विसंसाहिआ, वाउकाइया विसंसाहिआ अकाइया अणतगुणा,  
वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसंसाहिआवा । एएसिण नत्ते ! सकाइयाण पुढायिकाइयाण  
आउकाइयाण तेउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अप्पज्जसगाण कयरे कय  
रोहिती अप्पाया ४ ? गोयमा ! सख्खीवा तसकाइया अप्पज्जसगा, तेउकाइया अप्पज्जसगा अस्सखे  
ज्जगुणा, पुढविकाइया अप्पज्जसगा विसंसाहिआ, आउकाइया अप्पज्जसगा विसंसाहिआ, वाउकाइया  
अप्पज्जसगा विसंसाहिआ, वणस्सइकाइया अप्पज्जसगा अणतगुणा । सकाइया अप्पज्जसगा विसंसाहिआ

पर्याप्त विद्येपापिकाः । द्वारम् । इ । एतया प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वन  
स्पतिवायिकानां त्रसत्तायिकानामकायिकानां कतरं कतरंभ्यो अस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वसोकाखसत्तायिकां स्तेजस्कायिकां त्रसत्तयेयगुणाः पुचि  
वीकायिकां विद्येपापिकां अत्तायिकां वायुकायिकां विद्येपापिकां सत्तायिकां वनस्पतिवायिकानां वनस्पतिवायिकां अणतगुणाः सत्तायिका  
विद्येपापिकाः । एतेषां प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिवायिकानां त्रसत्तायि  
कानामपर्याप्तानां कतरं कतरंभ्यो अस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वसोकाखसत्तायिकां अपर्याप्तकां स्तेजस्कायिकां अणतगुणां त्रसत्तयेयगुणां पुचिबीकायिकां  
अणतगुणां विद्येपापिकां अत्तायिकां अणतगुणां विद्येपापिकां वनस्पतिवायिकां अणतगुणां सत्तायिकां अपर्याप्तकां  
विद्येपापिकाः । एतेषां प्रदत्त । सत्तायिकानां पुचिबीकायिकानां अत्तायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिवायिकानां त्रसत्तायि



चउरिदियाण पज्जसाण कयरे कयरोहंतो स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा चउरिदिया पज्जसा  
 गा चउरिदिया पज्जसाण ससखेज्जगुणा । एएसिण जते ! पचेदियाण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहंतो  
 स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा पचिदिया पज्जसाण ससखेज्जगुणा । एएसिण  
 जते ! सइदियाण एगिदियाण तेइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण पज्जसापज्जसाण कयरे २  
 हितो स्यप्पाधा १ ? गोयमा ! सव्वत्योधा चउरिदिया पज्जसाण पचिदिया पज्जसाण यिसेसाहिया , येइ  
 दिया पज्जसाण विसंसाहिया , तेइदिया पज्जसाण विसंसाहिया , पचिदिया सपज्जसाण ससखेज्जगुणा  
 चउरिदिया सपज्जसाण विसंसाहिया , तेइदिया सपज्जसाण विसंसाहिया , येइदिया सपज्जसाण यिसे  
 साहिया , एगिदिया सपज्जसाण सइदिया सपज्जसाण विसंसाहिया , एगिदिया पज्जसाण  
 सखेज्जगुणा , सइदिया पज्जसाण विसंसाहिया , सइदिया यिसेसाहिया दार ३ । एएसिण जते ! सकाइ

बालीगिदिया पयोसका अपयोसका सखेयगुणा । यतपो भवन्त । बतुरिग्गियाका पयोस कतरे कतरज्जोऽस्या वा ४ नीतम । सबसाका बतु  
 रिग्गियाः पयोसका अपयोसका सखेयगुणा । यतेपां जवन्त । पचेदियाका अपयोसकापयोस कतरे ० अया वा ४ नीतम । सबसाकाः पचेदियाः  
 पयोसका अपयोसका सखेयगुणा । एतेपां जवन्त । येदियाकायेदियाको हीदियाका हीदियाकां बतुरिग्गियाकां पचेदियाका पयोसापयोसा  
 वा कतरे ० अस्या वा ४ नीतम । सबसाका बतुरिग्गियाः पयोसकाः पचेदियाः पयोसका विज्जवायिकाः हीदियाः पयोसका विज्जवायिकाः हीदिया  
 याः पयोसका विज्जवायिका पचेदिया अपयोसका बतुरिग्गिया अपयोसका विज्जवायिका हीदिया अपयोसका विज्जवायिका ही  
 दिया अपयोसका विज्जवायिका एवेदिया अपयोसका विज्जवायिका एवेदियाः पयोसकाः सखेयगुणाः येदियाः येदियाः

याण पुढायिकाइयाण स्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अक्काइ  
 याण कयरे कयरेहिती अय्याथा ४ ? गोयमा ! सध्दलोवा तसकाइया तेउकाइया अय्यसखेज्जगुणा, पुढवि  
 काइया विसंसाहि्या, स्याउकाइया विसंसाहि्या वाउकाइया विसंसाहि्या अक्काइया अणतगुणा,  
 वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसंसाहि्यावा । एणसिण भत्ते ! सकाइयाण पुढायिकाइयाण  
 स्याउकाइयाण तेउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अय्यज्जत्तगण कयरे कय  
 रोहिती अय्याथा ४ ? गोयमा ! सध्दलोवा तसकाइया अय्यज्जत्तग, तेउकाइया अय्यज्जत्तग अय्यसखे  
 ज्जगुणा, पुढविकाइया अय्यज्जत्तग विसंसाहि्या, स्याउकाइया अय्यज्जत्तग विसंसाहि्या  
 अय्यज्जत्तग विसंसाहि्या, वणस्सइकाइया अय्यज्जत्तग अणतगुणा । सकाइया अय्यज्जत्तग विसंसाहि्या

पयोसका विद्योपायिकाः । द्वारम् । ३ । एतेषां भद्रम् । सत्तायिकानां पुयिबीकायिकानां अक्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वन  
 स्पतितायिकानां त्रसत्तायिकानामकायिकानां कठरे कठरेज्जो अस्मा वा ४ ? गोतम । सर्वस्तोकाखसत्तायिकां स्तोत्रस्कायिकां असखेयगुणाः । पुयि  
 बीकायिका विद्योपायिका अक्कायिका विद्योपायिका वायुकायिका विद्योपायिका अक्कायिका वनस्पतितायिका वनस्पतितायिकानां त्रसत्तायि  
 विद्योपायिकाः । एतेषां भद्रम् । सत्तायिकानां पुयिबीकायिकानां अक्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतितायिकानां त्रसत्तायि  
 कानामपयोसकानां कठर कठरेज्जो अस्मा वा ४ ? गोतम । सर्वस्तोकाखसत्तायिकां अपयोसकां स्तोत्रस्कायिकां असखेयगुणाः पुयिबीकायिका  
 ४० विद्योपायिका अक्कायिका ४० विद्योपायिका वायुकायिका ४५० विद्योपायिका वनस्पतितायिका ४५० वनस्पतितायिकानां त्रसत्तायिका  
 विद्योपायिका । एतेषां भद्रम् । सत्तायिकानां पुयिबीकायिकानां अक्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतितायिकानां त्रसत्तायि

एरुसिण नते ! सकाद्वयाण पुढविकाद्वयाण  
तसकाद्वयाणय पज्जसगाण कयरे कयरोहितो  
तेउकाद्वया पज्जसगा अस्सज्जगुणा, पुढविकाद्वया पज्जसगा विसेसाहिया  
साहिया, वाउकाद्वया पज्जसगा विसेसाहिया अउकाद्वया पज्जसगा विसे  
विसेसाहिया। एरुसिण नते ! सकाद्वयाण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहितो  
सिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वल्योवा सकाद्वया अउकाद्वया पज्जसगा  
नते ! पुढविकाद्वयाण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहितो अउकाद्वया पज्जसगा  
गोयमा ! सव्वल्योवा पुढविकाद्वया अउकाद्वया विसेसाहियावा ?  
अउकाद्वयाण पज्जसापज्जसाण कयरे कयरोहितो अउकाद्वया पज्जसगा  
नते ! सव्वल्योवा सकाद्वया अउकाद्वया पज्जसगा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वल्योवा अउकाद्वया अउकाद्वया पज्जसगा

बानां च पर्याप्तता कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सर्वस्योका कृतकायिकाः पर्याप्तका सेवककायिकाः पर्या० असंबन्धेयगुणा पृथिवीका  
यिका विहीयापिका ज्ञायापिका विहीयापिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विहीयापिका ज्ञायापिका पर्याप्तका जलपतिकायिकाः पर्याप्तका जलपतगुणाः सहायिका पर्याप्त  
का विहीयापिकाः । एतेषां भदन्त । सहायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सर्वस्योकाः सहायिकाः सहायिका पर्याप्त  
कायिका अपर्या० पर्या० संबन्धेयगुणाः । एतेषां भदन्त । पुण्यीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ ऽप्यी कल्पना वा ? नीतम् । सर्वस्योकाः पृथिवी  
सपर्वस्योकाः पर्याप्तकाः संबन्धेयगुणाः । एतेषां भदन्त । सेवककायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सर्वस्योका ज्ञायायिका

ज्ञातगा, श्याउकाइया पञ्जासगा संखिजगुणा । एएसिण नते ! तेउकाइयाण पञ्जाहापञ्जासगा कयरे  
 कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वत्योवा तेउकाइया श्यपञ्जासगा, तेउकाइया पञ्जासगा सखेजगुणा  
 एएसिण नते ! वाउकाइयाण पञ्जाहापञ्जासगा कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा । सध्वत्योवा वाउ  
 काइया श्यपञ्जासगा, वाउकाइया पञ्जासगा सखेजगुणा । एएसिण नते ! वणस्सइकाइयाण पञ्जाहा २ ण  
 कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वत्योवा वणस्सइकाइया श्यपञ्जासगा, वणस्सइकाइया पञ्जा  
 सगा सखेजगुणा । एएसिण नते ! तसकाइयाण पञ्जाहापञ्जासगा कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ गोय  
 मा ! सध्वत्योवा तसकाइया पञ्जासगा, तसकाइया श्यपञ्जासगा श्यसखेजगुणा । एएसिण नते ! सकाइयाण  
 पुढविकाइयाण श्याउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पञ्जाहा २ ण  
 कयरे कयरेहिती श्यप्पावा ४ ? गो० ! सध्वत्योवा तसकाइया पञ्जासगा, तसकाइया श्यपञ्जासगा श्यसखे  
 जगुणा, तेउकाइया श्यपञ्जासगा श्यसखेजगुणा पुढविकाइया श्यपञ्जासगा विससाहिया, श्याउकाइया श्य

ण्यका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वायुकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरप्योऽस्पा वा ४ ? गीतम । सर्वेस्तो  
 वा वायुकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वनस्पतिवायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ प्योऽस्पा वा ४ ? गीतम ।  
 सर्वस्तो वा वनस्पतिवायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वनस्पतिवायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ प्योऽस्पा वा ४ ?  
 गीतम । सर्वस्तो वा वनस्पतिवायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतया नदन्त । वनस्पतिवायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ प्योऽस्पा वा ४ ?  
 यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिवायिकानां वनस्पतिवायिकानां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरप्योऽस्पा वा वनस्पतिवायिका वा ४ ?

एरुसिण नते ! सकाडयाण पुढविकाडयाण  
तसकाडयाणय पज्जसगाण कयरे कयरोहो  
तेउकाडया पज्जसगा ससखेज्जगुणा, पुढविकाडया पज्जसगा विसेसाहिया  
साहिया, वाउकाडया पज्जसगा विसेसाहिया स्याउकाडया पज्जसगा  
विसेसाहिया। एरुसिण नते ! सकाडयाण पज्जसगा कयरे कयरोहो  
सिसेसाहिया ? गोयमा ! सख्त्योवा सकाडया सपज्जसगा, सकाडया पज्जसगा  
नते ! पुढविकाडयाण पज्जसगा कयरे कयरोहो सपज्जसगा, सकाडया पज्जसगा तुळावा  
गोयमा ! सख्त्योवा पुढविकाडया सपज्जसगा, पुढविकाडया पज्जसगा विसेसाहिया ?  
स्याउकाडयाण पज्जसगा कयरे कयरोहो सपज्जसगा, पुढविकाडया पज्जसगा विसेसाहिया ?  
मा ४ पर्यासां कवरे कवरेस्योअप्य मा ४ १ नोटम । सर्वकोवा कवकाविका : १०००००  
मा विद्येयापिवा कवकाविका वि

[illegible]

ज्ञत्तगा, आउकाइया पञ्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तेउकाइयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण कयरे  
 कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वल्योवा तेउकाइया अप्पज्जत्तगा, तेउकाइया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा  
 एएसिण नत्ते ! वाउकाइयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वल्योवा वाउ  
 काइया अप्पज्जत्तगा, वाउकाइया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! वणस्सइकाइयाण पञ्जत्ता २ ण  
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सध्वल्योवा वणस्सइकाइया अप्पज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पञ्ज  
 त्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! तसकाइयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ गोय  
 मा ! सध्वल्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा, तसकाइया अप्पज्जत्तगा सखेज्ज ० । एएसिण नत्ते ! सकाइयाण  
 पुढयिकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पञ्जत्ता २ ण  
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गो ० ! सध्वल्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा, तसकाइया अप्पज्जत्तगा सखे  
 ज्जगुणा, तेउकाइया अप्पज्जत्तगा सखेज्जगुणा पुढयिकाइया अप्पज्जत्तगा विसेसाहिंया, आउकाइया अप्

पयका अप्पयत्तगाः पर्याप्तकाः सखेयगुणाः । एतथा नदन्त । वायुकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सबसो  
 का वायुकायिका अप्पयत्तका पर्याप्तकाः सखेयगुणाः । एतथा नदन्त । वनस्पतिकायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ प्योऽस्या वा ४ ? गीतम ।  
 सर्वसोका वनस्पतिकायिका अप्पयत्तकाः पर्याप्तकाः सखेयगुणाः । एतेषां नदन्त । वनस्पतिकायिकानां पर्याप्त २ नां कतरे २ प्योऽस्या वा ४ ?  
 गीतम । सबसोका वनस्पतिका अप्पयत्तका अप्पयत्तकाः सखेयगुणाः । एतेषां नदन्त । सकायिकायां पुण्यवोकायिकानां पर्याप्तकानां तेजस्का  
 यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां वनस्पतिकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरप्योऽस्या वा ४ ? गीतम । विधेयपर्याप्तका वा ४ ?

पञ्चतगा विसेसाहिया, वाउकाइया अण्डागुणा सखेजगुणा, पुढवि  
काइया पञ्चतगा विसेसाहिया, अप्पाकाइया पञ्चतगा विसेसाहिया,  
अण्डागुणा घण० अनन्त० पञ्चतगा सखेजगुणा, सकाइया विसेसाहिया, सकाइया पञ्चत  
गा सखेजगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिण जते ! सुजमाण सुजमपुढविकाइयाण सुजमथाउकाइ  
याण सुजमतैउकाइयाण सुजमवाउकाइयाण सुजमवणस्सइकाइयाण सुजमणिठयाणय कयरे कयरोहिती  
अप्पावा१ ? गोयमा ! सद्धयोवा सुजमतैउकाइया, सुजमपुढविकाइया विसेसाहिया सुजमथाउकाइया  
विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया विसेसाहिया, सुजमनिगोदा अण्डागुणा, सुजमवणस्सइकाइया अण्डा  
गुणा, सुजमा विसेसाहिया। एएसिण जते ! सुजमअण्डागुणा सुहुमपुढविकाइयाण अण्डागुणा सुज  
मथाउकाइयाण अण्डागुणा सुजमतैउकाइयाण अण्डागुणा सुजमवाउकाइयाण अण्डागुणा सुजम

गीतम् । अथस्तोत्राख्यसुक्तानि । पर्याप्तका अथर्षासुक्ताः पृथिवीर्वायिकाः अथर्षासुक्ताः वि  
द्रवायिकाः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः  
काः पर्याप्तकाः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः  
मुक्ताः पर्याप्तकाः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः  
वीक्ष्यायिकानां मुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः अथर्षासुक्ताः  
४ ? गीतम् । अथस्तोत्राख्यसुक्तानि । पर्याप्तका अथर्षासुक्ताः पृथिवीर्वायिकाः अथर्षासुक्ताः वि

वणस्सइकाइयाण अण्डत्तगण सुहुमनिगोदाण अण्डत्तयाणय कयरे कयरेहिती अप्यावा४ ? गोयमा ।  
सख्योवा सुहुमतेउकाइया अण्डत्तया, सुहुमपुढविकाइया अण्डत्तगण विसंसाहिया, सुहुमअण्डका०  
अण्डत्तया विसंसाहिया, सुहुमवाउकाइया अण्डत्तया विसंसाहिया, सुहुमनिगोदा अण्डत्तगण अ  
सख्येजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अण्डत्तगण अणत्तगुणा, सुहुमा अण्डत्तगण सुहुमतेउकाइयपज्ज  
नते ! सुहुमपण्डत्तगण सुहुमपुढविकाइयपण्डत्तगण सुहुमअण्डकाइयपण्डत्तगण सुहुमनिगोदपण्डत्तगणय कयरे कय  
त्तगण सुहुमअण्डकाइयापण्डत्तगण सुहुमवणस्सइकाइयापण्डत्तगण सुहुमनिगोदविकाइयापण्डत्तगण वि  
रेहिती अप्यावा४ ? गोयमा ! सख्योवा सुहुमतेउकाइया पण्डत्तगण, सुहुमपुढविकाइया पण्डत्तगण विसंसाहिया, सुहु  
सेसाहिया, सुहुमअण्डकाइया पण्डत्तगण विसंसाहिया, सुहुमवाउकाइया पण्डत्तगण विसंसाहिया, सुहुमापण्डत्तगण विसंसा  
मनिगोदा पण्डत्तगण अण्डत्तगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापण्डत्तया अणत्तगुणा, सुहुमापण्डत्तगण विसंसा  
हिया दार ३ । एणसिण नते ! सुहुमाण पण्डत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अप्यावा४ ? सख्योवा सुहुमा

सूक्ष्मनिमीदा असक्यगुणाः सूक्ष्मवस्त्ररपतिकारिका अतन्मगुणाः सूक्ष्मा विक्षेपाचिकाः । एतेषा जदन्त । सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकारिका  
पयाप्तकानां सूक्ष्माप्याकारिकापर्याप्तकानां सूक्ष्मापर्याप्तकायुक्ताकारिका सूक्ष्मापर्याप्तवस्त्ररपतिकारिकानां सूक्ष्मापर्या  
प्तनिमीदानां बतरे २ प्रयोक्तावा ? नीतम् । सर्वेस्तोकाः सूक्ष्मापर्याप्ता कोणरकारिकाः सूक्ष्मपृथिवीकारिकाः सूक्ष्माप्याकारिका  
अपर्याप्तका विक्षेपाचिकाः सूक्ष्मवायुकारिका आ० विक्षेपाचिका सूक्ष्मनिमीदा आ० असक्यगुणा सूक्ष्मवस्त्ररपतिकारिका आ० अतन्मगुणा सूक्ष्मा  
अप० विक्षेपाचिका । एतेषा जदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकारिकायपर्याप्तकानां सूक्ष्माप्याकारिकापर्याप्तकानां सूक्ष्मवस्त्ररपतिकारिकापर्याप्तकानां सू





सखेज्ज० । एएसिण नत्ते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा !  
 सव्वत्थोया सुज्जमवणस्सइकाइया धपज्जत्ता, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तागा सखिज्जगुणा । एएसिण  
 नत्ते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोया सुज्जमनिगोदा  
 धपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तागा सखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुहुम  
 ध्याउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमनिगोदायाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २  
 ण कयरे कयरेहिती धप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोया सुज्जमतेउकाइया धपज्जत्ताया, सुज्जमपुढविकाइया  
 धपज्जत्ताया विसेसाहिया, सुहुमध्याउकाइया धपज्जत्ताया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया धपज्जत्ताया  
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्ताया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्ताया विसेसाहिया, सुज्ज  
 मध्याउकाइया पज्जत्तागा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तागा विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा ध्यणतगु

संख्येयगुणाः । यत्तया सूक्ष्मवन्स्पतिक्वायिकानां पर्या० पर्या०नां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मयन्स्पतिक्वायिका अपया  
 प्त्वाकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः, यत्तेषां सूक्ष्मनिगोदाभा पर्या० पर्या०ना कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोक्ताः सूक्ष्मनिगोदा अपया०  
 काः पर्या०काः संख्येयगुणाः । यत्तेषां प्रदत्ता । सूक्ष्मभावा सूक्ष्मपृथिवीक्वायिकानां सूक्ष्माप्यायिकानां सूक्ष्मतेजस्वायिकानां सूक्ष्मवायुक्वायिकानां सूक्ष्म  
 वन्स्पतिक्वायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या० पर्या०नां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मतेजस्वायिका अपया०ता सूक्ष्म  
 पृथिवीक्वायिका अपया०ता विधेयायिकाः सूक्ष्माप्यायिका अप० विधेयायिकाः सूक्ष्मवायुक्वायिका अप० विधेयायिकाः सूक्ष्मतेजस्वायिकाः पर्या०  
 काः संख्येयगुणाः सूक्ष्मपृथिवीक्वायिकाः पर्या० विधेयायिकाः सूक्ष्माप्यायिकाः पर्या० विधेयायिकाः सूक्ष्मवायुक्वायिकाः पर्या० विधेयायिकाः सूक्ष्म

अथपञ्चाशगा सुहमा पञ्चाशगां सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुहमपुढाविकाइयाण पञ्चाश २ ण कयरे २  
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्योवा सुहमपुढाविकाइया अपञ्चाशया , सुहमपुढाविकाइया पञ्चाशगा  
 सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुहमपुढाविकाइयाण पञ्चाश २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा ! सव  
 त्योवा सुहमपुढाविकाइया अपञ्चाशया , सुहमपुढाविकाइया पञ्चाशगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुह  
 मतेउकाइयाण पञ्चाश २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्योवा सुहमतेउकाइया अप  
 ञ्चाशगा सुहमतेउकाइया पञ्चाशगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुहमवाउकाइयाण पञ्चाश २ ण कयरे २  
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्योवा सुहमवाउकाइया अपञ्चाशगा , सुहमवाउकाइया पञ्चाशगा

हसपुढाविकाइयापयोऽङ्गानां सुहमवसरपतिक्कापयोऽङ्गानां सुहमानिदपऽङ्गानां च कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? नीतम । सवतोकाः सुहमतेउका  
 यिकाः प० सुहमपुढाविकाइयाः प० विखेपायिकाः सुहमाप्यायिकाः प० विखेपायिकाः सुहमवापुकायिकाः प० विखेपायिकाः सुहमनिगोदाः प०  
 कतरे कतरेज्यो अप्यावा ४ ? नीतम । सुहमा कपयोऽङ्गानां विखेपायिकाः । इदम् । ४ ० एतत्तं वदन्त । सुहमावा पयोऽपयोऽप्याना  
 नां पयोऽपयोऽङ्गानां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? नीतम । सवतोकाः सुहमपुढाविकाइया कपयोऽङ्गानां सुहमपुढाविकाइयाः पयोऽङ्गानां कपयन्  
 वा । एतेषा वदन्त । सुहमाप्यानामपयोऽपयोऽङ्गानां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? नीतम । सवतोकाः सुहमा अप्यायिका कप० पयोऽङ्गानां पं  
 स्पपुढा । एतेषा सुहमतेउकापयोऽङ्गानां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? नीतम । सवतोकाः सुहमतेउकापिका कप० पयोऽङ्गानां पं  
 वा । एतेषा सुहमवाउकायिकानां पयोऽपयोऽप्यानां कतरे कतरेज्योऽप्या वा ४ ? नीतम । सवतोकाः सुहमापयोऽङ्गानां वाउकायिकाः पयोऽङ्गानां

सखेज्ज्ञ० । एएसिण नते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्यप्यावा ४ ? गोयमा !  
 सव्वत्योवा सुज्झमवणस्सइकाइया व्यपज्झत्ता, सुज्झमवणस्सइकाइया पज्झत्ता सखेज्झगुणा । एएसिण  
 नते ! सुहुमनिगोदाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्यप्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्झमनिगोदा  
 व्यपज्झत्ता, सुहुमनिगोदा पज्झत्ता सखेज्झगुणा । एएसिण नते ! सुज्झमाण सुज्झमपुठविकाइयाण सुहुम  
 व्यउकाइयाण सुज्झमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्झत्ता २  
 ण कयरे कयरोहिती व्यप्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्झमतेउकाइया व्यपज्झत्ता, सुज्झमपुठविकाइया  
 व्यपज्झत्ता विसेसाहिया, सुहुमव्याउकाइया व्यपज्झत्ता विसेसाहिया, सुज्झमवाउकाइया व्यपज्झत्ता  
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्झत्ता सखेज्झगुणा, सुहुमपुठविकाइया पज्झत्ता विसेसाहिया, सुज्झ  
 मव्याउकाइया पज्झत्ता विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्झत्ता विसेसाहिया, सुज्झमनिगोदा व्यणतगु

सवयेयगुणाः । एतया सूक्ष्मवणस्पिकायिकानां पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वलोकां सूक्ष्मवणस्पिकायिका अपरा  
 धकाः पर्याप्ताः सवयेयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वलोकां सूक्ष्मनिगोदा अपरा  
 धकाः पर्याप्ताः सवयेयगुणाः । एतेषां ब्रह्म । सूक्ष्माद्या सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्यायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म  
 वणस्पिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाम् पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वलोकां सूक्ष्मतेपरजायिका अपराधता सूक्ष्म  
 पृथिवीकायिका अपराधता विशेषायिकाः सूक्ष्माप्यायिका अप० विशेषायिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषायिकाः पर्याप्तानां  
 काः सवयेयगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तानां विशेषायिका सूक्ष्माप्यायिका पर्याप्तानां विशेषायिका पर्याप्तानां विशेषायिकाः सूक्ष्म  
 वणस्पिकायिका अपराधता विशेषायिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषायिकाः सूक्ष्मतेपरजायिका अप० विशेषायिकाः पर्याप्तानां  
 काः सवयेयगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तानां विशेषायिका सूक्ष्माप्यायिका पर्याप्तानां विशेषायिका पर्याप्तानां विशेषायिकाः सूक्ष्म

अपञ्चस्रगा सुहमा पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमपठविकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २  
हिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा सुहमपठविकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमपठविकाइया पञ्चस्रगा  
सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमस्थाउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २ हिती अप्पावा ४ गोयमा ! सवत्थोवा  
सुहमस्थाउकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमस्थाउकाइया पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहम  
मतेउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे कयरे हिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा सुहममतेउकाइया अप  
ञ्चस्रगा सुहममतेउकाइया पञ्चस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहमवाउकाइयाण पञ्चस्रगा २ ण कयरे २  
हिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवत्थोवा सुहमवाउकाइया अपञ्चस्रगा, सुहमवाउकाइया पञ्चस्रगा

रमबायुक्तिपर्योक्तानां सूक्ष्मवन्नरपत्तिव्यापयोक्तानां सूक्ष्मान्नोदयपञ्चकानां च कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्का  
यिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विद्ययायिकाः प० विद्ययायिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विद्येयायिकाः सूक्ष्मनिर्गोदाः प०  
सर्वस्वयुक्ताः सूक्ष्मवन्नरपत्तिव्यापिकाः प० अन्नगुणाः कूश्माः पर्योक्ताः विद्येयायिकाः । द्वारम् । ४ ॥ एतत्वां जदन्त । सुक्ष्माकां पर्योपवर्षोक्तानां  
कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मा अपयोक्ताः सूक्ष्माः पर्योक्तकाः सुक्ष्मगुणाः । एतेवां मदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकायिका  
नां पर्योपवर्षोक्तानां कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्म अपयोक्ताः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपयोक्ताः पर्योक्ताः सर्वस्वयु  
क्ताः । एतेया जदन्त । सूक्ष्माप्यानामपयोपवर्षोक्तानां कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मा अप्यादिका अप० पर्योक्ताः स  
र्वस्वयुक्ताः । एतेया सूक्ष्मतेजस्वापयोपवर्षोक्तपञ्चकानां कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्वायिका अप० पर्योक्ताः सर्वस्वयु  
क्ताः । एतेवां सूक्ष्मवायुकायिकानां सर्वोपवायवीप्यानां कतरे कतरेभ्योऽप्या वा ४ ? नीतम् । सुवस्तोकाः सूक्ष्मापयोक्ता वायुकायिकाः सर्वोपवा

सखेज्ज० । एएसिण जते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जात्ता २ ण कयरे कयरेहिती अय्यावा ४ ? गोयमा !  
 सव्वत्योवा सुज्जमवणस्सइकाइया अयपज्जात्ता, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जात्ता सखेज्जगुणा । एएसिण  
 जते ! सुहुमनिगोदाण पज्जात्ता २ ण कयरे कयरेहिती अय्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमनिगोदा  
 अयपज्जात्ता, सुहुमनिगोदा पज्जात्ता सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! सुज्जमाण सुज्जमपुठविकाइयाण सुहुम  
 अयाउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जात्ता २  
 ण कयरे कयरेहिती अय्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमतेउकाइया अयपज्जात्ता, सुज्जमपुठविकाइया  
 अयपज्जात्ता विसेसाहिया, सुहुमअयाउकाइया अयपज्जात्ता विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अयपज्जात्ता  
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जात्ता सखेज्जगुणा, सुहुमपुठविकाइया पज्जात्ता विसेसाहिया, सुज्ज  
 मअयाउकाइया पज्जात्ता विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जात्ता विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अयणतगु

सखेयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवसरपत्तिकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेष्वोऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मवसरपत्तिकायिका अपय  
 पत्ताः पर्याप्तानां सखेयगुणा, एतेषां सूक्ष्मनिगोदाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेष्वोऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मनिगोदा अपय  
 वाः पर्याप्तानां सखेयगुणा । एतेषां सखेयगुणां सूक्ष्मपत्तिकायिकानां सूक्ष्मापत्तिकायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म  
 वसरपत्तिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदाणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेष्वोऽस्या वा ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मवसरपत्तिकायिका अपय  
 पत्तिकायिका अपयपत्ता विसेसाहियाः सूक्ष्मापत्तिकायिका अपय विसेसाहिया सूक्ष्मवसरपत्तिकायिका अपय  
 वाः सखेयगुणा सूक्ष्मपत्तिकायिका पर्याप्त विसेसाहिया सूक्ष्मापत्तिकायिका अपय विसेसाहिया सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्त विसेसाहिया सूक्ष्म

[illegible]

मिनीदा अप० अक्षमुक्ताः। सुखमभिप्रेतः पर्यो० सङ्गुक्तः। सुखमवस्थितिकायिका अप०का अक्षमुक्ताः सुखमा अपयो०का विज्ञेयायिकाः। सुखम  
अवस्थितिकायिकाः पर्यो० अक्षमुक्ताः। सुखाः पर्या०का विज्ञेयायिकाः। एतयो भदन् । आहाराणां आहरपृथ्वीकायिकानां आहाराप्रायिकानां  
आहरेतेजस्वायिकानां आहरवायुकायिकानां आहरजनस्पष्टिकायिकानां प्रत्येकशरीरबाहरजनस्पष्टिकायिकानां आहरनिनोदानां आहरप्रबलिका  
ना न कतर कतरभ्योऽस्या का ४ ; गौतम । सर्वलोका आहरजनकायिका आहरेतेजसायिका अक्षमुक्ताः प्रत्येकशरीरबाहरजनस्पष्टिकायिका  
अक्षमुक्ता आहरनिनोदा अक्षमुक्ता आहरपृथ्वीकायिका अक्षमुक्ता आहाराप्रायिका अक्षमुक्ता आहरवायुकायिका अक्षमुक्ता आहरजन  
स्पष्टिकायिका अक्षमुक्ता आहारा विज्ञेयायिकाः। एतेषां भदन् । आहरवर्णोक्तानां आहरपृथ्वीकायिकानां आहारापर्यो० अक्षमुक्तानां

गोदा अप्पञ्जत्तगाण वादरत्तसकाइया अप्पञ्जत्तगाणय कयरे कयरोहिती अप्प्यावा यज्जायावा तुल्लावा यि  
 सेसाहियाया ? गोयमा । सव्वत्थोवा वादरत्तसकाइया अप्पञ्जत्तगा, वादरत्तेउकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जा  
 गुणा, पत्तेयसरीरवादरवणस्सहकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जागुणा, वादरनिगोदा अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जा  
 गुणा, वादरपुढवीकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जागुणा, वादरआउकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जागुणा,  
 वादरवाउकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पसखेज्जागुणा, वादरवणस्सहकाइया अप्पञ्जत्तगा अप्पत्तगुणा, वादरअप  
 ज्जत्तगा विससाहिया ? । एएसिण भत्ते ! वादरपज्जत्तयाण वादरपुढविकाइयाण पज्जत्तयाण, वादरअण्ड  
 काइयाण पज्जत्तयाण वादरत्तउकाइय पज्जत्तयाण वादरवाउकाइया पज्जत्तयाण वादरवणस्सहकाइयाण पज्जा  
 हयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सहकाइया पज्जत्तयाण वादरनिगोद पज्जत्तयाण वादरत्तसकाइय पज्जत्तयाणय  
 कयरे कयरोहिती अप्प्यावा यज्जायावा तुल्लाया विससाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तउकाइया प

वादराप० तेत्तस्सविकाना वादरापयो० वायुकापिकाना वादरापया० वनस्पतिकापिकाना वादरापयो० प्रत्यक्षरीरवन्स्पतिकापिकाना वादरनि  
 गोदानामपयो० वाना वादरापयो० व्रसकापिकाना कतरे २ स्या० स्या वा ४ ? गीतम । सर्वज्ञावा वादरव्रसकापिका अपयो० का वादरत्तेत्तस्सायि  
 का अप० असस्येयगुणाः प्रत्यक्षरीरवादरवन्स्पतिकापिका अप० असस्येयगुणा वादरनिगोदा अपयो० सका असस्येयगुणा वादरपुचिबीकापिका  
 अपयासका असस्यगुणा वादराप्कापिका अप० असस्यगुणा वादरवायुकापिका अप० असस्यगुणा वादरवन्स्पतिकापिका अपया० अपनन्नागुणा वा  
 दरापया० विक्षपापिका । २ । यथा म० । वादरपया० वाना वादरपुचिबीकापयासकाना अपयो० सवादाप्प्याना पया० वादरत्तेत्तस्सविकाना  
 ना पयासवादरवायुकापाना अपयो० सवादरवन्स्पतिकापिकाना पयासप्रत्यक्षरीरवादरवन्स्पतिकापिकाना अपयो० सवादरनिगोदाना अपयो० सवादरव्रस



[illegible][illegible]

यादरतेउकाइयाण पज्झाप्ता २ ण कयरे कयरोहिती अण्व्यावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ।  
सध्वल्योवा यादरतेउकाइया पज्झाप्ताया यादरतेउकाइया अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
रवाउकाइयाण पज्झाप्ता २ ण कयरे कयरोहिती अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
त्तागा । यादरवाउकाइया अण्व्यावा ४ ? गोयमा । यादरवाउकाइया अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
कयरे कयरोहिती अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
या अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
कयरोहिती अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
णस्सइकाइया अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।  
अण्व्यावा ४ ? गोयमा । अण्व्यावा ४ ? गोयमा ।

यिः पर्याप्तता असम्पुङ्गाः । एतेषां प्रवृत्त । वादरतेजस्काणां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरे ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्वस्ते  
वा वादरतेजस्काः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरतेजस्कायिः असम्पुङ्गा । एतेषां प्रवृत्त । वादरवायुकायिः पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे क  
तरे ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्वस्ते वा वादरवायुकायिः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरवायुकायिः असम्पुङ्गा । एतेषां प्रवृत्त । वादरवामन  
तिकायिः पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरे ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्वस्ते वा वादरवामनस्य तिकायिः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरवामनस्य त  
िकायिः असम्पुङ्गा । एतेषां प्रवृत्त । प्रत्येकशरीरवादरवामनस्य तिकायिः पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरे ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्व  
स्ते वा वादरवामनस्य तिकायिः पर्याप्तता अपर्याप्ततादरवामनस्य तिकायिः असम्पुङ्गा । एतेषां प्रवृत्त । वादरवामनस्य तिकायिः पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरे ज्योऽस्या वा ? गीतम् । सर्वस्ते

उग्रया, यादरतसकाइया पज्जसगा अस्सखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरयादरथणस्सइकाइया पज्जत्तगा अस्स  
 खेज्जगुणा । यादरानिगोदा पज्जसगा सखेज्जगुणा । यादरपुढविकाइया पज्जसगा अस्सखेज्जगुणा । यादर  
 स्थाउकाइया पज्जसगा अस्सखेज्जगुणा । यादरथाउकाइया पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । यादरवणस्सइकाइ  
 या पज्जसगा अस्सखेज्जगुणा । यादरा पज्जसगा विसंसाहिंया ३ । एएसिण नत्ते ! यादराण पज्जाप्ता २ ण  
 कयरे कयरोहिंतो अप्पावा बज्जगावा तुल्लावा विसंसाहिंयावा ? गोयमा । सव्वत्थीवा यादरा पज्जत्तगा । वा  
 दरा अपज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! यादरपढविकाइयाण पज्जाप्ता २ ण कयरे कयरोहिंतो  
 अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थीवा यादरपुढविकाइया पज्जसगा १ । यादरपुढविकाइया अपज्जसगा अ  
 सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! यादरथाउकाइयाण पज्जाप्ता २ ण कयरे कयरोहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा !  
 सव्वत्थीवा यादरथाउकाइया पज्जसगा यादरथाउकाइया अपज्जसगा अस्सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते !

[illegible]

वादरतेउकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्युप्पावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा !  
 सव्वत्थोवा वादरतेउकाइया पज्झत्ताया वादरतेउकाइया व्युपज्झत्ताया व्यसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वाद  
 रथाउकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरथाउकाइया पज्झ  
 त्तागा । वादरवाउकाइया व्युपज्झत्ताया व्यसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण  
 कयरे कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवणस्सइकाइया पज्झत्तागा । वादरवणस्सइकाइ  
 या व्युपज्झत्तागा व्यसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे  
 कयरोहिती व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्झत्तागा । पत्तेयसरीरवादरव  
 णस्सइकाइया व्युपज्झत्तागा व्यसखेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरनिगोदाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती  
 व्युप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरनिगोदा पज्झत्तागा व्यसखेज्जगुणा ।

यिकाः पर्याप्तता अपर्याप्तता असंख्यगुणाः । एतथा नदत्त । वादरतेजस्कायाना पर्याप्तपयोप्ताना वा ? गोतम । सव्वत्तो  
 वा वादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तता अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः । एतेषां नदत्त । वादरवायुकायिकाना पर्याप्तपयोप्तानां वादरे वा  
 दरेज्याऽस्या वा ? गोतम । सर्वत्तोवा वादरवायुकायिकाः पर्याप्तताः अपर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणाः । एतेषां नदत्त । वादरवनस्प  
 तिकायिकाना पर्याप्तपयोप्ताना वादरे वादरेज्योऽस्या वा ४ ? गोतम । सव्वत्तोवा वादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तता अपर्याप्तवादरवनस्पति  
 कायिका असंख्यगुणाः । एतेषां नदत्त । मत्त्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानो पर्याप्तपयोप्तानां वादरे वादरेज्योऽस्या वा ४ ? गोतम । सव  
 स्तोवा मत्त्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तताः अपर्याप्तमत्त्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः । एतेषां नदत्त । वादरनिगो

एएसिण भन्ते ! यादरतसकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अय्याया ४ ? गोयमा ! सव्वन्योवा  
 यादरतसकाइया पज्झत्ता १ । यादरतसकाइया अयपज्झत्ता १ । एएसिण भन्ते ! यादराण  
 यादरपुठविकाइयाण यादरथाउकाइयाण यादरतसकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती  
 पत्तयसरीयादरवणस्सइकाइयाण यादरनिगोदाण यादरतसकाइयाण पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती  
 अय्याया यज्झयावा तुसावा यिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वन्योवा यादरतसकाइया पज्झत्तया १ । याद  
 रतसकाइया पज्झत्तया अयसखेज्जगुणा २ । यादरतसकाइया अयपज्झत्तया अयसखिज्जगुणा ३ । यादरपत्तय  
 वणस्सइकाइया पज्झत्तया अयसखेज्जगुणा ४ । यादरनिगोदा पज्झत्तया अयसखेज्ज ० ५ । यादरपुठविकाइ  
 या पज्झत्तया अयसखेज्जगुणा ६ । यादरथाउकाइया पज्झत्तया अयसखेज्जगुणा ७ । यादरवाउकाइया पज्झ

दाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ ? गोतम । सबसोका यादरनिगोदाः पर्याप्तका अपर्याप्तयादरनिगोदा असक्यगुहाः । एतया  
 वदन्त । यादरवसकायानां पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वलोका यादरवसकायिकाः पर्याप्तका यादरवसकायिका  
 अपर्याप्तका असक्येयगुहाः । ४ । एतया वदन्त । यादराणां यादरपृथिवीकायिकानां यादराज्जायानां यादरतेज्जकायिकानां यादरबापुकायिकानां  
 यादरवभरपतिकायिकानां प्रत्येकशरीरयादरवभरपतिकायिकानां यादरनिगोदानां यादरवसकायिकानां पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽस्या  
 वा ४ ? गोतम । सर्वलोका यादरतेज्जकायिकाः पर्याप्तका । यादरवसकायिकाः पर्याप्तका असक्यगुहाः २ । यादरवसकायिका अपर्याप्तका अ  
 सक्येयगुहाः ३ । पर्याप्तयादरप्रत्येकजनरपतिकायिका असक्येयगुहाः ४ । पर्याप्तयादरनिगोदा असक्यगुहाः ५ । पर्याप्तयादरपृथिवीकायिका अस  
 क्यगुहाः ६ । पर्याप्तयादराज्जायिका असक्यगुहाः ७ । पर्याप्तयादरतेज्जकायिका असक्यगुहाः ८ । असक्यगुहाः ९ । असक्येयगुहाः १० ।

त्रगा अस्वेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका  
 इया अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा १० । धादरनिगोदा अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा ११ । यादरपुठविकाइया  
 अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा १२ । यादरअ्याउकाइया अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा १३ । यादरवाउकाइया  
 अप० अस्वेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जगुणा अपज्जगुणा १५ । वादरपज्जगुणा विसेसा  
 हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जगुणा अस्वेज्जगुणा १७ । यादरा अपज्जगुणा विसेसाहिया १९ ।  
 यादरा विसेसाहिया २० । एगुसिण नते ! सुज्जमाण सुज्जमपुठविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमतेंउ  
 काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुठविकाइयाण  
 वादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण पत्तेयसरीरवादरवण

अपयोसप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १० । अपयोसवादननिगोदा असंख्यगुणा ११ । अपयोसवादरपुण्यवीर्यायिका असंख्यगु  
 णा १२ । अपयोसवादराष्कायिका असंख्यगुणा १३ । अपयोसवादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४ । पयोसवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा १५ ।  
 पयोस वादरा विज्ञेयायिका १६ । अपयोस वादरा विज्ञेयायिका १७ । अपयोस वादरा विज्ञेयायिका १८ । वादरा विज्ञेयायि  
 का १९ । एतेषा नदन्त । सूक्ष्माणा सूक्ष्मपुण्यवीर्यायिकाना सूक्ष्माष्कायिकाना सूक्ष्मवायुकायिकाना सूक्ष्मवनस्पतिका  
 यिकाना सूक्ष्मनिगोदा वादराणां वादरपुण्यवीर्यायिकाना वादराष्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पतिकायि  
 काना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाणां वादरअस्यायिकाना वा ४ ? गौतम । सबस्सोका वादरत्र  
 सत्तायिका १ । वादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा २ । प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा ३ । वादरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । वाद

एएसिण जते । धादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितीं स्युप्पाया ४ ? गोयमा ! सख्योवा  
 धादरतसकाइया पज्जसुगा । धादरतसकाइया स्युपज्जसुगा ४ । एएसिण जते । धादराण  
 धादरपुढाविकाइयाण धादरस्युउकाइयाण धादरतसकाइयाण धादरवाउकाइयाण धादरवणस्सइकाइयाण  
 पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइयाण धादरनिगोदाण धादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितीं  
 स्युप्पाया वज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सख्योवा धादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । धाद  
 रतसकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा २ । धादरतसकाइया स्युपज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ३ । धादरपत्तेय  
 वणस्सइकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ४ । धादरनिगोदा पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ५ । धादरपुढाविकाइ  
 या पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ६ । धादरस्युउकाइया पज्जसुगा स्युसखेज्जगुणा ७ । धादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तपर्याप्तानां कठरे कठरेज्जोऽस्या वा ४ । गौतम । सर्वस्वोका धादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तधादरनिगोदा अस्वकपुत्राः । एतयां  
 जदत्त । धादरवसकायानां पर्याप्तपर्याप्तानां कठरे कठरेज्जोऽस्या वा ४ । गौतम । सर्वस्वोका धादरवसकायिकाः पर्याप्तका धादरवसकायिका  
 अपर्याप्तका असक्येपनुकाः । ४ । एतयां जदत्त । धादराणां धादरपृथिवीकायिकानां धादराज्जायानां धादरतेज्रकायिकानां धादरवापुकायिकानां  
 धादरवतस्पतिर्वायिकानां प्रत्येककठरीरवादरवतस्पतिर्वायिकानां धादरनिगोदाणां धादरवसकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कठरे कठरेज्जोऽस्या  
 वा ४ । गौतम । सर्वस्वोका धादरतेज्रकायिकाः पर्याप्तकाः १ धादरवसकायिकाः पर्याप्तका असक्येपनुकाः २ । धादरवसकायिका अपर्याप्तका च  
 सक्येपनुकाः ३ । पर्याप्तवावरप्रत्येकवतस्पतिर्वायिका असक्येपनुकाः ४ । पर्याप्तधादरनिगोदा असक्येपनुकाः ५ । पर्याप्तधादरपृथिवीकायिका अस  
 क्येपनुकाः ६ । पर्याप्तधादराज्जायिका असक्येपनुकाः ७ । पर्याप्तधादरवापुकायिका असक्येपनुकाः ८ । अपर्याप्तधादरतेज्रकायिका असक्येपनुकाः ९ ।

ह्यसखिज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरिवादरवणस्सइका  
 ह्या अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १० । यादरनिगोदा अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा ११ । यादरपुठयिकाइया  
 अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १२ । यादरअ्याउकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १३ । यादरवाउकाइया  
 अ्यप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जह्मगा अ्यणतगुणा १५ । वादरपज्जह्मगा विसंसा  
 हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अ्यपज्जह्मगा असखेज्जगुणा १७ । यादरा अ्यपज्जह्मगा विसंसाहिया १९ ।  
 यादरा विसंसाहिया २० । एणसिण जत्ते । सुज्जमाण सुज्जमपुठविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमतेउ  
 काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुठविकाइयाण  
 वादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण पत्तेयसरीरिवादरवण

अपर्याप्तमस्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११ । अपर्याप्तवादरपुण्यविकायिका असंख्यगु  
 णा १२ । अपर्याप्तवादराप्यायिका असंख्यगुणाः १३ । अपर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४ । पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५ ।  
 पर्याप्ता वादरा विक्षपायिका १६ । अपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषपायिकाः १८ । वादरा विक्षेपायि  
 का १९ । एतेषा जदन्त । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपुण्यविकायिकामां सूक्ष्माप्यायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिका  
 यिकानां सूक्ष्मनिगोदानां वादराणां वादरपुण्यविकायिकानां वादराप्यायिकानां वादरतेजस्कायिकानां वादरवायुकायिकानां वादरवनस्पतिकायि  
 कामां मस्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकामां वादरनिगायानां वादरनिगोदानां वादरअसंख्यगुणा ४ । वादरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । वाद  
 रवायुकायिका १ । वादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः २ । मरयेकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३ । वादरनिगोदा असंख्यगुणा ४ । वाद



स्सइकाइयाण यादरनिगोदानं यादरतसकाइयाणय कयरे कयरोहिती अर्प्यावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा  
 यादरतसकाइया १ । यादरतेटकाइया अस्सखेज्जगुणा पत्तेयसरोरयादरवणस्सइकाइया अस्सखेज्जगुणा ।  
 यादरनिगोदा अस्सखेज्जगुणा । यादरपुढविकाइया अस्सखेज्जगुणा ५ । यादरआउकाइया अस्सखेज्जगुणा  
 यादरवाउकाइया अस्सखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया अस्सखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया विसेसाहि्या ।  
 सुज्जमआउकाइया विसेसाहि्या । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहि्या । सुज्जमनिगोदा अस्सखेज्जगुणा ।  
 यादरवणस्सइकाइया अणत्तगुणा यादरा विसेसाहि्या । सुज्जमवणस्सइकाइया अस्सखेज्जगुणा १५ ।  
 सुज्जमात्रिसेसाहि्या १ । एणत्तिण नते ! सुज्जमअपज्जयाण सुज्जमपुढविकाइयाण अपज्जस्रयाण सुज्जम  
 आउकाइया अपज्जत्तयाण सुज्जमतेउकाइयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमवाउकाया अपज्जत्तयाण सुज्जमवण  
 स्सइकाइयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तयाण यादरा अपज्जत्तयाण यादरपुढविकाइया अप

रपुण्णिवीकायिका अस्सकमुत्ताः ३ । यादराप्पाविका अस्सकमुत्ताः ६ । यादरायुकायिका अस्सकमुत्ताः ७ । अण्णतेअकायिका अस्सकमुत्ताः ८ ।  
 सुल्लपुण्णिवीकायिका विवोवायिकाः ८ । सुल्लाप्याविका विवोवायिकाः १० । सुल्लपायुकायिका विवोवायिकाः ११ । सुल्लामनोदा अस्सकमुत्ताः  
 १२ । यादरवणस्सइकायिका अस्सकमुत्ताः १३ । यादरा विवोवायिकाः १४ । सुल्लमनस्सइकायिका अस्सकमुत्ताः १५ । सुल्ला विवोवायिकाः १६ ।  
 एतेयां पदवत् । सुल्लापपयोसकानां सुल्लपुण्णिवीकायिकाणा अपयोसकानां सुल्लाप्याविकायिकाणा अपयोसकानां सुल्लमनस्सइकायिकाणा अपयोसकानां सुल्लम  
 युकायिकाणा अपयोसकानां सुल्लमनस्सइकायिकाणा अपयोसकानां यादरापयोसकानां यादरापुण्णिवीकायिकाणा अपयोसकानां यादराप्याविकाणा अपयोसकानां  
 यादराप्याविकाणां यादरवणस्सइकायिकाणा अपयोसकानां यादराप्याविकाणा अपयोसकानां यादरापुण्णिवीकायिकाणा अपयोसकानां यादराप्याविकाणा अपयोसकानां

ज्ञातयाण यादरथाउकाद्वयश्चपञ्जस्रयाण यादरतेउकाद्वयश्चपञ्जस्रयाण  
 यादरवणस्सइकाद्वयश्चपञ्जस्रयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाद्वयश्चपञ्जस्रयाण यादरनिगोदा च्चपञ्ज  
 स्रयाण यादरतसकाद्वया च्चपञ्जस्रयाणय कयरे कयरेहितो च्चप्यावाः १ गीयमा १ सच्चयोवा यादरत  
 सकाद्वया च्चपञ्जस्रगा । यादरतेउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चसखेज्जगुणा । यादरपुठविकाद्वया च्चपञ्ज  
 स्रपञ्जस्रगा च्चसखेज्जगुणा ३ । यादरनिगोदा च्चपञ्जस्रया च्चसखेज्जगुणा । यादरवाउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चस  
 त्रगा च्चसखेज्जगुणा । यादरथाउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चसखे ० ६ । यादरवाउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चस  
 खेज्जगुणा, सुज्जमेतेउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चसखेज्जगुणा । सुज्जमपुठविकाद्वया च्चपञ्जस्रगा विसंसाहिया १  
 सुज्जमथाउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा विसंसाहिया १० । सुज्जमवाउकाद्वया च्चपञ्जस्रगा विसंसाहिया, सुज्जम  
 निगोदा च्चपञ्जस्रगा च्चसखेज्जगुणा, यादरवणस्सइकाद्वया च्चपञ्जस्रगा च्चणतगुणा, यादरा च्चपञ्जस्रगा

वनस्पतिकायिकानामपयोमवादरनिगोदमा अपयोमवादरवसकायिकानाम्ब कतरे कतरेज्जोअपा वा ४ १ गीतम । सर्वसोका अपयोमवा  
 दरवसकायिका १ । अपयोमवादरवसकायिका असख्येयगुणा २ । अपयोमवात्तेकवरीरवादरवमस्पतिकायिका असख्यगुणा ३ । अपयोमवा  
 दरनिगोदा असख्यगुणा ४ । अपयोमवादरपुचिणीकायिका असख्यगुणा ५ । अपयोमवादराकायिका असख्यगुणा ६ । यादरवायुकायिका अप  
 योमवा असख्यगुणा । अपयोमवात्तसूक्ष्मवसकायिका असख्यगुणा ७ । अपयोमवात्तसूक्ष्मपुचिणीकायिका विद्येयायिका ८ । अपयोमवात्तसूक्ष्माकायिका विद्येया  
 यिका १० । अपयोमवात्तसूक्ष्मवायुकायिका विद्येयायिका ११ । अपयोमवात्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा अपयोमवात्तवादरवमस्पतिकायिका अनन्तगुणा वा  
 दरा अपयोमवा विद्येयायिका अपयोमवात्तसूक्ष्मवसकायिका असख्यगुणा अपयोमवात्तसूक्ष्माकायिका २ । एतेया मदम्ब । सुस्सपयोमवा

त्रिसेसाहिया, सुक्लमयणस्सइकाइया अणपज्जसुगगा अणसखिज्जगुणा, सुक्लमा अणपज्जसुगगा त्रिसेसाहिया २ ।  
 एएसिण सत्ते । सुक्लमपज्जसुयाण सुक्लमपुढविकाइयपज्जसुगगाण सुक्लमअण्यकाइयपज्जसुगगाण सुक्लमतेउका  
 इयपज्जसुयाण सुक्लमवाउकाइयपज्जसुयाण सुक्लमयणस्सइकाइयपज्जसुयाण सुक्लमनिगीयपज्जसुयाण  
 यादरपज्जसुगगाण यादरपुढविकाइयपज्जसुयाण यादरअण्यकाइयपज्जसुयाण यादरतेउकाइयपज्जसुयाण वा  
 यादरवाउकाइयपज्जसुयाण यादरवणस्सइकाइयपज्जसुयाण पत्तयसरीरयादरयणस्सइकाइयपज्जसुयाण वा  
 दरनिगीदपज्जसुयाण यादरतसकाइयपज्जसुयाणय कयरे कयरेहिती अण्यथा ४ ? गोयमा ! ससुत्थीवा वा  
 दरतउकाइया पज्जसुगा । यादरतसकाइया पज्जसुया अणसखिज्जगुणा । पत्तयसरीरयादरयणस्सइकाइया  
 पज्जसुगगा अणसखेज्जगुणा । यादरनिगीदा पज्जसुया अणसखेज्जगुणा, यादरपुढविकाइया पज्जसुया अणस  
 यादरअण्यकाइया पज्जसुया अणसखेज्जगुणा, यादरवाउकाइया पज्जसुगा अणसखेज्जगुणा । सुक्लमतेउकाड

सुत्तपयिबीकादिकपर्यांकाभा पर्यांअसूत्तः।आयिकानां पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिकानां पर्यांअसूत्तवामुकायिकानां पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिकाना प  
 र्यांअसूत्तमनिगीदाभा यादरपर्यांकाभा पर्यांकाडरपयिबीकायिकानां पर्यांकाडरपयिबीकायिकाना पर्यांकाडरतत्तस्वायिकानां पर्यांकाडरवामुकायि  
 कानां पर्यांकाडरवत्तस्वायिकानां पर्यांकाडरवत्तस्वायिकानां पर्यांकाडरवत्तस्वायिकानां पर्यांकाडरवत्तस्वायिकानां पर्यांकाडरवत्तस्वायिकानां  
 रम्पोअथा वा ४ ? भौतम । अयंकाभाः पर्यांकाडरतेतस्वायिकाः पर्यांकाडरतत्तस्वायिका अयंकाभुकाः पर्यांकाडरतत्तस्वायिका अयंकाभुकाः  
 अयंकाभुकाः पर्यांकाडरनिगीदा अयंकाभुकाः पर्यांकाडरपयिबीकायिका अयंकाभुकाः पर्यांकाडरपयिबीकायिका अयंकाभुकाः पर्यांकाडरवामुकायि  
 का अयंकाभुकाः पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिका अयंकाभुकाः पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिका अयंकाभुकाः पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिका अयंकाभुकाः पर्यांअसूत्तवत्तस्वायिका

या पञ्जस्रया अस्खेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमअउकाइया पज्जस्रगा  
यिसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया अस्खेज्जगुणा, याद  
रयणस्सइकाइया पज्जस्रया अणत्तगुणा, यादरपज्जस्रया विससाहिया, सुज्जमयणस्सइकाइया पज्जस्रगा  
अस्खगुणा । सुज्जमपज्जस्रया विससाहिया ३ । एएसिण जत्ते ! सुज्जमाणवादराणय पज्जत्ता २ ण  
कयरे कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा । सव्वत्योवा वादरा पज्जस्रया, यादरा अप्पज्जत्तगा अस्खगुणा  
सुज्जमा अपज्जस्रगा अस्खगुणा, सुज्जमा पज्जस्रगा सखगुणा । एएसिण जत्ते ! सुज्जमपुढविकाइयाण  
यादरपुढविकाइयाणय पज्जसा २ ण कयरे कयरेहिती अप्पाया ४ ? गोयमा । सव्वत्योवा वादरपुढवि  
काइया पज्जस्रया यादरपुढविकाइया अप्पज्जस्रया अस्खेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया अप्पज्जस्रगा अस्स  
खेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जस्रगा सखेज्जगुणा । एएसिण जत्ते ! सुज्जमअउकाइयाण वादरअउ

[illegible]

काइयाण पज्झता २ ण कयरे कयरोहिती सुप्पाया १ ० गोयमा ! सव्वत्योत्रा यादरश्चाउकाइया पज्झत्तया  
 यादरश्चाउकाइय सुपज्झत्तया असस्वगुणा, सुज्झमश्चाउकाइया सुपज्झत्तया असस्वगुणा, सुज्झमश्चा  
 उकाइया पज्झत्तगा सस्वगुणा । एएसिण जत्ते ! सुज्झमतेउकाइयाण यादरतेउकाइयाणय पज्झत्ता २ ण  
 कयर कयरोहिती सुप्पाया १ ० गोयमा ! सव्वत्योत्रा यादरतेउकाइया पज्झत्तया, यादरतेउकाइया सुप  
 ज्झत्तया असस्वज्झगुणा, सुज्झमतेउकाइया सुपज्झत्तया असस्वगुणा, सुज्झमतेउकाइया पज्झत्तगा सस्वेज्जा  
 गुणा । एएसिण जत ! सुज्झमश्चाउकाइयाण यादरश्चाउकाइयाणय पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती सुप्पा  
 या १ ० गोयमा ! सव्वत्योत्रा यादरश्चाउकाइया पज्झत्तया यादरश्चाउकाइया सुपज्झत्तया असस्वगुणा !  
 सुज्झमश्चाउकाइया सुपज्झत्तया सुसस्वे ० । सुज्झमश्चाउकाइया पज्झत्तया असस्वगुणा । एएसिण जत्ते !  
 सुज्झमवणस्सउकाइयाण यादरवणस्सइकाइयाणय पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती सुप्पाया १ ० गोयमा !

यिका अपयो०वादराप्पायिका असस्वगुणा अपयो०सूक्ष्माप्पायिका असस्वगुणाः । एतेषां जदत्त । दूरमतेजस्का  
 यिकानां वाहरतस्सकायिकाणां पयो०पयो०णां कतर कतरस्सोऽस्या वा ४ ? नीतम् । सबकोलाः पयो०वाहरतेजस्कायिका अपयो०वाहरतेजस्का  
 यिका असस्वगुणा अपयो०दूरमतेजस्कायिका असस्वगुणाः पयो०सूक्ष्ममतेजस्कायिकाः सवपमुकाः । एतेषां जदत्त । दूरममामुकायिकानां वाहरवा  
 यथायिकानां च पयो०प० कतरे कतरस्सोऽस्या वा ४ ? नीतम् । सबस्ताकाः पयो०वाहरवापुकायिका अपयो०वाहरवापुकायिका असस्वगुणा च  
 पयो०दूरममामुकायिका असस्वपेयगुणाः पयो०सूक्ष्ममामुकायिका असस्वपेयगुणाः । एतेषां जदत्त । दूरममामुकायिकानां वाहरममामुकायि  
 कानां पयो०पयो०णां कतर कतरस्सोऽस्या वा ४ ? नीतम् । सबकोलाः पयो०वाहरममामुकायिका अपयो०वाहरममामुकायिका असस्वपेयगुणा

सहस्रयोवा वादरवणस्सइकाइया पज्झत्तया, 'आदरवणस्सइकाइया' अपज्झत्तया अस्सखिज्जगुणा, सुज्जम  
वणस्सइकाइया अपज्झत्तया अस्सखिज्जगुणा । सुज्जमवणस्सइकाइया पज्झत्तया सस्सिज्जगुणा । एएसिण भत्ते !  
सुहुमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्झत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पयावा ४ ? गोयमा ! सहस्रयोया वाद  
रनिगोदा पज्झत्तया, वादरनिगोदा अपज्झत्तया असस्से ०, सुज्जमनिगोदा अपज्झत्तया अस्सखिज्जगुणा,  
सुज्जमनिगोदा पज्झत्तया सस्सेज्जगुणा ४ । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढयिकाइयाण सुज्जमअ्थाउका  
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादर  
पुढविकाइयाण वादरअ्थाउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्ते  
यसररीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पया  
वा ४ ? गोयमा ! सहस्रयोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वादरतस्सइकाइया पज्जत्तया अस्सखगुणा २

अपयो ० सुस्सवमरपत्तिकायिका असुक्कगुणा पर्या ० सुस्सवमरपत्तिकायिकाः सहस्रगुणाः । एतथा प्रवक्षः । सुस्समनिगोदाना वादरनिगोदाना पर्यो  
स्तापर्याप्तानां कतरे कतरेप्पोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वकोकाः पर्या ० का वादरनिगोदा अपयोसवादरनिगोदा असस्यगुणा अपयोससूस्समनिगो  
दा असस्यगुणाः पर्या ० सुस्समनिगोदाना सहस्रगुणाः । एतथा प्रवक्षः । सुस्सावा सुस्सपयिबीकायिकाना सुस्साप्याना सुस्सतजस्सायिकाना सुस्स  
वमरपत्तिकायिकाना सुस्सवायुकायिकाना सुस्समनिगोदाना वादरावा वादरपयिबीकायिकाना वादराप्यायिकाना वादरतेजस्सायिकाना वादरवा  
युकायिकाना वादरवमरपत्तिकायिकाना प्रत्येकवारवादरवमरपत्तिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरतजस्सायिकाना पर्या ० सापयोसानां कतरे कत  
रप्पोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वकोका वादरतजस्सायिका पर्या ० काः १ । पर्या ० सवादरतजस्सायिका असस्येयगुणा २ । अपयोसवादरतजस्सायिका

यादरतसकाह्या अपउज्जत्तया असखिउज्जगुणा ३ । पत्तियसरीयादरवणस्सहकाह्या पज्जत्तया असखिउज्ज  
 गुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जत्तया असखिउज्जगुणा ५ । बायरपुढाविकाह्या पज्जत्तया असखिउज्जगुणा ६ ।  
 यादरथाउकाह्या पज्जत्तया असखिउज्जगुणा ७ । यादरवाउकाह्या पज्जत्तया असखिउज्जगुणा ८ । यादरतेउ  
 यादरनिगोदा अपज्जत्तया असखिउज्जगुणा ९ । पत्तियसरीयादरवणस्सहकाह्या अपज्जत्तया असखिउज्जगुणा १० ।  
 ह्या अपज्जत्तया असखे ११ । यादरथाउकाह्या अपज्जत्तया असखे १२ । यादरथाउका  
 ह्या असखेउज्जगुणा १३ । यादरथाउकाह्या अपज्जत्तया असखे १४ । सुज्जमतेउकाह्या अपज्ज  
 ज्जत्तया विसेसाहिया १५ । सुज्जमपुढाविकाह्या अपज्जत्तया विसेसाहिया १६ । सुज्जमथाउकाह्या अप  
 सखि ०११ । सुज्जमपुढाविकाह्या पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमथाउकाह्या पज्जत्तया  
 सुज्जमवाउकाह्या पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुज्जमनिगोदा अपउज्जत्तया असखे ० २३ । सुहुमनिगो

असखेयमुखाः ३ । पर्याप्तमत्वेकहरीरवादरवणस्पत्तिकाविका असखेयमुखाः ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असखेयमुखाः ५ । पर्याप्तवादरपरिबीणाविका  
 असखेयमुखाः ६ । पर्याप्तवादराप्ताविका असखेयमुखाः ७ । पर्याप्तवादरवायुकाविका असखेयमुखाः ८ । अपर्याप्तवादरतेवत्ताविका असखेय  
 मुखाः ९ । अपर्याप्तमत्वेकहरीरवादरवणस्पत्तिकाविका असखेयमुखाः १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असखेयमुखाः ११ । अपर्याप्तवादरपरिबीणाविका  
 असखेयमुखाः १२ । अपर्याप्तवादराप्ताविका असखेयमुखाः १३ । अपर्याप्तवादरवायुकाविका असखेयमुखाः १४ । अपर्याप्तमत्वेकहरीरवादरतेवत्ताविका असखेय  
 मुखाः १५ । अपर्याप्तमत्वेकहरीरवादरवणस्पत्तिकाविका असखेयमुखाः १६ । अपर्याप्तवादरनिगोदा असखेयमुखाः १७ । अपर्याप्तवादरपरिबीणाविका असखेय

दा पञ्चमया सखि० २१ । यादरयणस्सहकाइया पञ्चमया अणतगुणा २५ । यादरपञ्चता विसेसाहिया २६ । यादरयणस्सहकाइया अणतगुणा २७ । यादरअणतगुणा २८ । यादरा विससाहिया २९ । सुज्जमयणस्सहकाइया अणतगुणा ३० । सुज्जमअणतगुणा विससाहिया ३१ । सुज्जमयणस्सहकाइया पञ्चमया सखि० ३२ । सुज्जमपञ्चमया विससाहिया ३३ । सुज्जमा अिससाहिया ३४ । एएसिण जत्ते ! जीवाण सजोगीण मणजोगीण कायजोगीण अजोगीणय कयरे २ हितो अण्णावा यज्जयावा तुल्लावा विससाहियाया ? गोयमा । सव्वत्योवा जीवा मणजोगी वयजोगी अण्ण सखेज्जगुणा अजोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी विससाहिया, दार ५ । एएसिण जत्ते ! जीवाण सवेदगण इत्थीवेदगण पुरिसवेदगण नपुसवेदगण अण्णवेदगणय कयरे २ हितो अण्णावा ४

काः १८ । पर्याप्तसूक्ष्मवर्तिकाः संख्यगुणाः १९ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विद्योपाधिकाः २० । पर्याप्तसूक्ष्माकायिका विद्योपाधिकाः २१ । पर्याप्तसूक्ष्मायुक्तायिका विज्ञापाचकाः २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मजिवाद्या असंख्यगुणाः २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगाद्या असंख्यगुणाः २४ । पर्याप्तसादरत्वनश्यति कायिका जननगुणा २५ । पर्याप्ता सादरा विद्योपाधिकाः २६ । अपर्याप्तसादरत्यनश्यत्तायिका असंख्यगुणाः २७ । अपर्याप्ता यादरा विद्योपाधि का २८ । यादरा विद्योपाधिका २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवर्तिकायिका संख्यगुणाः ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विद्योपाधिकाः ३१ । पर्याप्ता सूक्ष्मवर्त र्णिकायिकाः संख्यगुणाः ३२ । पर्याप्ताः सूक्ष्मा विज्ञापाधिकाः ३३ । सूक्ष्मा विद्योपाधिकाः ३४ द्वारम् । ४ । यत्रया प्रदत्त । जीवानां सयोगिना मन्तोयोगिनो वाग्प्राणिनां नाययोगिना अयोनिना च कतर कतराप्यऽत्या या ४ ? गीतम् । सर्वस्वोक्ता जीवा मन्तोपागिनो वाग्पयोगिनोऽसंख्येय गुणा अयोनिगीऽनन्तगुणाः प्रापयोगिनो भस्तगुणा सयोगिमो विद्योपाधिकाः । द्वारम् । ५ । एतेषा प्रदत्त । जीवानां सर्वेक्षानां खोबेदकामा



यादरत्तसकाइया अपउजत्तया असखिउजगुणा ३ । पत्तियसरीयादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असखिउज  
 गुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जत्तया असखिउजगुणा ५ । याथरपुढविकाइया पज्जत्तया असखेउजगेणा ६ ।  
 यादरथाउकाइया पज्जत्तया असखिउजगुणा ७ । यादरवाउकाइया पज्जत्तया असखेउजगुणा ८ । यादरतेउ  
 काइया अपउजत्तया असखिउजगुणा ९ । पत्तियसरीयादरवणस्सइकाइया अपउजत्तया असखेउज १० ।  
 यादरनिगोदा अपउजत्तया असखे ११ । यादरथाउकाइया अपउजत्तया असखे १२ । यादरथाउका  
 इया अपउजत्तया असखे १३ । यादरथाउकाइया अपउजत्तया असखे १४ । सुज्जमतेउकाइया अपउज  
 त्तया असखेउजगुणा १५ । सुज्जमपुढविकाइया अपउजत्तया विसेसाहिंया १६ । सुज्जमथाउकाइया अप  
 जत्तया विसेसाहिंया १७ । सुज्जमथाउकाइया अपउजत्तया विसेसाहिंया १८ । सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तया  
 सखि ०१९ । सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिंया २० । सुहुमथाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिंया २१  
 सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिंया २२ । सुज्जमनिगोदा अपउजत्तया असखे ० २३ । सुहुमनिगो

असखेयगुणा ३ । पर्याप्तसत्वेकसरीरवादरवणस्सविकायिका असखेयगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असखेयगुणा ५ । पर्याप्तवादरपुढविकायिका  
 असखेयगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्यायिका असखेयगुणा ७ । पर्याप्तवादराविका असखेयगुणा ८ । पर्याप्तवादरतेउकायिका असखेयगुणा ९ ।  
 अपयसत्वेकसरीरवादरवणस्सविका असखेयगुणा १० । अपयसत्वादरनिगोदा असखेयगुणा ११ । अपयसत्वादरपुढविका असखेयगुणा  
 १२ । अपयसत्वादराप्यायिका असखेयगुणा १३ । अपयसत्वादराविका असखेयगुणा १४ । अपयसत्वादरतेउकायिका असखेयगुणा १५ ।  
 अपयसत्वादरपुढविका असखेयगुणा १६ । अपयसत्वादराप्यायिका असखेयगुणा १७ । अपयसत्वादराविका असखेयगुणा १८ । अपयसत्वादरतेउकायिका असखेयगुणा १९ ।  
 अपयसत्वादरपुढविका असखेयगुणा २० । अपयसत्वादराप्यायिका असखेयगुणा २१ । अपयसत्वादराविका असखेयगुणा २२ । अपयसत्वादरतेउकायिका असखेयगुणा २३ ।

सम्प्रामिच्छदिठीण च कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा जीवा सम्प्रामिच्छदिठी, सम्प्रामिच्छदिठीण मिच्छदिठीस्थणतगुणा, दार ९ । एएसिण जते ! जीवाण ह्यन्निगिबोहियणाणीण सुयणाणीण त्तिहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा मणपज्जवनाणी त्तिहिनाणी ह्यस० ह्यन्निगिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केवलनाणी ह्यण० । एएसिण जते ! जीवाण मडह्यणाणीण सुयह्यणाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा जीवा विजगनाणी मडह्यणाणी दोवि तुल्ला ह्यणतगुणा । एएसिण जते ! जीवाण ह्यन्निगिबोहियनाणीण सुयनाणीण त्तिहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण मतिह्यणाणीण सुयह्यणाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरोहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा

प्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबसोका कोवा सम्यग्मिप्यादृष्टिभः सम्यग्दृष्टिनोऽनन्तगुणाः, द्वारम् । ६ । एतेषा जदन्त । जीवाभामानिनिबोधिक्कञ्चानिना भुत्तञ्चानिनामवपिञ्चानिना मणपयवपिञ्चानिना केवलसञ्चानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबसोका मन पर्ययसञ्चानिना उवाचिञ्चानिनाऽवश्यगुणा ह्यन्निगिबोधिक्कञ्चानिनाः भुत्तञ्चानिनासु द्वावपि तुल्यो विसेपापिक्को केवलसञ्चानिनाऽनन्तगुणाः । एते पो जदन्त । मत्सञ्चानिना जीवामा भुत्ताञ्चानिना विभङ्गसञ्चानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबसोका कोवा विजङ्गसञ्चानिना मत्सञ्चानिनाः भुत्ताञ्चानिनासु द्वावपि तुल्यो भजन्तगुणो । एतेषा जदन्त । जीवाना ह्यन्निगिबोधिक्कञ्चानिना भुत्तञ्चानिनामवपिञ्चानिना मणपयवपिञ्चानिना केवलसञ्चानिना मत्सञ्चानिना विभङ्गसञ्चानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबसोका कोवा मणपयवपिञ्चानिनाऽवश्यगुणाः ह्यन्निगिबोधिक्कञ्चानिनाः भुत्तञ्चानिनासु द्वी अपि तुल्यो विषयपिक्को, विजङ्गसञ्चानिनाऽवश्यगुणाः केवलसञ्चानिनाऽनन्त

? गोयमा ! सद्युयोवा जीवा पुरिसवेदगा ह्ययीवेदगा सखेज्जगणा, छवेदगा अणतगुणा नपुसगवेदगा  
 अणतगुणा सवेयगा विससाहिंया, दार ६ । एणसिण जते । जीवाण सकसाईण कोहकसाईण माणक  
 साईण मायाकसाईण लोन्नकसाईण अकसाईणय कयरे कयरोहितो अण्णवावा ? गोयमा ! सद्युयोवा जीवा  
 अकसाई माणकसाई अणतगुणा, कोहकसाई विससाहिंया, मायाकसाई विससाहिंया, लोन्नकसाई विससा  
 हिंया, सकसाई विससाहिंया, दार ७ । एणसिण जते । जीवाण सलेसाण किरुहलेसाण नीललेसाण काउ  
 लेसाण तवलेसाण पम्हलेसाण सुक्खलेसाण अलसाणय कयरे कयरोहितो अण्णवावा ? गोयमा ! सद्युयोवा  
 जीवा सुक्खलेसा पम्हलेसा सखिज्जगुणा तेललेसा सखिज्ज ० अलेसा अणतगुणा काउलेसा अणतगुणा नील  
 लेसा विससाहिंया कएहलेसा विससाहिंया, दार ८ । एणसिण जते ! जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीण

पुरुषवदकानां नपुसवदकानामवेदकानां च कतरे कतरेज्जोऽस्या वा ४ । नीतम । सवस्तोकाः जीवाः पुरुषवदकाः खवेदकाः सद्यगुणा सवेदका  
 कलमपुका नपुसवदका अनन्तगुणाः सवेदका विज्ञेयचिन्ताः दार ६ । एतन्मो जदन्त । जीवानां सद्ययानि मोचकयानिना मानकयानिना मा  
 याकयानिनां सोन्नकयानिना सकयानिना च कतर कतरेज्जोऽस्या वा ४ । नीतम । सवस्तोकाः जीवा सकयानिनां मानकयानिनां नन्तगुणाः को  
 थकयानिनां विज्ञेयचिन्ता मायाकयानिनां विज्ञेयचिन्ता सोन्नकयानिनां विज्ञेयचिन्ता सकयानिनां विज्ञेयचिन्ता दारम् ७ । एतथा जदन्त ।  
 जीवानां ससङ्गानां कण्ठसेदयाना नीललदयाना कापोतसेदयानां पटलदयानां कङ्कलेदयानां सलेदयानां च कतर कतरेज्जोऽस्या  
 वा ४ ? नीतम । सवस्तोका जीवाः कङ्कलदयाः पटलदयाः सद्यगुणा कापोतसेदयाः सद्यगुणा अनन्तगुणा कापोतसेदया अनन्तगुणा च  
 ससङ्गया विज्ञेयचिन्ता कण्ठसेदया विज्ञेयचिन्ता । दारम् ८ । एतेषा जदन्त । सम्यग्गृहिता विध्यादृष्टिना विध्यादृष्टिना च कतरे कतरे

सम्प्रामिच्छदिष्टीण च कयरे कयरेहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा जीवा सम्प्रामिच्छदिष्टी, सम्प्र  
 दिष्टी ह्यणतगुणा मिच्छदिष्टीह्यणतगुणा, दारः ? । एएसिण नते ! जीवाण ह्यन्निगोहियणाणीण  
 सुयणाणीण उहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सह  
 त्योवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी ह्यसः । ह्यन्निगोहियनाणी सुयनाणी दोयि तुल्ला यिसेसाहिया केव  
 लनाणी ह्यणः । एएसिण नते ! जीवाण महह्यखाणीण सुयह्यखाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरेहितो  
 ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा जीवा यिजगनाणी महह्यखाणी सुयह्यखाणी दोयि तुल्ला ह्यणतगुणा ।  
 एएसिण नते ! जीवाण ह्यन्निगोहियनाणीण सुयनाणीण उहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी  
 ण मतिह्यखाणीण सुयह्यखाणीण विजगनाणीणय कयरे कयरेहितो ह्यप्यावाः ? गोयमा ! सहत्योवा

प्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबस्तीका लोकाः स्वयमिप्यादृष्टिना स्वयमृष्टिनोमन्तगुणाः, दारम् । ६ । एतेषा नदन्त ।  
 लोकाणामानिययोपिक्कानिना सुतप्पानिनामवपिप्पानिना मनपयवप्पानिना केवलप्पानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबस्तीका  
 मन पर्ययप्पानिनो उवापिप्पानिनोऽसस्यगुणा आनिमिदोपिक्कानिनाः सुतप्पानिमद्य द्वावपि तुल्यो विक्षपाचिको केवलप्पानिनोऽनन्तगुणाः । एते  
 पां नदन्त । मत्तप्पानिनां लोकाणां सुताप्पानिनां विभङ्गप्पानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबस्तीका लोका विभङ्गप्पानिनो मत्त  
 पानिनाः सुताप्पानिमद्य द्वावपि तुल्यो अनन्तगुणौ । एतेषा नदन्त । लोकाणां आभिर्मयोपिक्कानिनां सुतप्पानिनामवपिप्पानिना मनपययप्प  
 निना केवलप्पानिना मत्तप्पानिना सुताप्पानिना विजङ्गप्पानिना च कतरे कतरेप्योऽस्या वा ४ ? गीतम् । सबस्तीका लोका मनपययप्पानिनोऽव  
 पिप्पानिनोऽसस्यगुणा आनिमयोपिक्कानिनाः सुतप्पानिमद्य द्वौ अपि तुल्यो विक्षपाचिको, विभङ्गप्पानिनोऽसस्यगुणा केवलप्पानिनोऽनन्त



सृष्ट्योवाः ? गोयमा ! सृष्ट्योवा जीवां सृष्ट्यागारोवउत्ता सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, दारं १३ । एए  
 सिण नत्ते ! जीवाण स्याहारगाण सृष्ट्याहारगाणय कयरे ? हित्ते सृष्ट्यावाः ? गोयमा ! सृष्ट्योवा जीवा  
 सृष्ट्याहारगा स्याहारगा सृष्ट्याखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण नत्ते ! जीवाण न्नासगाण सृष्ट्यासगाणय क  
 यरे कयरोहित्ते सृष्ट्यावा बज्जयावा तुल्लाया विसेसाहियावा ? गोयमा ! सृष्ट्योवा जीवा न्नासगा सृष्ट्या  
 सगा सृष्ट्यातगुणा, दार १५ । एएसिण नत्ते ! जीवाण परिस्ताण सृष्ट्यापरिस्ता नोसृष्ट्यापरिस्ताणय  
 कयरे कयरोहित्ते सृष्ट्यावाः ? गोयमा ! सृष्ट्योवा जीवा परिस्ता नोसृष्ट्यापरिस्ता सृष्ट्यातगुणा  
 सृष्ट्यापरिस्ता सृष्ट्यातगुणा, दार १६ । एएसिण नत्ते ! जीवाण पज्जात्ताण सृष्ट्यापज्जात्ता नोसृष्ट्यापज्जात्ता  
 णय कयरे कयरोहित्ते सृष्ट्यावाः ? गोयमा ! सृष्ट्योवा जीवा नोपज्जात्तगानोसृष्ट्यापज्जात्तगा सृष्ट्यापज्जात्तगा  
 सृष्ट्यातगुणा पज्जात्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण वादराण नोवादराणय कयरे ?

कानामनाहारकाना च कठरे कठरेप्पोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा कनाहारका वाहारका अस्वस्वमुपाः । द्वारम् । १४ । यतेपा मद  
 न् । जीवानां प्रायकानामन्नायकाना च कठरे कठरेप्पोऽस्या वा तुल्या वा विशेषाधिके वा । गोतम । सर्वस्वोका जीवा प्रायका अन्नायका च  
 मन्तगुणाः । द्वारम् । १५ । एतेपा नदन्त । जीवाना परीतानामपरीताना नो परीताना नो अपरीताना च कठरे कठरेप्पोऽस्या वा ? गोतम ।  
 सर्वस्वोका जीवा परीता नोपरीता नो अपरीता अन्तगुणा अपरीता अन्तगुणाः । द्वारम् । १६ । यतेपा मदन् । जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ता  
 नो नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्तानो च कठरे कठरेप्पोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा नोपर्याप्तका अपर्याप्तका अन्तगुणाः  
 पर्याप्तकाः सन्तगुणाः । एतेपा नदन्त । मूलाका वादराका नोसूक्ष्माका नो वादराणां च कठरे कठरेप्पोऽस्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा



ठया११ अणन्तगुणेषुमाळित्यकाए दसुठयाए अणतगुणे अरुसमए दसुठयाए अणतगुणे । एएसिण नते !  
 धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायअगासत्थिकायजीवत्थिकायपोगालत्थिकायअरुसमयाण पदेसठयाए कयरे  
 कयरोहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्व  
 त्योवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे पांगलत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे अरुसमए पदेसठ  
 याए अणतगुणा अगासत्थिकाए पदेसठाए अणतगुणा । एएसिण नते ! धम्मत्थिकायस्स दसुठयाए पदे  
 सठयाए कयरे कयरोहितो अप्पावा यज्जायावा तुल्लाया विनंसहिमाया ? गोयमा ! सव्वत्योवा एगे धम्म  
 त्थिकाए दसुठयाए सोचंच पदेसठयाए असत्थिज्जगुणा । एएसिण नते । अधम्मत्थिकायस्स दसुठयपदे  
 सठयाए कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्योव एगे अधम्मत्थिकाए दसुठयाए सोचंच पदे  
 सठयाए असत्थिज्जगुण । एतस्सण नत ! अगासत्थिकायस्स दसुठपदेसठयाए कयरे कयरोहितो अप्पावा ४  
 ? गोयमा । सव्वत्योव एगे अगासत्थिकाए दसुठयाए सोचंच पदेसठयाए अणतगुणा , एतस्सण नते !

उपपा वा १-गीतम । धर्मास्तिबायधर्मास्तिबायो हावयेतो तुल्लो प्रदेक्षार्थतया सव्वत्तो कीर्त्तिस्तिबाय प्रदेक्षार्थतयानन्तगुणः पुद्गलस्ति  
 बायप्रदेक्षार्थतयाऽनन्तगुणो ऽहःसमयः प्रदेक्षार्थतयानन्तगुण बाकाशस्तिबायः प्रदेक्षार्थतयानन्तगुणः । अस्य भद्रम् । धर्मास्तिबायस्य च  
 द्रव्यायतया प्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम सवस्ताव एको धर्मास्तिबायः प्रदेक्षार्थतया स एवानन्तगुणः । अस्य भद्रम् ।  
 अपर्मास्तिबायस्य द्रव्यायतया प्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सवत्तो क एकोऽधर्मास्तिबायो द्रव्यायतया सयव प्रदेक्षार्थतया  
 ऽसम्पुणः । एतस्य भद्रम् । बाकाशस्तिबायस्य द्रव्यायप्रदेक्षार्थतया कतरं कतरज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सवत्तो क एक बाकाशस्तिबायो



[illegible][illegible]

अथासमए दद्वठपदेसठयाए अणतगणे अणतगुणए पदेसठयाए अणतगुणा दार २१ । एएसिण जते ।  
 जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा अचरिमा च  
 रिमा अणतगुणा दार २२ । एएसिण जते । जीवाण पोग्गलाण अथासमयाण सव्वदह्वाण सव्वपएसण  
 सव्वपज्जावायण कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा पोग्गला अणतगुणा अथास  
 मया अणतगुणा सव्वदह्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणतगुणा सव्वपज्जाया अणतगुणा दार २३ । खित्ता  
 णुआएण सव्वत्योवा जीवा उहुलोयतिरियलोए अहोलीय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असखि  
 ज्जगुणा तेलुक्को असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलीए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा  
 नेरडया तेलुक्को अहोलोगतिरियलोगे असखेज्ज ० अहोलीए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा

नां वरमावाचरमावा ॥ कतर कतरेप्पोऽप्या वा ४ ? गोतम । सवस्तोवा जीवा अचरमाधरमा वनल्लगुणा । दारम् २२ । एतेपा नदम् ।  
 जीवाना पुट्ठलानामदासमयानां सव्वद्वयाया सव्वपदेसाया सव्वपयवाया च कतरे कतरेप्पोऽप्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्तोवा जीवाः पुट्ठला च  
 लगुणा अदासमया वनल्लगुणाः सव्वद्वयावि विक्षेपापिक्कानि सव्वपदेसा वनल्लगुणाः सव्वपयवा वनल्लगुणाः । दारम् २३ । सेत्रानुपातेन सवस्तो  
 वा जीवा कव्वलाकतिर्यग्लोके अचोसोक्ततिर्यग्लोके विक्षेपापिक्कास्तिर्यग्लोके असव्वगुणा खोलोक्कऽसव्वगुणा कव्वलाकऽसव्वगुणा अचालोक्क वि  
 क्षेपापिक्का सेत्रानुपातेन सवस्तोवा नेरविकाखोलोके अचोलाकतिर्यग्लोके असव्वगुणा अचालोके असव्वगुणा । सेत्रानुपातेन सवस्तोवा  
 ययोनिक्का कव्वलोक्ततिर्यग्लोके अचालाकतिर्यग्लोके असव्वगुणा खोलोक्क असव्वगुणा खोलोके असव्वगुणा । सेत्रानुपातेन सवस्तोवा  
 विक्षेपापिक्काः । सेत्रानुपातेन सवस्तोवास्तिर्यग्लोके कव्वलोके असव्वगुणा खोलोके असव्वगुणा खोलोके असव्वगुणा खोलोके असव्वगुणा

तिरिस्कजोगिया उहुलोयतिरियलोए अहोलीगतिरियलोए यिसेसाहिंया तिरियलोए असखेजगुणा, ते  
लुक्के असखेजगुणा उहुलोए असखेजगुणा अहोलीए विससाहिंया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा तिरिस्कजो  
णिणीन उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिजगुणा  
अहोलीए सखजगुणात तिरियलोए सखिजगुणात खेत्ताणुवाएण सवत्योवा मणुस्सा तेलुक्के उहुलोयतिरि  
यलोए असखेजगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिजगुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए सखेजगुणा।  
खेत्ताणुवाएण सवत्योवात मणुस्सीत तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए सखेजगुणात अहोलीयतिरियलोए सखे  
जगुणात उहुलोए सखेजगुणात अहोलीए सखजगुणा तिरियलोए सखेजगुणा, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा  
देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणा तेलुक्के असखेजगुणा अहोलीए तिरियलोए असखेजगुणा०

[illegible]

अहोलीए सखिजगुणानं तिरियलीए सखिजगुणानं खेत्ताणुवाएण सस्योवानं देयीनं उहुलीए उहुलीए  
 तिरियलीए असखेजगुणानं तेलुक्की सखेजगुणानं अहोलीयतिरियलीए असखेजगुणानं अहोलीए सखे  
 जगुणानं तिरियलीए सखिजगुणानं खेत्ताणुवाएण सस्योवा नवणथासीदेवा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए  
 असखेजगुणानं तेलुक्की सखिजगुणानं अहोलीयतिरियलीए असखेजगुणानं, तिरियलीए असखिजगुणा  
 अहोलीए असखेजगुणा, खेत्ताणुवाएण सस्योवा नवणवासिणीनं देयीनं उहुलीए तिरियलीए असखि०,  
 तेलुक्की सखेजगुणानं अहोलीए तिरियलीए असखेजगुणा, तिरियलीए असखिजगुणा, तेलुक्की असखिजगुणा  
 खेत्ताणुवाएण सस्योवा वाणमतरादेवा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए असखिजगुणा, तेलुक्की असखिजगुणा  
 अहोलीए तिरियलीए असखेजगुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलीए सखिजगुणा, खेत्ताणुवाएण सस्यो

अपोलोकातिपत्तोके उवयगुणास्तपत्तोके उवयगुणा अपोलोके सर्वयगुणाः । हेतानुपातेन सबसोका वाच्यन्तरा देवा ऊदलोके ऊदलोका  
 तियत्तोके उवयगुणा खेतोस्ते उवयगुणा अपोलोकातिपत्तोका उवयगुणा स्तिपत्तोके सस्यगुणा । हेतानुपातेन सबसो  
 का वाच्यन्तर्मा देवा ऊदलोके ऊदलोकातिपत्तोका, उवयगुणा खेतोस्ते सस्यगुणा अपोलोकातिपत्तोके उवयगुणाः अपोलोके सर्वयगुणा स्तिप  
 त्तोके उवयगुणाः । हेतानुपातेन सबसोका स्तिपत्तोका देवा ऊदलोके ऊदलोकातिपत्तोके उवयगुणा खेतोस्ते अपोलोकातिपत्तोका  
 उवयगुणा अपोलोका उवयगुणा स्तिपत्तोके उवयगुणाः । हेतानुपातेन सबसोका न्यतिपत्तेष्व ऊदलोके ऊदलोकातिपत्तोका उवयगुणा इति  
 तावत् उवयगुणा अपोलोकातिपत्तोके उवयगुणा अपोलोके उवयगुणाः । हेतानुपातेन सर्वसोका वेमानिका देवा ऊद  
 लोकातिपत्तोका खेतोस्ते उवयगुणा अपोलोकातिपत्तोके सस्यगुणा अपोलोके सर्वयगुणा ऊदलोके उवयगुणाः । हेतानु

तिरिस्कजोणिया उहुलोयतिरियलोए अहोलीगतिरियलोए यिसेसाहिंया तिरियलोए असखेज्जगुणा, ते  
 लुक्के असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्ज० अहोलीए यिसेसाहिंया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा तिरिस्कजो  
 णिणीत्त उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्ज०, तेलुक्के असखेज्ज० अहोलीयतिरियलोए सखिज्जगुणात्त  
 अहोलीए सखेज्जगुणात्त तिरियलोए सखिज्जगुणात्त खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा मणुस्सा तेलुक्के उहुलोयतिरि  
 यलोए असखेज्जगुणा अहोलीयतिरियलोए सखिज्जगुणा अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा।  
 खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवात्त मणुस्सीत्त तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए सखेज्जगुणात्त अहोलीयतिरियलोए सखे  
 ज्जगुणात्त उहुलोए सखेज्जगुणात्त अहोलीए सखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्योवा  
 देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलीए तिरियलोए असखेज्ज०

यमुका अपोत्ताके संकयमुका स्तियम्मोके सकयमुकाः । वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मणुका कोत्तोक्क ऊहंसीकतियम्मोके उवंकयमुका अपोत्ताकतिय  
 म्मोके सकयमुका अपोत्ताके संकयमुका स्तियम्मोके सकयमुका । वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मणुका कोत्ताक्के ऊहंसीकतियम्मोके सकयमुका अपो  
 त्ताकतियम्मोके सकयमुका ऊहंताके संकयमुका अपोत्ताके सकयमुका स्तियम्मोके सकयमुका । वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका देवा ऊहंताके उहंसीकति  
 यम्मोके उवंकयमुका कोत्ताक्के उवंकयमुका अपोत्ताकतियम्मोके उवंकयमुका अपोत्ताके सकयमुका । वेत्ताणुपातेन सर्वरतो  
 का देवा ऊहंताकतियम्मोके उवंकयमुका कोत्ताक्के सकयमुका अपोत्ताकतियम्मोके अपंकयमुका अपोत्ताके संकयमुका स्तियम्मोके संकयमु  
 काः । वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मणननाहिदेवा ऊहंताक ऊहंसीकतियम्मोके उवंकयमुका कोत्ताक्के सकयमुका अपोत्ताकतियम्मोके उवंकयमुका स्ति  
 यम्मोके उवंकयमुका अपोत्ताके उवंकयमुका । वेत्ताणुपातेन सर्वरतोका मणननाहिदेवा ऊहंताके अपोत्ताके अपंकयमुका कोत्ताक्के संकयमुका

सधृत्योवा एगिदिया जीवा उहुलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए धिसेसाहिया, तिरियलोए अस्  
 खेजगुणा, तलुक्के अस्०, उहुलोए अस्खेजगुणा, अहोलोए धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा  
 एगिया जीवा अ्पजत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए धिमसाहिया, तिरियलोए अस्  
 खेजगुणा, तलुक्के अस्खेजगुणा, उहुलोए अस्खिजगुणा, अहोलोए धिमसाहिया, तिरियलोए  
 सधृत्योवा एगिया जीवा पजत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलोए धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण  
 अस्खेजगुणा, तलुक्के अस्खेजगुणा, उहुलोए अस्खेजगुणा, अहोलोए धिमसाहिया । खेत्ताणुवाएण  
 सधृत्योवा अहोलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खेजगुणा, तलुक्के अस्०, अहोलोए तिरियलोए  
 अस्खेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा अहोलोए अस्  
 पजत्तगा उहुलोए । उहुलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तलुक्के अस्खेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए अस्  
 खेजगुणा, अहोलोए सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा अहोलोए उहुलोए उ  
 हुलोयतिरियलोए अस्खेजगुणा, तलुक्के अस्खेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए अस्खेजगुणा, अहोलो  
 ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सधृत्योवा अहोलोए उहुलोयतिरियलो

व्यगुणा अपासोकातिपलाके अस्वगुणा अपोनीके सधृत्युवा । स्तिग्भाक मरगुणा । वेथानुपातेन सधृत्योवा द्वीन्त्रिया अपयोमका कथ्यलाक  
 कथ्यलाकतिपलाके सधृत्युवाएण लाक्य अस्वगुणा अपासोकातिपलाके अस्वगुणा । अपोनीके सधृत्युवा । स्तिग्भाक मरगुणा । वेथानुपातेन  
 सधृत्योका द्वीन्त्रियाः पपासका कथ्यलाकतिपलाके अस्वगुणा एण सोपपअस्वगुणा अपोनीकेतिपलाके अस्वगुणा अपोनीके सधृत्युवा



सह्योवा एगिदिया जीवा उहुलोए तिरियलोए, अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस  
खेजगुणा, तेलुक्के अस०, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण सह्योवा  
एगिया जीवा अपज्जत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलीए तिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए अस  
खेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलीए विससाहिया । खेत्ताणवाएण  
सह्योवा एगिया जीवा पज्जत्तगा, उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विससाहिया । खेत्ताणवाएण  
सह्योवा देइदिया उहुलोए उहुलीयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के अस०, अहोलीए तिरियलोए  
असखेजगुणा, अहोलीए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सह्योवा देइदिया अ  
पज्जत्तगा उहुलोए । उहुलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस  
खेजगुणा, अहोलीए सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणवाएण सह्योवा देइदिया पज्जत्तगा उहुलोए उ  
हुलीयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोली  
ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सह्योवा तेइदिया उहुलोए उहुलीयतिरियलो

व्यगुणा अपासोक्तियसोके ऽसक्यगुणा अपोसोके सवगुणा । शेषानुपातेन सवस्ताका द्वीन्त्रिया अपयोसका कर्ष्यसाक  
 कर्ष्यसाकतिर्यसोके सवगुणा त्रैताक्य ऽसक्यगुणा अपोसोक्तियसोके ऽसंश्रुता अपोसोके सवगुणा । शेषानुपातेन  
 सवस्ताका द्वीन्त्रिया अपयोसका कर्ष्यसाकतिर्यसोके सवगुणा त्रैताक्य ऽसक्यगुणा अपोसोक्तियसोके ऽसंश्रुता अपोसोके सवगुणा अपोसोके सवगुणा



१ अथ० । तेलुक्के अथसखेज्जगुणा, अथघोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुव्वाएण स  
 स्योवा तेइदिया अपज्जगुणा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, तेलुक्के अथसखेज्जगुणा, अ  
 होलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, अथहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुव्वाएण स  
 स्योवा तेइदिया पज्जगुणा उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, तेलुक्के अथसखेज्जगुणा, अथहोली  
 ए तिरियलीए अथसखेज्जगुणा, अथहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुव्वाएण स  
 स्योवा चउरिदिया जीया उहुलीए उहुलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा । तेलुक्के अथसखेज्जगुणा, अथहोली  
 यतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, अथहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुव्वाएण स  
 चउरिदिया जीया अपज्जगुणा उहुलीए, उहुलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, तेलुक्के अथसखेज्जगुणा, अ  
 होलीयतिरियलीए अथसखेज्जगुणा, अथहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलीए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुव्वाएण स

नूवा तियल्लोके वसयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया उहुलीके अईलीकठियानोके उवसयनुवा अवीलीके व  
 ल्लेवनुवा । तियेक्कोके वस्येयनुवा । उवानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया अपयोमना । अप्योकोके अप्योकोकतिवक्कोके वस्येयनुवा । अवीलीके  
 वस्येयनुवा अवीलीकतिवक्कोके वस्येयनुवा । तियेक्कोके वस्येयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया । अपयोमना । अप्योकोके अप्योकोके  
 तियेक्कोके वस्येयनुवा अवीलीके वस्येयनुवा । तियेक्कोके वस्येयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया । अपयोमना । अप्योकोके अप्योकोके  
 या बीवा अप्योकोके वस्येयनुवा । अवीलीके वस्येयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया । अपयोमना । अप्योकोके अप्योकोके  
 लोके वस्येयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया बीवा । अपयोमना । अप्योकोके वस्येयनुवा । वेदानुवातेन सर्वसोकाकोत्त्रिया । अपयोमना ।

त्योवा घडरिदिया जीया पज्जात्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, तेलुक्के अस्खेज्जगुणा  
 अहोलीयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएण सख्त्थो  
 या पचिदिया तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए  
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए अस्खेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सख्त्थोत्रा पचिदिया  
 अज्जात्तया, तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए अस्खेज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए  
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सख्त्थोवा पचिदिया पज्जात्ता  
 उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अस्०, तेलुक्के अस्०, अहोलीयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलीए सखेज्ज०  
 तिरियलोए अस्खेज्ज० । खेत्ताणुवाएण सख्त्थोवा पुठविकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए

पोसोकातिपक्खलोक्क असंख्यगुणा अपोसोके सखयगुणा स्तिपक्खलोके सखयगुणा । अत्राणुवातेन सवस्सोमाइतारन्धिया जीवाः पर्याप्तगा ऊच्य  
 लोके ऊच्यसोकातिपक्खलोके असंख्यगुणा अपोसोकातिपक्खलोक्क असखयेयगुणाः अपोसोकेसंखयेयगुणाः तियक्खलोकेसंखयेयगुणा ।  
 अत्राणुवातेन सवस्सोमाः पण्डेन्धिया अपोसोकातिपक्खलोके असखयेयगुणाः अपोसोकातिपक्खलोके सखयेयगुणाः ऊच्यलोके सखयेयगुणाः ति  
 पक्खलोक्क असखयेयगुणा । अत्राणुवातेन सवस्सोमाः पण्डेन्धियाः अपर्याप्तगा अपोसोकातिपक्खलोके असखयेयगुणाः अपोसोकातिपक्खलोके  
 सखयगुणाः ऊच्यलोके संखयगुणा अपोसोके सखयगुणाः तियक्खलोक्क सखयगुणाः । अत्राणुवातेन सवस्सोमाः पण्डेन्धियाः पर्याप्ता ऊच्यलोके  
 ऊच्यसोकातिपक्खलोके असखयेयगुणाः अपोसोकातिपक्खलोक्क असखयेयगुणाः अपोसोके सखयगुणाः तियक्खलोके असखयेयगु  
 णाः । अत्राणुवातेन सवस्सोमाः पृथिवीवायिणाः ऊच्यसोकातिपक्खलोक्क अपोसोकातिपक्खलोक्क विक्षीयायिणाः, तियक्खलोके असखयेयगुणाः त्रैलोक्ये

विसंसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए  
 विसंसाहिया । खेसाणवाएण सवत्योवा पढयिकाइया अपजसया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरिय  
 लोए विसंसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसंसाहिया । खेसाणवाएण सवत्योवा पढयिकाइया पजसया उहुलोए तिरियलोए तिरियलीयअ  
 होलोए विसंसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो  
 लोए विसंसाहिया । खेसाणवाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि  
 ससाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसं  
 साहिया । खेसाणवाएण सवत्योवा अउकाइया अपजसया उहुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

वसंसेयमुयाः ऊर्दूलोके वसंसेयमुयाः अचोलीके विद्येवाचिकाः । वेदानुवातेन सबलोना पुषिबीकायिकाः अपर्मासा ऊर्दूलोकेतिर्येक्लोके अ  
 चोलीकेतिर्येक्लोके विद्येवाचिकाः तिर्येक्लोके वसंसेयमुयाः त्रैलोक्य वसंसेयमुयाः ऊर्दूलोके वसंसेयमुयाः अपासोके विद्येवाचिकाः । वेदानु  
 वसंसेयमुयाः ऊर्दूलोके वसंसेयमुयाः अपर्मासा ऊर्दूलोके विद्येवाचिकाः तिर्येक्लोके वसंसेयमुयाः अपासोके विद्येवाचिकाः । वेदानु  
 वे विद्येवाचिकाः तिर्येक्लोके वसंसेयमुयाः त्रैलोक्य वसंसेयमुयाः ऊर्दूलोके वसंसेयमुयाः अपासोके विद्येवाचिकाः । वेदानुवातेन सबलोना  
 वसंसेयमुयाः अपर्मासा ऊर्दूलोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके  
 वसंसेयमुयाः अपर्मासा ऊर्दूलोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके अपासोकेतिर्येक्लोके

सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसे  
 साहिया । खे त्ताणयाएण सव्वयोवा स्याउकाइया पज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि  
 सेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसे  
 साहिया । खे त्ताणयाएण सव्वयोवा तेउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया,  
 तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खे त्ताण  
 याएण सव्वयोवा तेउकाइया अपज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । खे त्ता  
 यलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खे त्ता  
 णयाएण सव्वयोवा तेउकाइया पज्जसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोक विद्येयापिका तियक्कलोके असखेयगुणा खेसोके असखेयगुणा उहुलोके असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्ता  
 नासोकायिका उहुलोकेअतिरियक्कलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः तिर्यक्लोके असखेयगुणा उहुलोके अस  
 खेयगुणा अचालोके विद्येयापिकाः । सेवानुवातेन सवस्तामा सत्रायापिकाः अपर्याप्तया उहुलोकेअतिरियक्कलोके असखेयगुणा विद्येयापि  
 काः तियक्कलोके असखेयगुणा उहुलोके असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्तामासत्रायापिकाः अपर्याप्तया उहुलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः  
 नाः पर्याप्तया उहुलोकेअतिरियक्कलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः तियक्कलोके असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्तामासत्रायापिकाः अपर्याप्तया उहुलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः  
 नाः असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्तामा सत्रायापिकाः अपर्याप्तया उहुलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः तियक्कलोके असखेयगुणा । सेवानुवातेन सवस्तामासत्रायापिकाः अपर्याप्तया उहुलोके असखेयगुणा विद्येयापिकाः

यलोए असखे जगुणा, तेलुक्की असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे स्या  
 णुवाएण सधत्योवा धाउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ  
 सखे जगुणा, तेलुक्की असखिजगुणा उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ  
 सधत्योवा धाउकाइया अपजसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । खे स्याणवाएण  
 असखे जगुणा, तेलुक्की असखे जगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 सधत्योवा धाउकाइया पजसया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । खे स्याणवाएण  
 असखे जगुणा, तेलुक्की असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 सधत्योवा वणस्सइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्की असखे जगुणा

उहुलोबतियक्लोने अपोलोबतियक्लोने विजेवायिकाः तियक्लोने असखेयणुवा औलोके असखेयणुवा अपोलोके  
 विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा वायुकायिकाः पवीसतया उहुलोबतियक्लोने अपोलोबतियक्लोने विजेवायिका तियक्लोने असखे  
 यणुवा औलोके असखेयणुवा उहुलोके असखेयणुवा अपोलोके विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा उहुलोबतियक्लोने  
 के अपोलोबतियक्लोने विजेवायिका औलोके असखेयणुवा उहुलोके असखेयणुवा अपोलोके विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा  
 तिकायिका अपवीसतया उहुलोबतियक्लोने अपोलोबतियक्लोने विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा उहुलोबतियक्लोने  
 असखेयणुवा अपोलोके विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा उहुलोके असखेयणुवा अपोलोके विजेवायिकाः । जेवानुवातेन सर्वतावा  
 वायिकाः तियक्लोने असखेयणुवाः औलोके असखेयणुवाः उहुलोके असखेयणुवाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा उहुलोबतियक्लोने विजे  
 वायिकाः तियक्लोने असखेयणुवाः औलोके असखेयणुवाः उहुलोके असखेयणुवाः । जेवानुवातेन सर्वतावा असखेयणुवा उहुलोबतियक्लोने विजे

उहलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा वणस्सडकाइया अपज्जत्तया  
 उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विनसाहिया, तिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्की असखिज्जगु  
 णा, उहलोए असखेज्जगुणा, अहोलाए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा वणस्सडकाइया पज्ज  
 त्तया उहलोयतिरियलोए अहोलायतिरियलोए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा तस्सकाइया तेलुक्की  
 ज्जगुणा, उहलोए असखिज्जगुणा, अहोलोए विनसाहिया । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा तस्सकाइया तेलुक्की  
 उहलोयतिरियलोए असखिज्जगुणा, अहोलायतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहलोए सखेज्जगुणा, अहोलोए  
 सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखिज्जगुणा । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा तस्सकाइया अपज्जत्तया तेलुक्की उह  
 लोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, उहलोए सखिज्जगुणा, अहोलोए सखिज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्ज  
 गुणा । खेत्ताणवाएण सद्धत्योवा तस्सकाइया पज्जत्तया तेलुक्की उहलोयतिरियलोए असखिज्जगुणा, अहो  
 लोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहलोए सखिज्जगुणा, अहोलाए सखिज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगु

कायवा । वेत्ताण कसुलोकातिपक्कलोक्क असखेपगुणा अघाताकातपक्कलोक्के सख्येपगुणा । अघातोक्क सद्धेपगुणास्तियक्कला  
 के असद्धेपगुणा । अत्रानुपात्तन सद्धत्तामात्तसकायिका अपघातपत्तया त्रेलापय ऊहुलाकातिपक्कलोक्के असद्धेपगुणा कसुलोक्के सद्धेपगुणा । अपघोलोक्के  
 सद्धेपगुणास्तियक्कलोक्के असद्धेपगुणा । अत्रानुपात्तन सद्धत्तामात्तसकायिका पर्याप्तका स्त्रलोक्क कसुलोकातयक्कलोक्क असख्येपगुणा । अपघोलोकातिप  
 यत्तक सख्येपगुणा कसुलोक्क सख्येपगुणा अघाताके सख्येपगुणा स्तिपत्ताक असख्येपगुणा । हादम् २४ । यत्तया पदम् । जीवानामापुण्यमयस्य  
 कायश्चानामपर्वोदानां पर्वोदाना सुप्ताना जायता समवहतानामसमवहताना सादावेदकानामसातावदकानामिन्द्रियापयुक्ताना ना इन्द्रियो

यलोए अस्सखे जगुणा, तेलुक्के अस्सखे जगुणा, उहुलोए अस्सखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे हा  
 णुवाएण सव्वत्योवा याउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ  
 सखे जगुणा, तेलुक्के अस्सखिजगुणा उहुलोए अस्सखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे हाणयाएण  
 सव्वत्योवा याउकाइया अपजाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 अस्सखे जगुणा, तेलुक्के अस्सखे जगुणा, उहुलोए अस्सखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खे ताणवाएण  
 सव्वत्योवा याउकाइया पज्जइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 अस्सखे जगुणा, तेलुक्के अस्सखे जगुणा, उहुलोए अस्सखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । तिरियलोए  
 सव्वत्योवा वणस्सइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के अस्सखे जगुणा

ऊदुलोकातिवत्तोके अपोलोकातिवत्तोके विठेवाचिकाः निर्वत्तोके वसवयेयमुवा लोलोके वसवयेयमुवा अपोलोका  
 विठेवाचिका । वेवानुवातेन वत्तोका वायुकायिकाः पर्याप्तता ऊदुलोकातिवत्तोके अपोलोकातिवत्तोके विठेवाचिकाः तियत्तोके वसव  
 यमुवा लोलोके वसवयेयमुवाः ऊदुलोका वसवयेयमुवा अपोलोका विठेवाचिका । वेवानुवातेन वत्तोका वसवयेयमुवा अपोलोका  
 के अपोलोकातिवत्तोके विठेवाचिका लोलोका वसवयेयमुवा ऊदुलोके वसवयेयमुवा अपोलोका विठेवाचिका ऊदुलोकातिवत्तोके  
 विठेवाचिका अपर्याप्तता ऊदुलोकातिवत्तोके अपोलोकातिवत्तोके विठेवाचिका । वेवानुवातेन वत्तोका वसवयेयमुवा अपोलोका  
 वसवयेयमुवा अपोलोका विठेवाचिकाः । वेवानुवातेन वत्तोका वसवयेयमुवा अपोलोका विठेवाचिका ऊदुलोकातिवत्तोके  
 वाचिकाः तियत्तोके वसवयेयमुवाः वोलोका वसवयेयमुवाः ऊदुलोका वसवयेयमुवा अपोलोका विठेवाचिका । वेवानुवातेन वत्तोका वसवयेयमुवा

लीयतिरियलोए विसंसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसंसाहिया  
 दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला उहुदिसाए अहोदिसाए विसंसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्छि  
 मेणय दोत्रि तुल्ला असखेज्जगुणा । दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्छिमेणय दोत्रि तुल्ला विसंसाहिया पुरच्छि  
 मेण असखेज्जगुणा पच्छिच्छिमेण विसंसाहिया दाहिणेण विसंसाहिया उत्तरेण विसंसाहिया खेत्ताणुयाएण  
 सव्वत्थोवा दव्वाड तलुक्के उहुलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलीयतिरियलोए विसंसाहियाइ उहुलोए  
 असखेज्जगुणा अहोलीए अणतगुणाइ तिरियलोए सखेज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा दव्वाइ अहोदि  
 साए उहुदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्छिमेण दोत्रि तुल्लाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण  
 पुरच्छिमेण उत्तरपच्छिमेणय दोत्रि तुल्लाइ विसंसाहियाइ पुरच्छिमेण असखेज्जगुणाइ पच्छिच्छिमेण वि  
 संसाहियाइ दाहिणेण विसंसाहियाइ उत्तरेण विसंसाहियाइ । एएसिण भत्ते । परमाणुपोग्गलाण सखेज्जप

विशेषादिताः उत्तरव विशेषादिताः । देशानुवातेन सवस्तोमनि द्रव्याणि त्रैलोक्ये कसुतोक्तितर्यक्त्वोक्ते अमलगुणानि अघोसोक्तितर्यक्त्वोक्ते विशे  
 पाहितानि कसुतोक्ते असवययगुणानि अघोसोक्त अमलगुणानि त्रियक्त्वोक्ते असवययगुणानि दिशानुवातेन सवस्तोमनि द्रव्यानि अघादिशाया  
 मूर्धेदिशायाऽनमलगुणानि उत्तरपूरुषत्वादिष्विषयविशेषाया द्रव्याणां तुल्यान्यसवययगुणानि दक्षिण एवस्यासत्तरपयिमाया द्वयोरपि तुल्यानि वि  
 शेषाणां तुल्यानि । यतया भट्टन् । परमात्र पुट्टलानां सवययप्रादेशिक्तानामसवययप्रादेशिक्तानामसवययप्रादेशिक्तानां च स्कन्धानां द्रव्यायतया प्रदेशा  
 यतया द्रव्यायप्रदेशायतया चत्तरं १ । नीतम् । सवस्तोमा अमलगुणानि द्रव्याणि द्रव्यायतया परमाणु पुट्टला द्रव्यायतया अनमलगुणाः सवय  
 यप्रदेशिक्ताः स्कन्धाः द्रव्यायतया सवययगुणा असवययप्रादेशिक्ता स्कन्धाः द्रव्यायतयाः । असवययगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा अमलगुणानि द्रव्याणि स्क



सुज्ञान जागराण समाहयाण अस्माहयाण सातावदगाण असातावेदगाण इदियउवउत्ताण पोढदियउव  
 उत्ताण सागारोवउत्ताण अणगारोउत्ताणय कवरे कयरोहितो अण्पावा यज्जयाथा तुत्तावा विसेमाहिया  
 या २ गोयमा । मस्रत्यावा जीवा अउस्स कम्मस्स यधगा अपज्जानया सखिज्जगुणा , सुत्ता सखिज्जगु  
 णा , समाहया सखिज्जगुणा , सातावदगा सखिज्जगुणा , इदियउवउत्ता सखिज्जगुणा , अणगारोवउत्ता  
 सखिज्जगुणा , सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा , नाढदियउवउत्ता विनसाहिया , असातावेदगा विनसाहिया ,  
 असमाहिया विसेमाहिया , जागरा विनसाहिया , पज्जानयाण सस्रत्यावा पोगला तेलुक्के उहुलीयतिरियलोए अणतगुणा अही  
 विससाहिया , दार २५ । खेत्ताणयाएण सस्रत्यावा पोगला तेलुक्के उहुलीयतिरियलोए अणतगुणा अही

---

पण्णासा साकारोपपुत्तामासनाकारोपपुत्तामां कवरे २ अण्पावा वहुला वा तुत्ता वा विद्ययाहिता वा । गौतम । सबसोमा बीवा कायुया क  
 संबो ययका अपयसिना सस्ययगुणा सुत्ताः सस्येयगुणा कायतः सस्येयगुणा सातावेदकाः सस्येयगुणा इन्द्रियोपय  
 ता सस्येयगुणा यनाकारोपयकाः सस्ययगुणाः साकारोपपुत्ताः सस्येयगुणाः मो इन्द्रियोपपुत्ताः सस्येयगुणाः विद्ययाहिताः इन्द्रियोपय  
 विद्ययाहिताः असमाहिता विद्ययाहिताः कागुलो विद्ययाहिताः ययोसका विद्ययाहिता कायुय कम्मका ययनका विद्ययाहिताः । असतावदकाः  
 ययानुवातन सबसोमा पुद्गला सैलोक्ये उहुला सैलोक्ये उहुला सस्येयगुणा ययोसका विद्ययाहिताः विनसाहियाः । दारम् २५ म  
 साके विद्ययाहिताः । दिवामुवातेन सर्वसोमा पुद्गलाः असुविद्यायापथीविद्यायां विद्येयाविद्या उत्तरपूर्वस्थां दण्डि पयिमाणां च इयोरपि  
 तुल्या असयययगुणाः । दण्डि पूर्वस्यामुत्तरपयिमाणां च इयोरपि तुल्या विद्ययाहिता पुद्गला सर्वसययगुणाः पयिमाणां विद्येयापिणा

कयरे २ हितो अप्याथा १ गोयमा । सख्योवा एगपदेसोवगाढा पुगला दख्ठयाए सखेज्जापएसोवगा  
ढा पुगला दख्ठयाए सखिज्जगुणा असखिज्जपदेसोगाढा पुगला दख्ठयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए  
सख्योवा एगपदेसोगाढा पुगला पदेसठयाए सखिज्जपदेसोगाढा पुगला पदेसठयाए सखेज्जगुणा  
सखेज्जपदेसोगाढा पुगला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दख्ठपदेसठयाए सख्योवा एगपदेसोगाढा पुग  
ला दख्ठयपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पुगला दख्ठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा  
असखिज्जपएसोगाढो पुगला दख्ठयाए असखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण  
नंत ! एगसमयठित्तीयाण सखिज्जसमयठित्तीयाण असखिज्जसमयठित्तीयाण पुगलाण दख्ठयाए पदे  
सठयाए दख्ठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्याथा १ गोयमा । सख्योवा एगसमयठिईया पुगला दख्ठयाए  
दख्ठयाए सखेज्जसमयठित्तीया पुगला दख्ठयाए सखेज्जगुणा असखिज्जसमयठिईया पुगला दख्ठयाए

प्रदशापतया सखयपप्रदशावगाढा पुट्टला प्रदशार्थतया सखयपगढा असखेय पुगुका द्रव्यप्रदशाप  
तया सखलोमा एकप्रदशावगाढा पुट्टला द्रव्यापप्रदशापतया सखेयप्रदशावगाढा पुट्टला द्रव्यप्रदशावगाढा पुट्टलाः द्र  
व्यापतया सखयपगुकाः ते चैव प्रदशापतया सखयपगुका असखेयप्रदशावगाढा पुट्टला द्रव्यापतया असखेय  
पगुकाः । एतपौ प्रदल । एकसमयस्थितिकामा सखयपसमयास्थितिकामासखेयसमयस्थितिकामा पुट्टलाना द्रव्यापतया प्रदेशार्थतया द्रव्याप  
देशापतया कतरे ० १ । गौतम । सर्वलोमा एकसमयस्थितिकाः पुट्टलाः द्रव्यापतया सखयपसमयस्थितिकाः पुट्टलाः द्रव्यापतया सखेयपगुका  
सखयपसमयस्थितिकाः पुट्टलाः द्रव्यापतया असखयपगुका प्रदशार्थतया सखलोमा एकसमयस्थितिकाः पुट्टलाः प्रदेशार्थतया सखेयसमयस्थिति

देमियाण अस्सस्विज्जापदेसियाण अणतपदेवियाणय खधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए  
 कयरेर हितो अय्याया १ गो ० । सव्वत्थोया अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए परमाणुपोगगला वव्वठयाए अ  
 णतगुणा सस्वज्जापदेसिया खधा दव्वठयाए सस्वज्जागुणा अस्सस्वेज्जापदेसिया खधा दव्वठयाए अस्सस्वेज्जागुणा  
 पदेसठयाए सव्वत्थोया अणतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगगला अणतगुणा सस्वज्जापदेसिया  
 खधा पदेसठयाए सस्वज्जागुणा अस्सस्वेज्जापदेसिया खधा पदेसठयाए अस्सस्वेज्जागुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व  
 त्थोया अणतपदेसिया खधा वव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोगगला दव्वठपदेसठयाए  
 अणतगुणा सस्वज्जापदेसिया खधा दव्वठयाए सस्वज्जागुणा तेचेव पदेसठयाए सस्वज्जागुणा अस्सस्विज्जा  
 पएसिया खधा दव्वठयाए अस्सस्विज्जागुणा तेचेव पदेसठयाए अस्सस्वेज्जागुणा । एएसिण जंत ! एगपदेसो  
 गाढाण सस्वज्जापदेसोगाढाण अस्सस्विज्जापदेसोगाढाणय पोगगलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए

व्याः प्रदग्गायतया परमाबुपुद्गला जलजानुका असक्येयप्रदेशिकाः स्वत्वा प्रदग्गायतया सकययगुका असक्येयप्रदेशिकाः स्वत्वाः प्रदेशार्थतया अस  
 क्येयगुकाः द्रव्यायप्रदग्गायतया सर्वतोभा जलजानुदेशिकाः स्वत्वा द्रव्यायतया ते चेव प्रदग्गायतया जलजानुकाः परमाबुपुद्गला द्रव्यायप्रदग्गाय  
 तया जलजानुका सकययप्रदेशिकाः स्वत्वा द्रव्यायतया सक्येयगुकाः तत्रेव च प्रदग्गायतया सक्येयगुका असक्येयप्रदेशिकाः स्वत्वा द्रव्यायतया च  
 सगुपपगदा तत्रेव प्रदग्गायतया असक्येयगुका । एतथा जटल । यकप्रदेशावभावात्ता सकययप्रदग्गायतया द्वाभासकयय प्रदेशावभावात्ता च पुत्र  
 सार्ता द्रव्यायतया प्रदेशावतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च जतर ० ० । नौतम । सबक्तोभा यकप्रदेशावभावात्ताः पुद्गला द्रव्यायतया असक्येयप्रदग्गायतया  
 दाः पुद्गला द्रव्यायतया असक्येयगुका असक्येयप्रदेशावभावात्ताः पुद्गला द्रव्यायतया असक्येयगुका प्रदग्गायतया सबक्तोभा यकप्रदेशावभावात्ताः पुद्गला

अहं नते । सखीवप्यज्ञा महादरुय वत्तहस्वामि सख्योवा गम्भयक्तातियमणस्सा भणस्सीठ सखेज्जगुणाच  
 यादरतउकाडयापज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा अणुसरोयवाडया देवा अस्सखेज्जगुणा उयारिमगेवेज्जागा देवा सखे  
 सखेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जागा देवा सखेज्जगुणा हेठिमगेवेज्जागा देवा सखेज्जगुणा अणएकप्ये देवा सखिज्जगुणा अह  
 ज्जगुणा अणएणं कप्ये देवा सखेज्जगुणा पाणए कप्ये देवा सखेज्जगुणा अणएकप्ये देवा सखिज्जगुणा अह  
 सत्तमाए पुठवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा ठठीए तमाए पुठवीए णेरइया अस्स० सहस्सारे कप्ये देवा अ  
 सखिज्जगुणा महासुक्ते कप्ये देवा अस्सखिज्जगुणा पचमाए धूमप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्स० लतए कप्ये  
 देवा अस्सखेज्जगुणा, अउत्थीए पकप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा अज्जलोए कप्ये देवा अस्सखेज्ज  
 गुणा तच्चाए वालुयप्यजाए पुठवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा माहिदे देवा अस्सखिज्जगुणा सणकुमारि कप्ये

यय नदत्त । सखीवाक्य बहुत्वं महादरुय वत्तिय्यामि सखलोभा गम्भयक्तातियमणस्सा भणुयः सख्यातगुणा यादरतेज्जायिका पर्याप्ततया  
 असख्येयगुणा अनुत्तरोपपातिनो देवा असख्येयगुणा उपरितनयीयका देवा असख्येयगुणा मध्यमयेयका देवा असख्येयगुणाः अचक्ष्मयेयका देवा  
 असख्येयगुणा अष्टुत कल्पे देवाः असख्येयगुणाः कारस्वे कल्पे देवा असख्येयगुणाः पानये कल्पे देवाः असख्येयगुणाः आनते कल्पे देवा असख्येयगुणाः  
 यय सप्तमाया पाथव्या नैरयिका असख्येयगुणा पथतमाया पाथव्या नैरयिका अस० सङ्कार कल्पे देवा असख्येयगुणा मङ्गशुक्ल कल्पे देवा अ  
 सख्येयगुणाः पञ्चमाया पूसमजाया पाथव्या नैरयिका असख्येयगुणाः लान्ते कल्पे देवा असख्येयगुणाः चतुष्पा पट्टप्रमाया पाथव्या नैरयिका  
 असख्येयगुणाः अष्टमलोक कल्पे देवा असख्येयगुणाः द्वितीयस्या वासूकप्रमाया पाथव्या नैरयिका असख्येयगुणा माहन्ने देवा असख्येयगुणाः सप्त  
 रत्नमार कल्पे देवा असख्येयगुणाः द्वितीयस्या अकरप्रमाया पाथव्या नैरयिका असख्येयगुणाः अस्सखिममण्या असख्येयगुणाः इद्याने कल्पे देवा

अस्वस्वजगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगगला पदेसठयाए सस्वस्वजगुणा पोगगला  
 पपसठयाए सस्वस्वजगुणा अस्वस्वजगुणा पोगगला पदेसठयाए सस्वस्वजगुणा पोगगला पदेसठयाए  
 सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुगगला दस्वठपएसठयाए सस्वस्वजगुणा पोगगला पदेसठयाए सस्वस्वजगुणा  
 तच्च पदेसठयाए सस्वस्वजगुणा अस्वस्वजगुणा पोगगला दस्वठयाए सस्वस्वजगुणा तच्च पदेस  
 ठयाए अस्वस्वजगुणा । एणसिण जत ! एगगुणकालगाण सस्वस्वजगुणकालगाण अस्वस्वजगुणकालगाण  
 अणतगुणकालगाणच पोगगलाण दस्वठयाए पदेसठयाए दस्वठपदेसठयाए कयरे कयरोहेतो अस्वस्वजगुणा  
 ? गोयमा । जहा परमाणुपोगगला तहा ज्ञाणियस्सा, एव सस्वस्वजगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वस्सरस  
 गधा ज्ञाणियस्सा, फासाण कस्समउयगकयलज्जायाण जहा एगपदेसठयाण ज्ञाणिय तहा ज्ञाणियस्स अस्व  
 सेसा फासा जहा वस्सा ज्ञाणिया तहा ज्ञाणियस्सा वार २६ ॥

काः पुट्ठाः प्रदेसायतया सवययमुक्ता असवयेयसमयस्त्वित्तिः पुट्ठाः प्रदेसायतया असवयेयमुक्ता इव्यायप्रदेसायतया सवसोमा एकसमयस्त्व  
 त्तिः पुट्ठाः पुट्ठाः इव्यायप्रदेसायतया असवयेयसमयस्त्वित्तिः पुट्ठाः इव्यायतया असवयेयमुक्ता तएव प्रदेसायतया सवयेयमुक्ता असवययसमयस्त्व  
 त्तिः पुट्ठाः इव्यायतया असवयेयमुक्तासकानो च पुट्ठाः प्रदेसायतया असवययमुक्ता । सवयो जदन्त । एकाणव्यासकानो सवयेयमुक्तासकानामसवये  
 यमुक्तासकानामनगुक्तासकानो च पुट्ठाः प्रदेसायतया असवययमुक्ता । सवयो जदन्त । एकाणव्यासकानो सवयेयमुक्तासकानामसवये  
 काया वाचनव्याः एवं असवययमुक्तासकाना कपि एवं सोया अपि असवययमुक्तासकाना । एवं सवयो जदन्त । एकाणव्यासकानो सवयेयमुक्तासकानामसवये  
 यगादाभो मन्वि तया सवययमुक्तासकाना । यथा सवो मन्विता सवययमुक्तासकाना । एवं सवयो जदन्त । एकाणव्यासकानो सवयेयमुक्तासकानामसवये

रिदिया पञ्चत्तया सखेज्ज० पदिया पञ्चाग्नियिसेसाहिद्या वेद्वदिया पञ्चाग्न्या विसेसा । पचिदिया अप्पज्जा  
 सया असखिज्जगुणा षडरिदिया अप्पज्जात्तया विसेसाहिद्या वेद्वदिया अप्पज्जाग्न्या विसेसाहिद्या वेद्वदिया  
 अप्पज्जाग्न्या विसेसाहिद्या पत्तेयसरीरयादवणस्सइकाइया पञ्चात्तया असखेज्जगुणा यादरनिगोदा पञ्चा  
 ग्ना असखेज्जगुणा यादरपुढसिकाइया अप्पज्जाग्न्या असखेज्जगुणा यादरस्याउकाइया पञ्चात्तया असखिज्ज  
 गुणा यादरवाउकाइया पञ्चात्तया असखिज्जगुणा यादरतेउकाइया अप्पज्जाग्न्या असखेज्जगुणा पत्तेयसरी  
 रयादवणस्सइकाइया अप्पज्जाग्न्या असखिज्जगुणा यादरनिगोदा अप्पज्जाग्न्या सखिज्जगुणा यादरपुढियि  
 काइया अप्पज्जाग्न्या असखेज्जगुणा यादरस्याउकाइया अप्पज्जाग्न्या असखिज्जगुणा यादरताउकाइया अप्प  
 ज्जाग्न्या असखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अप्पज्जाग्न्या असखेज्जगुणा सुज्जमपुढायकाइया अप्पज्जाग्न्या विसे

विसेपाहिताः द्वीन्द्रियाः पर्याप्त विसेपा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तया असखेयगुणाः षडरिन्द्रिया अपर्याप्तया विसेपाहिता । द्वीन्द्रिया अप  
 र्याप्तया विसेपाहिता द्वीन्द्रिया अपर्याप्तया विसेपाहिता प्रत्येकशरीरवादरवणस्सइकायिका पर्याप्तया असखेयगुणा यादरनिगोदाः पर्याप्त  
 या असखेयगुणाः यादरपचिदियायिका अपर्याप्तया असखेय० यादरवायुकायिकाः पर्याप्तया अस० यादरतेज  
 कायिकाः अपर्याप्तया अस० प्रत्येकशरीरवादरवणस्सइकायिकाः अपर्याप्तया अस० यादरनिगोदा अपर्याप्तया अस० यादरपचिदियायिका अपर्याप्त  
 या अस० यादरवायुकायिका अपर्याप्तया अस० यादरवायुकायिका अपर्याप्तया अस० सुक्ष्मपचिदियायिका  
 अपर्याप्तया विसेपाहिताः सूक्ष्मायिका अपर्याप्तया विसे० सुक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तया विसेपा० सुक्ष्मतेजः कायिका अपर्याप्तया अस० सुक्ष्म  
 पचिदियायिका अपर्याप्तया विसे० सुक्ष्मायिका अपर्याप्तया विसेपा० सुक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तया विसे० सुक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तया अस० सुक्ष्म



रिविया पञ्चतया सखेज्ज० पदिया पञ्चताविसेसाहिंया वेइदिया पञ्चता विसेसा । पचिदिया अप्पज्ज  
 तया असखिज्जगुणा चउरिविया अप्पज्जतया विसेसाहिंया तेइदिया अप्पज्जतया वादरनिगोदा पञ्च  
 अप्पज्जतया विसेसाहिंया पत्तेयसरीरयादवणस्सइकाइया पञ्चतया असखेज्जगुणा पञ्चतया अप्पज्जतया  
 पञ्चतया असखेज्जगुणा वादरपुठसिकाइया अप्पज्जतया असखेज्जगुणा वादरथाउकाइया पञ्चतया अप्पज्जतया  
 गुणा वादरवाउकाइया पञ्चतया असखिज्जगुणा वादरतेउकाइया अप्पज्जतया सखिज्जगुणा वादरपुठथि  
 रयादवणस्सइकाइया अप्पज्जतया असखिज्जगुणा वादरथाउकाइया अप्पज्जतया असखिज्जगुणा वादरताउकाइया अप्प  
 काइया अप्पज्जतया असखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अप्पज्जतया असखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अप्पज्जतया विसे  
 ज्जतया असखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अप्पज्जतया असखेज्जगुणा सुज्जमतउकाइया अप्पज्जतया विसे

विसेयाहिंयाः पयोस विसेया० । पन्नेन्त्रिया अपयोसगा असखेयगुणाः वतुरिन्त्रिया अपयोसगा विसेयाहिंया । वान्त्रिया अप  
 योसगा विसेयाहिंया हीन्त्रिया अपयोसगा विसेयाहिंयाः प्रत्येकसरीरयादवणस्सइकाइयाः पयोसगा असखेयगुणा वादरनिगोदाः पयोस  
 या असखेयगुणाः वादरपुष्पिणीकाइयाः अपयोसगा असखेय० वादरवायुकाइयाः पयोसगा अस० वादरतेज  
 काइयाः अपयोसगा अस० प्रत्येकसरीरयादवणस्सइकाइयाः अपयोसगा अस० वादरनिगोदा अपयोसगाः संख० वादरपुष्पिणीकाइया अपयो  
 सगा अस० वादरवायुकाइया अपयोसगा अस० वादरवायुकाइया अपयोसगा अस० सुत्तपुष्पिणीकाइया  
 अपयोसगा विसेयाहिंयाः सुत्ताप्पाइया अपयोसगा विसेया० सुत्तवायुकाइया अपयोसगा विसेया० सुत्तपुष्पिणीकाइया अपयोसगा  
 पुष्पिणीकाइयाः पयोसगा विसेया० सुत्ताप्पाइयाः पयोसगा विसेया० सुत्तवायुकाइयाः पयोसगा विसेया० सुत्तपुष्पिणीकाइया अपयोसगा अस० सुत्त





रिदिया पञ्जत्तया सखेज्ज० पदिया पञ्जत्तायिसेसाहिद्या वेइदिया पञ्जत्ता त्रिसेसा । पच्चिदिया अप्पज्जा  
त्तया अस्सखिज्जगुणा चउरिदिया अप्पज्जत्तया त्रिसेसाहिद्या त्थेइदिया विसेसाहिद्या वेइदिया  
अप्पज्जत्तया त्रिसेसाहिद्या पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पञ्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा यादरनिगोदा पञ्ज  
त्तगा अस्सखेज्जगुणा यादरपुढसिकाइया अप्पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा यादरत्थाउकाइया पञ्जत्तया अस्सखिज्ज  
गुणा यादरवाउकाइया पञ्जत्तगा अस्सखिज्जगुणा यादरत्तेउकाइया अप्पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा पत्तेयसरी  
रयादरवणस्सइकाइया अप्पज्जत्तगा अस्सखिज्जगुणा यादरनिगोदा अप्पज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा यादरपुढवि  
काइया अप्पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा यादरत्थाउकाइया अप्पज्जत्तगा अस्सखिज्जगुणा यादरत्ताउकाइया अप्प  
ज्जत्तया अस्सखेज्जगुणा सुज्जमत्तेउकाइया अप्पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा सुज्जमपुढविकाइया अप्पज्जत्तगा त्रिसे

विशेषपाहिताः द्वीन्द्रियाः पर्याप्त विज्ञेयाः । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तया असक्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ततया विज्ञेयाहिता । खीन्द्रिया अप  
र्याप्ततया विज्ञेयाहिता द्वीन्द्रिया अपर्याप्ततया विज्ञेयाहिताः प्रत्येकशरीरयादरवणस्सविज्ञापिकाः पर्याप्तगा असक्येयगुणा यादरनिगोदाः पर्याप्त  
या असक्येयगुणाः यादरपच्चिबीकायिकाः अपर्याप्तगा असक्ये० यादरवायुकायिकाः पर्याप्तगा अस० यादरतेज  
कायिकाः अपर्याप्तगा अस० प्रत्येकशरीरयादरवणस्सविज्ञापिकाः अपर्याप्तगा अस० यादरविषोदा अपर्याप्तगा अस० यादरपच्चिबीकायिका अपर्याप्त  
गा अस० यादरवायुकायिका अपर्याप्तगा अस० यादरवायुकायिका अपर्याप्तगा अस० सुस्सत्तेजकायिकाः अपर्याप्तगा अस० सुस्सपच्चिबीकायिका  
अपर्याप्तगा विज्ञेयाहिताः सुस्साप्यायिका अपर्याप्तगा विज्ञे० सुस्सवायुकायिका अपर्याप्तगा विज्ञेया० सुस्सतेजः कायिका अपर्याप्तगा अस० सुस्स  
पच्चिबीकायिकाः पर्याप्तगा विज्ञे० सुस्साप्यायिका पर्याप्तगा विज्ञेया० सुस्सवायुकायिकाः पर्याप्तगा विज्ञे० सुस्सनिगोदा अपर्याप्तगा अस० सुस्स

साहिया सुकमथाउकाइया अथपञ्जस्रया विसेसाहिया सुकमथाउकाइया अथपञ्जस्रया विसेसाहिया सुकम  
 तेउकाइया पञ्जस्रया अथसखिज्ज० सुकमपुढाविकाइया पञ्जस्रया विसेसाहिया सुकमथाउकाइया पञ्जस्र  
 गा विसेसाहिया सुकमथाउकाइया पञ्जस्रया विसेसाहिया सुकमनिगोदा अथपञ्जस्रया अथसखे० सुकमनि  
 गोदा पञ्जस्रया सखिज्जगुणा अथअसिद्धिया अणतगुणा पण्डितसिद्धि सम्मदिठी अणतगुणा सिद्धा अणत  
 गुणा वादर वणस्सइकाइया पञ्जस्रया अणतगुणा वादरपञ्जस्रया विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया अथ  
 ज्ञस्रया अथसखिज्जगुणा वादरपञ्जस्रया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुकमवणस्सइकाइया अथपञ्ज  
 स्रया अथसखिज्जगुणा सुकमा अथपञ्जस्रया विसेसाहिया सुकमवणस्सइकाइया पञ्जस्रया सखेज्ज० सुकम  
 पञ्जस्रया विसेसाहिया सुकमा विसेसाहिया अथसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण  
 स्सइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया तिरिक्कजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया  
 अथिरया विसेसाहिया ठेमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया सव्वजीवा वि  
 सेसाहिया ॥ पयत्रणाए नगवर्द्धए वज्रस्रस्यपद सम्मत्त ॥ ३ ॥

॥

३

॥

॥

॥

॥

॥

॥

विनोदाः पर्याप्तः सखे० अथसिद्धिः॥ अथपञ्जस्रयाः प्रतिपत्तिरथमद्विष्टा अथस्र० सिद्धा अथ० वादरवणस्सइकाइया विसेसाहिया सुकम  
 रपयोसा विद्यवादिताः वादरा विद्यवादिताः सुकमवणस्सइकाइया अथपञ्जस्रया अथ० सुकमा अथपयोसा विद्य० सुकमवणस्सइकाइया विसेसाहिया सुकम  
 अथे सुकमपर्यासा विद्यवादिताः सुकमा विद्येवा० अथसिद्धिः॥ अथपञ्जस्रया विद्यवादिता विनोदा जीवा विद्य० अथस्रपति जीवा विद्ये० अथेन्द्रिया विद्य० ति  
 यन्मथानिका विद्ये० विद्यवादिता विद्येवा० अथिरया विद्य० अथपञ्जस्रया विद्येवा० अथोनयो विद्य० अथारत्या विद्ये० अथ जीवा विद्यवादिताः ॥



साहिंया सुकमव्याउकाइया व्यपज्जसया विसेसाहिंया सुकम  
तेउकाइया पज्जसया व्यसखिज्जं सुकमपुठविकाइया पज्जसया विसेसाहिंया सुकमव्याउकाइया पज्जस  
गा विसेसाहिंया सुकमवाउकाइया पज्जसया विसेसाहिंया सुकमव्याउकाइया पज्जस  
गोदा पज्जसया सखिज्जगुणा व्यनवसिद्धिया व्यनवसिद्धिया पज्जसया विसेसाहिंया सुकमव्याउकाइया पज्जस  
गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जसया व्यनवसिद्धिया पज्जसया विसेसाहिंया सुकमव्याउकाइया पज्जस  
ज्जसया व्यसखिज्जगुणा वादरपज्जसया विसेसाहिंया पज्जसया विसेसाहिंया सुकमव्याउकाइया पज्जस  
तया व्यसखिज्जगुणा सुकमा व्यपज्जसया विसेसाहिंया सुकमवणस्सइकाइया व्यपज्ज  
पज्जसया विसेसाहिंया सुकमा व्यपज्जसया विसेसाहिंया पज्जसया सखिज्जं सुकम  
स्सइजीवा विसेसाहिंया एणिदिया विसेसाहिंया तिरस्सज्जगुणा विसेसाहिंया वण  
व्यविरया विसेसाहिंया लउमत्या विसेसाहिंया सजोगी विसेसाहिंया ससारत्या विसेसाहिंया सव्वजीवा वि  
सेसाहिंया ॥ पणवणाए नगवदंए वज्जवसस्यपद समत्त ॥ ३ ॥

[illegible]

